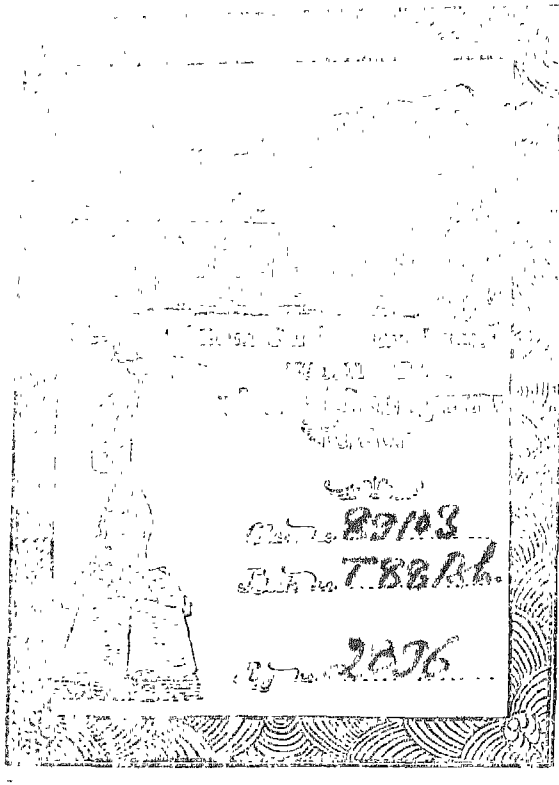

Class No. 891.03
Book No. T86Ah.
Acc. No. 2676

तुर्गनेव की अमर कृति

भद्रलोक का नीड़

(Nest Of The Gentry)

अनुवादक

हंसराज रहबर

नवयुग प्रकाशन
नई दिल्ली

प्रकाशक
नवयुग प्रकाशन
६२७६, मुलतानी ढाँडा
नई दिल्ली

मूल्य चार रुपए

मुद्रक—
हीरो प्रिंटिंग प्रैस,
चावड़ी बाज़ार
देहली

: १ :

वसंत के एक सुहावने दिन का अन्त हो रहा था। गुलाबी रंग के नन्हे नन्हे बादल स्वच्छ आकाश पर लटक रहे थे। जब वे धीरे-धीरे आगे सरकते थे तो लगता था कि वे पिघल-पिघल कर आकाश की नीली गहराइयों में विलीन हो रहे हैं।

यह सन १८४२ की बात है। ओ-कस्वे में एक सुन्दर मकान की खिड़की खुली हुई थी उस में दो औरतें बैठी थीं। उनमें से एक की उम्र लग-भग पचास वर्ष थी और दूसरी सत्तर वर्ष की बूढ़ी औरत थी।

अधेड़ उम्र औरत का नाम मेरिया दमितरीवना कालिटीना था। उस का पति सरकारी वकील था। वह कार्यकुशल, कर्मठ और मिलनसार होने के इलावा स्वभाव का चिड़चिड़ा और जिद्दी था। दस साल हुए उस की मृत्यु हो चुकी थी। निःसंदेह उसने यूनिवर्सिटी में शिक्षा प्राप्त की थी, लेकिन उसका जन्म निचले वर्ग के लोगों में हुआ था, इस लिये उसे जिंदगी में अपनी राह आप बनानी पड़ी थी। मेरिया दमितरीवना उस से प्रेम करती थी क्योंकि वह एक सुन्दर, चतुर और प्रभावशाली व्यक्ति था और इसी प्रेम के कारण उनका विवाह हो गया था। मेरिया के माता पिता बचपन में मर गये थे। उसने चंद साल मास्को की एक महिला-संस्था में व्यतीत किये थे, उसके उपरान्त वह ओ-से लग-भग पचास मील की दूरी पर पोक्रोवोस्कोये गांव में पूर्वजों की ज़मीदारी में अपनी बुआ और बड़े भाई के साथ रहने

लगी। थोड़े दिनों बाद उस का भाई पीटर्जबर्ग चला गया क्योंकि वहां उसे सरकारी नौकरी मिल गई। वह जब तक जिया बुआ और बहिन से कठोरता और निर्दयता का व्यवहार करता रहा। आखिर उसे जवानी ही में मृत्यु ने आ दबोचा। अब मेरिया दमितरीवना को पोक्रोवस्काये की जमींदारी विरासत में मिली, लेकिन वह वहां बहुत दिन नहीं रहा। कालिटिन ने कुछ ही दिनों के परिचय में उस का मन अपने वश में कर लिया और मेरिया का उससे विवाह हो जाने के एक साल बाद पोक्रोवस्काय की जमींदारी का किसी दूसरी अधिक उपजाऊ भूमि से तबादला कर लिया गया। वह कोई रहने लायक जगह नहीं थी। फिर उसके पति कालिटिन ने ओ-नगर में मकान खरीद लिया और पति-पत्नी उस में रहने लगे। मकान एक बाग में स्थित था और उसके एक ओर देहात का खुला दृश्य था।

"क्या खूब!" कालिटिन ने, जिसे गांव की रम्यता में कोई रुचि नहीं थी, सोचा—"अब देहात में जाने की कोई जरूरत नहीं।" अलबत्ता मेरिया दमितरीवना अपने मन में अकसर पछताया करती थी। उसे अपनी पोक्रोवस्काय की सुन्दर धरती, मुस्कराते हुए झरने, विस्तृत चरागाहें और हरे भरे कुंज प्रायः स्मरण हो आते थे। लेकिन वह किसी प्रकार से भी पति का विरोध नहीं करती थी। वह उसके बुद्धि और ज्ञान से इतनी प्रभावित थी कि सदा उसे समान और आदर से देखती थी। विवाहित जीवन के पंद्रह वर्ष इसी घर में बीत गये जब उस के पति का देहान्त हुआ तो वह एक लड़का और दो लड़कियों की माँ थी। और अब वह नागरिक जीवन की इतनी अभ्यस्त हो चुकी थी कि उसके मन में ओ—को छोड़ने की कोई अभिलाषा नहीं थी।

जवानी के दिनों में मेरिया दमितरीवना हल्के बालों वाली कोमलांगी रमणी प्रसिद्ध थी। अब इस पचास वर्ष की आयु में भी

उसके सुंदर शरीर का आकर्षण नष्ट नहीं हुआ था, यद्यपि वह कुछ मोटी हो गई थी और पहली सी कोमलता बाकी नहीं रही थी। वह सदय और भावुक अधिक थी और इस पक्की उम्र में भी उस में स्कूली जीवन का कच्चापन बाकी था। वह आत्मप्रिय थी, सहज में चिढ़ जाती थी और जब उसके स्वभाव के विरुद्ध कोई बात हो, तो शीघ्र ही आंखों में आंसु भर लाती थी। लेकिन जब उसे प्रसन्न रखा जाये और कोई उसका विरोध न करे तो वह बहुत ही उदार और सहृदय होती थी। उस का घर नगर में सब से सुखी था। उस के पास थोड़ा सा, धन भी था जो उसे विरासत में नहीं मिला था, बल्कि पति की मितव्यता के कारण जमा हुआ था। दोनों लड़कियाँ उसके साथ रहती थीं और लड़का सेंट पीटर्सबर्ग के एक सबसे अच्छे स्कूल में शिक्षा प्राप्त कर रहा था।

मेरिया दमितरीवना के साथ खिड़की में जो दूसरी बूढ़ी औरत बैठी थी, वह उसकी बुआ थी, जिसके साथ उसने पोक्रोवस्काय में एकांत-जीवन के कई साल बिताये थे। वह स्वच्छंद आचरण की सनकी बूढ़ी औरत प्रसिद्ध थी। खरी बात मुंह पर कह देना उसका स्वभाव बन चुका था। साधन कम होते हुए भी वह धनियों का सा ठाठ बाट बनाये रखती थी। वह कालिटिन से अत्यन्त घृणा करती थी; इसीलिए जब मेरिया ने उससे विवाह कर लिया, तो वह गांव में जाकर रहने लगी और जिंदगी के दस साल एक किसान की झोंपड़ी में गुजार दिये। मेरिया उससे किसी कदर दबती थी। उसकी नाक तीखी, बाल काले, और इस बुढ़ापे में भी आंखों की ज्योति तेज थी। बुढ़िया का नाम मार्फा तिमोफेवना था। वह अब भी कमर सीधी करके सगर्व और सजीव गति से चलती थी और अपनी गूंजदार आवाज में तेज तेज बोलती थी; लेकिन बात स्पष्ट कहती थी। वह हमेशा एक सफेद टोपी और एक सफेद जाकेट पहनती थी। "क्या बात है?" उसने

अकस्मात मेरिया से पूछा, "तुम किस लिए निःश्वास छोड़ रही हो ?"

"नहीं कुछ नहीं।" उसने उत्तर दिया और फिर बोली "बादल कितने सुन्दर हैं।"

"क्या तुम्हें उनका अफसोस है ?"

मेरिया ने कुछ जवाब नहीं दिया।

"मुझे आश्चर्य है कि गेदोनोवस्की क्यों नहीं आया" मार्फा ने सलाइयों को तेज़ तेज़ चलाते हुए कहा, (वह एक मफ़लर बुन रही थी), "वह तुम्हें आहें भरने में मदद देता या फिर कोई झूठी घटना बयान करता।"

"तुम उससे कितना अन्याय करती हो; वह तो बहुत ही भद्र पुरुष है।"

"भद्र !" बूढ़ी औरत अवज्ञा से चिल्लाई।

"मेरे प्रिय पति का वह कितना आदर करता था" मेरिया बोली, आज भी उनकी बात कहते हुए उसका गला रुंध जाता है।"

"मैं मानती हूं कि वह उसका आदर करता है। लेकिन तुम यह बात क्यों भूल जाती हो कि उसे गंदी नाली में से निकालने वाला भी तुम्हारा पति ही था ?" मार्फा ने कहा और उसकी सूइयाँ पहले से भी तेज़ चलने लगीं।

"तुम्हें मालूम होना चाहिये।" वह फिर बोली, "देखने को तो वह बहुत ही भोला भाला मालूम होता है; लेकिन यों ही वह अपना मुँह खोलता है, उस में से कितना झूठ निकलता है। माना कि वह सरकारी अफसर है और उसे सभासद का पद प्राप्त है। लेकिन फिर भी वह गांव के एक मामूली पादरी का बेटा है"।

"निःसंदेह उसमें यह दोष है; लेकिन बुआ, दोष किस आदमी में नहीं होते। सर्जी पेट्रोविच की शिक्षा भी थोड़ी है। मैं मानती हूं

कि उसे फ्रांसिसी नहीं आती; लेकिन तुम कुछ भी कहो, इन सब बातों के बावजूद वह अच्छा आदमी है।"

"हाँ, वह हर वक्त तुम्हारे हाथ जो चाटता चूमता रहता है। मैं यह नहीं कहती कि उसे फ्रांसिसी नहीं आती। मैं कौनसा कोई अच्छी फ्रांसिसी बोल लेती हूं। उसके लिए तो बेहतर था कि उसे कोई भी जुबान न आती—अगर ऐसा होता वह झूठ बोलने से बच जाता। लो वह आ रहा है—वही कहावत हुई, शैतान की बात करो, तो वह हाजिर है।" मार्फा ने गली में झांकते हुए कहा, "देखो वह तुम्हारा भद्र पुरुष लम्बे-लम्बे डग भरता हुआ आ रहा है। बिलकुल सारस की तरह दुबला पतला शरीर और गर्दन आगे को झुकाये चल रहा है।"

मेरिया ने अपने बालों को दरुस्त किया और मार्फा ने उसे व्यंग भरी दृष्टि से देखा।

"मेरी प्यारी, चिंता न करो इसमें कोई सफेद बाल नहीं है? तुम्हारी पलाशका को अब यहाँ से भेज दिया जाये। सचमुच; वह सोचती होगी कि उसकी आँखें क्या देख रही हैं।"

"बुआ, तुम तो हर वक्त व्यर्थ....." मेरिया, अँगुलियों को कुर्सी के बाजुओं पर बजाती हुई, दुखी स्वर में गुनगुनाई।

"सर्जी पेट्राविच गेदोनोवस्की आये हैं।" सुर्ख गालों वाले एक नौकर लड़के ने दरवाजे में से झांकते हुए कहा।

: २ :

लम्बे कद के एक आदमी ने भीतर प्रवेश किया। वह साफ-सुथरा लम्बा कोट, पेतलून और जुराबें पहने हुए था। नर्म नर्म चमड़े के बूट, बने संवारे बाल, सिर से पांव तक उसका रखरखाव और पहनावा देख कर वह शिष्ट और प्रतिष्ठित व्यक्ति जान पड़ता था। उसने पहले घर की मालकिन को और फिर बूढी मार्फा को प्रणाम किया और फिर अहिस्ता से अपने दस्ताने उतार कर मेरिया के हाथ पर झुक गया उसने हाथ को सादर चूमा, दो बार चूमा। इसके बाद वह बड़ी ही सावधानी से कुर्सी पर बैठ गया, उसने अपनी अँगुलियों की पोरों को मला और मुस्कराते हुए पूछा :—

"इलिजावेटा मिखालोवना तो प्रसन्न है ?"

"जी हां" मेरिया दमितरीवनाने उत्तर दिया, "वह बाग में है।"

"और इलेना मिखालोवना ?"

"वह भी बाग में है। क्या कोई नई बात है ?"

"है तो सही।" नवागंतुक ने आँख झपका कर और होठों को भींचते हुए कहा, "मैं एक खबर लाया हूँ, जो बहुत ही दिलचस्प और आश्चर्यजनक है। लाव्रेस्की फ्योदोर इवानिच आया हुआ है।"

"फेदिया !" मेरिया चकित रह गई, "क्या सचमुच ? आप अपने मन से तो यह बात नहीं बना रहे ?"

"वाह, मन से क्यों बनाऊँगा। मैंने उसे अपनी आंखों से देखा है।"

"आपकी आँखों का भी क्या विश्वास।" बूढ़ी औरत ने कहा।

"वह बहुत ही प्रसन्न दिखाई पड़ता है।" गेदोनोवस्की ने अपनी बात जारी रखी, मार्फा का कटाक्ष जैसे उसने सुना ही न हो। "उसके कन्धे फैल गये हैं और रंग निखर आया है।"

"बहुत ही प्रसन्न दिखाई पड़ता है?" मेरिया ने धीरे से दुहराया, "प्रसन्नता का तो कोई कारण नहीं जान पड़ता।"

"हां, कारण तो नहीं," गेदोनोवस्की ने समर्थन किया, "उसकी हैसीयत का कोई दूसरा आदमी होता, तो सोसायटी में दोबारा मुँह दिखाने के बजाये चुल्लू भर पानी में डूब मरता।"

"यह क्यों?" मार्फा तिमोफेवना ने कहा, "यह भी कोई बात हुई। आदमी अपने घर आया है—आप ही बताईये वह और कहाँ जाता? मेरी तो समझ में नहीं आता कि उसने घर लौट कर कोई अपराध किया है।"

"मादाम, मैं आपको एक बात बताऊँ। जब पत्नी बुरा आचरण करे, तो उसके लिये हमेशा पति ही को दोषी ठहराया जाता है।"

"शायद आप यह बात इसलिये कह रहे हैं कि आप अभी तक अविवाहित है" मार्फा ने कहा और गेदोनोवस्की ने अपने होठों पर आई मुस्कराहट को छिपाने का यत्न करते हुए उसकी बात सुनी।

"क्या मैं यह पूछ सकता हूँ," एक क्षण चुप रहने के उपरान्त वह बोला, "आप यह मफ़लर किस के लिये बुन रही हैं?"

मार्फा तिमोफेवना ने उसे चुभती हुई निगाहों से देखा।

"यह ऐसे आदमी के लिये है, जो कभी गप न उड़ाता हो, जो कभी झूठ न बोलता हो, जो पाखंडी न हो। अगर दुनियां में कोई ऐसा आदमी है! मैं फेदिया को भली प्रकार जानती हूँ। उस बेचारे का एक मात्र दोष यह है कि उसने अपनी पत्नी को हर तरह संतुष्ट रखने का प्रयत्न किया। सब जानते हैं कि यह एक प्रेम-विवाह था।

लेकिन पति पत्नी में एक दिन भी बनी नहीं। मैं देखती हूँ, सभी प्रेम विवाह असफल रहते हैं।" बुढ़िया ने कहा और अपनी आँख के कोनों से देखते हुए एक भेद भरी दृष्टि मेरिया दमितरीवना पर डाली। "अच्छा, अब मैं जाती हूँ। तुम जिसकी चाहो धज्जियां उड़ाओ। मैं जानती हूँ कि तुम मुझे भी नहीं बख़शोगे। मुझे इसकी परवा नहीं। मैं जाती हूँ। और तुम्हारी बातों में विघ्न नहीं डालूंगी।" और वह चली गई।

"इसका तो यह स्वभाव है। हमेशा ऐसा ही करती है।" मेरिया ने कहा और वह बुआ को जाते हुए देखती रही।

"बुढ़ापे में आदमी सिठिया जाता है। तुम्हारी बुआ तो बहुत ही बूढ़ी है। उसका वश नहीं।" गेदोनोवस्की ने कहा, "उसने कुछ पाखंड के बारे में कहा था। लेकिन इस जमाने में कौन पाखंडी नहीं? आज तो जीवन ही पाखंड बना हुआ है। मेरे एक मित्र जो बहुत ही सयोग्य और उच्चपदाधिकारी हैं, कहा करते हैं कि आज तो एक मुर्गी भी पाखंड के बिना दाना नहीं चुगती—वह उसके लिये हमेशा रास्ता काट कर जायेगी। मगर, ऐ प्रिय महिला, जब मैं तुम्हें देखता हूँ ऐसा लगता है कि किसी देवात्मा के दर्शन कर रहा हूँ। मुझे अपना बर्फ़ सा सफेद हाथ चूमने की आज्ञा दीजिये।"

मेरिया मुस्कराई और अपना झुर्रियों भरा हाथ उसके हाथ में दे दिया। वह उत्कंठा से उसे चूमने लगा। मेरिया ने कुर्सी उसके समीप खींचली और तनिक आगे को झुककर धीमे स्वर में कहा:—

"तो आपने उसे देखा है? क्या वह वाकई हृष्ट पुष्ट और प्रसन्न चित्त है?"

"हाँ, वह बिलकुल प्रसन्नचित्त है।" गेदोनोवस्की ने जवाब दिया।

"आपको उसकी पत्नी की भी कुछ खबर है?"

"पिछले दिनों वह पेरिस में थी। अब सुना है कि वह इटली चली गई।"

"बहुत भयानक बात है। फेदिया की पोजीशन कितनी खराब हो गई। मालूम नहीं, वह इसे कैसे सहन कर रहा है। दुर्घटनायें प्रत्येक व्यक्ति के भाग्य में लिखी हैं। पर इसकी तो सारे योरप में चर्चा हो रही है।"

गेदोनोवस्की ने निश्वास छोड़ा, "तुम ठीक कहती हो लोग तरह तरह की बातें बना रहे हैं। कहते हैं कि कलाकारों और संगीत कारों से जा मिली है, जिन्हें वे समाज के शेर भी कहते हैं। उसने तो सभी प्रकार के विचित्र व्यक्तियों से सम्बन्ध जोड़ रखे हैं। ऐसी निर्लज्ज स्त्री देखी न सुनी।"

"मुझे बड़ा खेद है।" मेरिया दमितरीवना बोली, "आखिर वह इसी कुल से सम्बन्ध रखता है। शायद आप को मालूम न हो कि वह एक दूर के रिश्ते से मेरा फुफेरा भाई है।"

"क्यों नहीं। क्या तुम समझती हो कि मैं तुम्हारे परिवार के बारे में हर एक बात नहीं जानता? मेरा खयाल है कि मैं जानता हूँ।"

"क्या आप समझते हैं कि वह हम से मिलने आयेगा?"

"मेरा खयाल है कि वह जरूर आयेगा यद्यपि मैंने सुना है कि वह अपने देहात के मकान में चले जाने का इरादा रखता है।"

मेरिया दमितरीवना ने अपनी आँखें ऊपर उठाईं।

"आह, सर्जी पेत्रोविच, सर्जी पेत्रोविच, जब मुझे इस बात का ध्यान आता है, तो मैं सोचती हूँ कि हम औरतों को कितना सावधान रहने की जरूरत है।"

"सभी औरतें तो ऐसी नहीं होतीं, मेरिया दमितरीवना। तुम जानती हो कि दुर्भाग्य से कुछ औरतें चपल होती हैं। इसमें उम्र का

भी तकाजा है। फिर दूसरी बात यह है कि बचपन में उनका पालन पोसन और शिक्षा-दीक्षा ढंग से नहीं होती।" (सर्जी पेत्रोविच ने नीला धारीदार रूमाल जेब से निकाला और उसकी तह खोलने लगा।)

"दुनिया में ऐसी औरतें भी होती हैं, और वे हैं। (सर्जी पेत्रोविच ने दोनों आँखों को रूमाल के कोनी से धीरे-धीरे पूँछा।) लेकिन आम तौर पर, यदि मुझे उनके बारे में कुछ कहने की आज्ञा दी जाये तो मैं कहूँगा कि एक गन्दी मछली सारे तालाब को गंदा कर देती है।" उसने बात खत्म की।

"ममा, ममा," एक सुन्दर नन्हीं लड़की चिल्लाती हुई अंदर आई।

"चचादी मीर निकोलाई घोड़े पर सवार आ रहा है!"

येरिया दमित्रोवना कुर्सी पर से उठ खड़ी हुई। सर्जी पेत्रोविच भी उठ बैठा और सिर झुका कर बोला, "इलेना गिखालोवना को प्रणाम करता हूँ।" फिर वह शिष्टाचार से एक कोने में चला गया और अपनी लम्बी नाक सिनकने लगा।

"उसका घोड़ा कितना शानदार है।" नन्ही लड़की ने अपनी बात जारी रखी, "वह मुझे और लीज़ा को अभी मिला था कहता था कि घर आ रहा हूँ।" टापों की आवाज़ सुनाई देने लगी और एक सुंदर सफेद घोड़े पर सवार एक प्रतिष्ठित नौजवान गली में आता दिखाई दिया। खिडकी के पास पहुँच कर उसने घोड़ा रोक दिया।

: ३ :

"मेरिया दमितरीवना, आप प्रसन्न तो हैं !" घुड़सवार ने खन-खनाती हुई मधुर आवाज में पूछा, "क्या आपको मेरा नया घोड़ा पसंद है ?"

मेरिया दमितरीवना खिडकी के निकट आ कर बोली, "तुम्हारा क्या हाल है वोल्दीमीर, घोड़ा तो बहुत शानदार है। तुमने यह कहां से खरीदा ?"

"मैंने यह मिल्टरी ठेकेदार से खरीदा है। कमबख्त ने बड़े ही कडे दाम वसूल किये हैं।"

"इसका नाम क्या है ?"

"ओलेंडो.....बहुत ही भद्दा नाम है। मैं यह बदल दूँगा। ठहरो, ठहरो,...बड़ा चंचल जानवर है।"

घोड़े ने नथने फरफराये और वह झाग भरी थूथनी को इधर-उधर घुमाने लगा।

"लेनोचका, इसे थपथपाओ। डरो नहीं।"

नन्ही लड़की ने अपना हाथ खिड़की से बाहर निकाला; लेकिन ओलेडों पिछली टांगों पर खड़ा हुआ और घूम गया।

घुड़सवार ने बड़ी ही गम्भीरता से घोड़े की गर्दन पर एक छांटा मारा, और घोडे की इच्छा के विरुद्ध, उसके पहलुओं में एड लगाता हुआ उसे फिर खिड़की के निकट लाया।

"क्या खूब, क्या खूब !" मेरिया दमितरीवना कह रही थी।

"लेनोचका, अब थपथपाओं" नौजवान ने कहा, "मैं इसे अपनी मर्जी तो नहीं करने दूँगा।"

नन्ही लड़की ने फिर अपना हाथ बाहर निकाला और डरते-डरते चंचल घोड़े की कांपती हुई थूथनी को सहलाया।

"बहुत खूब, बहुत खूब! मेरिया दमितरीवना चिल्लाई, "लेकिन अब आगे बढ़ो और अंदर आयो।"

घुड़सवार ने बाग मोडी और घोड़े को गली में से तेज़-तेज़ दौड़ाते हुए आंगन में प्रवेश किया। उसने अपना छांटा परे फेंक दिया और घोड़े से उतर कर ड्राईङ्ग कमरे की ओर बढ़ा, उसी समय काले बालों वाली, पतली दुबली और लम्बी एक उन्नीस वर्ष की लड़की भी दूसरे दरवाजे से ड्राईङ्ग रूम में दाखिल हुई वह मेरिया दमितरीवना की बड़ी लड़की लीज़ा थी।

: ४ :

घुड़सवार नौजवान जिसका हमने पाठकों से अभी परिचय कराया है व्लाडिमीर निकोलाईच पैंशिन सेंट पीटर्सबर्ग में सरकारी मुलाजिम था और गृहमंत्री विभाग में काम करता था। वह एक अस्थाई सरकारी कमीशन के सम्बन्ध में ओ—नगर में आया था और गवर्नर जनरल जोनेन बर्ग के आधीन काम कर रहा था। और वह उसका एक दूर का सम्बन्धी भी था। पैंशिन का पिता जार का एक भूतपूर्व घुड़सवार फौजी अफसर था और जुआ खेलने में कुप्रसिद्ध था। उसकी आंखें मधुमय चेहरा साफ-सुथरा और उसके होठों में एक विचित्र मोड सा था। उसने अपना सारा जीवन उच्च पदाधिकारियों के सम्पर्क में बिताया था। वह दोनों राजधानियों की अंग्रेजी क्लबों में खूब घूमा था, इसलिये चतुर और दक्ष समझा जाता था यद्यपि बेपैंदा श्रेणी के लोगों की तरह उसका विश्वास कम किया जाता था अपनी निपुणता और दक्षता के बावजूद वह ऋण में डूबा रहता था। जब उसका देहान्त हुआ तो उसने अपने इकलौते बेटे के लिये बहुत थोड़ी जायदाद छोड़ी और वह भी भारी रुपये के एवज दूसरों के पास गिरवी थी। मगर उसने अपने बेटे के लिये शिक्षा का सुप्रबंध अवश्य कर दिया था। निकोलाईच फ्रांसिसी और अंग्रेजी बहुत अच्छी बोलता था और बुरी जर्मन भी बोल लेता था। पंद्रह वर्ष की अवस्था में निकोलाईच इस योग्य हो गया था कि वह बिना झिझक भद्रलोकों के ड्राईंग रूप में प्रवेश करे, वहां खूब चहके और उचित

समय पर वहाँ से चला आये। पिता ने पुत्र के लिये असंख्य सम्बंध जुटला दिये थे। दो 'रबरों' के दर्मयान अथवा एक सफल "ग्रांड सलेम" के बाद पत्ते मिलाते हुए वह किसी महत्त्वपूर्ण व्यक्ति को जो एक चतुरतापूर्ण खेल पसंद करता था, अपने साथ खेलने का निमंत्रण देना कभी नहीं भूलता था। संबंध जोड़ने में वह पिता से कुछ कम नहीं था। जब वह यूनिवर्सिटी में पढ़ता था, उसने कई योग्य लड़कों को अपना मित्र बनाया था और अच्छे अच्छे घरों में उसका स्वागत होता था। उसका प्रत्येक स्थान पर स्वागत होता था। वह बहुत ही सुन्दर, शान्त, विनोदशील, सदा ही स्वस्थ और मिलनसार था। वह भली प्रकार समझता था कि कहाँ उसे शिष्ट और नम्र होना चाहिये और कहाँ वह धृष्ट और ढीठ होने का दुसाहस कर सकता है। जीवन उसे मुस्कराता हुआ दीख पड़ता था। उसने 'सभ्य' समाज के रहस्यों को शीघ्र ही समझ लिया। वह उसके नियमों का भली प्रकार पालन करता था। उदाहरणतः वह जीवन की बहुत ही क्षुद्र घटनाओं को बड़ी गम्भीरता से बयान कर सकता था और गम्भीर विषयों को क्षुद्र समझ कर उनके प्रति उदासीन होने का बहाना कर सकता था। इसके अलावा वह बहुत अच्छा नाचता था और इंगलिश फैशन की पोशाक पहनता था सेंट पीटर्जबर्ग में वह थोड़े ही दिनों में बहुप्रिय और बहुगुण-सम्पन्न नवयुवक प्रसिद्ध हो गया। निकोलाईच सचमुच चतुर-अपने पिता से भी चतुर था और निःसंदेह वह उससे अधिक शिक्षित और योग्य भी था। वह सभी विद्यायें जानता था, कवितायें लिखता था और थियेटर में भी उसका काम कुछ बुरा नहीं होता था। इस समय उसकी उमर केवल अठाईस वर्ष थी। इस उम्र में भी कमीशनर के पद पर था और एक ऊँची हैसीयत रखता था। उसे अपनी शिक्षा-दीक्षा में पूर्ण विश्वास था और वह बड़े ही उत्साह और प्रसन्नता से उन्नति करता जा रहा था। उसका जीवन अविघ्न बीत रहा था। वह प्राय छोटे बड़े सभी

से घुलमिल कर रहता था और उसे भ्रम था कि वह लोगों को विशेषतः औरतों को भली प्रकार समझता है। यह ठीक है कि वह उनके साधारण छिद्रों से परिचित था। चूंकि वह कवि और कलाकार होने का भी दम भरता था, इसलिये कल्पना, उत्सुकता और आंतरिक उल्लास में भी बह जाता था, इसलिये ऊँचे समाज के बन्धे टिके नियमों से कभी कभी एक हद तक अपने आपको मुक्त भी कर लेता था और निचले वर्ग के उन लोगों से मेल जोल रखने में कोई हानि नहीं समझता था, सभ्य समाज जिनकी हमेशा उपेक्षा करता था। आम तौर पर वह स्वतंत्र और स्वच्छंद समझा जाता था, वास्तव में वह धूर्त और कठोर था। बड़े से बड़े उन्मादोत्सव पर भी उसकी चतुर भूरी नन्ही आंखें बड़ी सावधानी से देखती रहती थीं कि उसके आस पास क्या हो रहा है। यह साहसी स्वच्छंद नौजवान किसी समय भी सर्वथा भावुकता के आधीन नहीं होता था। यह कहना उसके साथ अन्याय होगा कि उसने कभी अपनी सफलताओं का बखान नहीं किया। ओ-नगर में पहुँचते ही उसका मेरिया दमितरीवना के परिवार से परिचय हो गया—और उनके साथ वह जल्द ही बेतकल्लुफ हो गया। मेरिया दमितरीवना उससे बहुत खुलकर मिलती थी।

पैंशिन ने कमरे में प्रत्येक व्यक्ति को झुकाकर नम्रतापूर्वक प्रणाम किया। मेरिया दमितरीवना और इलीजावीटा मिखोलोवना से हाथ मिलाया, गेदोनोवस्की का कंधा धीरे से थपथपाया और फिर एक दम घूम कर लेनोचका का सिर अपने हाथों में थाम लिया और उसके माथे को प्यार से चूमा "क्या तुम्हें इस दुष्ट घोड़े पर चढ़ते डर नहीं लगता?" मेरिया दमितरीवना ने उससे दरियाफ्त किया।

"वह तो बहुत ही असील है। लेकिन सुनो, मैं एक बात से डरता जरूर हूँ और वह बात यह है कि तुम्हारे सर्जी पेत्रोविच से ताश खेलते डर लगता है। कल इन्होंने मुझे बुरी तरह हराया।"

गेदोनोवस्की बनावटी ढंग से मुस्कराया। वह सेंट पीटर्जबर्ग के सफल नौजवान अफसर को, जो गवर्नर का सम्बन्धी भी था, खुशामद की हद तक प्रसन्न करने का यत्न कर रहा था। मेरिया दमितरीवना से अपनी वार्तालाप के दरम्यान में वह बार बार पैंशिन की बहु-योग्यता का उल्लेख करता था—"सचमुच, कोई भी उसकी प्रशंसा किये बिना नहीं रह सकता।" वह यह भी कहता था, "ऊँचे से ऊँचे सरकारी हल्कों में उसका रसूख बढ़ रहा है। वह एक आदर्श अफसर है घमंडी तो नाम को नहीं।" इसमें कुछ अतिशयोक्ति नहीं थी। सेंट पीटर्जबर्ग में भी उसे आदर्श अफसर समझा जाता था। उसमें जिम्मेदारी निभाने की असाधारण योग्यता थी। एक सांसारिक और चतुर मनुष्य का जो आचरण होता है, उसके अनुसार वह अपनी सफलता की अधिक चर्चा नहीं करता था, जैसे इस काम का उसके निकट कोई महत्व ही न हो, वह तो इससे बहुत बड़ी जिम्मेदारी संभालने में समर्थ था। न सिर्फ दूसरों की दृष्टि उस पर पड़ती थी, बल्कि स्वयं उसे विश्वास था कि यदि उसने चाहा, तो एक न एक दिन वह मंत्रिमंडल का सदस्य बन सकता है।

"आप कहते हैं कि मैंने आपको साफ हरा दिया" गेदोनोवस्की बोला, "लेकिन साहब परसों कौन था जिसने मुझसे बारह रूबल जीते थे और फिर उसदिन....."

"ओह तुम बड़े धूर्त हो।" पैंशिन ने बड़े नम्र स्वर लेकिन अवज्ञा-पूर्ण उदासीनता से उसे टोका और फिर उसकी ओर पीठ घुमाकर लीज़ासे सम्बोधित हुआ:—

"मुझे गानों की वह पुस्तक नहीं मिली। यहाँ तो बहुत ही घटिया पुस्तकें मिलती हैं। मैंने मास्को लिख दिया है और उम्मीद है कि एक सप्ताह में वह पुस्तक आ जायेगी। हाँ, एक बात।"

उसने कहना जारी रखा, "मैंने कल एक नया गीत लिखा है।

उसके शब्द भी मेरे अपने हैं। क्या तुम उसे सुनोगी? मैं नहीं जानता, वह कैसा बन पाया है। बेलेंटसीना को अच्छा लगा, लेकिन उसकी राय का मैं कुछ महत्व नहीं समझता हूँ। मैं जानना चाहता हूँ कि तुम उसे कैसा पसंद करती हो। लेकिन इस समय तबीयत न हो तो फिर किसी समय....."

"फिर क्यों?" मेरिया दमितरीवना ने टोका" "अभी क्यों नहीं?"

"जैसी आपकी इच्छा," पैशिन ने उत्तर दिया। उसके होठों पर एक मधुर मुस्कान प्रकट हुई जो दूसरे ही क्षण लुप्त हो गई। वह स्टूल को अपने घुटने से परे धकेल कर पियानो पर जा बैठा और एक दो तार झुन झुनाने के बाद साफ़ स्वर निकाल कर उसने अपना गीत शुरू किया:—

चांद तूफानी लहरों पर नाच उठेगा।
वह मेघों में से झांक रहा है,
और वह अपनी जादू भरी किरणों द्वारा,
आकाश ही से लहरों पर शासन करता है।
ऐ प्रेम, तो वह चांद है, जो मेरे मन में तूफान उठाता है।
मेरा मन भी एक सागर है,
जिसमें हर्ष और विषाद की लहरें उठती हैं, जिसमें मछलियां क्रीड़ा करती हैं।
वह तेरे साथ थिरकता है।
मेरा मन तेरी कांक्ष करता है, और तुझसे शिकवा करता है।
मैं प्रेम में मूर्छित हो जाता हूँ।
लेकिन तुझे मैं शांत और गम्भीर ही देखता हूँ
उस दूरस्थ चंद्रमा की तरह।

पैशिन ने गीत का अंतिम भाग विशेष ज़ोर देकर और भावुकता में डूब कर गाया और स्वर में लहरों का उतार चढ़ाव पैदा करने

का यत्न किया। यह शब्द कहने के उपरान्त "मैं प्रेम में मूर्छित हो जाता हूँ।" उसने धीमी आह भरी, आंखें झुकालीं और गाना बंद कर दिया। गाना बंद होते ही लीज़ा ने संगीत की प्रशंसा की। मेरिया दमितरीवना बोली; "क्या खूब! बहुत ही सुन्दर है," और गेदोनोव्स्की ने तो तारीफ़ का पुल बांध दिया, "शानदार! संगीत और भाव दोनों ही शानदार हैं।" लेनोचका, बाल सुलभ उत्सुकता से गीतकार की ओर देखने लगी। सारांश यह कि नौजवान कवि के गीत से सभी लोग प्रसन्न हुए। दरवाज़े पर एक बूढ़ा आदमी खड़ा था। लगता था कि वह अभी आया है। उसके झुके चेहरे और कंधे हिलाने से जो भाव व्यक्त हुआ उससे मालूम होता था कि पैशिन के गीत में कल्पना की उड़ान चाहे कितनी ही ऊँची रही हो, बूढ़े को उससे प्रसन्नता प्राप्त नहीं हुई। उसने एक मोटे रूमाल से बूटों की गर्द झाड़ी जिससे उसकी आंखें सहसा मिच सी गईं, होंठ बंद हो गये, झुका हुआ शरीर और झुक गया और वह धीरे धीरे कमरे में दाखिल हुआ।

"क्रिस्टोफ़र फयोदोरिच को सादर प्रणाम!" पैशिन बोला और वह दूसरे लोगों के साथ अपनी जगह से उठ खड़ा हुआ, "मुझे मालूम नहीं था कि आप भी आगये हैं, वरना आपके सामने गीत गाने का साहस मैं न करता। मुझे मालूम है कि आप कच्चा गाना पसंद नहीं करते।"

"मैंने नहीं सुना" नवागन्तुक ने टूटी-फूटी भाषा में कहा। उसने सब को झुक कर प्रणाम किया और विकृत सा भाव बनाकर कमरे के मध्य में ठहर गया।

"मोसियो लेम, मेरा ख़याल है कि आप लीज़ा को गाने का पाठ देने आये हैं!" दमितरीवना ने पूछा।

"नहीं, इलिज़ावेटा मिखाइलोवना को नहीं, बल्कि इलेना मिखाइलोवना को।"

"बहुत खूब ! लीनोचका, मास्टर जी के साथ ऊपर जाओ।"

बूढ़ा आदमी, नन्हीं लड़की के साथ कमरे से बाहर जाने ही वाला था कि पैंशिन ने उसे रोक कर कहा—"क्रिस्टोफ़र फ्योदोरिच पाठ-वाठ को भाड़ में डालिये, यहाँ बैठिये, मैं और इलिज़ावेटा मिखोलेवना अभी सौनेट गायेंगे।"

बूढ़ा आदमी अपने आप कुछ बड़बड़ाया।

पैंशिन ने अशुद्ध जर्मन में कहना जारी रखा—

"इलिज़ावेटा मिखोलोवना को आपने जो धार्मिक भजन समर्पित किया है, उसने वह मुझे दिखाया। बहुत अच्छा लिखा है। आप यह मत समझिये कि मैं पक्का राग पसंद ही नहीं करता। कई बार उसे समझना कठिन होता है, वरना पक्का गाना ही वास्तव में गाना है।"

बूढ़े का चेहरा कानों तक लाल हो गया। उसने आंख के कोनों से लीज़ा को देखा और फिर जल्दी बाहर चला गया।

मारिया दमित्रीवना ने पैंशिन से अपना गीत दोबारा सुनाने को कहा। लेकिन उसने यह कह कर इनकार कर दिया कि मैं बूढ़े जर्मन के कानों को तकलीफ देना नहीं चाहता। बल्कि उसने लीज़ा से कहा कि आओ अब हम सौनेट गायें। इस पर मेरिया ने एक सांस छोड़ी और गेदोनोवस्की से कहा "चलो हम बाग में टहलेंगे और अपनी बात जारी रखेंगे।" उसने कहा, "मैं चाहती हूँ कि फेदया के मामले में आप मुझे सलाह दें।" गेदोनोवस्की मुस्करा कर उठा, झुक कर प्रणाम किया, हाथ की दो उंगलियों से अपना हैट उठाया, जिस के साथ ही उसने अपने दस्ताने अच्छी तरह तह करके रख छोड़े थे और मेरिया दमित्रीवना के पीछे-पीछे कमरे से बाहर चला गया।

अब पैंशिन और लीज़ा कमरे में अकेले रह गये। लीज़ा ने सौनेट निकाला, उसे खोला और वे दोनों पियानो पर जा बैठे। ऊपर से बाजे की आवाज़ आ रही थी, जिस पर नन्ही लेनोचका अभ्यास कर रही थी।

: ५ :

क्रिस्टोफ़र थियोडोर लेम का जन्म सन १८४६ में सेक्सोनी के राज्य में स्थित किमनिज़ नगर में हुआ। उसके माता पिता निर्धन संगीतकार थे। उसका पिता फ्रांसिसी सिंधा और माता बीन बजाती थी। आठ वर्ष की अवस्था ही में वह अनाथ होगया और दस वर्ष की आयु में वह संगीत द्वारा अपनी जीविका कमाने लगा। चिरकाल तक वह घूम फिर जीवन बिताता रहा। सरायों, मेलों और किसानों के ब्याह शादियों में, जहां कहीं अवसर मिलता, गाना सुनाया करता था। आख़िर उसे आरकैस्टरा में स्थान मिल गया। जहां उन्नति करते-करते उसे आचार्य का पद मिल गया। उसका गला विशेष अच्छा नहीं था, पर उसे गायन-विद्या का पूर्ण ज्ञान था। अठारह साल की आयु में वह रूस चला आया। वहां उसे एक बड़े धनी आदमी ने बुलाया था। यद्यपि उसे संगीत से घृणा थी, तथापि वह दिखावे के लिये आरकैस्टरा रखता था। लेम सात वर्ष तक उसके यहाँ गायनाचार्य के पद पर रहा और फिर ख़ाजो हाथ अलग हो गया। इस धनी आदमी का दिवाला पिट गया। वह लेम को एक प्रामिसरी नोट देना चाहता था, लेकिन सोचा कि नोट देकर उसके अपने पास कुछ नहीं रहेगा, इस लिये उसने लेम को बिना कुछ दिये विदा कर दिया। लेम को रूस छोड़ देने की सलाह दी गई, लेकिन वह महान रूस में महान आकांक्षायें लेकर आया था और वहांसे भिखारी के रूप में जाना नहीं चाहता था। उसने वहीं रह कर किस्मत आज़माने का फैसला किया। बेचारा

जर्मन बीस साल से किस्मत आज़माई कर रहा था। उसने बहुत-से कुलीन परिवारों में काम किया, मास्को और फिर छोटे-छोटे शहरों में मारा मारा फिरा, बहुत से दुख झेलने पड़े, बहुत-सी मुसीबतों का सामना करना पड़ा, दरिद्रता ने कभी उसका पिंड नहीं छोड़ा, लेकिन अपने प्यारे देश को लौटने की साध उसके मन में हमेशा बनी रही, जोकि उसके दुखी जीवन का एक मात्र सहारा था। उसके जीवन की यही साध पूरी नहीं हुई। पचास साल की उम्र में मन और शरीर से टूटा हारा वह ओ-नगर में पहुंचा और स्थाई रूप से वहीं रहने लगा। अब उसने रूस से, जिसे वह नफ़रत करता था, चले जाने का विचार ही मन से निकाल दिया था। वह संगीत की ट्यूशन करके मुश्किल से जीविका कमाता था। लेम देखने में आकर्षक नहीं था। उसका कद छोटा, शरीर झुका हुआ, कंधे बाहर को निकले हुए, पेट भीतर को धंसा हुआ, चौड़े चौड़े भारी पांव, सफेद हाथों पर नुकीली उंगलियां, चेहरा झुर्रीदार और गाल धंसे हुए थे। वह अपने सख्त ओठों को प्रतिक्षण चबाता रहता था, जिससे मुखाकृति विकृत और कुरूप जान पड़ती थी। मोटे-मोटे स्याह बाल माथे पर बिखरे रहते थे, और स्थिर आँखें चिनगारियों की तरह चमकती थीं। वह झूलते हुए चलता था और कई बार उसकी गतिविधि उस उल्लू के सदृश्य होती थी, जिसे पिंजरे में बंद कर रखा हो, और जो यह महसूस कर रहा हो कि लोग उसे देख रहे हैं और वह अपनी तेज़ तेज़ पीली आंखों से इधर-उधर देखने के सिवा और कुछ न कर सकता हो। दुख,—महान दुखः ने अपनी अमिट छाप बेचारे संगीत कार के मन पर अंकित कर दी थी। दुख ने उसके जीवन के आकर्षक पहलू को भी नष्ट कर दिया था। लेकिन फिर भी उन लोगों को जो पहली ही दृष्टि में और मनुष्य के रंग रूप ही से उसके व्यक्तित्व का अनुमान नहीं लगाते, इस दरिद्रता के मारे व्यक्ति में कुछ मानवता, कुछ निष्ठा और कुछ असाधारणता दिखाई देती

थी। वह बाश और हंडेल का प्रशंसक, अपनी कला का आचार्य, निर्मल स्वच्छ कल्पना, और जर्मन जाति के विशेष गुण, मनोबल और दृढ़ संकल्प से सम्पन्न था। कौन जानता है कि यदि परिस्थितियाँ अनुकूल होतीं, तो उसकी गिनती अपने देश के महान संगीतकारों में होती, परन्तु उसका जन्म किसी अशुभ नक्षत्र में हुआ था। उसने बहुत कुछ लिखा था लेकिन उसका एक भी गीत प्रकाशित नहीं हो सका। उसमें परिस्थितियों को अनुकूल बनाने की योग्यता नहीं थी। जो छाप सकते थे, उन तक उस की पहुँच नहीं थी, अथवा वह उचित समय पर अपने आप को हरकत में नहीं ला सका था। एक बार, बहुत पहले उसके एक प्रशंसक और मित्र ने, जो जर्मन ही था और उसी की तरह दरिद्र था, अपने खर्च से उसके दो गीत छपवाये थे, लेकिन समस्त संस्करण दुकानदारों की अलमारियों में धरा रह गया और अब तो उन्हें यों भुला दिया गया था, जैसे किसी ने एक रात उन्हें नदी में बहा दिया हो। आखिर लेम ने अपने आप को भाग्य के सहारे छोड़ दिया। अब तो उस पर बुढ़ापा छा रहा था और उसके हाथों की तरह उसका मस्तिष्क भी कठोर और सुन्न होता जा रहा था वह आज तक अविवाहित था और एक छोटे से घर में अपने रसोईये के साथ रहता था। वह लम्बी-लम्बी सैर करने, बाईबल का पाठ करने और शेक्सपीयर का जर्मन अनुवाद पढ़ने में दिन बिताता था। उसने चिरकाल से कोई गीत नहीं लिखा था, लेकिन अब लीज़ा ने, जो उसकी बेहतरीन शिष्य थी, उसकी आत्मा को झकझोर दिया था। पैशिन ने जिस गीत का ज़िक्र किया था, वह उसने लीज़ा के लिये लिखा था। इसके शब्द उसने अपनी भजनों की पुस्तक से लिये, जिस में उसने कुछ अपने बनाये हुए गीत भी लिख रखे थे। इस गीत के दो भाग थे, एक प्रसन्नता को व्यक्त करता था और दूसरा विषाद को। अंत में दोनों भाव इस प्रार्थना में मिश्रित हो जाते थे—"हे दीनबंधु, परम

पिता परमात्मा ! पापियों को क्षमा कर और हम नश्वर प्राणियों को अधार्मिक विचारों और सांसारिक इच्छाओं से मुक्त कर।" मुख्य पृष्ठ पर बड़ी मेहनत से और सुंदर अक्षरों में यह कहावत अंकित की थी—"सिर्फ संत पुरुष ही न्याय शील हैं"—धार्मिक गीत जिसे उसके अध्यापक क. ट. ग. लेम ने अपनी प्रिय शिष्य इलिज़ावेटा कालिटिना के लिये बनाया और समर्पित किया। "सिर्फ संत पुरुष ही न्याय शील है" और "इलिज़ावेटा कालिटिना" शब्द विशेष रूप से किरणों के चक्कर में बनाये गये थे। और अन्त में लिखा था—"तुम्हारे, और सिर्फ तुम्हारे लिये।" यही कारण था कि जब पैशिन ने इस भजन की बात पूछी तो लेम कानों तक सुर्ख हो गया और उसने भर्त्सना की दृष्टि से लीज़ा को देखा।

: ६ :

पैंशिन ने ऊंचे और स्थिर स्वर में सौनेट गाना शुरू किया। वह उसके दूसरे पद पर पहुँच गया, लेकिन लीज़ा चुप बैठी रही, उसने पैंशिन का साथ नहीं दिया। लीज़ा की आँखें उस पर गड़ी हुई थीं, उनमें क्षोभ भरा था, ओठों पर से मुस्कराहट विलुप्त हो गई थी, मुखाकृति कठोर—बल्कि उदास थी। "क्या बात है?" पैंशिन ने पूछा।

"तुमने अपना वादा क्यों पूरा नहीं किया?" वह बोली, "मैं ने क्रिस्टोफ़र फ्योदोरिच का भजन तुम्हें इस शर्त पर दिखाया था कि तुम इस बारे में उससे कुछ नहीं कहोगे।"

"मुझे सख्त अफ़सोस है, इलिज़ावेटा मिखालोवना!" यह बात अचानक मेरे मुंह से निकल गई।

"तुमने उन्हें और मुझे क्षुब्ध किया है। अब वे मुझ पर विश्वास नहीं करेंगे।"

"इलिज़ावेटा मिखालोवना, मैं आदत से मजबूर हूँ। मैं बचपन से ही जर्मनों से नफ़रत करता हूँ। उन्हें देख ही नहीं सकता। कोई जर्मन मिल जाये, तो मुझे उसे सिताने से आनंद प्राप्त होता है।"

"व्लाडीमीर निकोलाईच, तुम यह बात कैसे कहते हो? यह तो बेचारा दरिद्र, थका हारा और निस्सहाय व्यक्ति है। क्या तुम्हें उस पर दया नहीं आती? क्या तुम्हें इसे भी सताकर आनन्द मिलता है?"

पैंशिन लज्जित और अप्रतिभ हो गया।

"इलिज़ावेटा तुम दुरुस्त कहती हो," वह बोला, "यह मेरी

पुरानी कमजोरी है। मुझे इस तरह न देखो। मैं स्वयं जानता हूँ। मुझ में समय के उपयुक्त बात न कहने का जो दोष है, उसने मुझे बहुत हानि पहुँचाई है। इसी कारण मैं अहंवादी कहलाता हूँ।"

पैंशिन चुप हो गया। वह किसी भी विषय पर वार्तालाप शुरू करता, उसे अपने आप पर खत्म करता था, लेकिन वह उसे एक शान के साथ, आत्म विश्वास से और आनंद पूर्वक खत्म करता था। उसने फिर कहा, "उदाहरण के लिये अपने ही घर को लीजिये। तुम्हारी माँ मुझे पसंद करती है। वह बड़ी मेहरबान है। तुम—हाँ, मैं नहीं जानता कि मेरे बारे में तुम्हारी क्या राय है, अलबत्ता तुम्हारी बुआ के बारे में जानता हूँ कि वह मुझे देखना तक गवारा नहीं करती। शायद मैंने उसे अपनी गुस्ताख़ी अथवा किसी मूर्खता भरे संभाषण से नाराज़ कर दिया है। अब वह मुझे पसंद नहीं करती, क्यों नहीं करतीं ना?"

"नहीं, वह तुम्हें पसंद नहीं करती।" लीज़ा ने एक क्षण चुप रह कर स्वीकार किया।

पैंशिन पियानो के सुरों पर उंगलियाँ चलाने लगा और उसके होंठो पर एक व्यंगभरी मुस्कराहट दौड़ गई।

"तुम्हारा क्या ख्याल है?" उसने पूछा, "क्या तुम भी मुझे अंहवादी समझती हो?"

"मैं तुम्हें बहुत थोड़ा जानती हूँ।" लीज़ा ने उत्तर दिया, "लेकिन मैं तुम्हें अहंवादी नहीं समझती, बल्कि मुझे तो तुम्हारा कृतज्ञ होना चाहिये, तुम....."

"मैं जानता हूँ, मैं जानता हूँ, तुम क्या कहना चाहती हो," पैंशिन ने टोका, उसकी उंगलियां अब भी सुरों पर दौड रही थीं, "मैंने तुम्हें संगीत सिखाया, पुस्तकें दीं और बुरे भले चित्रों से तुम्हारा एलबम सजाया। यह सब कुछ करने के बावजूद मैं अंहवादी हो सकता

हूँ। मैं विश्वास के साथ कहता हूँ कि तुम्हें मेरी संगति नीरस नहीं लगती और तुम मुझे बुरा भी नहीं समझतीं। लेकिन फिर भी तुम सोचती हो कि एक मज़ाक के लिये, जैसा कि कहावत है—मैं मित्र क्या पिता का भी लिहाज नहीं करता।"

"तमाम समाजी लोगों की तरह तुम भी कई बार उदासीनता और विचार शून्यता प्रकट करते हो, तुम्हारे बारे में मेरा यह खयाल है।" लीज़ा बोली।

पैंशिन की त्योरियां किसी कदर चढ़ गईं।

"अच्छा।" वह बोला, "अब मेरा ज़िक्र छोड़िये। आओ हम सौनेट गायें।" सामने पड़ी गीतों के पुस्तक के पन्नों को दुरुस्त करते हुए फिर बोला, "मैं तुमसे एक बात कहना चाहता हूँ। मुझे तुम जो चाहो कहलो, अगर तुम चाहो तो अहंवादी भी कह सकती हो, लेकिन मुझे समाजी जीव (Societyman) मत कहो। इस उपाधि से मुझे सख्त घृणा है। अच्छा या बुरा, मैं एक कलाकार भी हूँ। और मैं अपने आपको एक तुच्छ कलाकार ही समझता हूँ। हाथ कंगन को आरसी की आवश्यकता नहीं। इसका प्रमाण मैं तुम्हें अभी दे सकता हूँ। आओ हम गाना शुरू करें।"

"हाँ, आओ हम शुरू करें।" लीज़ा बोली।

अगरचे पैंशिन ने कई बार गलती की, फिर भी पहला पद उन्होंने अच्छी तरह गाया। वह अपने बनाये हुए गीत और वह गीत जिनका उसने अभ्यास किया हो, अच्छी तरह गा लेता था, लेकिन वह पुस्तक में से पढ़कर गाने का आदी नहीं था। सौनेट का दूसरा भाग जल्दी जल्दी गाया जा सकता था और एक अत्यन्त उदासीन भावना को व्यक्त करता था। इसमें वह साथ न दे सका। उसने एक कह कहा लगा कर गाना बंद कर दिया और कुर्सी पीछे खेंच ली।

"बेकार है," वह बोला, "मैं आज गा नहीं सकता। यह तो

अच्छा हुआ कि लेम सुनने के लिये ठहरा नहीं, वरना उसे बड़ा दुख होता।"

लीज़ा पियानो बंद करके उठ खड़ी हुई और पैंशिन से बोली, "तो हम क्या करें?"

"क्यों, क्या तुम एक क्षण के लिये भी बेकार नहीं बैठ सकतीं? अच्छा, अगर यही बात है, तो जितनी देर उजाला है, आओ हम कुछ चित्र ही बनालें।"

लीज़ा दूसरे कमरे में एलबम लेने चली गई। पैंशिन ने एकांत देख कर जेब से कैमरिक का रूमाल निकाला, उस से नाखुनों को मला और अपने हाथों को ध्यान से देखने लगा। वे सफेद और उजले थे और बायें हाथ की एक उंगली में सोने की अंगूठी थी। लीज़ा के लौटने पर पैंशिन खिड़की के निकट जा बैठा और उसने एलबम खोल लिया।

"ओह!" वह बोला, "तुम तो मेरा जंगल का दृश्य पूरा कर रही हो, खूब, बहुत ही खूब! पैंसिल जरा मुझे दो और इधर देखो। यह लकीरें कुछ गहरी होनी चाहियें।"

पैंशिन ने जल्दी जल्दी पैंसिल चलानी शुरू की। वह हमेशा यही दृश्य बनाया करता था। सामने लम्बे घने वृक्ष थे। पृष्ठ भूमि में छोटी सी चरागाह और आकाश की ओर उठता हुआ पहाड़। वह बना रहा था और लीज़ा कंधों पर से देख रही थी।

"चित्रकारी में, जैसा कि आमतौर पर जीवन में," पैंशिन अपने सिर को पहले बायें और फिर दायें घुमाते हुए बोला, "मुख्य बात फुर्ती और साहस है।"

उसी समय लेम ने कमरे में प्रवेश किया और प्रणाम करके लौटने ही वाला था कि पैंशिन ने एलबम एक ओर फेंक कर उस का मार्ग रोक लिया।

"और क्रिस्टोफ़र फ्योदोरिच, आप जा कहां रहे हैं? क्या आप हमारे साथ चाय नहीं पियेंगे?"

"मैं घर जा रहा हूँ।" उसने जवाब दिया, "मेरे सिर में दर्द है।" "बैठिये, आप आवश्य बैठिये। हम शेकस्पीयर पर विचार विनिमय करेंगे।"

"मेरे सिर में दर्द है।"

"हमने आपके बिना ही सौनेट गाना शुरू किया," पैंशिन ने प्यार से उसकी कमर में हाथ डाल कर और मधुर मुस्कान के साथ कहना जारी रखा, "लेकिन हमें सफलता नहीं मिली। आप को शायद विश्वास न आये। मैं दो पद भी ठीक से नहीं गा सका।"

"बेहतर है कि आप अपना वह गीत दुबारा गावें।" लेम ने उस का हाथ परे हटाते हुए कहा और वह बाहर निकल गया।

लीज़ा उसके पीछे दौड़ी और ड्योढ़ी में उसे पा लिया। क्रिस्टोफ़र फ्योदोरिच, मेरी बात सुनिये।" लीज़ा ने जर्मन में कहा, वह आंगन से गुज़र कर दरवाज़े के निकट उसके साथ साथ चल रही थी। "मैंने आप को नाराज किया है, इसके लिये मुझे क्षमा कर दीजिये।"

लेम ने कुछ जवाब नहीं दिया।

"मैंने व्लाडीमीर निकोलाइच को आप का गीत इस लिये दिखाया था कि मुझे विश्वास था कि वह उसे पसंद करेगा। और वाकई उस ने वह गीत बहुत पसंद किया है।"

लेम ठहर गया।

"कोई बात नहीं।" उसने रूसी में कहा और फिर अपनी मातृ-भाषा में बोला, "लेकिन तुम्हें मालूम होना चाहिये कि उसे इन बातों की जरा भी समझ नहीं। वह एक नौ सिखिया है। इस से अधिक कुछ नहीं।

"आप उसके साथ न्याय नहीं कर रहे हैं।" लीज़ा बोली, "वह सब कुछ समझता है और वह स्वयं गीत लिखता है।"

"हां, लिखता है, लेकिन वह घटिया होते हैं—बहुत से मामूली लोग उन्हीं को पसंद करते हैं, और उसे पसंद करते हैं इससे वह प्रसन्न रहता है। यों सब ठीक है। मैं नाराज नहीं हूँ—वह गीत और मैं, दोनों ही पुराने और मूर्ख हैं इस पर मैं तनिक लज्जित अवश्य हूँ, और कुछ बात नहीं।"

"क्रिस्टोफ़र फ्योदोरिच मुझे क्षमा कीजिये।" लीज़ा फिर बड़बड़ाई। "अच्छा" उसने फिर रूसी भाषा में कहा, 'तुम एक अच्छी लड़की हो, ...वह देखो कोई आ रहा है। नमस्ते, तुम बहुत ही अच्छी लड़की हो।"

लेम जल्दी जल्दी दरवाजे की ओर बढ़ा, जिस में से एक अजनबी अंदर दाखिल हुआ। वह एक भला आदमी था, खाकी कोट और चौड़े किनारों वाला फूस का कोट पहने हुए था। लेम ने उसे नम्रता से प्रणाम किया (अजनबियों को प्रणाम करना उसका नियम था) और फिर झाड़ियों में ओझल होगया। अजनबी उसे जाते हुए आश्चर्य से देखता रहा। उसने लीज़ा को ध्यान से देखा और उसकी ओर बढ़ गया।

: ७ :

"तुमने मुझे पहचाना नहीं" नवागन्तुक ने अपना हैट उतारते हुए कहा। "लेकिन मैं तुम्हें पहचानता हूँ। गो इस बात को आठ साल बीत गये, जब मैंने तुम्हें देखा था। तुम उस वक्त नन्हीं सी थीं। मेरा नाम लाव्रेस्की है। क्या तुम्हारी माता जी घर पर हैं? क्या मैं उन्हें मिल सकता हूँ।"

"वे आपसे मिलकर बहुत प्रसन्न होंगी," लीज़ा बोली, "उन्हें आपके आने की सूचना मिल चुकी है।"

"मेरा ख्याल है कि तुम्हारा नाम इलिज़ावेटा है?" लाव्रेस्की ने सीढ़ियां चढ़ते हुए कहा।

"जी हाँ।"

"मैं तुम्हें अच्छी तरह जानता हूँ। तुम्हारा चेहरा ही ऐसा है कि आदमी उसे भूल नहीं सकता। मैं तुम्हारे लिये मिठाई लाया करता था।"

लीज़ा का मुख लज्जा से आरक्त हो गया और वह सोचने लगी। कैसा भला आदमी है! लाव्रेस्की एक क्षण के लिये हाल में रुक गया। लीज़ा ड्राईङ्ग रूम में चली गई, जहाँ पैंशिन की आवाज़ और कहकहे गूंज रहे थे। वह मेरिया दमितरीवना और गेदोनोवस्की को जो बाग में सैर करके लौट आये थे, एक देहाती चुटकला सुना रहा था। और अपनी बात पर आप ही हंस रहा था। लाव्रेस्की का नाम सुनते ही मेरिया दमितरीवना का रंग पीला पड़ गया और उसे

मिलने के लिये वह घबराई हुई सी आगे बढ़ी।

"मेरे प्यारे भाई, आपका क्या हाल है!" उसने व्यथित स्वर और रुंधे हुए गले से कहा, "आपको देखकर मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हुई।"

"आप प्रसन्न तो हैं प्यारी बहिन!" लाव्रेस्की ने मेरिया दमितरीवना का हाथ दबाते हुए कहा, "आप पर विधाता की कृपा है ना?"

"बैठिये बैठिये, मेरे प्यारे फ्योदोर इवानिच। ओह आपको देखकर मुझे कितनी प्रसन्नता हुई। पहले मैं अपनी पुत्री लीज़ा से आपका परिचय····"

"मैं लीज़ा को पहले ही अपना परिचय दे चुका हूँ।" लाव्रेस्की ने रोका।

"मों सयोर पैशिन···सर्जी मेत्रोविच गेदोनावस्की···बैठिये। आप वाकई यहाँ हैं। मुझे अपनी आँखों पर विश्वास नहीं होता। आप का हाल क्या है?"

"आप देख ही रही हैं। अच्छा हूँ, बहिन! आप भी वैसी ही हैं। इधर आठ वर्ष में कोई विशेष परिवर्तन नहीं आया।"

"बहुत समय हुआ कि हम एक दूसरे से अलग हुए थे।" मेरिया दमितरीवना ने कहा, "आप अब कहा से आये हैं? कब आये हैं; क्या आपको आये बहुत दिन हो गये।"

"मैं बर्लिन से अभी आया हूँ।" लाव्रेस्की ने उत्तर दिया, "और कल मैं गांव जा रहा हूँ--शायद चिरकाल तक वहाँ रहूँगा।"

"आप लाव्रेस्की में रहेंगे ना?"

"नहीं, लाव्रेस्की में नहीं। यहाँ से लगभग पच्चीस कोस पर मेरा गाँव है। मैं ने वहीं जा कर रहने का निश्चय किया है।"

"क्या यह वही जगह है, जो आपको ग्लाफ़ीरा पेत्रोवना से विरासत में मिली?"

"बिलकुल वही।"

"लेकिन फ़्योदोर इवानिचा लाव्रेस्की में भी तो आपके पास इतना सुन्दर घर है।"

लाव्रेस्की कुछ कुछ सा हो गया।

'हाँ.....लेकिन गाँव में भी एक छोटा-सा घर है, जो मेरे लिये काफी है, और इस समय इस से अधिक मुझे कुछ नहीं चाहिये।"

मेरिया दमितरीवना इतना घबरा गई कि वह अपनी कुर्सी में दुबक गई और उसके मुख पर निराशा जनक भावना प्रकट हुई। पैंशिन उसकी सहायता को आगे आया और उसने लाव्रेस्की को बातों में लगा लिया। धीरे धीरे मेरिया दमितरीवना होश में आई वह अपनी आराम कुर्सी में धंस कर बैठ गई। वह कभी कभी एक आध शब्द कह देती थी और अतिथि की ओर सदय नेत्रों से देख लेती थी। वह आहें भी भर रही थी और उसकी भाव-भंगी इतनी उदासीन थी कि आखिर अतिथि से न रहा गया, उसने पूछा:—

आप स्वस्थ तो हैं न?"

"भगवान की कृपा से मैं बिलकुल ठीक हूँ।" मेरिया दमितरीवना ने उत्तर दिया और बोली, "लेकिन आप यह सवाल क्यों पूछते हैं?"

"इसलिये कि मुझे संदेह हुआ था कि शायद आप की तबीयत ठीक नहीं है।"

मेरिया दमितरीवना ने यों देखा जैसे उसकी प्रतिष्ठा आहित हुई हो, "ओह यही बात है, तो मुझे क्या पड़ी है।" वह बड़बड़ाई। "आप पर तो इस घटना का कुछ भी असर नहीं जिस तरह बतख़ की पीठ पर पानी का कोई असर नहीं होता। कोई दूसरा मनुष्य होता तो इस शोक में सूख कर काँटा हो गया होता, लेकिन आप के साथ तो उलटी बात है, आप तो पहले से भी मोटे हो गये हैं।" मेरिया दमितरीवना अब बड़बड़ा नहीं रही थी बल्कि उच्च और स्पष्ट स्वर में अपनी बात कह रही थी।

लाव्रेंस्की अपने आप पर वाकई प्रारब्ध का कोप नहीं समझता था। उसका सुर्ख रंग, विशेष रूसी मुखाकृति, लम्बा सफेद माथा, मोटी नाक और गोल चौड़ा मुंह, ऐसा लगता था, जैसे स्टीप के खुले मैदानों का प्राचीन विक्रम और शक्ति उसके शरीर का अविच्छेद अंग बन चुकी हो। उसका शरीर सुगठित था और उस के बाल एक बच्चे के बालों की तरह सुंदर और घुंघराले थे। सिर्फ उस की आंखें, जो नीली, बड़ी बड़ी और किसी क़दर स्थिर थीं, बहुत थोड़ी मात्रा में शोक अथवा थकन का भाव व्यक्त कर रही थीं—उस का स्वर भी तनिक बैठा हुआ था।

पैंशिन ने वार्तालाप जारी रखा। उसने बात चीत का विषय ही बदल दिया। वह अब खांड साफ करने की विधि बयान कर रहा था। इस बारे में उसने कल ही दो पैम्फ़लेट पढ़े थे, वह उनका उल्लेख किये बिना ही, उन में जो कुछ पढ़ा था, उसे अपने मस्तिष्क की उपज के तौर पर पेश कर रहा था।

"क्या फ़ेदिया आया है!" अकस्मात मार्फ़ा तिमोफ़ेवना की आवाज़ सुनाई दी। "हां, फ़ेदिया ही मालूम होता है," कहते हुए उसने बड़ी तेज़ी से कमरे में प्रवेश किया। लाव्रेंस्की आदर के लिये उठना ही चाहता था कि बुढ़िया ने पहले ही उसे अपने बाहु-पाश में जकड़ लिया। "ओह! मैं तुम्हें देख तो लूं," यह कह कर वह एक क़दम पीछे हट गई, "तुम खूब मोटे ताज़े हो। तनिक बड़े अवश्य हो गये हो। अच्छा अब मेरे हाथ मत चूमो, खुद मुझे चूमो। तुम ने मेरे बारे में काहे को पूछा होगा। खैर, बुआ अभी जीवित हैं! भूल तो नहीं सकते, तुम मेरे हाथों में जन्मे हो, तुम शैतान! चलो, छोड़ो तुम्हें मेरा ख़याल आता भी कैसे! बहुत अच्छा हुआ कि तुम यहां मिलने तो आ गये।" फिर वह मारिया दमितरीवना से बोली, "इन्हें कुछ खाने-पीने को भी दिया?"

"मुझे किसी चीज़ की इच्छा नहीं।"

"लेकिन भाई, कम से कम चाय का एक प्याला तो पीलो। अजीब बात है। वह जाने कहां से चल कर आ रहा है, उसे चाय का प्याला तक नहीं दिया गया। लीज़ा, जाओ, जल्दी प्रबंध करो। मैं जानती हूं कि जब वह छोटा था, तो बड़ा पेटू था, कोई अचरज नहीं कि अब भी वह चाय से खाता हो।"

"मार्फ़ा तिमोफ़ेवना को प्रणाम कहता हूँ।" पैंशिन ने कहा और बुढ़िया के सम्मुख सिर झुकाया।

"क्षमा कीजियेगा" मार्फ़ा ने उत्तर दिया, "अपने इस उल्लास में मैंने आप को देखा नहीं।" वह फिर लाव्रेन्की से बोली "तुम पहले से भी अधिक अपनी मां से मिलते हो। सिर्फ़ तुम्हारी नाक, तुम्हारे पिता की नाक है, और यह तुम्हारे पिता की ही रहेगी। क्या अब यहीं रहोगे।"

"बुआ, मैं कल जा रहा हूं।"

"कहाँ जाओगे?"

"अपने घर, वासिल्यवस्कोये।"

"कल?"

"जी हां।"

"अच्छा, कल है, तो कल ही सही। यह तुम्हारा अपना मामला है। लेकिन जाने से पहले एक बार मुझे आवश्य मिल लेना।" मार्फ़ा ने उसके गाल थपथपाए। "मैंने सोचा तक नहीं था कि मैं तुम्हें दोबारा देख सकूँगी! इस लिये नहीं कि मैं शीघ्र मरने जा रही हूँ नहीं, कदाचित नहीं। मैं कम से कम दस साल और जिऊंगी। हम पेस्टोव बहुत ही सख़्त जान होते हैं। तुम्हारे दादा कहा करते थे कि हमारा दुहरा जीवन होता है, लेकिन भगवान ही जानता ही कि तुम कितनी देर विदेश में घूमते रहते। सचमुच, तुम्हें देख कर बड़ी

प्रसन्नता हुई । क्या तुम अब भी डेढ़ मन का मुगदर उठा लेते हो ? तुम्हारे पिता ने—वैसे तो वह बहुत ही फ़िज़ूल आदमी था—तुम इसके लिये मुझे क्षमा करोगे, जीवन भर में एक काम तो अच्छा किया कि तुम्हारे लिये यह स्वस्थ अध्यापक रख दिया। व्यायाम खूब कराता था। तुम्हें उसके साथ अपनी पहली कुश्ती ज़रूर याद होगी ! हाँ, यहाँ मैं व्यर्थ चरचर कर रही हूं और पैशिन के वार्तालाप में बाधा डाल रही हूँ। आओ हम बरामदे में बैठ कर चाय पियें। चलो, जल्दी करो। हमारे पास स्वादिष्ट मक्खन है, मैं मानती हूँ वह ऐसा अच्छा नहीं होगा जैसा तुम्हें तुम्हारे लंदन और पेरिस में मिलता था; लेकिन है स्वादिष्ट। चलो, चलो ! और प्यारे फ़ेदिया मुझे अपना बाज़ू थमादो। ओह ! तुम्हारा बाजू कितना मज़बूत है। इसे थाम कर गिरने का जरा भी भय नहीं रह जाता।"

सब उठ कर बरामदे में आये लेकिन गेदोनोवस्की चुपचाप एक कोने में जा बैठा। जितनी देर लाव्रेंस्की घर की मालकिन से, पैशिन और मार्फ़ा से बातें करता रहा, वह विचित्र संकेतों द्वारा और आँखें झपका कर बाल सुलभ उत्सुकता का प्रदर्शन करता रहा। अब वह जाने के लिये व्यग्र था ताकि नगर में इस व्यक्ति के बारे में अफ़वाहें फैलाये।

उसी दिन रात के ग्यारह बजे मादाम कालीटिना के घर में यह घटना हुई। सीढ़ियों के नीचे ड्राईङ्ग रूम की दहलीज पर जैसे ही पैशिन को मौका मिला उसने लीज़ा का हाथ पकड़ कर कहा:—"तुम जानती हो मैं यहां क्यों आता हूँ, किस लिये बार बार तुम्हारे घर की परिक्रमा करता हूँ, जब सभी कुछ स्पष्ट है, तो कहने की आवश्यकता ही क्या है ?" लीज़ा ने कोई उत्तर नहीं दिया, वह मुस्कराई भी नहीं, किन्तु पलकें तनिक उठाकर फर्श पर झांक रही थी, लजा रही थी और संकोचवश हाथ नहीं खींच रही थी। उसी समय उधर ऊपर की मंज़िल

में मार्फ़ा तिमोफ़ेवना के कमरे में और लैम्प के मंद प्रकाश में लाव्रेत्स्की आराम कुर्सी पर बैठा था। उसने कुहनियां घुटनों पर रखी हुई थीं और मुँह हाथों से ढांप रखा था। वृद्धा स्त्री उसके सामने खड़ी चुपचाप अपनी उँगलियों से उसके बालों को कंघी कर रही थी। इसी प्रकार एक घंटा बीत गया और दोनों में से किसी ने अपने मुख से एक शब्द भी नहीं कहा। वास्तव में कुछ कहने और पूछने की आवश्यकता ही क्या थी? हृदय अपनी मूक भाषा में हृदय से बोल रहा था और वे सब कुछ समझ रहे थे। वृद्धा ने उस व्यक्ति के मन को स्नेह और सहानुभूति से मालामाल कर दिया था।

: ७ :

फ्योदोर इवानिच लावेस्की (हम कुछ समय के लिये कहानी का सूत्र तोड़ते हैं और पाठकों से इस के लिये क्षमा चाहते हैं) पुराने उच्च कुल में से था। उनका कोई पूर्वज वासिली त्योमनी के राज्य में प्रूशिया से आया था और उसे वर्खा में दोसौ बीघे भूमि दिला दी गई थी। उसके कई पूर्वज सरकारी पदाधिकारी रह चुके थे और उन्हें राज्य और सामतों की सेवा में दूर दूर के प्रातों में नियुक्त किया गया था। लेकिन उनमें से कोई भी बहुत ऊँचा पद नहीं पा सका। वैसे वे काफ़ी धनी और सम्पन्न थे। फ़्योदोर का पर दादा एंडरी उन सब में अधिक धनी और विख्यात हुआ। वह बड़ा ही धूर्त, निष्ठुर और दम्भी था। उसके अत्याचार और निष्ठुरता की कहानियां आज भी प्रसिद्ध थीं। उसका रंग काला, शरीर मोटा, कद लम्बा और आवाज़ खुरदरी थी। जितना वह धीमे और कोमल स्वर में बोलता था, उतना ही निकट खड़े लोग अधिक कांप उठते थे। उसकी पत्नी भी उसी के समान थी। छोटी-छोटी आँखें, मोटी-सी नाक और भूरा चेहरा। जन्म से जिप्सी थी। बड़ी ही लड़ाकी और चिड़चिड़ी। पति उसे मार मार कर अधमुई कर देता था, लेकिन वह कभी उससे परास्त न होती थी। सारा जीवन कुत्ते-बिल्ली की तरह लड़ते-झगड़ते व्यतीत हुआ, लेकिन वह पति की मृत्यु के उपरान्त जीवित न रह सकी। एंडरी का पुत्र—फ़्योदोर का दादा, प्योटर, अपने पिता से बिलकुल ही भिन्न था, वह एक मंद

बुद्धि, सीधा सादा ज़मींदार था, शोर-शराबा अधिक करता था, लेकिन स्वभाव का बुरा नहीं था। अतिथि सत्कार करता था और कुत्तों को साथ लेकर शिकार खेला करता था। जब वह अठारह वर्ष का था, तो उसे एक भरी पूरी ज़मींदारी मिली, जिसमें दो हज़ार मज़ारे काम करते थे, लेकिन वह उसकी व्यवस्था न कर सका। तमाम नौकरों को इधर-उधर करा, जमींदारी का एक भाग बेच डाला। सब तरह के निकम्मे, नीच, आवारा और अजनबी लोग भीगुरों की भांति उसके घर में जमा रहते थे। वे मन भाता खाते थे, खूब शराब पीते थे, जो चीज भी हाथ लगती थी, उठाकर ले जाते थे और अतिथि सत्कार करने वालों की भूरी भूरी प्रशंसा करते थे। वो अपने इन आतिथियों को प्रायः निमंत्रित किया करता था। जब वे नहीं आते थे तो उसे अपना जीवन सूना और नीरस लगता था। उसकी पत्नी बहुत ही नम्र और सुशील थी। अपने पिता के आदेश और चुनाव के अनुसार वह उसे पड़ोस के एक परिवार से ब्याह कर लाया था। इस महिला का नाम आनापाव्लोवना था। उसने कभी किसी बात का विरोध नहीं किया। अतिथियों की उपस्थिति में कभी अपशब्द मुंह से नहीं निकाला, बल्कि वह बड़ी प्रसन्नता से उन का अतिथि सत्कार करती थी। हां, जब बहुत दुखी होती थी, तो पति से इतना अवश्य कहती थी—"ये लोग तुम्हें गंजा बना कर छोड़ेंगे, तुम्हारे सिर पर मोम चिपकायेंगे और उसमें मेखें गाड़ेंगे—तुम्हारे पास सिर धोने तक को पैसे नहीं होंगे, तब तुम्हारा खूब तिरस्कार होगा। तुम्हें ये लोग मिट्टी में मिला देंगे।" वह घुड़दौड़ के बहुत तेज़ भागने वाले घोड़ों पर सवार होना पसंद करती थी और सुबह से शाम तक ताश खेलती रहती थी। जब उसका पति मेज़ के निकट आता था, तो अपने आगे पड़े हुए पैसे ढांप लेती थी, वैसे उसने अपने दहेज का सारा पैसा और भूषण पति को सम्भाल रखे थे। उसके दो बच्चे हुए, एक

लड़का जिसका नाम ईवान था और जो फ़्योदोर का पिता था, दूसरी लड़की जिसका नाम गलाफ़ीरा था। इवान का लालन पालन घर पर नहीं हुआ, बल्कि उसकी धनी फूफी राजकुमारी कुबेस्कया ने उसे गोद ले लिया था और वह उसी के पास रहता था। वह उसे गुड़िया के सदृश सजा कर रखती थी। शिक्षा के लिये बहुत से अध्यापक रखे और उसे एक आचार्य के सुपर्द कर दिया, जो एक फ्रांसिसी पादरी था और जान जाक रूसो का शिष्य था। उस का नाम कारटिन वोसे था। वह बड़ा ही चतुर, चपल और षडयंत्र रचने वाला था। ईवान की बुआ उसे पसंद करती थी और रूस में आकर रहने वाले परदेशियों में उसे एक भद्र पुरुष मानती थी। अंत में इस भद्र पुरुष से सत्तर वर्ष की आयु में उसका विवाह हो गया, और उस ने अपनी तमाम सम्पत्ति इस व्यक्ति के नाम लगवा दी। इस समय उसके पास धन सम्पत्ति नौकर चाकर, सुंदर कुत्ते और रंग-बिरंगे तोते, किसी बात की कमी न थी। लेकिन जब उसकी मृत्यु हुई, तो उसके हाथ में नाम की एक पुरानी डिबिया के अतिरिक्त और कुछ नहीं था, उसका मधु भाषी पति-कारटिन वोसे उसे छोड़ कर और सारा धन हथिया कर पैरिस चला गया था। जब यह दुर्घटना (हमारा अभिप्राय राजकुमारी के विवाह से है, मृत्यु से नहीं) हुई, ईवान की अवस्था बीस वर्ष थी। बुआ का घर उसे काटने को आने लगा। जिस घर में वह एक धनी उत्तराधिकारी था, अब एक दम एक टुक्कड़ खोर बन कर रह गया। सेंट पीटर्सबर्ग के जिस ऊंचे वर्ग में उसका पालन पोषण हुआ था, उस में अब उसकी कोई पहुंच न रह गई और एक साधारण पदाधिकारी की हैसीयत से सरकारी नौकरी करना उसे पसंद नहीं था, इस लिये वह देहात में पिता के घर चला आया। यह घर उसे पुराना, भद्दा और गंदा लगता था। देहात की नीरसता और धूल पग पग पर अखरती थी। उसके लिये जीना दूभर होगया। फिर

घर में उसे मां के अतिरिक्त अन्य कोई भी व्यक्ति पसंद न करता था। पिता को उसके शहरी रख-रखाव, चमकीले कोट, पुस्तकों, अशांत और असंतुष्ठ स्वभाव से घृणा थी। वह पुत्र के विरुद्ध प्रायः यह शिकायत करते हुए सुनाई देता था—"वह यहां की हर एक चीज़ पर नाक सुकेड़ता है, उसे इस घर का भोजन अच्छा नहीं लगता, उसे मनुष्यों से दुर्गन्ध आती है, कमरों में उसका दम घुटता है, वह किसी शराबी को नहीं देख सकता, उसकी उपस्थिति में किसी बदमाश को दंड देना भी कठिन है। वह सरकारी नौकरी नहीं कर सकता क्योंकि वह अस्वस्थ रहता है और सब कुछ इस लिये है कि उसके दिमाग में वाल्टीयर का भूत घुस गया है।" बूढ़ा, वाल्टीयर और नास्तिक डीडारोट के प्रति एक विशेष ईर्ष्या और अवज्ञा का भाव रखता था, यद्यपि उसने उनका लिखा हुआ कभी एक शब्द भी नहीं पढ़ा था, पढ़ना उसका स्वभाव ही नहीं था। वैसे प्योटर एंड्रीच ठीक ही सोचता था क्योंकि डीडारोट और वाल्टीयर, बल्कि इन के इलावा रुसो, रेनाल्ड और हेलवेशीयस और ऐसे बहुत से लेखक उसके पुत्र के मस्तिष्क में घुसे हुए थे, लेकिन वे सिर्फ मस्तिष्क तक ही सीमित थे। इवान पेत्रोविच के पूर्व अध्यापक ने यही तो किया था कि अठारहवीं सदी का समस्त ज्ञान अपने शिष्य के मस्तिष्क में जैसे-तैसे ठूँस दिया था। और वह इसे अपने मस्तिष्क में उठाये घूम रहा था। यह ज्ञान वहाँ था अवश्य; लेकिन वहाँ से नीचे उतर कर उसके रक्त में प्रवेश नहीं करता था, उसकी आत्मा को झँझोड़ कर दृढ़ विश्वास में परिणित नहीं होता था और उसके विचार और चरित्र की प्रौढ़ता का कारण नहीं बनता था.....और क्या हम पचास वर्ष पहले एक नौजवान से विश्वास की आशा रख सकते थे जबकि हम आज भी अपने विश्वास को निश्चित नहीं कर सके। उसके पिता के अतिथि भी इवान पेत्रोविच की उपस्थिति में अशांत और व्यग्र

रहते थे। वह उनसे दूर रहता था और वह उससे डरते थे। जहां तक उसकी बहन ग्लाफ़ीरा का सम्बन्ध था, जो उससे बारह साल बड़ी थी, उसकी एक क्षण भी नहीं बनती थी। ग्लाफ़ीरा एक विचित्र जीव थी। वह कुबड़ी और दुर्बल थी। उसकी आँखें उदास और फैली हुई थीं, मुख छोटा सा था, आकृति में वह अपनी जिप्सी माता के अनुरूप थी। हठी और महत्त्वाकांक्षी, विवाह की बात तक सुनने को तैयार नहीं थी। इवान पेत्रोविच का घर लौट आना उसे किसी तरह भी पसंद नहीं था। जब तक कि वह राजकुमारी कुबेस्कया के साथ रहता था उसे इतनी तो आशा थी कि पिता की आधी सम्पत्ति उसे मिल जायेगी। वह अपनी दादी के सदृश अभागी थी। ग्लाफ़ीरा भाई से इसलिये भी ईर्ष्या करती थी कि वह सुशिक्षित था और शुद्ध उच्चारण के साथ फ्रांसिसी भाषा बोल सकता था, जबकि वह स्वयं सिर्फ़ दो चार वाक्यों का उच्चारण भी मुश्किल में कर सकती थी।

इस वातावरण में इवान पेत्रोविच के लिये समय बिताना बहुत ही कठिन था। वह उदास और निराश रहता था। वह गांव में मुश्किल से एक साल रहा होगा; लेकिन यह एक ही साल दस वर्ष की तरह व्यतीत हुआ। वह सिर्फ माँ से मन की बात कहता था। वह उसके नीची छत वाले कमरे में घंटों बैठा, उसकी सीधी सादी बातें सुना करता और मुरब्बा हलक़ के नीचे उतारता रहता। अलाना पावलोवना की नौकरानियों में एक नौकरानी जिसका नाम मलानया था बहुत ही सुन्दर व चतुर थी। सुकोमल गात था, स्वच्छ, निर्मल और गहरी आंखें थीं। इवान उसकी ओर आकर्षित हो गया और वह उससे प्रेम करने लगा। वह उसके सुन्दर बालों, लजीले बोल, कोमल स्वर और मधुर मुस्कानों को प्यार करता था। इस रमणी के प्रति उसका प्रेम दिन दिन उत्कट और तीव्र होता गया। वह भी इवान पेत्रोविच की ओर आकर्षित हो गई और अपनी आत्मा की समस्त

शक्ति से उसे चाहने लगी। वह इवान पेत्रोविच से उतना ही प्रेम करती थी जितना कि कोई रूसी लड़की कर सकती है। इस प्रकार वे दोनों ही एक दूसरे को प्रेम करने लगे। एक देहाती परिवार में कोई भेद अधिक दिनों छिपा नहीं रह सकता। उनके प्रेम की बात शीघ्र ही सबको मालूम हो गई और आख़िरकार प्योटोर एंड्रीच के कान में भी जा पड़ी। समय तो शायद इसे तुच्छ घटना समझ कर वह तटस्थ रहता और कुछ भी ध्यान न देता, परन्तु वह अपने पुत्र से द्वेष करता था, इसलिए उसने सोचा कि पोटर्सवर्ग के इस सूखे शहरी को अपमानित करने का एक अच्छा अवसर हाथ लगा।

एकदम क़यामत बरपा हो गई। मलानया को कवाड़ खाने में बंद कर दिया गया। इवान पेत्रोविच को पिता ने अपने सम्मुख बुला बाया। कोलाहल सुनकर आना पावलोवना भी भागी आई। उसने पति का क्रोध शांत करने की चेष्टा की, लेकिन प्योटर एंड्रीच, कोई दलील सुनने और सोचने को तैयार नहीं था। वह अपने बेटे पर बरस पड़ा, उसे दुराचारी, दम्भी, नास्तिक और बेईमान कहकर गालियां देने लगा। अब उसने राजकुमारी कुबेरस्काया के विरुद्ध भी अपने मन का द्वेष निकाला और बेटे को खूब अपमानित किया। पहले तो पेत्रोविच पिता की फटकार चुपचाप सुनता रहा, उसने अपनी ओर से एक शब्द तक नहीं कहा; लेकिन जब उसे अधार्मिक और नास्तिक कह कर उस की विचारधारा पर प्रहार किया गया तो वह क्रोध को वश में न रख सका। "हूँ," उसने सोचा, "नास्तिक डीडारोट को फिर बीच में घसीटा गया है, अच्छा, योंही सही। आपको यही पसंद है तो यही होगा।" चुनाचे शांत और सचेत स्वर में, परन्तु भीतर काँपते हुए इवान पेत्रोविच ने पिता से कहा कि आप मुझ पर दुराचार का लांछन व्यर्थ लगा रहे हैं। मैं दुराचारी नहीं हूँ और मैं नहीं समझता कि मैंने कोई पाप किया है। फिर भी यदि आप इसे पाप समझते

हैं तो मैं इसका पश्चाताप करता हूँ और मलानया से विवाह करने को तैयार हूँ। निस्संदेह यह शब्द कहकर इवान पेत्रोविच अपने उद्देश्य में सफल हुआ। पिता को इतना आश्चर्य हुआ कि वह एक क्षण के लिये हत बुद्धि सा पुत्र के मुँह की ओर देखता रह गया। लेकिन दूसरे ही क्षण वह सम्भल गया और घूँसा तानकर इवान पेत्रोविच पर झपट पड़ा। प्योटर एंड्रीच ने उस समय मामूली जैकेट और पांव में सलीपर पहन रखे थे और इवान पेत्रोविच सौभाग्य से अंग्रेजी फैशन का कोट और बढ़िया फ़ुल बूट पहने हुए थे। वह आगे और पिता पीछे पीछे भागा। बाप बेटा भाग रहे थे और माँ पीछे से चिल्ला रही थी और उन्हें रोक रही थीं, मगर उसकी दोनो में से कोई नहीं सुनता था। अंत में वह मुख हाथों में छिपा कर बैठ गई। बेटा घर से निकल कर सेहन में, सेहन से बाग़ में और फिर बाग़ और पार्क फाँद कर सड़क पर आ गया। वह अपनी समस्त शक्ति से भाग रहा था और अब इतनी दूर निकल आया था कि उसे हाँपते और काँपते हुए पिता की गालियां सुनाई नहीं देती थीं! "ठहरो!" पिता तड़प रहा था, "ठहरो, ठहरो! वरना मैं तुम्हें नाश कर दूँगा।" इवान पेत्रोविच एक पड़ोसी किसान के घर में जा छिपा और प्योटर एंड्रीच हाँपता और आग उगलता हुआ घर लौट आया। उसने क्रोध और क्षोभ से कम्पित स्वर में घोषित किया—"मैं इस बदमाश को अपनी विरासत से वंचित करता हूँ और उसे अपना बेटा मानने से इनकार करता हूँ। आज से मेरा उसका कोई सम्बन्ध नहीं रहा। उसकी तमाम पुस्तकें जलादो और उस दुष्ट मलानया को इसी समय यहां से दफ़ा करो।" कोई भला आदमी तुरंत ईवान पेत्रोविच के पास पहुँचा और यह सब कुछ बता दिया। उसने अपमानित और क्रोधित होकर पिता से प्रतिकार लेने की ठानी। उसी रात उसने उस छकड़े को मार्ग में घेर लिया, जिसमें एक किसान मलानया को कहीं दूर निर्वासित करने जा रहा

था, वह उसे घोड़े पर बैठा कर भाग गया और एक समीपवर्ती नगर में जाकर उससे विवाह कर लिया। पड़ोसी किसान ने उसे पैसे की सहायता दी। वह एक मल्लाह का जीवन बिता कर आया हुआ सहृदय व्यक्ति था। वह व्यर्थ के झगड़ों में नहीं पड़ा था, लेकिन उसके अपने कथनानुसार इस प्रकार की घटनाओं में ज़रूर दिलचस्पी लेता था। दूसरे दिन इवान पेत्रोविच ने पिता को एक मर्म भेदी और नम्रतापूर्ण पत्र लिखा और एक गांव को चल पड़ा जहाँ उसका एक चचेरा भाई अपनी बहन मार्फ़ा तिमोफ़ेवना के साथ रहता था। मार्फ़ा से पाठक पहले ही परिचित हैं। उसने उन्हें समस्त वृतांत सुना दिया और कहा कि वह सेंट पीटर्सबर्ग जाना चाहता है और इस बीच में वे उसकी पत्नी को अपने घर में आश्रय दें। 'पत्नी' शब्द कह कर वह धाड़ें मार कर रोने लगा और अपनी नागरिक और दार्शनिक शिक्षा के बावजूद वह एक साधारण रूसी भिखारी की तरह उनके सामने घुटने टेककर फर्श पर माथा रगड़ने लगा। पेस्टोव परिवार बड़ा ही सहृदय और दयालु था। उन्होंने उसकी प्रार्थना सहर्ष स्वीकार करली। वह दो तीन सप्ताह वहां रहा और गुप्त रूप से अपने मन में यह आशा करता रहा कि पिता की ओर से पत्र का उत्तर अवश्य आयेगा! लेकिन उत्तर न आना था और न आया। पुत्र के विवाह की बात सुनकर प्योटर चारपाई पर जा पड़ा और उसने अपने सम्मुख उसका नाम लेने की मना ही कर दी। लेकिन माँ ने गाँव के पादरी से पाँच सौ रूबल उधार लिये और पुत्रबधु के लिये एक प्रतिमा के साथ उसे भेज दिये। वह कुछ लिखने का साहस न कर सकी, किन्तु एक वृद्ध नौकर की जबानी उसे यह संदेश भेजा कि वह अधिक चिंतित न हो। भगवान की दया से सब ठीक हो जायेगा और पिता उसे क्षमा करेगा। निसंदेह वह स्वयं दूसरी पुत्रबधु चाहती; लेकिन भगवान की इच्छा यही थी, इस लिये उसने मलानया को अपनी ओर से आशीर्वाद

दिया। वृद्ध नौकर को इस कष्ट के एवज़ एक रूबल पुरस्कार मिला। उसने नई मालकिन को देखने की इच्छा प्रकट की, क्योंकि संयोगवश वह उसका धर्म पिता था। उसने मलानया का हाथ चूमा और लौट आया। (रूसो और डीडारीट अठाहरवीं सदी फ्रांस के विचारक थे। सामंत शाही और धार्मिक कट्टरता के विरोधी और मानव स्वतंत्रता और अधिकारों के पक्षपाती थे। डीडारोट एक दम नास्तिक और भौतिक वादी भी था।)

इस बीच ईवान के मन का बोझ हल्का हो गया और वह सेंट पीटर्सबर्ग चला गया था। भविष्य अनिश्चित था, शायद दरिद्रता उसकी बाट जोह रही थी। लेकिन घृणित देहती जीवन से उसका पिंड छूट गया। सबसे बड़ी बात यह थी कि उसने शिक्षाओं के साथ द्रोह नहीं किया और रूसो और डीडारोट के नाम की लाज रखली थी। कर्त्तव्य शीलता की भावना ने उसके मस्तिष्क को ऊंचा और उसके हृदय को गर्व से भर दिया। पत्नी के वियोग ने उसे अधिक परेशान नहीं किया, बल्कि उसके साथ हमेशा एक ही घर में रहना उसे नागवार होता। इस सिलसिले में तो जो कुछ होना था हो चुका था, अब दूसरी बातों की ओर ध्यान देने की आवश्यकता थी। सेंट पीटर्सबर्ग में उसे कल्पनातीत सफलता प्राप्त हुई। राजकुमारी कुबेस्कया का पति उसे छोड़ कर चला गया था, किन्तु वह जीवित थी। उसने अपनी जान पहचान के सब लोगों के पास ईवान की सिफारिश की, पांच हज़ार रूबल जो ले देकर उसके पास बच रहे थे, उपहार दिये और अपने विवाह की अंगूठी जिस में नीलम के कीमती पत्थर में क्यूपिड अर्थात मदन का चित्र खुदा हुआ था, इवान की पत्नी के लिये दे दी। शहर में आये उसे तीन महीने भी नहीं बीते होंगे कि लंदन स्थित रूसी दूतावास में उसे नौकरी मिल गई और वह प्रथम अंग्रेजी जहाज़ में वहां के लिये

रवाना होगया। (उस समय भाप के जहाज़ तो स्वप्न मात्र थे) कुछ महीने उपरान्त उसे पेस्टोव का पत्र मिला। इस पत्र में इवान पेत्रोविच को बधाई दी गई थी क्योंकि २० अगस्त सन १८०७ को पोक्रोवस्कोई के गांव में उसके घर पुत्र उत्पन हुआ था, और एक पुराने शहीद की पुन्य स्मृति के तौर पर उसका नाम फ़्योदोर रखा गया था। मलानया सर्जेवना ने झिझकते झिझकते तीन चार पंक्तियां अपनी ओर से भी जोड़ दी थीं। इवान पेत्रोविच के लिये यही पंक्तियां बहुत कुछ थीं, उसे मालूम हो गया कि मार्फ़ा तिमोफ़ेवना ने उसकी पत्नी को लिखना पढ़ना सिखा दिया है। मगर इवान पेत्रोविच पुत्र जन्म सम्बन्धी कोमल भावनाओं और गर्व में अधिक नहीं डूबा रहा। वह उस समय एक बहुत ही प्रसिद्ध व्यक्ति फ़राईने के साथ काम कर रहा था। तिलसिट की संधि अभी अभी हुई थी। बड़ी कठिनता से सुख की सांस मिली थी। इस संधि पर सारी दुनियां प्रसन्न हो रही थी। एक रूपवती नारी की काली आंखों ने उसे मोह लिया था। उसके पास रूपया तो नहीं था, लेकिन सौभाग्यवश ताश के एक खेल में वह एक अच्छी रक़म जीत गया था। उसने बहुत से मित्र बना लिये और वह प्रत्येक पार्टी में जाता था। कहने का तात्पर्य यह है कि वह बड़ी तेज़ी से भद्र समाज में अपना स्थान बना रहा था।

: ६ :

पुत्र के विवाह का द्वेष चिरकाल तक लाव्रेन्ती के हृदय को मथता रहा। यदि इवान पेत्रोविच छः महीने के उपरान्त लौट आता है, पश्चाताप करता, पिता के पाँव पर गिर कर दया की भीख मांगता, तो वह आवश्य ही उसे क्षमा कर देता। लेकिन वह तो परदेश चला गया और लगता था कि उसने दोबारा इस बात पर सोचा ही नहीं। जब कभी प्योटर एंड्रीच की पत्नी पुत्र का पक्ष ले कर उसके भाव बदलने की चेष्टा करती, तो वह तुनक कर उत्तर देता —"मैं उसके बारे में फैसला कर चुका। तुम क्यों व्यर्थ का झगड़ा छेड़ती हो। साला कुत्ता! वह इसे अपने सौभाग्य जाने कि मैंने उसे शाप नहीं दिया। मेरा पिता अपने हाथ से इस बदमाश का गला घोट देता और उसके लिये यह मामूली बात थी।" उसके ये भाषण सुनकर आना पावलोवना अपनी छाती पर जल्दी जल्दी सलीब के निशान बनाने लगती। जहां तक पुत्र-बधु का सम्बन्ध था पहले प्योटर एंड्रीच ने उसे भी त्याग दिया था। पेस्टोव ने एकबार अपने पत्र में उसका उल्लेख किया, तो प्योटर एंड्रीच ने उसे डाँट कर लिखा कि मेरी कोई पुत्र-बधु नहीं है, मैं उसके बारे में कुछ नहीं सुनना चाहता और तुम्हें मालूम होना चाहिये कि भागे हुए मज़ारों को शरण देना कानून के विरुद्ध है। मगर बाद में जब उसे मालूम हुआ कि मलानया ने पुत्र को जन्म दिया है तो उसका रवैया बदल गया। उसने गुप्त रूप से कई बार समाचार मंगवाया

कि प्रसूता का स्वास्थ्य कैसा है, उसके लिये कुछ रूपया भी भेजा लेकिन उसे भेजने वाले का नाम मालूम नहीं होने दिया।

फ़ेदिया अभी एक साल का भी नहीं होने पाया था कि आना पावलीवना सख्त बीमार पड़ गई। उसे बचने की अब कोई आशा नहीं थी। मरने से कुछ दिन पूर्व दूध स्वीकार करते समय वह रो पड़ी और फिर आँखें पोंछ कर पादरी के सम्मुख बोली कि मैं अपनी पुत्र-वधु को देखना और अपने पोते को अंतिम आशीर्वाद देना चाहती हूँ। वृद्ध पति ने अपने व्यथित मन को शांत किया और उसने तत्काल खुद अपनी गाड़ी पुत्र वधु को लाने के लिये भेजदी और जीवन में पहली बार उसे मलानया सर्जेवना कहा। वह अपने नन्हे बच्चे और मार्फ़ा तिमोफ़ेवना के साथ आई क्योंकि वह उसे अकेला भेजना नहीं चाहती थी और समझती थी कि शायद मेरी वहाँ ज़रूरत पड़े। मलानया सर्जेवना इतना डर गई थी कि उसने प्रायः चेतना शून्य अवस्था में प्योटर एंडीच के कमरे में प्रवेश किया। पीछे पीछे धाया बच्चे को उठाये हुए थी। प्योटर एंडीच ने उसे चुप चाप आँख के कोनों से देखा, वह उसका हाथ चूमने आगे बढ़ी, उसके कम्पित होंठ बड़ी कठिनता से एक हल्का सूक चुम्बन कर सके।

"आओ, मेरी अच्छी लड़की!" अन्त में उसने स्तब्धता भंग की, "तुम्हारा क्या हाल है? चलो हम मालकिन के पास चलें।"

वह उठा और फ़ेदया पर झुक गया। बच्चा मुस्कराया और उसने अपने नन्हे कोमल हाथ उस की ओर बढ़ा दिये। इससे दादा का हृदय द्रवित हो उठा।

"एह" वह बड़बड़ाया, "नन्हे चूज़े! अपने पिता की सिफ़ारिश कर रहे हो? मेरे बच्चे, मैं तुम्हें कभी नहीं त्याग सकता।"

मलानया सर्जेवना सीधी आना पावलीवना के कमरे में गई और दरवाज़े के निकट ही बैठकर फ़र्श पर सिर टेक दिया। आना

पावलोवना ने उसे अपनी खाट के पास आने का संकेत किया। उसे चूमा, पोते को आशीर्वाद दिया और फिर अपना दुख से क्षीण मुख पति की ओर घुमा कर उसने बोलने की कोशिश की।

"मैं जानता हूँ। मैं जानता हूँ कि तुम क्या कहना चाहती हो।" प्योटर एंड्रिच बोला, "घबराओ नहीं! अब ये हमारे साथ रहेंगे और इन के कारण मैं वंका को भी क्षमा करता हूँ।"

प्रयत्न करके आना पावलोवना ने पति का हाथ पकड़ लिया और वह उसे अपने होठों तक ले गई। उसी शाम को वह मर गई।

प्योटर एंड्रिच ने अपने प्रण का पालन किया। उसने पुत्र को लिख भेजा कि तुम्हारी माता की अन्तिम अभिलाषा और फ्योदर की खातिर मैंने तुम्हें क्षमा कर दिया और मलानया सर्जेवना अब मेरे घर में रहेगी। उसे दो कमरे दे दिये गये। जुसर ने अपने सबसे प्रतिष्ठित अतिथियों, काने ब्रीगेडीयर स्कुरेरचीन और उसकी पत्नी से, उसका परिचय कराया। उसे दो नौकरानियां और एक नौकर लड़का सेवा के लिये दिया गया। मार्फ़ा तिमोफ़ेवना उससे विदा लेकर अपने घर लौट आईं। वह ग्लाफ़ीरा से सख्त घृणा करने लगी थी, जिस से कि एक ही दिन में उसका दोबार झगड़ा हो गया था।

बेचारी मलानया की दशा पहले पहल बड़ी कठिन और दुखद थी, लेकिन धीरे २ वह इस वातावरण और अपने सुसर से हिल मिल गई। वह भी उससे हिल मिल गया, बल्कि उसे पसंद करने लगा। वह उससे बहुत कम बोलता था और उसके स्नेह में अनजानी अवज्ञा का कुछ अंश मिश्रित था। मलानया के लिये सबसे बड़ी मुसीबत उसकी ननद ग्लाफ़ीरा थी। ग्लाफ़ीरा ने अपनी मां के जीवन काल में ही घर में अपना अनुशासन स्थापित कर लिया था। प्रत्येक व्यक्ति, उसका पिता भी, सदैव उसकी बात मानता था,

उसकी अनुमति के बिना खाँड की एक चुटकी और चाय की एक पत्ती तक घर से बाहर नहीं जा सकती थी। वह मर भी जाय तो भी किसी दूसरी स्त्री के लिये अपने इस अधिकार से एक इंच पीछे हटने को तैयार नहीं थी। उसने अपने पिता प्योटर एंड्रीच से कहीं अधिक इस विवाह सम्बन्ध को नापसंद किया था। उसने अपना अधिपत्य जमाए रखने का निश्चय किया। मलानया सर्जेवना पहले ही दिन से उस की आधीन हो गई। वह और करती ही क्या? इस हठी और कठोर लड़की से झगड़ा मोल लेने का जीवट उसमें नही था। कोई दिन ऐसा नहीं जाता था, जब ग्लाफीरा उसे उसकी विवाह से पूर्व हैसीयत की याद न दिलाती हो, और उसे अपनी स्थिति पर बने रहने की चेतावनी न देती हो। मलानया सर्जेवना उसकी चेतावनी और आदेश, चाहे वे कितने ही अप्रिय और कटु क्यों न हों, चुपचाप सहन कर लेती, लेकिन उसके लिये दुखद और असह्य बात यह थी कि उसे अपने नन्हे बेटे, फ़ेदया से वंचित कर दिया गया था। इस बहाने कि तुम में उसके पालन पोषण की सामर्थ्य नहीं है, मलानया सर्जेवना को उसे देखने तक का अवसर बहुत कम दिया जाता। बच्चे के पालन पोषण और देख रेख का पूर्ण उत्तरदायित्व ग्लाफ़ीरा ने अपने ऊपर ले लिया था; इस लिये बच्चा भी अब उसी के अनुशासन में था। मलानया सर्जेवना अपने पत्रों में पति से प्रार्थना और याचना करती कि वह शीघ्र घर लौट आये। प्योटर एंड्रीच भी बेटे को देखना चाहता था, लेकिन वह उत्तर में बहाने लिख भेजता। अपनी पत्नी को आश्रय देने और अपने आपको रूपये भेजने के लिये वह पिता का धन्यवाद करता था, आने के लिये लिखता था पर आता नहीं था। आखिर सन् १८०७ उसे घर ले आया। पिता पुत्र छः साल के बाद एक दूसरे से मिले और उन्होंने पुराने शिकवा शिकायत का एक शब्द भी मुँह पर लाये बिना

एक दूसरे का आलिंगन किया। शिकवे शिकायत का यह समय भी नहीं था, तमाम रूस शत्रु के विरुद्ध लड़ रहा था और वे भी अपनी धमनियों में रूसी खून बह रहा महसूस करते थे। प्योटर एंड्रिच निजी ख़र्च पर राष्ट्री सेना दल में भर्ती हो गया। लेकिन युद्ध का अंत हो गया और ख़तरा टल गया। इवान मेत्रोविच का मन फिर ऊब गया। उसे परदेश में घूमने की चटक लग चुकी थी और परदेश के जीवन का इतना अभ्यस्त हो चुका था कि उसका मन अब वहीं लगता था। मलानया सर्जेवना उसके लिये कोई बंधन न थी; उसमें अब बहुत कम आकर्षण रह गया था। पति ने उसके मातृत्व को भी आहत कर दिया था, वह भी यही समझता था कि फ़ेदया का लालन-पालन ग्लाफ़ीरा को ही करना चाहिये। बेचारी मलानया सर्जेवना के लिये यह आघात असह्य था। वह अब वियोग का दुख नहीं उठा सकती थी। उसने बिना किसी विरोध और शिकायत के अपने आपको प्रारब्ध के हवाले कर दिया। उसने जैसे जीवन पर्यन्त किसी भी बात का विरोध नहीं किया, वैसे ही अब उसने अपनी बीमारी का भी कोई विरोध नहीं किया। निर्बलता के कारण उसमें बोलने की भी शक्ति न थी। मृत्यु मुँह खोले उसकी ओर बढ़ रही थी। उस का मुख अब भी शांत था और उसकी आंखों में पूर्ववत नम्रता और दीनता भरी हुई थी। उसने मूक अनुनय विनय के साथ ग्लाफ़ीरा की ओर देखा और जैसे आनाबलोवना ने मरते हुए पति का हाथ चूमा था उसने ग्लाफ़ीरा का हाथ चूमा, और अपने इकलौते बेटे को इस ग्लाफ़ीरा के हवाले करके अंतिम सांस लिया। इस प्रकार इस दीन हीन और नम्र प्राणी के सांसारिक जीवन का अंत हो गया। सिर्फ़ भगवान ही जानता है कि जैसे एक पौदा जड़ सहित धरती से उखाड़ कर सूखने के लिये धूप में फेंक दिया जाये, उसे भी उखाड़ कर फेंक दिया गया और वह विस्मृति में पड़ी मुर्झा गयी। किसी ने उसकी मृत्यु पर शोक तक

प्रकट नहीं किया। हां उसकी नौकरानियों और ग्योटर यूँड्रिच को अवश्य अफ़सोस हुआ। वृद्ध को उसका भोला चेहरा और मूक उपस्थिति स्मरण हो आई।

"अच्छा मेरी सुशील बच्ची जाओ।" गिरजा में उसे अंतिम प्रणाम करते हुए वह धीरे धीरे बड़बड़ाया। उसकी कब्र में मुट्ठी भर मिट्टी फेंकते हुए वह हठात रो पड़ा।

इसके बाद वह अधिक नहीं जी सका। मलानया की मृत्यु के पांच वर्ष बाद ही, १८१२ में मास्को में, उसका देहान्त हो गया, जहां वह ग्लाफ़ीरा और पोते के साथ चला गया था, मरते हुए उसने यह इच्छा प्रकट की, कि उसे आना पावलोवना और 'मलाशा' के निकट दफ़नाया जाय। इधान पेत्रोविच इस समय पेरिस में था और वहां वह यों ही आनंद मना रहा था। उसने सन् १८१५ में अपने पद से इस्तीफा दे दिया। पिता की मृत्यु का समाचार सुनकर उसने रूस लौटने का इरादा किया। ज़मींदारी की देख भाल के लिये किसी व्यक्ति का प्रबंध करना था और ग्लाफ़ीरा के पत्रानुसार पेत्रोविच अब तेरह वर्ष का होने को आया था इस लिये उसकी शिक्षा दीक्षा की ओर ध्यान देना भी परम आवश्यक था।

: १० :

ईवान पेत्रोविच अंग्रेज़ी फैशन में रंगा हुआ रूस लौटा। उसके सिर पर अंग्रेज़ी तरज़ के छोटे छोटे बाल थे। वह गहरे हरे रंग का अंग्रेज़ी तरज़ का फ्राक कोट पहनता था। उसका व्यवहार निष्ठुर और उदासीन था। वह मुंह बना कर दाँतों में से बोलता था और कृत्रिम हंसी हसंता था। मुखाकृति मुस्कराहट शून्य थी और एक दम बहुत से विषयों पर बात करता था। राजनीति और अर्थशास्त्र का सार एक ही साँस में समझा जाता था। वह कम पका मास और अंग्रेजी शराब पसंद करता था—उसकी हर एक बात से अंग्रेज़ीयत की बू आती थी। लेकिन उसके बारे में एक अजीब बात यह थी कि ईवान पेत्रोविच जहाँ अंग्रेजीयत का इस क़दर प्रशंसक था, वहाँ देश भक्त भी बन गया था—कम से वह ऐसा कहता अवश्य था। यह दूसरी बात है कि वह रूस के बारे में बहुत कम जानता था। उसका आचरण रूसी नहीं था। रूसी भाषा बोलने का उस का ढंग बड़ा ही विचित्र था। साधारण बातचीत में वह बहुत ही खुरदरी और नीरस भाषा बोलता था, लेकिन कोई महत्वपूर्ण विषय शुरू होते ही उसकी प्रतिभा चमक उठती थी और उसे "अपना आप दिखाने के नये नये अवसर प्राप्त होते"। "इसका वस्तु स्थिति से कोई मेल नहीं" आदि सुन्दर और अलंकार युक्त वाक्य वह बोलता। जमींदारी के प्रबन्ध और उन्नति के बारे में वह कई योजनायें लिखित रूप में अपने साथ लाया था। उसे यहाँ की हर चीज़ नापसंद थी और व्यवस्था का अभाव विशेषतः

अखरता था। बहन से मिलते ही उसने सबसे पहले अपने इस निश्चय की घोषणा की, कि मैं हर एक चीज़ मूलतः बदल दूंगा। आगे से हर एक चीज़ का आधार नई व्यवस्था पर होगा। ग्लाफ़ीरा पेत्रोवना ने कुछ नहीं कहा, उसने केवल अपने होंठ भींच लिये और सोचने लगी—"मेरा क्या बनेगा?" लेकिन जब वह भाई और भतीजे का साथ देहात में आई तो उसकी आशंकायें शीघ्र ही मिट गईं। घर में कुछ तब्दीलियाँ अवश्य आईं, टुकड़ तोड़ और चापलूस लोगों को तत्काल हटा दूर किया गया। उन में दो बूढ़ी औरतें भी थीं, जिनमें एक बिलकुल अंधी थी, दूसरी पक्षाघात की रोगी थी और एक पुराना मेजर था जो इतना खाता था कि उसे सिर्फ़ जौ और मकई की रोटी दी जाती थी। एक विज्ञप्ति इस विषय की निकाली गई कि आगे को यहाँ उन अतिथियों का स्वागत न होगा जिन्हें उसके पिता बुलाया करते थे। मास्को से नया फर्नीचर मंगवाया गया, थूक दान, घंटी, हाथ धोने के नल आदि लगाये गये और नाश्ते की एक नई रीति चलाई गई। वोडका और देहाती शराब के स्थान पर विलायती शराबें आ गईं। नौकरों की नई पोशाक नियत की गई और घर के पूरे वातावरण को बदलने का यत्न किया गया। वास्तव में ग्लाफ़ीरा के अधिकार में कोई कमी नहीं आई, ख़रीद और वितरण पर अब भी उसी का नियंत्रण था। एक अलसेशीयन नौकर को जिसे उसका भाई विदेश से लाया था, बहुत चाहता था। लेकिन जब इस नौकर ने भी ग्लाफ़ीरा के अधिकार में हस्ताक्षेप करना चाहा, तो उसे तत्काल नौकरी से जबाब मिल गया। कृषि और जमींदारी के प्रबंध में भी ग्लाफ़ीरा की बात मानी जाती थी। सब कुछ जैसे का तैसा रहा, सिर्फ़ ईवान पेत्रोविच कहने को प्रायः कहा करता था कि इस अराजकता में नई रूह फूंकी जायेगी—हर एक चीज़ वैसी ही रही, हां इतना अवश्य हुआ कि जहां तहां बाड़

लगा दी गई, यानी बना दी गई और यह आदेश निकाल दिया गया कि किसान अब जब चाहें अपनी इच्छानुसार अपने नये स्वामी से नहीं मिल सकते। इसके लिये उन्हें पहले से आज्ञा प्राप्त करनी होगी। पता चला कि देश भक्त अपने देशवासियों से अत्यन्त घृणा करता है। ईवान पेत्रोविच की पद्धति पूर्ण रूप से फ्रेदिया पर लागू हुई, उसकी शिक्षा में सचमुच बुनियादी तब्दीली कर दी गई, और सब बातों को छोड़ कर पिता ने विशेषतः इस बात पर ध्यान दिया।

: ११ :

जब इवान पेत्रोविच विदेश में था, तो ग्लाफ़ीरा, फ़ेदिया का लालन-पालन करती थी। जब उसकी माता की मृत्यु हुई तो उस की अवस्था आठ वर्ष भी नहीं थी, वह उसे कभी-कभी मिला करता था और उस से बहुत ही प्यार करता था। उसकी, उसके नम्र और कोमल चेहरे की, विषाद पूर्ण आँखों और उसके नीरव चुम्बन की स्मृति उसके मन पर इतनी गहरी अंकित हो गई थी कि वह अब किसी प्रकार मिट नहीं सकती थी। घर में उसकी स्थिति के बारे में उसे बहुत ही मामूली सा एहसास था; वह जानता था कि उसके और उनके बीच में कोई दीवार थी जिसे फांदने अथवा ढा देने की क्षमता उसमें नहीं थी। वह अपने पिता से घृणा करता था और पिता ने भी उसे कभी पुचकारा दुलारा नहीं। दादा कभी-कभी स्नेह से उसका सिर थपकाता था और उसे अपने हाथ का चुम्बन करने की भी आज्ञा दे रखी थी, लेकिन वह (ईवान) उसे उद्दंड और मूर्ख समझता था।

मलातया सर्जेवना की मृत्यु के उपरान्त वह एकदम फूफी की गिरफ़्त में आ गया। फ़ेदिया उससे डरता था। उसकी तेज़ आवाज़ और चमकदार तीखी आँखें उसे खाने को दौड़ती थीं, वह उसकी उपस्थिति में अपने मुँह से एक शब्द भी निकालने का साहस नहीं करता था। अगर वह कुर्सी में कभी हिलता डुलता भी था तो तत्काल चिल्लाती थी—"यह क्या है, निठल्ले नहीं बैठ सकते! रविवार को गिरजा घर से लौटने के बाद उसे खेलने की छुट्टी होती थी और खेलने के लिये

एक बड़ी मोटी और विचित्र पुस्तक उसे दे दी जाती थी, "प्रतीक और पताकायें" नाम था और मैंकिसमोविच अम्बोदिक नामी कोई व्यक्ति उसके लेखक थे। इस पुस्तक में एक हज़ार के लगभग चित्र थे जिन में से अधिकांश बहुत ही गूढ़ और आध्यात्मिकता सम्बन्धी थे। उनका गुप्त अर्थ इन चित्रों के नीचे पांच विभिन्न भाषाओं में लिखा हुआ था। इन चित्रों में एक मोटे ताज़े और नंगे क्यूपिड (मदन) को विशेष स्थान प्राप्त था। उदाहरणतः एक चित्र का शीर्षक था "केशर और इंद्र धनुष" उसके नीचे लिखा हुआ था "इसका प्रभाव बहुत ही व्यापक है।" एक दूसरा शीर्षक था "सारस बनफ़शा चोंच में लिये उड़ा जा रहा है" उसके नीचे लिखा "तू किसे नहीं जानता" एक और चित्र का शीर्षक था "क्यूपिड और रीछ अपने बच्चे को चाट रहें हैं।" और उसके नीचे यह शब्द लिखे हुए थे "शनः शनः" फ़ेदिया इन चित्रों को देखा करता था। वह उन्हें इतनी बार देख चुका था कि वह उनके एक एक चिन्ह और एक एक शब्द से परिचित हो गया था और अब देखने को कुछ भी शेष नहीं रह गया था। निसंदेह उनमें कुछेक चित्र उसकी कल्पना को प्रेरित करते और वह सोचने लगता, लेकिन इसके अतिरिक्त और कोई दिलचस्पी नहीं थी। अब वह भाषायें और संगीत सीखने के योग्य हुआ तो उसकी फूफी ने खरगोश जैसी आँखों वाली एक स्वीडिश महिला को नियुक्त किया जो थोड़ी बहुत फ्रैंच और जर्मन भाषायें जानती थी, प्यानो बजा लेती, पर इन सब बातों के अतिरिक्त उसका विशेष गुण यह था कि वह खीरा ककड़ी बहुत खाती थी। इस अध्यापिका, अपनी फूफी और वैसीलेवना, बूढ़ी नौकरानी की संगत में फ़ेदिया ने अपने जीवन के चार उत्तम वर्ष बिता दिये। फ़ेदिया प्रायः चित्रों की बड़ी मोटी पुस्तक लेकर एक कोने में जा बैठता था और कई बार दिन भर ऐसे ही बैठा रहता था। यह नीची छत का कमरा

था, जिसमें मोमबत्ती का मन्द प्रकाश रहता था, कभी कभी झींगुर की थकी थकी ध्वनी सुनाई पड़ती थी, घंटा टिक टिक करता हुआ चलता था और तीनों औरतें चुपचाप बैठी कुछ-न कुछ बुना करती थीं। कमरे के मंद प्रकाश में उनके हाथों की अंधेरी परछाईयां कांपती और नाचती रहती थीं, और बालक के मन में जो विचार आते थे वे भी इस वातावरण के सदृश थके-थके और उदास-उदास होते थे। फ़ेदिया कोई दिलचस्प बालक नहीं था, वह पीला और मोटा, भद्दा और भारी था, शायद इसलिये ग्लाफ़ीरा उसे अकसर म्यूज़िक कहती थी। यदि उसे खुली हवा में घूमने और खेलने की आज्ञा दी जाती, तो निश्चय ही उसका शरीर स्वस्थ और गालों का रंग सुर्ख हो जाता। वह चुपचाप पढ़ता रहता था। वह चीखता चिल्लाता बिलकुल नहीं था; लेकिन कभी कभी जब उसे हठ चढ़ती थी, तो उसे कोई भी वश में नहीं रख सकता था। फ़ेदिया घर के किसी भी व्यक्ति को प्यार नहीं करता था। खेद है उस व्यक्ति पर जिसने बचपन में भी प्यार न किया हो!

जब वह इस अवस्था में था तो इवान पेत्रोविच आ गया और उसने तत्काल अपनी विचार धारा उस पर लादने की जल्दी दिखाई। "मैं सबसे पहले इस लड़के को मनुष्य बनाना चाहता हूँ" उसने ग्लाफ़ीरा से कहा, "केवल मनुष्य ही नहीं, मैं उसे स्पार्टन बनाना चाहता हूँ।" इवान पेत्रोविच ने पहले उसके लिये स्काच वर्दी सिलाई। अब यह बारह साल का लड़का सिर पर परों वाली टोपी और घुटनों तक का नेकर पहने इधर-उधर फुदकता फिरता था। स्वीडिश अध्यापका को हटा कर उसके स्थान पर स्विस अध्यापक रख दिया गया, जो संगीत विद्या के अतिरिक्त व्यायाम में भी निपुण था। पहला अजीब ढंग बिलकुल बदल दिया गया। प्राकृतिक विज्ञान, अंतर्राष्ट्रीय कानून, गणित, जान ज़ाक रूसो की विचार धारा के

अनुरूप बढ़ई का काम, और शूरवीरता के भाव भरने के लिये वंशावली, भावी 'मनुष्य' को ये सब विद्यायें सिखाई जाने लगीं। उसे प्रातः चार बजे जगा कर ठंडे पानी में स्नान कराया जाता, फिर एक लम्बे बांस से बंधी हुई रस्सी के गिर्द दौड़ाया जाता था। उसे दिन भर में सिर्फ़ एक बार भोजन मिलता था जिस में केवल एक खाद्य वस्तु होती थी। घोड़ों की सवारी करना व पिस्तौल से निशाना लगाने का अभ्यास करता था। प्रत्येक प्राप्य अवसर पर उसे अपने पिता के सदृश अपने मनोबल का परिचय देना होता और सायंकाल को यह सारी दिनचर्या और अपनी मनोभावनायें उसे एक डायरी में लिखनी होतीं। इवान पेत्रोविच अपनी ओर से उसे फ्रैंच भाषा में नसीहतें लिख कर देता और सदा उसके पौरुष और वीरता को उभारने का यत्न करता। फ़ेदिया पिता को रूसी भाषा में "तू" से सम्बोधित करता, किन्तु वह उस के सम्मुख बैठने का साहस न कर सकता था। इस नई पद्धति ने लड़के को परेशान कर दिया। मस्तिष्क व्यग्र और व्याकुल रहने लगा और मनोविकास कुंठित हो गया। लेकिन इस योजना से इतना लाभ अवश्य हुआ कि उस का स्वास्थ्य अच्छा हो गया। पहले तो उसे ज्वर रहने लगा, जो शीघ्र ही जाता रहा और फिर धीरे २ उस का शरीर सशक्त और गठीला बन गया। पिता उस पर बहुत गर्व करता था और उसे अपनी विचित्र भाषा में "प्रकृति पुत्र (मेरा खिलौना) कहा करता था।" जब वह सोलह वर्ष का हुआ तो पेत्रोविच ने इस समय को उसके मन में नारी के प्रति घृणा भरने के लिये उचित समझा और इस तरह हमारा नौजवान स्पार्टन बड़ा ही लजीला, एकान्तप्रिय, उदासीन और उद्दंड युवक बन गया।

समय इस प्रकार बीत रहा था। ईवान पेत्रोविच साल का अधिकांश भाग अपने पैत्रिक गांव लैविस्की में रहता था, लेकिन सर्दियों में वह मास्को चला जाता। वहां सराय में रहता, प्रायः क्लबों

में आता, उच्चवर्ग के लोगों के ड्राईङ्ग रूमों में बैठकर अपनी योजनाओं का बखान करता और अपने आप को अधिक से अधिक अंग्रेज़ीयत का पुजारी, असंतुष्ट और मिलनसार दिखाने की कोशिश करता। सन १८२५ आया, जो कि उसके लिये दुःख और विषाद का साल था। इवान पेत्रोविच के परम मित्रों और परिचित व्यक्तियों ने उसकी योजनाओं से तंग आकर उससे सम्बन्ध विछेद कर लिया। वह अब गांव ही में रहने लगा और अधिक से अधिक एकांतवासी होता चला गया, जैसे उसने संसार को ही त्याग दिया हो। एक और साल इसी प्रकार गुज़र गया और उसका स्वास्थ्य सहसा बिगड़ने लगा। वह अपाहिज और रोगी रहने लगा। स्वछंद विचारक अब गिरजे जाने और प्रार्थना में भाग लेने लगा। उसने अंग्रेजीयत छोड़ कर रूसी ढंग अपनाना शुरू किया। अब वह दो बजे भोजन करता, नौ बजे चारपाई पर जा लेटता और बूढ़े रसोईये की गप शप सुनते-सुनते सो जाता। वह गर्वनर के सामने कांपने लगता और पुलिस इंस्पेक्टर के सम्मुख गिड़गिड़ाता। दृढ़ संकल्प का यह व्यक्ति, तनिक गर्म अथवा ठंडा शोरबा मिलने पर तिलमला उठता और बक झक करता। इस सार्वजनिक व्यक्ति ने अपनी समस्त योजनायें और उनसे सम्बन्धित कांगज पत्र जला डाले। घर पर फिर ग्लाफ़ीरा पेत्रोवना का आधिपत्य स्थापित हो गया। एक बार फिर तमाम नौकर चाकर और कारिंदे इस "बूढ़ी बुआ से (वे उसे आपस में इसी नाम से पुकारा करते थे।) आज्ञा प्राप्त करने आने लगे। इवान पेत्रोविच के इस परिवर्तन का लड़के पर बहुत ही खराब प्रभाव पड़ा। अब वह उन्नीस वर्ष का हो चला था, सोचने लगा था और उसे पिता का शासन और दमन अखरने लगा था। उसने पिता की कहनी और करनी के अंतर को पहले ही महसूस कर लिया था। वह जानने लगा था कि वह कहने को उदार, परन्तु वास्तव में घोर अत्याचारी है। फिर भी उसे इस शीघ्र परिवर्तन

की आशा नहीं थी। उसका घोर अहंवाद अब अपने नग्न रूप में बेटे के सामने था। नौजवान लाव्रेस्की यूनिवर्सिटी में दाख़िल होने मास्को जाने ही वाला था कि इवान पेत्रोविच पर एक और आपत्ति आई। वह अंधा हो गया; एक ही दिन में बिलकुल अंधा।

उसे रूसी डाक्टरों की योग्यता पर विश्वास नहीं था, इस लिये डाक्टर से विदेश जाने की आज्ञा मांगी, जो मिली। वह बेटे को साथ लेकर पूरे तीन साल तक तमाम रूस में घूमता रहा। वह सब डाक्टरों के पास गया, उसने हर एक क़स्बा छान मारा वह अपनी निराशा, भीरुता और चीख़ पुकार से अपने वैद्यों, बेटे और नौकरों को परेशान करता रहा। जब वह लाव्रेकी में लौटकर आया तो उसकी दशा अत्यन्त करुणाजनक थी। वह एक बच्चे की भांति लड़ता झगड़ता और चिढ़ता रहता था। ये घर में हर एक के लिये कटुता और विवाद के दिन थे। ईवान पेत्रोविच सिर्फ़ भोजन के समय चुप होता था। वह इतना और ऐसे भुखमरों की तरह पहले कभी नहीं खाता था। इसके अतिरिक्त न वह खुद शांत रहता था और न किसी को शांति से बैठने देता था। वह ईश्वर से प्रार्थना करता, किस्मत को कोसता। अपने आपको, राजनीति को, अपनी पद्धति को बुरा भला कहता, और बड़े ज़ोर २ से कहता कि मेरा किसी चीज़ में विश्वास नहीं, फिर प्रार्थना करने लगता। उसे एक मिनट की भी निस्तब्धता सहन नहीं थी, इसलिये चाहता था कि घर वाले हर वक्त उसके पास रहें, उसे कहानियां सुनाते रहें और कहानी सुनाने वाले को वह बार-बार ठोकता रहे—"तुम बिलकुल झूठे हो और बकवास करते हो।"

यह सब कुछ ग्लाफ़ीरा पेत्रोवना को सहन करना पड़ता था। वह उसे अपने से एक मिनट भी अलग नहीं होने देता था और वह बेचारी रोगी की हर एक मांग पूरी करने का यत्न करती थी। यद्यपि वह कई बार उसकी बात का जल्दी जवाब नहीं दे सकती थी क्योंकि

क्रोध व रोष से उसका गला रुंधा होता था और वह रोगी पर यह बात प्रकट करना नहीं चाहती थी। वह दो साल तक इसी तरह दिन काटता रहा, आखिर एक दिन जब कि वह बालकोनी में पड़ा धूप सेंक रहा था, उसके जीवन का अन्त हो गया।

"ग्लाशा, ग्लाशका! मेरा शोरबा कहां है" ओह तुम नीच...वह चिल्लाया और सदा के लिये चुप हो गया। ग्लाफ़ीरा रसोईये से शोरबे का प्याला छीन कर भागी आई। वह चुपचाप खड़ी भाई के मुख की ओर देखती रही धीरे धीरे उसने अपनी छाती पर क्रास का निशान बनाया और वापस चली गई। उसका बेटा भी वहीं उपस्थित था। वह भी कुछ नहीं बोला, और बालकोनी के छज्जे पर झुक कर बड़ी देर तक बाग़ में देखता रहा; बसंत की धूप खिली हुई थी और सूरज की सुनहरी किरणों में हरयाघल जगमगा रही थी। उस समय उसकी अवस्था तेईस वर्ष थी। वह तेईस वर्ष कितनी भयानक गति से व्यतीत हुए थे।...उसके सामने नवजीवन का प्रादुर्भाव हो रहा था।

: १२ :

अपने पिता का अंत्येष्ठीकरण करके और घर व जमींदारी का प्रबंध ग्लाफ़ीरा को सौंप कर, नौजवान लाव्रेस्की मास्को चला गया, जहाँ उसने एक अस्पष्ट लेकिन अप्रतिहत शक्ति का आकर्षण अनुभव किया। अब उसे अपनी शिक्षा की त्रुटियां दिखाई देने लगीं और उसने उन्हें जल्दी से जल्दी दूर करने का निश्चय किया। पिछले पांच वर्ष में उसने बहुत पढ़ा था, और कुछ अनुभव भी प्राप्त किया था। उसके मस्तिष्क में बहुत से विचार भरे हुए थे। उसकी विद्वता के कुछ पहलुओं पर प्रोफेसर को भी ईर्षा हो सकती थी; लेकिन बहुत सी बातें ऐसी थीं जिनमें वह एक स्कूल के साधारण विद्यार्थी से भी पिछड़ा हुआ था। लाव्रेस्की को महसूस हुआ कि वह स्वच्छंद नहीं है। वह अपने आप में समझ गया था कि उसका व्यक्तित्व वातावरण के अनुकूल नहीं बन पाया है। पिता की अंग्रेज़ीयत ने उसके साथ छल किया था और उसकी झक्की शिक्षा ने ही बेटे को ऐसा बना दिया था। वह कई साल तक चुपचाप पिता की इच्छा का अनुसरण करता रहा। जब अन्त में इसका भ्रम खुला, तो उससे जो हानि पहुँचनी थी वह पहुँच चुकी थी और पिता के ढंग उसका स्वभाव बन चुके थे। वह लोगों से मिल जुल कर नहीं रह सकता था। तेईस वर्ष की उम्र में उसके सलज्ज हृदय में प्रेम की उत्कट अभिलाषा थी, लेकिन उसमें किसी रमणी की आँखों में आँखें डालकर देखने का साहस नहीं था। उसकी स्पष्ट यद्यपि कुछ भारी भरकम विद्वता,

सहज बुद्धि, हठी, विचार शील और आलस्य प्रिय, प्रकृति का तकाज़ा यह था कि वह जल्दी जीवन-संघर्ष में पड़ जाता, लेकिन इसके विपरीत हुआ यह कि उसे कृत्रिम एकान्त में रखा गया। अब जादू टूट चुका था, फिर भी वह उसी स्थान डटा रहा। अचल और निस्तब्ध, अपने भीतर बन्द रहा। जवानी की इस अवस्था में विद्यार्थी की पोशाक हास्यास्पद लगती थी। लेकिन वह इससे नहीं डरता था। उसकी स्पार्टन शिक्षा का कम से कम इतना प्रभाव तो उस पर पड़ा था, कि वह दूसरों की राय की उपेक्षा करे। उसने बिना किसी कष्ट और दुविधा के विद्यार्थी की पोशाक पहन ली। उसने गणित और शारीरक विज्ञान के विभाग में प्रवेश किया तो लम्बा कद, सुर्ख़ चेहरा, मूक आकृति और पूरी उगी हुई दाढ़ी ने उसके सहपाठियों पर विजित्त प्रभाव डाला। वे यह कैसे कल्पना करते कि यह खामोश और कठोर शक्ति जो दो घोड़ों की देहाती गाड़ी में नियम पूर्वक कक्षा में आता है, बिलकुल एक बच्चे के समान है। वे उसे दम्भी और अभिमानी समझते थे और उससे दूर दूर रहते थे। कोई भी उससे मित्रता स्थापित करना पसंद नहीं करता था और वह भी उनसे दूर ही रहा। यूनिवर्सिटी के पहले दो सालों में उसने सिर्फ एक विद्यार्थी से परिचय प्राप्त किया और वह भी इस कारण कि वह इस विद्यार्थी से अतालवी भाषा पढ़ता था। वह विद्यार्थी जिसका नाम मिखाइलेविच था, बहुत ही अनुरागी और कवि था। उसकी लाव्रेस्की से हार्दिक मित्रता हो गई और वह अज्ञात रूप से उसमें एक बड़ा भारी परिवर्तन लाने का कारण बना।

एक दिन थियेटर में (उन दिनों सोचालोव कीर्ति के शिखर पर था और लाव्रेस्की उसका एक भी खेल नहीं छोड़ता था) उसने एक लड़की देखी जो सफ़ेद वस्त्र पहने बाक्स में बैठी थी। यद्यपि किसी भी सुन्दर स्त्री को देखकर उसका दिल धड़कने लगता था, तथापि

इतनी तेज़ी से कभी नहीं धड़का था। वह लड़की बौक्स की मख़मल पर अपनी कुहनियां रखे, अचल बैठी थी। उसका चेहरा गोल और आकर्षक था और उसके अंग-अंग में यौवन थिरक रहा था। नर्म, नर्म पलकों के नीचे से जो प्यारी आँखें झाँक रही थीं, वे एक प्रतिभा शाली मन को प्रतिबिम्बित कर रही थीं। उसके होठों की मुस्कराहट, उसके सिर के अंदाज, उसकी बाहें, उसकी गर्दन—उसके परिधान तक में मोहकता थी। उस के पास पतली दुबली एक दूसरी औरत बैठी थी, जिसकी आयु चालीस पैंतालीस वर्ष होगी, जिसकी पोशाक गर्दन से काफ़ी नीचे तक थी। जब वह काली टोपी पहने हुए मुस्कराती थी तो पता लगता था कि उसके मुँह में दांत नहीं हैं। इस बौक्स के भीतर की ओर एक वृद्ध व्यक्ति बैठा था। उसने लम्बा चोगा पहन रखा था, मुख मुद्रा गम्भीर, आँखों में संदेह और शंका की झलक, रंगी हुई मूँछें, तंग माथा और झुर्रियों भरे गाल—इन सब बातों से जान पड़ता था कि वह सेना में जनरल रह चुका है। लाव्रेस्की की आँखें इस रमणी पर गड़ी रहीं। अकस्मात बौक्स का दरवाज़ा खुला और मिखालेविच ने प्रवेश किया। सारे मास्को में यही एक व्यक्ति था, जिसे वह जानता था। इस समय उस लड़की के पास जो उसकी आत्मा में पैठी जा रही थी उसका आना लाव्रेस्की को कुछ विचित्र और महत्वपूर्ण लगा। वह उसी ओर झाँकता रहा और उसने देखा कि बौक्स में जो लोग बैठे थे वे सब मिखालेविच के साथ ऐसे मिल रहे थे जैसे उसकी पुरानी मित्रता हो। लाव्रेस्की को खेल में कोई दिलचस्पी न रही, आज खुद मोचालोव भी उसे कुछ अच्छा नहीं लग रहा था। रंगमंच पर एक ऐसा मार्मिक क्षण आया कि इस दृश्य से उस रमणी के गाल तमतमा उठे और आँखें चमकने लगीं, लाव्रेस्की तो सतत उसकी ओर देख रहा था। धीरे धीरे रमणी की चमकती हुई आँखें भी रंगमंच से हट कर उसकी आँखों से आ मिलीं

और फिर तमाम रात वे आँखें उसका तआक़ुब करती रहीं। समय का कृत्रिम प्रतिबंध टूट गया, उसे उत्तेजना का ज्वर चढ़ गया और शरीर काँपने लगा। दूसरे दिन वह मिखालेविच से मिलने गया। उससे मालूम हुआ कि रमणी का नाम वारावारा पावलोवना कोरोबिना है, उसके साथ जो वृद्ध स्त्री पुरुष बैठे थे, वे उसके माता पिता थे और मिखालेविच एक साल पहले जब वह मास्को के निकट काऊँटन-में पढ़ता था, तो उन से परिचित हुआ था। उसने वारावारा पावलोवना की भूरि भूरि प्रशंसा करते हुए कहा:—"वह लड़की, मेरा ख़याल है, एक वैचित्र्य, एक अनुपम बुद्धि, कला की सच्ची मूर्ति और एक सहृदय रमणी है!" लाव्रेस्की ने वारावारा पावलोवना के सम्बंध में जो उत्सुकता दिखाई उससे मिखालेविच तनिक भी शंकित नहीं हुआ बल्कि उसने अपने आप कहा कि यदि तुम चाहो तो मैं तुम्हें वारावारा पावलोवना से मिला सकता हूँ, मैं तो उनके परिवार ही का एक व्यक्ति समझा जाता हूँ। उसका बाप तनिक भी दम्भी नहीं है और माँ तो इतनी सीधी और सरल है कि वह समझती है कि चाँद सब्ज़ पनीर से बना है। लाव्रेस्की का मुख लाल होगा, वह आप ही आप कुछ बड़बड़ाया और फिर चला गया। वह पाँच दिन तक अपनी भीरुता से संघर्ष करता रहा। छठे दिन नौजवान स्पार्टन ने नई पोशाक पहनी और मिखालेविच के पास आया। वह तो उन के परिवार का ही व्यक्ति था, उसने साधारण रूप से बाल संवारे और वे दोनों कोरोबिन परिवार से मिलने चले।

: १३ :

बारबारा पावलोवना का पिता, पावेल पेत्रोविच कोरोबिन एक भूतपूर्व मेजर जनरल था। नौकरी के समय उसने अपना जीवन सेंट पीटर्ज़बर्ग में बिताया था और वह जवानी में एक योग्य नाचने वाला और अच्छा सिपाही होने के नाते प्रसिद्ध था। उसने पहले पहल दो छोटे जरनेलों के आधीन काम किया था और उनमें से एक की पुत्री से विवाह कर लिया था, जिस में उसे पच्चीस हज़ार रूबल दहेज़ में मिले थे। उस ने युद्ध कला और फ़ौजी परेड में अच्छी योग्यता का परिचय दिया और धीरे धीरे बीस वर्ष की नौकरी में जनरल के पद पर जा पहुँचा और उसे एक टुकड़ी का कमांडर बना दिया गया था। अब उसके लिये मौका था कि फ़ौजी कामों में दिलचस्पी लेना कम करके रुपया बनाने और अपना घर भरने की बात सोचे। सब सभी ऐसा करते थे, वह क्यों किसी से पीछे रहे। उसने इस बारे में एक नया ही ढंग सोचा। ढंग वाकई सुन्दर था। लेकिन उससे एक भूल हो गई। जहाँ उसे सावधान नहीं होना चाहिये था, वहाँ भी वह सावधानी बरतने लगा। उस पर एक भयंकर आरोप लगा। चतुर जनरल ने बच निकलने की विधि सोच ली। वह बच तो गया, लेकिन उसका चरित्र संदिग्ध हो गया और उसे पद त्याग कर देने की सलाह दी गई।

इसके उपरान्त भी वह दो साल तक सेंट पीटर्सबर्ग में रह कर अधिकारियों की चापलूसी करता रहा कि कोई और पद पा जाये, लेकिन उसे सफलता प्राप्त न हुई। इसी बीच में उसकी लड़की ने शिक्षा समाप्त करली थी और उसका खर्च बढ़ रहा था। अपनी इच्छा के विरुद्ध उसने

मास्को जाकर रहने का फैसला किया। उसे वहाँ एक सस्ता बंगला मिल गया और वहां वह २७५० वार्षिक पैंशन में भूतपूर्व फौजी जनरल का जीवन बिताने लगा। मास्को हर अतिथि का सत्कार करता है। एक जनरल की तो बात ही क्या है, उसमें सारी दुनियां के लिये स्थान है। पावेल पेत्रोविच अब भी स्वस्थ और बलिष्ट था और उसकी मुख मुद्रा में सिपाही का दबदबा था, अतः मास्को के प्रतिष्ठित घरों में उसका आदर मान होने लगा। वह इनके ड्राइङ्ग रूमों में, नाचघरों में और मास्को की गलियों में अपना फ़ौजी लिबास पहने और तमग़े लगाये अकसर दिखाई देता था। पावेल पेत्रोविच को समाज में आदर पाने की कला आती थी। वह कम बोलता था और जब बोलता था तो नाक में बोलता था। यह और बात है कि अपने से ऊंचे और सम्मानित व्यक्ति से बात करते समय उस का स्वर बिलकुल ही बदल जाता था। उसे इन बातों का अच्छा अभ्यास था। वह ताश भी खूब खेलता था। घर पर हमेशा कम खाता और पार्टियों में छः का भोजन अकेला चट कर जाता। उसकी पत्नी के बारे में सिर्फ़ इतना ही कहा जा सकता है कि उस का नाम कलियोपा कारनोवना था। उस की बांई आंख हमेशा नम रहती थी जिसके कारण कलियोपा कारनोवना (जो जाति से जर्मन थी) अपने आप को भावुक स्त्री समझती। थी उसकी मुख-मुद्रा सदा ऐसी बनी रहती थी, जैसे उसे खाने को थोड़ा मिलता हो। वह ढीले कपड़े और खोखले चमकदार कंगन पहनती थी। पावेल पेत्रोविच और कलियोपा कारनोवना दम्पत्ती की एक मात्र कन्या वारा वारा पावलोवना ने जिस समय स्कूल छोड़ा, उस की अवस्था सत्रह साल थी। स्कूल में यदि वह सबसे सुन्दरी नहीं, तो सबसे योग्य छात्रा और सबसे अच्छी नर्तकी शुमार होती थी। वहां उसने सोने का ताज जो सब से योग्य छात्रा को मिलता था प्राप्त किया था। जब लाव्रेस्की ने उसे पहले पहल देखा तो उसकी उम्र उन्नीस साल से अधिक नहीं थी।

: १४ :

जब मिखालेविच, लाव्रेस्की को कोरोविन परिवार के ड्राईङ्ग रूम में ले गया, तो इस एकान्त प्रिय नौजवान की टांगें कांप रहीं थी। उस का सबसे परिचय कराया गया। इस रम्यता और प्रसन्नता के वातावरण में उसकी घबराहट धीरे-धीरे दूर होने लगी। वारा वारा पावलोवना ऐसी शांत और गम्भीर बनी रहती थी कि उसकी उपस्थिति में प्रत्येक व्यक्ति जल्द ही अपनी घबराहट भूल जाता था। उस का सुगठित शरीर, मुस्कराती हुई आंखें, ढलवादार नितम्ब, गोल गोल मखमली बाहें, मदमाती चाल और उसके बोलने का वह स्वर, जो कल कल करते पहाड़ी स्रोत के सदृश मीठा और आकर्षक था और जिस में कुछ ऐसी सुगंध सी बसी हुई थी जिसे शब्दों में व्यक्त करना कठिन ही नहीं, असम्भव है। लाव्रेस्की ने बातचीत की धारा को थियेटर की ओर मोड़ दिया और वह कल वाले नाटक की बात करने लगा। वारा वारा पावलोवना ने अवसर मिलते ही तुरन्त मोचालोव का ज़िक्र छोड़ दिया और इधर उधर की कुछ बातें करने के बाद उस के अभिनय पर दो चार फ़बतियां कस दीं। मिखालेविच ने गाने की फरमायश की, तो वह बिना किसी झिझक और संकोच के प्यानो पर जा बैठी और चोपिन के कुछ गीत सुनाये, जिन का उन दिनों खास रिवाज था। फिर भोजन का समय हो गया। लाव्रेस्की आना चाहता था, मगर उसे आग्रह कर कर ठहरा लिया गया। खाने पर जनरल ने उसे बढ़िया शराब पिलाई, जो अभी अभी टैक्सी भेजकर शराब की दुकान से मंगवाई गई

थी। लाव्रेस्की रात गये घर लौटा और काफ़ी देर तक अपनी आंखों पर हाथ धरे, मंत्र मुग्ध सा बिना कपड़े उतारे बैठा रहा। वह पहली बार कुछ ऐसी बात का अनुभव कर रहा था जिस से जीवन वाकई जीवन बनता है। उसकी पहली आस्थायें और धारणायें धुएं के व्यर्थ बादलों की तरह छिन्न-भिन्न हो कर हवा में बिखर गईं। उस की समस्त आत्मा, समस्त अस्तित्व, एक भावना, एक विचार—प्रसन्नता की उत्कट अभिलाषा —प्रेम, एक स्त्री के मधुर प्रेम में केन्द्रित होकर रह गयी। उस दिन के बाद वह प्रायः कोरोबिन परिवार के यहाँ आने-जाने लगा। छः महीने उपरांत उसने बारा बारा पावलोवना से अपना प्रेम प्रकट किया और उस से अपनी पत्नी बन जाने की प्रार्थना की। उस का प्रस्ताव स्वीकृत हुआ। जनरल ने पहले ही दिन मिखाइलेविच से दरियाफ़्त किया था कि लाव्रेस्की कितनी बड़ी जागीर का मालिक है। बारावारा पावलोवना कोर्टशिप के इस अरसे में, और उस समय भी जब लाव्रेस्की विवाह का प्रस्ताव पेश कर रहा था, अपने स्वभावानुसार शाँत और गम्भीर बनी रही। वह भी पहले से जानती थी कि उसका होने वाला पति एक धनी व्यक्ति है। जहां तक कलियोपा कारनोवना का सम्बन्ध है, वह तो इतनी प्रसन्न हुई कि उसी समय अपने लिये एक सुन्दर और नई टोपी ख़रीद लाई।

: १५ :

तो उसका प्रस्ताव स्वीकृत हो गया, लेकिन उसके साथ कुछ शर्तें लगाई गईं। पहली शर्त यह थी कि लाव्रेस्की तत्काल पढ़ना छोड़ दे। कौन लड़की एक विद्यार्थी से विवाह करना पसंद करेगी, और यह बड़ी अजीब बात थी कि एक जागीरदार, धनी मानी व्यक्ति छब्बीस वर्ष की उम्र में, एक लड़के की तरह स्कूल में पढ़ने जाये। दूसरे वाराबारा पावलोवना ने कहा कि अपने वस्त्र और दूल्हा की ओर से उपहार भी वह खुद ख़रीदेगी। उसे इन बातों का काफ़ी तज़र्बा और ज्ञान था और वह शान से रहना जानती थी। लाव्रेस्की को भी इस विषय में उसका लोहा मानना पड़ा। वह यह देख कर चकित रह गया कि विवाह के उपरांत जिस गाड़ी में बैठ कर वह लाव्रेकी को चले वह बहुत ही सुंदर और सुखप्रद थी, और उसे वाराबारा पावलोवना ने खरीदा था। उनके इर्द गिर्द जो भी चीज थी उससे स्पष्ट था कि वाराबारा पावलोवना ने उसे खरीदने और सजाने में बड़ी सूझ-बूझ और बुद्धिमता से काम लिया है। कपड़े रखने के सूट केस, तौलिये, साबुन और टी सेट, सब चीज़ें कितनी सुन्दर थी और सुबह वाराबारा पावलोवना ने खुद अपने हाथ से कितनी सुन्दर चाय तैयार की थी।

लाव्रेस्की को उस समय कुछ सुझाई नहीं देता था। वह सुन्दरता में खोया और उल्लास में डूबा हुआ बिलकुल एक निरीह बालक की तरह भोला भाला दिखाई देता था। उसे अपनी जवान और सुन्दर

पत्नी प्रसन्नता की प्रतिमा सी दिखाई देती थी, और ऐसा प्रतीत होता था कि उनका भविष्य अपार शुद्ध और पवित्र हर्ष से ओत प्रोत है। जितनी आशा थी वह उससे कहीं बढ़कर निकली। वह भरी दुपहरी में लाव्रे की पहुँचे। घर सूना और उदास था। नौकर पुराने ढंग के और भद्दे थे, लेकिन उसने अपने मन की यह बात पति से नहीं कही। यदि उसका लाव्रे की में रहने का विचार होता तो वह शुरू से आख़िर तक हरेक चीज़ बदल देती और इसका श्री गणेश घर से होता। लेकिन इन सुनसान मैदानों में रहने का विचार एक क्षण के लिये भी उसके मस्तिष्क में नहीं आया। वह तो मार्ग में अनजाने एक पड़ाव अथवा सराय की तरह वहां ठहर गई थी। सारी असुविधायें चुपचाप सहन कर रही थी और मन ही मन में उन पर हँस रही थी। मार्फ़ा तिमोफ़ेवना उसे देखने आई। बारावारा पावलोवना को यह औरत पसंद आई; लेकिन उसने बारावारा पावलोवना को पसंद नहीं किया। नई मालकिन की ग्लाफ़ीरा पेत्रोवना से भी नहीं बनी। वैसे वह आराम उसे से अपना काम जारी रखने देती; लेकिन उसका पिता चाहता था कि इतने निकट सम्बंधी की जागीर का प्रबंध खुद करने में एक जनरल की भी मान हानि नहीं हो सकती। यह तो सम्बंधी था, पावेल पेत्रोविच को किसी अजनबी और पराये व्यक्ति की सम्पत्ति का प्रबंध सम्हालने से भी इनकार न होता। बारावारा पावलोवना ने ग्लाफ़ीरा पेत्रोवना को वहां से हटाने का काम बड़ी चतुरता से शुरू किया। उसने अपने आप पर ज़रा भी आक्षेप नहीं आने दिया। ऐसा लगता था कि वह तो अपने विवाह—प्रेम में, संगीत में और देहात के विस्तृत सौंदर्य में डूबी हुई है। घर में क्या हो रहा है इस बात से उसे कोई सरोकार ही नहीं है। लेकिन उसने धीरे धीरे ग्लाफ़ीरा को इतना भड़का दिया कि वह एक दिन आवेश में भरी हुई लाव्रे स्की के कमरे में गई और चाबियों का गुच्छा उसके सामने पटक कर बोली--

"मुझ से इस घर का प्रबंध नहीं होता। तुम जो चाहो करो, मैं तो जाती हूँ।" लाव्रेस्की जैसे पहले ही से इस अवसर की प्रतीक्षा कर रहा हो, उसे भेज देने के लिये फौरन तैयार हो गया। ग्लाफ़ीरा पेत्रोवना को उससे इस बात की आशा नहीं थी। "अच्छा" वह बोली और उसकी आँखें डबडबा आईं, "लगता है कि अब इस घर में मेरा रहना अखरता है। मैं खूब जानती हूँ मुझे यहां से—मेरे घर से कौन निकाल रहा है। लेकिन बेटा! मेरी यह बात याद रखना कि तुम्हें भी कहीं घर बसाना नसीब न होगा। सारी उम्र भटकते गुजरेगी! बस मैं तुम्हें इतना ही कहना चाहती थी।" उसी दिन वह अपने छोटे से गांव को चली गई। और एक सप्ताह बाद जनरल कोरोबिन ने वहां पहुँच कर तमाम जागीर का प्रबंध अपने हाथ में ले लिया।

सितम्बर में वारावारा पावलोवना पति को साथ लेकर सेंट पीटर्सबर्ग चली आई। उन्होंने वहां दो सर्दियाँ (गर्मियों में वे जारकोये सेलो चले जाते थे) बड़े ही सुन्दर और हवादार फ्लैट में बिताईं। उन्होंने मध्यम वर्ग और ऊपर के समाज में भी काफ़ी मित्र बना लिये। वे उनके यहाँ जाते थे, उन्हें अपने यहाँ बुलाते थे। संगीत और नृत्य की सभाओं में शरीक होते थे। वारावारा पावलोवना से अतिथि यों आकर्षित होते थे, जैसे पतंगे दीपक से खिंचते हैं। इस प्रकार का जीवन फ्योदोर इवानिच को पसंद नहीं था। पत्नी ने उसे कोई सरकारी नौकरी कर लेने की सलाह दी। लेकिन एक तो पिता की याद के कारण और कुछ अपने ही मन से उसे, सरकारी नौकरी से घृणा थी। वह सिर्फ वारावारा पावलोवना के लिये सेंट पीटर्सबर्ग में ठहरा हुआ था। अलबत्ता उसे इस बात का आभास हुआ कि उसके एकान्तवासी रहने में किसी को एतराज़ नहीं है और वह पीटर्सबर्ग में रहते हुए बड़े आराम से पढ़ सकता है। यदि वह पढ़ना चाहे

तो पत्नी से भी इस काम में सहायता मिल सकती है। और इसके बाद सब ठीक हो गया। वह अपनी अधूरी शिक्षा पूरी करने में जुट गया। उसने दोबारा पढ़ना शुरू किया और इस बार अंग्रेजी भाषा का विषय भी साथ ले लिया। उसके चौड़े-चौड़े कंधे और लम्बे शरीर को पुस्तक पर झुके, और दाढ़ी से भरे हुए चेहरे को शब्दकोष अथवा कापी से आधा ढके देखना, बहुत ही अजीब और भला लगता था। सुबह का समय वह पढ़ने में व्यतीत करता, दोपहर को उसे बहुत ही बढ़िया भोजन मिलता, (बारावारा पावलोवना गृहस्थ-कार्य में निपुण थी) शाम को वह सुन्दर सुरभित, और जगमगाती दुनियां में प्रवेश करता, जिसमें चम चमाते नौजवान चेहरे होते थे और इस दुनिया का केन्द्र उसकी पत्नी--बारावारा पावलोवना होती थी। उसके एक लड़का भी उत्पन्न हुआ जिसे देखकर प्योदोर की आत्मा खिल उठी। लेकिन वह बेचारा बहुत दिन जीवित नहीं रहा। उनका यह बच्चा बसन्त में मर गया और गर्मियों में प्योदोर इवानिच डाक्टर के मशविरे पर जलवायु तब्दील कराने विदेश ले गया। इस आघात के उपरांत उसका मन बहलाने की आवश्यकता थी और वह रूस की गर्मी सहन नहीं कर सकती थी। उन्होंने गर्मी और पतझड़ जर्मनी और स्वीटजरलैंड में बिताये और सर्दियों में वे पेरिस चले गये। पेरिस में बारावारा पावलोवना गुलाब की तरह खिल उठी, और अपने लिये उतनी ही जल्द एक छोटा सा घोंसला तैयार कर लिया जितनी जल्दी कि पीटर्सबर्ग में किया था। उसे एक शांत, लेकिन फैशन प्रिय पड़ोस में एक सुन्दर बंगला मिल गया। उसने पति के लिये ऐसा गाऊन सिलवाया, जैसा उसने पहले कभी नहीं पहना था। उसने सुन्दर सेविका, एक अच्छे रसोइये और एक होशियार गाड़ीवान को नौकर रखा और अपने लिये एक नया पियानो खरीदा। एक सप्ताह के अंदर वह शाल पहने, और छतरी लगाये गलियों में से ऐसे गुजरती थी जैसे

जन्म ही से पेरिस में रहती हो। उसने जल्द ही एक मित्र मंडली तैयार करली। पहले रूसियों से परिचय हुआ, फिर फ्रांसिसी आने लगे। वे सब सभ्य व्यक्ति थे, शिक्षित और कुंवारे, बड़े ही नम्र और सुशील, बड़ी अच्छी बात चीत करते थे, झुककर दाद देते थे और आँखे शानदार ढंग से मटकाते थे, सुर्ख होंठ खुलते ही सफेद दाँत चमक उठते थे और मुस्कराहटें—उनका तो जवाब ही नहीं था। हर एक अपने मित्रों को साथ लाता और यों परिचितों की संख्या बढ़ती गई और वारावारा पावलोवना की ख्याती सारे पेरिस में फैल गई।

उन दिनों (यह १८२६ की बात है) पत्रकार और सम्वाददाता आज कलकी नाई चींटियोंकी तरह हर जगह फैले हुए नहीं थे। उस समय उनकी पूछ इतनी नहीं बढ़ी थी। फिर भी एक सज्जन जूलेस, वारावारा पावलोवना के यहाँ आता था। उसके चेहरे पर चेचक के दाग़ थे, बहुत ही बदनाम और उद्दंड व्यक्ति था। लोग उससे घृणा करते थे। वारावारा पावलोवना भी उसके प्रति उपेक्षा और अवज्ञा का भाव रखती थी, लेकिन इस लिये आदर सत्कार करना पड़ता था क्योंकि वह भिन्न २ पत्रों में लिखता रहता था, और उन लेखों में अकसर वारावारा पावलोवना का उल्लेख करता था। वह उसका बहुत प्रशंसक था और इन पत्रों के पाठकों को उसने यह विश्वास दिलाया था कि वारावारा पावलोवना बहुत ही सुन्दर, चतुर और आकर्षक स्त्री है। आधुनिक युग के सभी अच्छे गुणों की वह प्रतिमा मात्र है। एक शब्द में यों कहिये कि जूलेस ने उस की ख्याति को दूर दूर तक फैला दिया था और यह कोई मामूली बात नहीं थी। मादाम मारिस रंगमंच पर आना छोड़ चुकी थी। और मादाम राशेला ने अभी अभिनय शुरू नहीं किया था, इसके बावजूद वारावारा पावलोवना नित्य प्रति थियेटर देखने जाती थी। उसे अतालवी संगीत बहुत पसंद था। दुखांत नाटक उसे खूब हंसाते थे और प्रेम के दुखांत नाटकों में मादाम डोबील का अभिनय देख उसकी

आंखों में आंसू उमड़ आते थे। और फिर विशेष बात यह थी कि लिसजे दो बार उसके घर आ चुका था। उसने वहां गाना सुनाया था। वह कितना भला और सीधा सादा था—इस विचार से मन खिल उठता था, गर्व से भर जाता था! सर्दी इसी आमोद प्रमोद में बीत गई, और उसका अंत होते-होते यारोवारा पावलोवना की राज सभा तक पहुँच हो गई। फ्योदोर इवानिच भी इन दिलचस्पियों से उदासीन नहीं था, यह दूसरी बात है कि कई बार उसे जीवन बोझ महसूस होता और लगता कि वह शून्य में लटक रहा है। वह अखबार पढ़ता, बहसें सुनता, सोर्बोने और कालेज दी फ्रांस में भाषण सुनने जाता और सिंचाई पर एक प्रसिद्ध वैज्ञानिक पुस्तक का अनुवाद भी उसने शुरू कर दिया। "मैं अपना समय व्यर्थ नहीं खो रहा," वह सोचता, कुछ न कुछ तो हासिल हो रहा है। लेकिन यह निश्चित है कि अगामी सर्दी में रूस लौट जाऊंगा और वहाँ अपना काम सम्हालूंगा।" यह कहना कठिन है कि उसके मस्तिष्क में कोई स्पष्ट योजना थी और वह काम किस ढंग का करना चाहता था। और यह भी कौन कह सकता है कि वह आगामी सर्दी रूस लौट भी सकता है या नहीं। लेकिन इस बीच में जब वह अपनी पत्नी के साथ वादेन जाने वाला था.....
अनायास एक ऐसी घटना हो गई, जिसने सब कुछ चौपट कर दिया।

: १६ :

एक दिन बाराबारा पावलोवना की अनुपस्थिति में लाव्रेंस्की उसके कमरे में चला गया और देखा कि बड़ी सावधानी से तह किया हुआ एक काग़ज़ का पुर्ज़ा फ़र्श पर पड़ा है। उसने यंत्र की तरह उसे उठा लिया, यंत्र की तरह खोला और पढ़ा। उस में फ्रांसिसी भाषा में यह शब्द लिखे हुए थे :—

"मेरी प्रिय बेप्सी (मैं तुम्हें बेप्सी अथवा बाराबारा कहने पर विवश हूँ), मैंने बाग़ के कोने पर तुम्हारी व्यर्थ प्रतीक्षा की। कल डेढ़ बजे गरीबख़ाने पर आओ। उस समय तुम्हारा भीमकाय पति पुस्तकें चाटने में व्यस्त होता है। हम तुम्हारे कवि पुश्किन का वह गीत' "बूढ़े पति; निष्ठुर पति" जो तुम ने मुझे सिखाया है, फिर गायेंगे। तुम्हारे नन्हे हाथों और पांवों का हज़ार बार चुम्बन।

अर्नेस्ट

(मैं तुम्हारा इन्तज़ार करूंगा)

पत्र का मतलब एक दम उसके मस्तिष्क में नहीं उतरा, लाव्रेंस्की ने उसे दोबारा पढ़ा, उसका सिर चकराने लगा और कमरे का फ़र्श डूबते हुए जहाज़ के तख़्ते की तरह उस के पांव के नीचे डगमगाने लगा। उसके मुंह से चीख़ निकल गई और यह धाड़ें मार कर रोने लगा।

वह बिलकुल पागल हो गया। उसे अपनी पत्नी पर इतना अंध विश्वास था कि इस धोखे और विश्वासघात का उसे कभी विचार

तक नहीं आया था। यह अर्नेस्ट, उसकी पत्नी का प्रेमी, २३ साल का, ठिगने क़द का लड़का था, उसकी नाक चपटी थी और मूँछें भूरी थीं। वह उसके परिचितों में सबसे तुच्छ व्यक्ति था। कुछ मिनट बीते, आधा घंटा बीत गया और लाव्रेन्स्की अब भी काग़ज़ के उस शुदनी पुर्ज़े को अपने हाथ में मसोस रहा था और सूनी आँखों से फ़र्श की ओर देख रहा था। उसे ऐसा लगता था जैसे अंधेरे में से बहुत से चेहरे उसकी ओर घूर रहे हों और उसका मज़ाक़ उड़ा रहे हों। उसका मन डूब रहा था और वह क्षण क्षण गर्त में--अथाह गर्त में डूबता जा रहा था। जाने बूझे रेशमी वस्त्रों की सरसराहट ने उसे चौंका दिया। बारबारा पावलोव्ना हैट और शाल ओढ़े सैर से लौट कर आई थी। लाव्रेन्स्की सिर से पांव तक काँप उठा और एक दम कमरे से बाहर निकल गया। उसी क्षण वह अपने आप में कुछ ऐसा जोश महसूस कर रहा था कि वह उसका अंग-अंग तोड़ डालेगा, पीटते पीटते उसकी हत्या कर देगा और एक अपढ़ गंवार किसान की तरह शव के टुकड़े टुकड़े करके फेंक देगा। बारबारा पावलोव्ना चकित रह गई। उसने उसे रोकने की कोशिश की, मगर उसने धीरे से 'बेटसी" कहा और भागकर घर से बाहर निकल गया।

लाव्रेन्स्की ने गाड़ी किराये पर ली और कोचवान से कहा कि मुझे शहर से बाहर ले चलो। बाक़ी तमाम दिन और रात गये तक वह इधर-उधर घूमता रहा। कभी वह ठहर जाता था, अत्यन्त निराशा में अपनी बाहें ऊपर फैलाता था और कभी पागलों की भाँति दौड़ पड़ता था। कई बार उसे चीज़ें इतनी भद्दी और अजीब दिखाई देने लगती थीं कि वह उन पर हंस पड़ता था। सुबह हुई, उसे सर्दी लगी तो वह एक गंदे से होटल में चला गया। वहां एक कमरा लिया और खिड़की के पास कुर्सी पर बैठ कर बाहर झाँकने लगा। उसे उबासियाँ आ रही थीं। उसके लिये अपने पाँव पर खड़ा होना कठिन था। उसकी

शारीरिक शक्ति समाप्त होगई जान पड़ती थी। लेकिन थकावट—थकावट वह बिलकुल महसूस नहीं कर रहा था। थकावट उसके चुपके चुपके खिराज़ वसूल कर रही थी। वह शून्य में झांक रहा था—बस झांक रहा था। उसकी दृष्टि किसी चीज़ पर नहीं पड़ रही थी। वह समझ नहीं सकता था कि उसे क्या हो गया है। वह अकेला क्यों था? उसके अंग अकड़े हुए और सख्त थे, मुँह का स्वाद कटु कटु था, छाती पर पत्थर सा धरा था और वह एक सूने अजनबी कमरे में बैठा था। वह यह समझने में असमर्थ था कि वारिया क्यों इस फ्रांसिसी नौजवान के चुंगल में फंस गई और जानते हुए भी की वह धोखा कर रही है, शांत और गम्भीर बनी रही और झूठा प्रेम जतलाती रही। "मेरी समझ में कुछ नहीं आता" वह बड़बड़ाया, कौन कह सकता है कि वह सेंट पीटर्सबर्ग में भी यही खेल खेलती रही हो..." सोचते सोचते उसने फिर से जम्भाई ली, उसे सर्दी महसूस हुई और सिर से पांव तक कांप उठा। अब अच्छी और बुरी दोनों ही बातें उसे याद आ आकर सता रही थीं। उसे अकस्मात स्मरण हो आया कि कुछ दिन पहले वारावारा पावलोवना ने उसकी और अर्नेस्ट की उपस्थिति में पियानो पर "बूढ़े पति, निष्ठुर पति" का गीत गाया था। फिर उसे वारिया की मुखाकृति स्मरण हो आई। उसकी आँखें एक अजीब शरारत थी और उसके गालों का रंग बदला हुआ था। वह एक दम उछल कर खड़ा हो गया, वह उसी समय जाकर उनसे कहना चाहता था—"तुम लोग मेरा मज़ाक नहीं उड़ा सकते, मुझे बेवकूफ़ नहीं बना सकते। मेरा दादा किसानों को टाँगों से पकड़कर उलटा लटका देता था। और मेरा दादा खुद किसान था.....और फिर दोनों को पकड़ कर धरती पर दे मारे और वहीं खत्म करदे। अकस्मात विचार आया, यह सब एक स्वप्न मात्र है—स्वप्न ही नहीं बल्कि एक बड़ी भारी मूखर्ता है। उसे इस स्वप्न—इस मूखर्ता को झटका दिया और

फिर देखा—उसने शरीर को झटका दिया और इधर-उधर देखा, और जिस प्रकार बाज अपने पंजे अपने शिकार में गड़ाता है; विषाद गहरा-गहरा उसकी आत्मा में पैठता गया। सबसे बड़ी दुख की बात यह थी कि लाव्रेस्की चंद महीने में बच्चे का बाप बनने वाला था..... अतीत, भविष्य उसके समस्त जीवन में विष भर गया था। आखिर वह पेरिस लौट आया। होटेल में एक कमरा किराये पर लिया और अर्नेस्ट का पुर्जा निम्नलिखित पत्र के साथ बारावारा पावलोवना को भेज दिया:—

"इस पत्र के साथ जो पुर्जा भेज रहा हूँ, वह काफ़ी है उससे अधिक कुछ कहने की आवश्यकता नहीं थी। फिर भी मैं इतना कहना चाहता हूँ कि तुम तो बड़ी चतुर और सावधान रहती हो, तुम से यह इतना ज़रूरी पुर्जा कैसे गिर गया। (बेचारा लाव्रेस्की यह वाक्य कई घंटों से सोच रहा था।) मैं अब तुम्हें देखना नहीं चाहता, मैं समझता हूँ कि तुम भी मुझे मिलने का प्रयत्न नहीं करोगी। मैं तुम्हारे लिये पंद्रह हजार रुपये फ्रेंक वार्षिक नियत कर रहा हूँ—इससे अधिक का सामर्थ्य मुझ में नहीं है। गाँव के डाकखाने में अपना पता भेज देना। जो चाहो करो, जहां चाहो रहो, मैं यही चाहूंगा कि तुम सदा प्रसन्न रहो। उत्तर की आवश्यकता नहीं।

लाव्रेस्की ने लिख तो दिया कि उत्तर की आवश्यकता नहीं, लेकिन वह अधीर्य से उत्तर की प्रतीक्षा करता रहा, क्योंकि वह सोचता था कि शायद उत्तर से इस विचित्र और अबूझ घटना की कुछ व्याख्या हो जाये। बारावारा पावलोवना ने उसे फ्रांसिसी भाषा में बड़ा लम्बा पत्र लिखा। यह अंतिम और भीषण आघात था, अब किसी संदेह-संशय की गुंजाश्य नहीं थी—और इस समय तक उसने मन को जो सन्देह में डाल रखा था, उसके लिये पछता रहा था। बारावारा पावलोवना ने किसी प्रकार की सफाई पेश नहीं की। वह सिर्फ उससे

मिलना चाहती थी और उसने प्रार्थना की थी कि वह यह अंतिम निर्णय न करे। पत्र बहुत ही शुष्क और संयत था। हाँ कहीं कहीं आँसुओं के चिन्ह मिलते थे। लाव्रेंस्की विद्रूप भाव से मुस्कराया और पत्र वाहक से कहा कि बस ठीक है, और कुछ नहीं हो सकता। तीन दिन बाद वह पेरिस से चल पड़ा, लेकिन वह रूस जाने के बजाये इटली गया। वह खुद नहीं जानता था कि उसने इटली आना क्यों पसंद किया। बात दर असल यह थी कि वह घर नहीं जाना चाहता था, और कहीं भी जाये, इससे कुछ फ़र्क नहीं पड़ता था। उसने अपने कारिंदे को अपनी पत्नी के अलाऊँस के बारे में लिखा और हुक्म दिया कि जनरल कोरोबिन से जागीर का तमाम प्रबंध तत्काल संभाल ले, उसे हिसाब तक तैयार करने की मुहलित न दे और उसे लाव्रेंकी से विदा कर दे। वहाँ से निकाले जाते समय वह खिन्न और अप्रतिभ जनरल की कल्पना करने लगा, और इसमें उसे इस भीषण दुख में एक प्रकार का संतोष प्राप्त हुआ। इसी समय उसने ग्लाफ़ीरा पेत्रोवना को लिखा कि वह लाव्रेंकी लौट आये और जागीर का प्रबंध करे और इसके लिये उसने एक अधिकार पत्र भी भेजा। मगर ग्लाफ़ीरा पेत्रोवना लौट कर लाव्रेंकी नहीं आई और उसने अख़बार में निकलवा दिया कि इस अधिकार पत्र का कोई मूल्य नहीं यह बिलकुल व्यर्थ की चीज़ है, हालाँ कि अख़बार में निकलवाने की ज़रूरत नहीं थी।

लाव्रेंस्की इटली के एक छोटे से गांव में रहता था और वहीं बैठा-बैठा अपनी पत्नी की गति विधि पर भी निगाह रखता था। उसे अख़बार से पता चला कि वह पेरिस से बादेन-बादेन चली गई है, फिर शीघ्र ही हमारे मित्र ज़ूलेस की एक रिपोर्ट में उसका उल्लेख हुआ। यह रिपोर्ट पढ़कर फ्योदोर इवानिच का मन घृणा और अवज्ञा में भर गया। इसके बाद मालूम हुआ कि उसके लड़की उत्पन्न हुई

है। दो महीने बाद कारिंदे ने बताया कि वारावारा पावलोवना को एक महीने का अलाऊंस पहुँच गया है। फिर बुरी-बुरी अफ़वाहें उड़ने लगीं, जिन का अंत एक भयानक और हास्यप्रद कहानी में हुआ। यह कहानी देश-विदेश के तमाम समाचार पत्रों में प्रकाशित हुई। अब और कुछ जानने की जरूरत ही न रह गई। वारावारा पावलोवना की बदनामी की चर्चा कहाँ नहीं थी ?

लाव्रेंस्की अब उस की गतिविधि पर निगाह नहीं रखता था, लेकिन कुछ समय तक वह स्वयं विकृत-सा रहा। कभी सोचता कि दौड़ कर पत्नी के पास चला जाये, उसके सारे दोष क्षमा कर दे—वह उस का मधुर और स्नेहासिक्त स्वर सुनने के लिये लालायित हो उठता, और उस का हाथ अपने हाथ में थाम लेने को व्याकुल हो उठता। मगर यह सम्भव नहीं था। दुख सहते-सहते शहीद हो जाना उस का काम नहीं था, उस की बलिष्ट प्रकृति ने अपना प्रभाव दिखाया था। उस की आंखें खुल चुकी थीं, उसे इस बदनामी और रुसवाई का खेद नहीं था, वह अब पत्नी को भली प्रकार समझ चुका था—हम अपने सगे-सम्बन्धियों को वास्तव में उसी समय समझ पाते हैं, जब उन से दूर रहते हैं। वह फिर अपनी शिक्षा आरम्भ करेगा, फिर अपने काम में लग जायेगा, गो पहला सा उत्साह अब लौट कर नहीं आयेगा। अविश्वास, जो जीवन की कठिनाइयों और उस की आरिम्भक शिक्षा से उत्पन्न हुआ था, अब उस के जीवन का अविच्छेद अंग बन चुका था। वह अब संसार से विरक्त और उदासीन था। चार साल बीत गये और उस ने महसूस किया कि मुझ में अभी इतनी शक्ति है कि मैं घर लौट सकूं और अपने लोगों से आंख मिला सकूं। वह सेंट पीटर्सबर्ग अथवा मास्को कहीं नहीं ठहरा, सीधा ओ —नगर में पहुँचा, और यहीं हम ने उसे छोड़ा था और हम पाठकों से प्रार्थना करेंगे कि वह हमारे साथ एक बार फिर वहीं लौट चलें।

: १७ :

अगले दिन लग-भग दस बजे सुबह लाव्रेस्की कालिटीन के सेहन की सीढ़ियां चढ़ रहा था। उसे लीज़ा मिली जो हैट और दस्ताने पहने आ रही थी।

"आप कहां जा रही हैं?" उसने पूछा।

"गिरजा, आज इतवार जो है।"

"अच्छा, आप गिरजे भी जाया करती हैं।"

लीज़ा एक मूक उत्तर बनी उसकी ओर देखती रही।

"मैं आप से क्षमा चाहता हूं।" लाव्रेस्की बोला, "मेरा..... मेरा यह मतलब बिलकुल नहीं था। मैं एक घन्टे में गांव जा रहा हूँ और आप से विदा होने आया हूँ।"

"गांव यहां से दूर तो नहीं, क्या दूर है?" लीज़ा बोली।

"लगभग पच्चीस कोस है।"

लेनोचका एक नौकरानी के साथ बाहर आई।

"अच्छा, हमें भूलिये मत।" लीज़ा ने सीढ़ियाँ उतरते हुए कहा।

"आप भी मुझे न भूलियेगा। हां, सुनिये" वह बोला, "आप गिरजा जा रही हैं, शायद आप मेरे लिये भी प्रार्थना करेंगीं।

लीज़ा ठहर गई और घूम कर उसके सामने हो गई। "यदि आप चाहें" उसने लाव्रेस्की की ओर ताकते हुए उत्तर दिया, "मैं आप के लिये भी प्रार्थना करूंगी। लेनोचका, आओ चलें।"

लाव्रेस्की को ड्राईंग रूम में मेरिया दमीतरीवना अकेली मिलीं।

उन्हें जुकाम की शिकायत थी और वे यूक्लिपिटस सूंघ रही थीं। उसने अपनी स्वाभाविक शिथिलता से लाव्रेस्की का सत्कार किया और धीरे धीरे उससे बातचीत करने लगी :—

व्लाड़ीमीर निकोलाइच एक अच्छा नौजवान है—क्यों आप का क्या विचार है ?" उसने लाव्रेस्की से पूछा।

"कौन है वह व्लाड़ीमीर निकोलाइच ?"

"पैशिन ! क्या तुम उसे नहीं जानते थे। कल यहीं तो था। तुम्हें तो वह अच्छी तरह जान गया। तुम्हें घर का आदमी समझकर बताती हूँ। वह कानों तक लीज़ा के प्रेम में डूबा हुआ है। वह अच्छे कुल का है, चतुर और चालाक है, सरकारी अफ़सर है और उस का भविष्य शानदार दिखाई देता है। भगवान की कृपा से अगर यह सम्बन्ध हो गया तो मां के नाते मैं बहुत प्रसन्नता हूँगी। वैसे यह बड़ी ज़िम्मेदारी का काम है। बच्चों की प्रसन्नता माता पिता पर निर्भर है। हम इस से बच नहीं सकते। तुम देखते हो, मैं यहां अकेली रहती हूँ। मैंने इन्हें पाला पोसा इन की शिक्षा का प्रबन्ध किया, सब भांति से इन के आराम का ध्यान रखा है। मेरे सिवा इन का और कौन था ! अब भी एक फ्रांसिसी अध्यापिका पढ़ाने आती है....."

मेरिया दमीतरीवना एक बार शुरू से ले कर अपने सुख-दुख और माता के कर्त्तव्य के बारे में विस्तार से बताने लगी। लाव्रेस्की अपने हैट से खेलता हुआ, चुपचाप सुनता रहा और उसकी आँखों में उदासीनता का शून्य भाव देख कर ही इस बातूनी औरत को अपनी राम कहानी बन्द करनी पड़ी।

"और लीज़ा के बारे में तुम्हारा क्या विचार है ?" वह बोली "इलीज़ावेटा मिखालोवना बड़ी अच्छी लड़की है।" लाव्रेस्की ने उत्तर दिया।

इतना कहा और उठ खड़ा हुआ। वह उसे नमस्ते कर के मार्फ़ा

तिमोफ़ेवना से मिलने चला। मेरिया दमोतरीवना ने उसे जाते हुए उपेक्षा से देखा। और मन ही मन में सोचने लगी "कितना गंवार व्यक्ति है, एक दम देहाती है। यही कारण है कि इस की पत्नी इसे छोड़ कर चली गई।

मार्फ़ा तिमोफ़ेवना घर के सब प्राणियों को अपने गिर्द जमा किये कमरे में बैठी थी। उन में घने बालों वाला एक छोटा-सा कुत्ता था जिस का नाम रोस्का था, मेत्रोस नाम की एक चिड़चिड़ी बिल्ली थी, एक नौ साल की नन्हीं लड़की थी, जिस की आंखें बड़ी बड़ी और नाक तीखी थी, उस का नाक शरोचका था और फिर एक पचपन साल की बुढ़िया कार्पोवना ओगार्कोवा थी, जो काले लिबास पर भूरे रंग की छोटी जाकेट पहनती थी। शरोचका एक गरीब और अनाथ लड़की थी। मार्फ़ा तिमोफ़ेवना उसे तरस खाकर रोस्का की तरह अपने घर ले आई थी। यह कुत्ता और यह लड़की दोनों ही उसे गली में मिल गये थे। दोनों ही भूखे-प्यासे और दुर्बल शरीर थे। और दोनों वर्षा में भीग रहे थे। रोस्का का कोई नहीं था और शरोचका को उस के चाचा ने अपने आप छोड़ दिया था। वह एक शराबी मोची था, अपना पेट भरने के लिये ही उसके पास काफी पैसे नहीं होते थे, अपनी इस भतीजी को खिलाने के बजाये खूब पीटा करता था। कार्पोवना ओगार्कोवा उसे गिरजे में मिली थी और इसलिये पसंद आ गई थी कि वह प्रार्थना बड़ी तन्मयता से करती थी। इसलिये उसे अपने घर चाय पर बुलाया था और उस समय से वह वहीं रहने लगी थी। कार्पोवना ओगार्कोवा एक गरीब विधवा थी और उसके कोई बच्चा नहीं था। उसका सिर गोल और बाल सफेद थे, मुख कोमल और हाथ बर्फ के सदृश चिट्टे थे। वह मार्फ़ा तिमोफेवना का बहुत आदर करती थी, जो उसे प्यार करती थी और उससे मज़ाक भी किया करती थी। उसके चरित्र की एक विशेष दुर्बलता यह थी कि किसी

नौजवान का नाम सुनते ही वह कुंवारी कन्या की तरह लजा जाती थी। उस की सारी पूंजी बारह सौ रूबल थी। अब वह मार्फ़ा तिमोफ़ेवना के खर्च पर जीवन बिता रही थी, लेकिन उससे समता का व्यवहार होता था, मार्फ़ा तिमोफ़ेवना उसे कभी अपनी नौकरानी नहीं समझती थी।

"आह ! फ़ेदिया !" वह उसे देखते ही चिल्लाई, "तुमने रात हमारे परिवार को नहीं देखा। अब हम सब चाय पर इक्कट्ठे बैठे हैं। तुम इन सब को थपथपा सकते हो, सिर्फ शरोचका पसंद नहीं करेगी और बिल्ली पंजा मारेगी। क्या तुम आज ही जा रहे हो ?"

"हां," लाव्रेस्की एक छोटे स्टूल पर बैठ गया, "मैं मेरिया दमीतरीवना से पहले ही विदा हो आया हूँ, इलीज़ावेता मिखालोवना से भी भेंट हो चुकी है।"

"उसे लीज़ा कहो। भोले लड़के, वह तुम्हारे लिये मिखाखोवना कब से हो गई ! हिलो नहीं, वरना तुम शरोचका का स्टूल तोड़ डालोगे।"

"वह गिरजे जा रही थी। लाव्रेस्की कहता रहा, "मुझे मालूम नहीं था कि वह इतनी धर्मात्मा है।"

"हां फ़ेदिया वह बहुत अधिक धर्मात्मा है, हम और तुमसे अधिक धर्मात्मा है।"

"क्या आप धार्मिक नहीं हैं ?" कार्पोवना ने तेज़ आवाज़ में कहा। आप सुबह की प्रार्थना में नहीं गईं, लेकिन शाम की प्रार्थना में तो जा रही हैं।"

"नहीं, मेरी प्रिय सखी, तुम अकेली जाओगी। मैं बड़ी आलसी हो गई हूँ।" मार्फ़ा तिमोफ़ेवना ने कहा।

"मैं यह जानना चाहता हूँ। लाव्रेस्की ने कहना शुरू किया, "मेरिया दमीतरीवना मुझसे अभी किसी के बारे में कह रही थीं...

...उसका नाम शायद पैंशिन है। वह किस प्रकार का व्यक्ति है!"

"तोबा, यह औरत कितनी बातूनी है।" मार्फ़ा तिमोफ़ेवना बड़बड़ाई, "शायद वह तुम्हें बड़े विश्वास के साथ बता रही होगी कि उस ने कितना अच्छा प्रेमी फांस लिया है। वह इस पादरी के लौंडे से स्वयं क्यों गिट गिट नहीं करती, दूसरों को खाह-मखाह क्यों बीच में लाती है। अच्छा है कि इस सम्बन्ध में अभी तनिक भी बात नहीं हुई। लेकिन वह चर्चा करती है और गप हांकती है।"

"अच्छा है, से क्या मतलब?" लाव्रेंस्की ने पूछा।

"अच्छा इस लिये कि वह लड़का मुझे जरा भी पसंद नहीं। मैं नहीं समझती कि इस में प्रसन्न होने की क्या बात है?"

"तो आप उसे पसंद नहीं करतीं?"

"नहीं, बिलकुल नहीं। हर एक आदमी उसे पसंद नहीं कर सकता। यह दूसरी बात है कि कार्पोवना उससे प्रेम करती है।"

बेचारी विधवा लजा गई।

"मार्फ़ा तिमोफ़ेवना, कैसी बातें करती हो क्या आप को भगवान का ज़रा भी भय नहीं।" वह अपनी तेज़ आवाज में चिल्लाई।

"वह बदमाश, औरत का मन मोह लेना भी खूब जानता है। "मार्फ़ा तिमोफ़ेवना ने कहा, "उसने इन्हें नस्वार की एक बहुत सुन्दर डिबिया भेंट की है, उस के ढकने पर एक घुड़सवार नौजवान का चित्र है। तुम इन से नस्वार की एक चुटकी मांगो तो यह उसी डिबिया से निकाल कर देंगी। देखो तुम व्यर्थ की बात न बनाना जब एक बात है तो है।"

बेचारी विधवा ने घबरा कर हाथ ऊपर उठा दिये। और उन्हें निराशा से हिलती रही।

"और लीज़ा का क्या विचार है? लाव्रेंस्की ने पूछा, "क्या वह उसे पसंद करती है।

"मैं समझती हूँ कि पसंद करती है। और ठीक तो परमात्मा ही जानता है।" तुम जानते हो एक अजनबी हृदय घने जंगल के सदृश है और फिर एक लड़की के हृदय को समझना तो और भी कठिन है। उदाहरण स्वरूप उस शरोचका के ही हृदय को लो और इसे समझने की कोशिश करो ! जब से तुम आये हो, बाहर जाने के बजाये यह अपने आप को छिपाये क्यों बैठी है ?"

शरोचका ने खिन्नता से दांत निकाले और उठ कर कमरे से बाहर भाग गई," लाव्रेंस्की भी जाने के लिये खड़ा हो गया।

"हां," वह धीरे से बोला, "लड़की का हृदय एक पहेली है।" वह जाने की आज्ञा मांगने लगा।

"अच्छा, तो तुम से फिर शीघ्र भेंट होने की आशा रखें ? मार्फ़ा तिमोफ़ेवना ने कहा।

"हां, फूफी। तुम जानती हो, गांव कोई अधिक दूर तो है नहीं।"

"यह तो ठीक है। वासिलियोवस्कोई जा रहे हो। तुम लाव्रेंस्की में नहीं रहना चाहते। अच्छा यह तुम्हारी अपनी पसंद है। सिर्फ़ अपनी माता की क़ब्र पर हो आना और दादा की क़ब्र पर भी ज़रूर जाना। तुम विदेश में जाकर बहुत सी नई बातें सीख आये हो, और कौन जानता है कि शायद वह अपनी क़ब्रों में यह महसूस करें कि तुम उन के पास आये हो। और फ़ेदिया, ग्लाफ़ीरा पेत्रोवना के लिये प्रार्थना कराना भी मत भूलना, इस के लिये मुझ से यह एक रूबल लेते जाओ। आओ, आओ और यह लेलो, मैं चाहती हूँ कि यह फ़र्ज भी सिर से उतर जाये। जब वह जीवित थी, मैं उसे पसंद नहीं करती थीं, लेकिन यह सत्य है कि वह एक स्वछंद और स्वतंत्र स्वभाव की स्त्री थी। वह चतुर भी थी और उसने तुम से कोई दुर्व्यवहार भी नहीं किया। अच्छा जाओ, जब तक ठहरोगे, मैं तो यों हीं तुम्हारा सिर खाती

रहूँगी।"

और मार्फ़ा तिमोफ़ेवना ने भतीजे का स्नेहालिंगन किया। "और लीज़ा पैंशिन से विवाह नहीं करेगी, तुम चिंता मत करो। उसके लिये उससे कोई योग्य पति होना चाहिये।"

"मुझे तो तनिक भी चिंता नहीं।" लाव्रेत्स्की ने कहा और वह चला गया।

: १८ :

चार घंटे उपरान्त वह गाँव को जा रहा था। देहाती सड़क पर उसकी गाड़ी दौड़ी जा रही थी। दो सप्ताह से वर्षा नहीं हुई थी। फ़िज़ाँ में एक सुहानी सफ़ेद धुंध छाई हुई थी, जिसने दूरस्थ जंगल को छिपा रखा था, जिसमें से जलने की सुगंध आ रही थी। नीले आकाश पर बहुत से सफ़ेद धुंधले बादल छाये हुए थे और तेज़ हवा चल रही थी, लेकिन धूप फिर भी तेज़ थी। अपनी बाहें छाती पर कसे और सिर तकिये पर रखे लावरेंस्की बाहर की ओर झांक रहा था और एक बड़े पंखे की तरह फैले हुए खेतों, सामने से गुज़रती झाड़ियों, पहाड़ियों, नालों और पक्षियों को देख रहा था। कहीं कहीं चटीयल मैदान और ठूंड, मुंड वृक्ष थे। यह रूसी भूमि थी जिसे देख कर उसने मन में नाना प्रकार के विचार उठ रहे थे। ये विचार गाड़ी की भाँति तेज़ी से चल रहे थे और बादलों की तरह धुंधले और मटमैले थे। उसे बादल भी अपने विचारों की तरह घूमते दिखाई देते थे। उसे अपना बचपन, अपनी माता और उसके मरने का दृश्य याद आ रहा था, उसे कैसे माँ के पास लाया गया था और उसने क्योंकर उसे अपनी बाहों में भींच कर छाती से लगा लिया था। वह स्नेहालिंगन से रोना चाहती थी, लेकिन ग्लाफ़ीरा को देखकर रूक गई थी। उसे अपना बाप याद आया। पहले वह कितना स्वस्थ था, सदा असंतुष्ट रहता था और भारी स्वर में बोलता था, फिर अन्धा, बीमार और दुखी रहने लगा। उसकी वह सफ़ेद दाढ़ी, जिसे वह कटवाता

नहीं था। एक दिन भोजन के समय उसने कुछ अधिक पीली थी और शराब अपने कपड़ों पर उडेल कर वह ज़ोर से हंस पड़ा था, और अपनी अंधी आँखों को झपकते हुए अपने जीवन के कारनामों की कहानी सुनाने लगा था। उसे बारबारा पावलोवना याद आई और उसने झुरझुरी ली, जैसे एक गहरी टीस लगी हो और वह दर्द के मारे बिलबिला उठा हो। अंत में वह लीज़ा के बारे में सोचने लगा।

"यह" उसने सोचा, "एक नया प्राणी है, जो जीवन में पग धर रहा है। बहुत अच्छी लड़की है। मुझे आश्चर्य है कि उसका क्या बनेगा? वह आकर्षक भी है। उसके मुख पर ताज़गी और आभा है, आँखे सुन्दर और गंभीर हैं, वह स्वछंद और निरीह जान पड़ती है। उसका शरीर सुडौल और सुगठित है। उसकी चाल में मादकता और आवाज़ में मधुरता है। मुझे यह बात विशेष रूप से पसंद है कि वह एकाएकी ठहर जाती है, ध्यान से सुनती है और फिर उस पर विचार करते हुए अपने बाल पीछे को हटाती है। मैं पैंशिन को उसके योग्य नहीं समझता। मगर उसमें बुराई क्या है? और फिर मुझे क्या मतलब? उसके साथ भी वही होगा, जो सब लड़कियों के साथ होता है। बहुत रहे कि मैं एक झोका नींद का ले लूँ। और लाव्रेस्की ने आँखें बंद कर लीं।

वह सो तो नहीं सका, लेकिन ऊंघने लगा। अतीत की स्मृतियाँ उभरती, और और मस्तिष्क में घूमती रहीं और फिर बात से बात निकलती रही। लाव्रेस्की ने अपनी विचार धारा का रुख़ मोड़ा। वह राबर्टपील और फ्रांसिसी इतिहास की बातें सोचने लगा। सोचा कि अगर मैं सेनापति बन जाऊं तो युद्ध विजय कैसे प्राप्त करूं? वह गोला चलने और बिगुल बजने तक की आवाज़ें सुनने लगा, उसका सिर तकिये से लुढ़क गया और आँख खुल गई। वही खेत और वही मैदान सामने थे। पैदल चलने वालों के जूते रेत में धंस रहे थे और कोचवान की

पीली बंडी हवा में उड़ रही थी। "अच्छे समय घर आये हो" लाव्रेस्की ने सोचा, फिर वह चिल्लाया, "उधर चलो!" ओवरकोट को शरीर के गिर्द लपेटा और तकिये के क़रीब सिमट गया। गाड़ी को धक्का लगा। लाव्रेस्की उठकर बैठ गया और आँखें पूर्ण रूप से खोल दीं। उसके सामने पहाड़ी पर एक छोटा सा गाँव था, दाईं ओर एक घर था, जिसका फाटक बंद था, लेकिन खुला आँगन दिखाई देता था, जिसमें शाहबलूत की एक खत्ती बनी हुई थी। यह गाँव वासलियावस्कोई था।

कोचवान ने गाड़ी दरवाज़े पर ठहरा ली। लाव्रेस्की का नौकर पायदान पर खड़ा होगया और यों दिखाते हुए जैसे नीचे कूद रहा हो उसने आवाज़ दी, "है"। कुत्ता भौंकने की हल्की-सी आवाज़ आई। लेकिन वहां कोई न था, कुत्ता तक भी दिखाई न दिया। नौकर एक बार फिर उसी प्रकार खड़े होकर आवाज़ दी "है!" फिर वही भौंकने की आवाज़ सुनाई दी और एक क्षण में एक आदमी जाने किधर से निकल कर दौड़ता हुआ आँगन में आगया। उसका सिर बर्फ़ की तरह सफ़ेद था। उसने आँखों पर हाथ की ओट कर के गाड़ी की ओर देखा, अकस्मात अपने दोनों हाथ जाँघों पर मारे, इधर-उधर दौड़ना शुरू किया और फिर फाटक खोलने दौड़ा। कोचवान गाड़ी को अन्दर ले गया और ड्योढ़ी पर खड़ा कर दिया। सफ़ेद बालों वाला व्यक्ति तेज़-तेज़ चलता हुआ, पहले ही सीढ़ियों पर जा खड़ा हुआ था, उसने दरवाज़ा खोला, अपने मालिक की गाड़ी से उतरने में सहायता की और फिर उसका हाथ चूम लिया।

"सुनाओ तुम्हारा क्या हाल है?" लाव्रेस्की ने कहा, "मेरा ख्याल है कि तुम्हारा नाम एंटन है? और तुम अभी तक जीवित हो?"

बूढ़े आदमी ने झुककर चुपचाप नमस्कार किया और चाभियाँ लेने चला गया। इस बीच में कोचवान हाथ घुटनों पर रखे अचल बैठा

दरवाज़े की ओर ताकता रहा और लाव्रेस्की का नौकर गाड़ी से उतर कर धरती पर ऐसे खड़ा हो गया जैसे उसे वहीं गाड़ दिया हो। उसने अपना एक हाथ बम्ब पर रख छोड़ा था। बूढ़ा आदमी चाभियां लाया, उसने अपने शरीर को अनावश्यक रूप से सांप की तरह दुहरा करकेऔर कुहनियां हिलाते हुए ताला खोला, खोलकर पीछे हट गया और फिर प्रणाम किया।

"अच्छा, यह मेरा घर है, मैं फिर लौट आया" लाव्रेस्की ने सोचा। सोचते हुए उसने छोटे से हाल में प्रवेश किया। सब खिड़कियां खोल दी गईं। सूने और अंधेरे कमरों में फिर उजाला भर गया।

: १६ :

छोटा-सा घर जिसमें लाव्रेंस्की आकर रहने लगा था, और जहां दो साल पहले ग्लाफ़ीरा पेत्रोवना का देहान्त हुआ था, पिछली सदी में शाहबलूत की मज़बूत लकड़ी से बनाया गया था। देखने को वह पुराना और जर्जर दिखाई पड़ता था, लेकिन अभी पचास साल, बल्कि इससे भी अधिक और रह सकता था। लाव्रेंस्की ने तमाम कमरों का एक चक्कर लगाया। उसे यह देखकर बड़ा दुख हुआ कि जहां-तहां धूल-से सटी मक्खियां बैठी हैं। खिड़कियां आज पहली बार खोली गई थीं। ग्लाफ़ीरा पेत्रोवना की मौत के बाद से वह बंद पड़ा था। घर की हर एक वस्तु ग्लाफ़ीरा की याद दिलाती थी, प्रत्येक वस्तु ढंग से रखी हुई थी, ड्राइङ्ग रूम में उसकी सुन्दर और आलीशान कुर्सी पड़ी थी, कुर्सी की पुश्त बहुत ऊँची और गुदगुदी थीं, लेकिन ग्लाफ़ीरा ने अपने बुढ़ापे में भी कभी इस पुश्त का सहारा नहीं लिया था। बड़ी दीवार पर फ़्रयोदोर एंड्रीच लाव्रेंस्की का चित्र लगा हुआ था। चित्र की पृष्ट भूमि काली थी, उसका त्योरी चढ़ा चेहरा बहुत ही गंभीर मालूम होता था, लम्बी लम्बी पलकों के नीचे से छोटी-छोटी आँखें झांक रही थीं और उसके काले बाल माथे पर बिखरे हुए थे। फ्रेम के एक कोने पर एक मैला सा हार लटक रहा था।

"ग्लाफ़ीरा ने यह हार खुद बनाया था" एंटोन ने कहा।

सोने के कमरे में एक छोटी सी चारपाई पड़ी थी, जिस पर पुराने ढंग की मच्छरदानी लगी हुई थी और सिरहाने की ओर मरीयम

का एक चित्र लटक रहा था। इसके साथ ही पूजा का कमरा था, जिसमें मूर्तियां रखी हुई थीं, फ़र्श पर एक चिकना आसन बिछा हुआ था, इसी पर घुटनों के बल बैठकर ग्लाफ़ीरा पूजा किया करती थी। एंटन नौकर के साथ बाहर चला गया ताकि अस्तबल और गाड़ी-घर का ताला खोला। बाहर उन्हें एक बुढ़िया मिली, जो एंटन की तरह थी। उसके माथे पर रुमाल बंधा हुआ था, उस का सिर हिलता था, आंखें धुंधली थीं, लेकिन उनमें एक प्रकार की उत्सुकता भरी हुई थी, जो शायद बरसों की दासवृत्ति से उत्पन्न हो गई थी—साथ ही उन में एक प्रकार का खेद था। उसने लाव्रेंस्की का हाथ चूमा और दरवाजे में खड़ी हो कर उसके आदेश का इंतज़ार करने लगी। लाव्रेंस्की को बुढ़िया का नाम याद नहीं आया, ऐसा लगता था जैसे उसे पहली बार देखा हो। चालीस साल पहले ग्लाफ़ीरा ने उसे घर से निकाल दिया था। उस का नाम अप्रेक्सिया था। और अब वह मुर्गी खाने में रहती थी। वह बहुत कम बोलती थी, मगर अपनी नीली आंखों से उस की ओर यों झांक रही थी जैसे वह कुछ पागल हो। इन दो बूढ़े प्राणियों के अतिरिक्त बड़े पेटों के तीन नन्हे बच्चे—एंटन के पोते पोतियां और एक ठुंडा किसान भी जागीर में रहता था जिसे ग्लाफ़ीरा ने मज़दूरी से मुक्त कर दिया था। वह टरटराता हुआ लकड़ी के मुर्गे की तरह इधर-उधर घूमता था। वह बूढ़ा कुत्ता भी किसी काम का नहीं था जिसने भौंककर लाव्रेंस्की का अभिवादन किया था। वह ग्लाफ़ीरा के हुक्म से ख़रीदा गया था। दस साल तक उसे जंजीर से बांध कर रखा गया, अब तो मुश्किल से चल फिर सकता था। मकान को घूमकर देख लेने के बाद लाव्रेंस्की बाग़ में गया, जिसे देख कर उस का मन प्रसन्न हुआ। उस में अगरचे घास-फूंस और झाड़ियां बहुतायत से उग आई थीं, लेकिन नीम के वृक्षों की घनी ठंडी छाया थी। ये वृक्ष पंक्तियों में लगाये गये थे और शायद

सौ साल पहले इन की टहनियों को काटा और संवारा गया था। बाग़ के अंत में साफ़ सुथरे पानी का तालाब था। जिसके किनारे कुछ टूट-फूट गये थे। मानव-जीवन के चिन्ह तेज़ी से कम होते जा रहे थे। बलाक़ीरा पेत्रोवना का घर सुनसान तो नहीं था, लेकिन उसी प्रकार गहरी नींद में सो रहा था, जिस प्रकार धरती की प्रत्येक वस्तु, जहां मानव समूह के पांव तक न पड़ते हों सो जाया करती है। फ़्योदर इवानिच ने एक चक्कर गांव का भी लगाया, किसान औरतों ने अपने गालों को मुट्ठियों में भींचते हुए झोंपड़ियों के दरवाज़ों से उसे देखा, किसानों ने दूर ही से माथे के बाल छू लिये, बच्चे देख कर भाग गये और कुत्ते उदासीनता से भौंकते रहे। उसे भूख महसूस हुई, लेकिन उस के नौकरों और रसोईये की शाम से पहले आने की आशा नहीं थी। लाव्रीकी से समान के छकड़े अभी तक नहीं पहुँचे थे, इस लिये उसे एंटन का ही सहारा लेना पड़ा। वह तत्काल रसोई तैयार करने में लग गया। उसने एक बूढ़ी मुर्ग़ी पकड़ी और बुढ़िया अप्रेसिक्या ने उसे पकाया। जब भोजन तैयार हो गया तो एंटन ने उसे करीने से परोस कर, मधुर स्वर में मालिक को बुलाया। जब लाव्रेस्की भोजन कर रहा था, तो एंटन हाथ बांधे उस के पीछे खड़ा था। भोजन समाप्त करने पर उस ने कहा—"क्या चाय का एक प्याला भी मिल सकेगा?" एंटन ने वहीं ले आने का वादा किया और जब मालिक चला गया तब ढूंढ-ढांड कर चाय की कुछ पत्तियां निकालीं और चाय तैयार की। लाव्रेस्की ने एक बड़े प्याले में चाय पी। वह इस प्याले को बचपन से जानता था। इस के बाहर ताश के पत्ते बने हुए थे, और वह सिर्फ़ मेहमानों के लिये इस्तेमाल होता था और अब वह खुद मेहमान की तरह चाय पी रहा था। शाम को नौकर पहुंच गये। लाव्रेस्की फूफी की चारपाई पर सोना नहीं चाहता था, इस लिये उस ने अपना बिस्तर खाने के कमरे में लगवाया।

बत्ती बुझाने के बाद वह देर तक बैठा अंधेरे में झांकता रहा। उसके मन में विषाद पूर्ण विचार उठ रहे थे। उस की दशा ऐसे व्यक्ति की थी, जिसे मुद्दत से सूने पड़े घर में रात व्यतीत करनी पड़ी हो, अंधेरा इस व्यक्ति को देख कर चिढ़ गया हो और घर की दीवारें तक चौंक उठी हों। सब लोग सोने चले गये, तो एंटन बैठा कर पत्नी से बातें करने लगा। उसने एक आह भर कर अपने सीने पर क्रास का निशान बनाया। उन्हें यह आशा नहीं थी कि मालिक यहाँ आकर रहने लगेगा, क्योंकि पड़ोस ही में उसका बहुत सुन्दर मकान और बड़ी जागीर थी, उन्हें यह ध्यान नहीं आया कि लाव्रेंस्की को उस जगह से घृणा थी उसके साथ खेद जनक स्मृतियां जुड़ी हुई थीं। थोड़ी देर काना फूसी करके एंटन उठा और एक लाठी लेकर उसने चौकीदार के तख्ते को खटखटाया जो बहुत दिनों से खत्ती से लटक रहा था! फिर वह उस पर आंगन में सो गया। उसका सफ़ेद सिर नंगा था, मई की रात सुहावनी और शीतल थी और बूढ़ा आदमी आराम से सो रहा था।

१२०

दूसरे दिन लाव्रेस्की सुबह सवेरे उठा, गांव के नम्बदार से मिलने गया, पशु बांधनेके स्थान पर गया, और कुत्ते की जंजीर खोल देने का हुक्म दिया। वह अपने घुरने में खड़ा भौंक रहा था। फिर घर लौटकर आराम से लेट गया। उसे नींद की हल्की सी झपकी आ गई। बाकी दिन भर वह योंही लेटा रहा। "अब मैंने तथ्य को समझा है" उसने कई बार दोहराया। वह खिड़की में चुपचाप बैठा रहा, जैसे अपने गिर्द बहती हुई जीवन की सुखद धारा को देख रहा हो, जैसे वह देहात की निःस्तब्धता का गीत सुन रहा हो। परे पेड़ों के नीचे से बंसरी की महिम आवाज़ आई। एक झींगर भी उसके साथ स्वर में स्वर मिलाकर गाने लगा बंसरी बंद हो गई, मगर झींगर ने अपना राग जारी रखा। मक्खियां भी भारी तादाद में भिनभिना रहीं थीं, एक टिड्डा अपना सिर छत से टकरा टकरा कर टूँ टूँ कर रहा था और बाहर कौवे ने कायें कायें मचा रखी थी, इसी स्वर के साथ एक छकड़ा चीखता हुआ जा रहा था, कहीं गांव से दरवाज़ा खुलने की आवाज़ आई। "तुम क्या कहती हो?" एक किसान औरत की गूंजदार आवाज़ सुनाई दी। "नन्ही गुड़िया!" एंटोन ने दो वर्ष की बालिका से कहा, जिसे वह अपने बाज़ुओं में लेकर झूला झुला रहा था। "बर्तन उठा लाओ" औरत फिर बोली। फिर एकाएकी निःस्तब्धता छा गई। कोई आवाज़ कोई, स्वर सुनाई नहीं देता था, पत्ता तक नहीं

हिलती थी, कूँजें धीरे धीरे धरती पर मूक उड़ान भर रही थीं; उनकी मूक उड़ान हृदय को विषाद से भर रही थी। "अब मैंने तथ्य को समझा है।" लाव्रेंस्की फिर सोचने लगा। "यहां जीवन शांत और स्थिर है। जो कोई इसकी परिधी में आता है, उसे इसकी शक्ति को स्वीकार करना पड़ता है; यहां मनुष्य चिंताओं से मुक्त हो जाता है और कोई बात कोंचती नहीं, यहां वह आदमी सुखी रह सकता है जो खेत में हल चलाते हुए चरवाहे की भांति अपने जीवन को शांत और स्थिर बना लेता है। यही निःस्तब्धता कितनी महान और कितनी सशक्त है। लम्बी लम्बी घास में से चिड़ियां उड़ उड़कर जा रही हैं; घने पेड़ की टहनियां झुकी हुई हैं और इससे परे खेतों में फसल पकी हुई है, जिसकी बालों में दाने पड़ गये हैं और प्रत्येक पेड़ पर प्रत्येक पत्ता और घास की हर एक पत्ती अपनी पूरी शक्ति और सामर्थ्य के साथ खुलती और फैलती जा रही है। मेरे जीवन का सुन्दर समय एक स्त्री के प्रेम में व्यतीत हुआ है।" लाव्रेंस्की फिर सोचने लगा, "यह निःस्तब्धता मुझे स्वस्थ और गम्भीर बनायेगी और अपने काम से सामंजस्य स्थापित करने में मेरी सहायता करेगी। वह एक बार फिर निःस्तब्धता का राग सुनने लगा; उसके मन में किसी प्रकार की आशा निराशा नहीं थी—फिर भी कुछ ऐसा अनुभव होता था, जैसे कुछ न कुछ होने वाला हो; चारों ओर निस्तब्धता—गहरी निःस्तब्धता छाई थी, नीले स्वच्छ आकाश पर सूर्य धीरे धीरे अपनी यात्रा कर रहा था और उसके सिर पर बादल ऐसे जा रहे थे जैसे वे जानते हों कि वे कहां और क्यों जा रहे हैं। ठीक इसी समय किसी दूसरे स्थान पर जीवन स्फूर्ति और तेजी से टकराता और कलरव करता हुआ अपने मार्ग पर चल रहा था मगर वहां वह चुपचाप चल रहा था, जैसे घनी घास में से पानी धीरे धीरे बह रहा हो। शाम का अंधेरा गहरा होगया; और लाव्रेंस्की इस चींटी की चाल चलने वाले प्रशांत

जीवन के बारे में सोचता रहा। बीते हुए दिनों का ग़म उसके मन से ऐसे पिघल गया जैसे शुरू बसंत की बर्फ़ पिघल जाती है। एक और अजीब बात यह हुई कि अपनी जन्म भूमि के प्रति उसे इतना प्रेम पहले कभी नहीं हुआ था। इस समय वह बहुत गहरा पैठ गया था।

: २१ :

फ़्योदोर इवानिच ने चार पांच हफ्ते में ग्लाफ़ीरा पेत्रोवना के नन्हें घर को सुव्यवस्थित कर दिया, आंगन और बाग़ को सफ़ाई हो गई, लाव्रीकी से आराम देह फर्नीचर आ गया, नगर से शराब, पुस्तकें और पत्रिकायें आईं, तबेले में घोड़े हिनहिनाने लगे। सारांश यह कि फ्योदोर इवानिच ज़रूरत की सब चीजें ले आया और ठाठ से रहने लगा। यह कहना कठिन था कि वह एक देहाती जमींदार का जीवन था अथवा एक सन्यासी का जीवन। जीवन एक रस बीतने लगा, लेकिन वह इससे ऊबता नहीं था, अगरचे वह किसी से मिलता-मिलाता नहीं था, अपना समय जागीर के प्रबन्ध में बिता देता था, घोड़े पर चढ़ कर देहात में घूमने निकल जाता था और फिर अध्ययन करता था। पढ़ता वह कम था, मगर उसे बूढ़े एंटोन की बातें सुनना अधिक पसंद था। लाव्रे स्की अपना पाईप और ठंडी चाय का प्याला ले कर खिड़की में बैठ जाता था, एंटोन अपने हाथ कमर के पीछे बांधे दरवाज़े के पास खड़ा हो जाता और प्राचीन काल की कहानियां सुनाता—उन दिनों की कहानियां जब मकई और बाजरा मनों के भाव नहीं बड़े-बड़े बोरों के हिसाब से बिकते या दो-तीन कोपेक प्रति बोरा। जब शहर के आस पास घने जंगल और बर्फ के विस्तृत मैदान फैले रहते थे। "लेकिन अब" बूढ़ा एंटोन, जिसकी अवस्था अस्सी से ऊपर हो चुकी थी, शिकायत करता, "जंगल काट दिये गये हैं और हल चला डाले हैं, गाड़ी चलाने को भी कहीं चप्पा ज़मीन दिखाई नहीं देती" वह अपनी मालकिन ग्लेफ़ीरा

पेत्रोवना, के बारे में भी बहुत सी कहानियां सुनाया करता था, वह कितनी कार्य कुशल और सगर्वा थी, किस तरह एक नौजवान ने उससे प्रेम जितलाना शुरू किया, और किस तरह ग्लेफ़ीरा पेत्रोवना भी उस पर मुग्ध होगई और प्रेम-उपहार के रूप में काले फीतों वाली टोपी बनाकर दी, लेकिन अंत में इतनी सी बात पर नाराज़ हो गई कि उस नौजावान ने मालकिन की आय के साधनों का अनुमान लगाने की कोशिश की। उसके बाद नौजवान को घर पर आने की मनाही करदी गई और ग्लेफ़ीरा पेत्रोवना ने वसीयत कर दी के मेरे बाद मेरी समस्त सम्पत्ति फ्योदोर इवानिच को मिले। और सचमुच लाव्रेस्की को अपनी बुआ की सब चीज़ें ज्यों की त्यों मिलीं, उनमें काले फीते वाली वह टोपी भी शामिल थी। जिन पुराने कागज़ों और दिलचस्प दस्तावीजों की लाव्रेस्की को उम्मीद थी, उनमें से एक भी नहीं मिली। सिर्फ एक पुरानी किताब हाथ लगी, जिसमें उसके दादा एंड्रीच ने एक स्थान पर लिखा था:—"शाहज़ादा एलग्जेन्डरोविच प्रोजोरोवस्की ने तुर्की के साथ जो शांति संधि की, पीटर्ज़बर्ग में उसका जशन मनाया गया।" फिर एक स्थान पर गिरजे का उल्लेख करते हुए लिखा था, "यह आदेश जनरल की पत्नी प्रास्कोव्या फ्योदोरोवना साल्टीकोवा को गिरजा के बड़े पादरी फ्योदोर अवक्सेत्याविच ने दिया था।" एक दूसरे स्थान पर यह राजनैतिक ख़बर दर्ज थी—"फ्रांसिसी शेरों के बारे में अब किसी प्रकार की बातचीत नहीं हो रही।" लाव्रेस्की को कुछ पुराने कैलेंडर और एम अम्बोदिक द्वारा लिखित जादू और स्वप्नों की कुछ पुस्तकें मिलीं। उन्हें देखकर उसके मस्तिष्क में बहुत सी पुरानी स्मृतियाँ उभर आईं। लाव्रेस्की को एक पुराना पैकिट मिला, जिस पर काली मोम की मुहरें लगी हुई थीं और दराज़ के सब से भीतर के खाने में रखा हुआ था। इस पैकिट के बिलकुल सामने पिता का युवावस्था का एक चित्र रखा था, जिसमें उसके सुन्दर घूंगराले

बाल पेशानी पर लटक रहे थे, और एक दुबली पतली स्त्री का चित्र भी था, जो श्वेत परिधान में एक श्वेत फूल हाथ में लिये खड़ी थी। यह स्त्री उसकी माँ थी, चित्र बहुत मद्धिम पड़ गया था। ग्लेफ़ीरा ने अपना चित्र बनाने की अनुमति ही कभी नहीं दी। "प्यारे स्वामी, फ्योदोर इवानिच," उस बूढ़े एंटोन ने कहा, "अगरचे मैं उस समय इस घर में नहीं रहता था, मगर मुझे तुम्हारे पर दादा एंड्रीच आफ़ानासिच की सूरत भी अच्छी तरह याद है। जब वे मरे तो मेरी अवस्था अठारह साल थी। एक बार सहसा उनसे बाग़ में भेंट होगई। मैं देखते ही सिर से चोटी तक कांप गया। उन्होंने कुछ नहीं कहा, सिर्फ़ मुझे घर में जाकर रुमाल लाने का आदेश दिया था। वे बहुत ही भद्र पुरुष थे। कोई भी उनकी तुलना नहीं कर सकता। कारण यह है कि उनके पास एक विचित्र तावीज़ था और उनको यह तावीज़ माऊंट एंथस के एक महंत ने उपहार स्वरूप दिया था, और उनसे कहा था—"तुम्हारे आतिथ्य से प्रसन्न होकर, मैं तुम्हें यह तावीज़ देता हूँ, इसे पहन लोगे तो कोई भी भय तुम्हारे पास नहीं फटक सकेगा।" प्यारे आक़ा वह बहुत अच्छा समय था। आपके परदादा जो चाहते थे कर सकते थे। वैसे वे, भगवान उन पर कृपा दृष्टि बनाये रखे, लकड़ी के एक छोटे से घर में रहते थे। उन्होंने अपने बाद जो सामान छोड़ा उसमें क्या नही था। चांदी की एक प्लेट थी। बहुत सी चीज़ें थीं। उनसे कमरे भरे हुए थे। वे बहुत ही कम खर्च करते थे, बड़े मितव्ययी थे। वह जार जो आपको बहुत पसंद है, उन्हीं का था। वह उसमें वोड (रूसी शराब) पिया करते थे। अब अपने दादा की बात सुनिये। उनका नाम प्योटर एंड्रीच था। उन्होंने अपने लिये एक पत्थर का घर बनाया था, मगर उन्हें कभी सफलता प्राप्त नहीं हुई। सोने में हाथ डालते थे तो वह भी मिट्टी हो जाता था। उनकी दशा अपने पिता से भी खराब थी। जीवन में उन्हें कोई आनंद न

मिला, सारा रुपया खुरद-बुरद हो गया और अपने पीछे वे कोई ऐसी चीज़ नहीं छोड़ गये, जिससे उनका नाम रहता—चांदी का एक चमचा तक तो नहीं छोड़ा। जो कुछ रह गया है वह सब ग्लेफ़ीरा पेत्रोवना की चौकसी और सावधानी का नतीज़ा है।

"क्या यह सच है," लाव्रेस्की ने टोका, "कि लोग उसे पुरानी घाघ कहते थे?"

"ऐं, मगर कौन उसे ऐसा कहता था!" एंटोन ने अशिष्ट स्वर में कहा।

एक बार बूढ़े एंटोन ने यह पूछने का भी साहस किया—"सरकार! मालकिन का क्या हुआ, वे अब कहां रहती हैं?"

"मैंने उन्हें तलाक़ दे दिया है।" लाव्रेस्की ने साहस बटोर कर कहा, "आईन्दा उसके बारे में कुछ न पूछना। "अच्छा, सरकार।" बूढ़े ने उदास स्वर में उत्तर दिया।

तीन हफ्ते के बाद लाव्रेस्की घोड़े पर सवार होकर ओ—को गया, ताकि कालिटीन परिवार से भेंट करे और शाम तक उनके साथ रहे। लेम वहाँ था और लाव्रेस्की को वह बहुत पसंद आया। यद्यपि वह अपने पिता के कारण कोई वाद्य बजाना नहीं सीख सका था, मगर उसे राग—पक्का राग बहुत पसंद था। उस शाम पैंशिन वहाँ नहीं था। गवर्नर ने उसे किसी काम से बाहर भेज दिया था। लीज़ा ने उस दिन पियानो बहुत अच्छा बजाया, बूढ़ा लेम मुग्ध हो उठा और उसने कागज़ की एक पीपनी बनाली और उसे बजाने लगा। मेरिया दमितरीवना पहले यह दृश्य देखकर हंसी, फिर वह जाकर सो रही। पियानो वह सुन नहीं सकती थी, उसके भीतर कुछ सनसनी सी होने लगती थी। आधी रात को लाव्रेस्की लेम को उसके मकान पर छोड़ने गया और सुबह तीन बजे तक उससे बैठा बातें करता रहा। लेम ने इधर-उधर की बहुत सी बातें कीं, उसकी झुकी हुई कमर

जैसे सीधी होगई हो, उसकी आंखें फैल गईं और चमक उठीं और उसकी भवों के बाल तक नाचने लगे। चिरकाल से लोग उसकी उपेक्षा करते आये थे, किसी व्यक्ति ने उसमें कोई दिलचस्पी नहीं ली थी और आज लाव्रेंस्की सचमुच दिलचस्पी ले रहा था और उससे सहानुभूति और समवेदना से भरे हुए प्रश्न पूछ रहा था। इस व्यवहार से बूढ़ा बहुत प्रसन्न हुआ। उसने लाव्रेंस्की को अपना संगीतालय दिखलाया, हार्मोनियम बजाया और अपनी टूटी-फूटी और भावरिक्त आवाज़ में गाकर सुनाया, जिसमें उसके अपने गीतों के टुकड़े थे और शिल्लर का प्रसिद्ध बैलेट, फ्रिडोलिन था, जिसकी धुन उसने खुद निकाली थी। लाव्रेंस्की ने गीतों की प्रशंसा की, उनके कुछ अंश बार-बार सुने और फिर अपने यहां आने और वहां दो चार दिन रहने का उसे निमंत्रण दिया। लेम उसे दूर तक छोड़ने गया, व उसका निमंत्रण तुरन्त स्वीकार कर लिया और फिर बड़े तपाक से हाथ मिलाया, लेकिन फिर वह ताज़ी और भीगी हुई हवा में अकेला लौटा। सूर्य की पहली किरणें धरती पर फैल रही थीं। उसने इधर-उधर देखकर अपनी आंखों को झपकाया और एक झुरझुरी लेकर कमरे में प्रवेश किया। वह कुछ उदास और प्रतिभाहीन था और यह गुन-गुनाते हुए कि मैं शायद अपने होश में नहीं हूँ, वह अपनी सख्त और छोटी चारपाई पर जा लेटा।" कुछ दिन बाद जब लाव्रेंस्की अपनी गाड़ी लेकर उसे लिवाने गया, तो उसने बीमारी का बहाना किया, मगर फ्योदोर इवानिच खुद उसके कमरे में गया और उसे चलने के लिये तैयार किया। लेम को इस बात ने बहुत प्रभावित किया कि लाव्रेंस्की ने केवल उसके कारण आदमी भेजकर शहर से पियानो मंगवाया। वह शाम उन्होंने कालिटीन परिवार में बिताई। लेकिन पहला सा आनन्द नहीं आया क्योंकि पैंशिन लौट आया था और अधिकांश समय उसने अपनी यात्रा की बातें सुनाने में बिता

दिया। वह देहात में जिन भद्र लोगों से मिला था उनकी नकलें अजीब ढँग से उतार रहा था। लाव्रेस्की सुन-सुनकर हंसता रहा, लेकिन लेम एक कोने में चुप और मौन दुबका बैठा रहा, वह कभी कभी छिपकली की भांति अपने शरीर को हरकत देता और जब लाव्रेस्की जाने के लिये उठा तब उसके चेहरे पर प्रसन्नता आई। कुछ देर वह गाड़ी में भी मौन और दुबका बैठा रहा लेकिन कोमल स्निग्ध वायु, मध्यम परछाइयां, घास और कलियों की सुगन्ध, चांद की तारों भरी रात का धीमा धीमा आलोक, टापों का मधुर सँगीत, और घोड़ों की सांसे, मार्ग का समस्त जादू, बसन्त और रात का सौंदर्य, बूढ़े जर्मन की आत्मा में पैठ गया और पहले उसी ने मौन भंग किया।

: २२ :

उसने संगीत के बारे में बात शुरू की, फिर लीज़ा के बारे में और अंत में फिर संगीत के बारे में। जब वह लीज़ा के बारे में बात कर रहा था तो उसका स्वर बहुत धीमा हो गया था। लाव्रेस्की ने बातचीत का रुख उसके अपने गीतों की ओर मोड़ दिया और मुस्कराते हुए कहा कि मेरे लिये भी एक आपेरा लिख दो।

"हूँ, एक ओपेरा," लेम ने उत्तर दिया, "नहीं मुझ में यह दम है। मुझमें न अनुभूति है और न कल्पना शक्ति है और आपेरा के लिये ये दोनों चीज़ें आवश्यक हैं मेरी शक्तियों का क्षय हो रहा है.....लेकिन अगर वाकई मुझे अब कुछ लिखना हो जो मैं रोमांस लिखना पसन्द करूँगा, वह ठीक ठीक क्या होगा इसके लिये मुझे शब्द नहीं मिलते....." वह चुप होगया और बड़ी देर तक बैठा आकाश की ओर देखता रहा।

"मिसाल के तौर पर," वह फिर बोला, "कुछ इस क़िस्म का—

ऐ तारों, ओ पवित्र तारों!

लाव्रेस्की तनिक उस की ओर झुका और उसे देखा।

"ऐ तारो, ए पवित्र तारो," लेम ने दोहराया, "तुम न्यायी और अन्यायी दोनों को देखते हो, लेकिन एक निरीह हृदय ही—या कुछ इस तरह 'तुम्हें समझ सकता'—नहीं, ऐसे नहीं,।

"तुम्हें प्यार कर सकता है। लेकिन मैं कोई कवि नहीं—यों नहीं लेकिन कुछ इसी तरह, तनिक ऊँचा।

लेमने हैट कुछ पीछे को सरका दिया, रात के धुंधलके में उस का चेहरा पीला और जवान दीख पड़ता था।

"और तुम भी" उसने बात जारी रखी। उस की ध्वनि शनैः शनैः डूब रही थी। "तुम जानते हो तुम्हें कौन प्यार करता है, कौन तैयार कर सकता है, क्यों कि तुम पवित्र हो और सिर्फ़ तुम्हीं शांति प्रदान कर सकते हो....." नहीं, कुछ बात नहीं बनी। मैं कोई कवि नहीं।" उसने कहा, "फिर भी कुछ इस आवाज़ से"—"मुझे खेद है कि मैं कवि नहीं हूँ।" लाव्रेस्की बोला।

"व्यर्थ के सपने!" लेम ने कहा और वह गाड़ी के कोने में दुबक गया। उसने आंखें मीच लीं, जैसे वह सोना चाहता हो।

कुछ क्षण इसी तरह बीत गये.....लाव्रेस्की ने सुना कि वृद्ध जर्मन फिर गुनगुना रहा है—तारो, पवित्र तारो—प्रेम।"

"प्रेम।" लाव्रेस्की ने स्वतः दोहराया। वह विचारों में डूब गया और उस का मन विषाद से भर गया।

"क्रिस्टोफर फ्योदोरिच, तुमने फ्रिदोलिन की बहुत अच्छी धुन निकाली है। यह धुन वाकई अच्छी है।" उस ने ऊंचे स्वर में कहा, "तुम्हारा क्या खयाल है—यह फ्रिदोलिन, जब काऊंट ने उसे अपनी पत्नी से परिचित कराया—तभी वह उसका प्रेमी बना, ठीक है?"

"यह आप का अपना खयाल है," लेम ने उत्तर दिया, "शायद आप निजी अनुभव की बात कह रहे हैं....." वह हठात चुप हो गया और घबरा कर फिर कोने में दुबक गया। लाव्रेस्की ने एक जबर्दस्ती कहकहा बुलन्द किया और फिर वह भी गर्दन मोड़ कर सड़क की ओर देखने लगा।

जब गाड़ी वासिलया वस्कोये पहुँची, तो तारे मद्धिम पड़ गये थे और आकाश पर सफेदी छा रही थी। लाव्रेस्की अतिथि को एक कमरे में छोड़ कर स्वयं पढ़ने के कमरे में आ गया और खिड़की में बैठ

गया। बाग़ में बुलबुल पौ-फटने से पहले का अपना अंतिम गीत गा रही थी। लाव्रेस्की को वह बुलबुल स्मरण हो आई जो कालिटीन परिवार के बाग में गा रही थी और उसे लीज़ा की आंखों की वह सुकोमल गति याद आई जब वह उसका संगीत सुनने अंधेरी खिड़की पर जा खड़ी हुई थी। वह लीज़ा ही के बारे में सोचता रहा और उस के मन को फिर सांत्वना प्राप्त हुई। "पवित्र रमणी," वह आप ही आप बड़बड़ाया और उस ने कहा—"पवित्र तारे।" इस के उपरांत वह मुस्कराते हुए बिस्तर में लेट गया।

लेकिन लेम बहुत देर तक अपने बिस्तर में बैठा रहा, संगीत की एक पुस्तक उस के घुटनों पर रखी हुई थी। उस के मन में एक मधुर और अनुपम संगीत उठ रहा था, उस का समस्त शरीर सिहर उठा था, वह शब्दों का साकार स्वरूप देख रहा था और उन के माधुर्य को अनुभव कर रहा था, लेकिन वे उस की पकड़ में नहीं आते थे।

"ना ही कवि और ना ही संगीतकार," अंततोगत्वा वह बड़बड़ाया और उस का भारी सिर तकिये पर लुढ़क गया।

: २३ :

दूसरे दिन मेज़बान और उस के मेहमान ने नींबू के एक बूढ़े वृक्ष के नीचे चाय पी।

"महाशय!" लाव्रेस्की ने वैसे ही कहा—"आप को शीघ्र ही एक विजय-गीत लिखना होगा।"

"किस उत्सव के लिए?"

"पैंशिन और लीज़ा की सगाई होने वाली है। देख नहीं रहे थे, वह कल कितनी घनिष्टता जता रहा था, लगता है कि मामला तय हो चुका है।"

"कदाचित नहीं। नहीं यह कभी नहीं होगा।" लेम चिल्लाया।

"क्यों नहीं?"

"क्योंकि यह असम्भव है।" उस ने तनिक रुक कर कहा, इस दुनियां में सब कुछ सम्भव है। आप रूसी लोग जो भी चाहें कर सकते हैं।"

"क्षण भर के लिये हम रूस की बात छोड़ दें। इस विवाह में क्या बुराई है।"

"इस में बुराई ही बुराई है। इलिज़ावेटा मिखालोवना महान विचारों की स्पष्टवादिनी, गम्भीर लड़की है, और वह.....वह संक्षेप में चीथड़ा है।"

"लेकिन वह उसे प्रेम करती है। क्या नहीं करती?"

लेम उठकर खड़ा हो गया।

"नहीं, वह प्रेम नहीं करती। मेरा मतलब है कि वह इतनी सरल हृदय है कि अभी यह तक नहीं जानती कि प्रेम किसे कहते हैं। उस की माता मादाम कालिटीना उस से कहती हैं कि वह एक अच्छा नवयुक है और वह मादाम कालिटीना का आदेश मानती है क्यों कि वह अभी बच्ची है, यद्यपि उस की अवस्था उन्नीस वर्ष है। वह सुबह प्रार्थना करती है, शाम को प्रार्थना करती है, बस इस से अधिक कुछ नहीं। वह उस से बिलकुल प्रेम नहीं करती। वह केवल सौंदर्य से प्रेम कर सकती है, और वह सुन्दर नहीं है, मेरा मतलब है कि उस की आत्मा में सौंदर्य नहीं।"

लेम ने स्पष्ट स्वर में और जल्दी जल्दी यह संक्षिप्त भाषण दिया। वह चाय की मेज़ के सामने छोटे-छोटे डग भरता हुआ चल रहा था और उस की आंखें धरती पर दौड़ रही थीं।

"मेरे प्यारे संगीतकार!" लाव्रेस्की ने अनायास कहा, "मेरा विश्वास है कि तुम खुद लीज़ा से प्रेम करते हो।"

"लेम ठहर गया।"

"कृपया," उस ने उखड़ी हुई आवाज़ में कहना शुरू किया, "मेरा इस प्रकार मज़ाक न उड़ाइये। मैं मूर्ख नहीं हूँ—मैं दूर अंधेरे में झांक रहा हूँ, उज्वल भविष्य में नहीं।"

लाव्रेस्की बहुत शर्मिंदा हुआ और उसने बूढ़े से मांफी मांगी। चाय के बाद लेम ने उसे अपना एक गीत सुनाया और दोपहर भोजन के समय लाव्रेस्की के आरम्भ करने पर फिर लीज़ा की बातें करना शुरू कीं। लाव्रेस्की बड़े ध्यान और उत्सुकता से सुनता रहा।

क्रिस्टोफ़र फ्योदोरिच तुम्हारा क्या खयाल है? आखिर उसने पूछा, "यहां अब हर एक चीज़ की व्यवस्था है, बाग़ में फूल खिले हैं, अगर मैं लीज़ा को उसकी मां और अपनी बुआ के साथ एक दिन के लिये यहां बुलाऊं? तो कैसा रहेगा?"

लेम ने अपनी प्लेट पर सिर झुकाया "बहुत अच्छा है।" उसने अस्पष्ट स्वर में कहा "और पैंशिन को बुलाने की आवश्यकता नहीं?"

"नहीं, कोई ज़रूरत नहीं।" बूढ़े ने बच्चे के सदृश सानन्द मुस्कराते हुए कहा।

दो दिन बाद फ्योदोर इवानिच कालिटीन परिवार से मिलने शहर को रवाना हुआ।

: २४ :

वे सब घर पर थे। लेकिन लाव्रेस्की ने अपने मन की बात तुरन्त नहीं कही; वह इस विषय में पहले लीज़ा की सलाह लेना चाहता था। संयोगवश वे दोनों ड्राईङ्ग रूम में अकेले रह गये और बात करने लगे। लीज़ा उससे मायूस हो गई थी, दर असल वह शर्माती किसी से भी नहीं थी। लाव्रेस्की उसकी बातें सुनता रहा, उसकी मुखाकृति का अध्ययन करता रहा, उसे लेम के शब्द स्मरण हो आये और उसने उनका समर्थन किया। कई बार ऐसा होता है कि दो परिचित व्यक्ति जो एक दूसरे के बहुत निकट नहीं होते, हठात सम्पर्क में आते हैं, और एक दूसरे को समझ लेते हैं और यों उनमें जो घनिष्ठता उत्पन्न होती जाती है, वह निगाहों, मुस्कराहटों और संकेतों में व्यक्त होती है। लीज़ा और लाव्रेस्की के साथ भी ठीक ऐसा ही हुआ।

वह ऐसा है।" लीज़ा ने सोचा और वह उसकी ओर सहृदयता से देखने लगी। "हूँ, वास्तव में तुम यह हो" वह भी सोच रहा था। इसलिये उसे कोई आश्चर्य नहीं हुआ, जब लीज़ा ने कहा कि मैं बहुत दिनों से आपके साथ बात करने की सोच रही थी, मगर डरती थी कि कहीं आप नाराज़ न हो जायें।

"डरिये मत, जो कुछ कहना है कहिये।" लाव्रेस्की ने कहा और स्थिर दृष्टि से उसकी ओर देखने लगा।

लीज़ा ने भी अपनी लम्बी लम्बी पलकें उठाकर उसकी ओर देखा।

"आप इतने अच्छे हैं।" वह बोली और उसके मन ने कहा—हां वह वाकई अच्छा है, "आप मुझे क्षमा करेंगे। वास्तव में मुझे यह बात पूछने की धृष्टता ही नहीं करनी चाहिये थी...लेकिन यह कैसे हुआ...आपने अपनी पत्नी को क्यों छोड़ दिया।"

लाव्रेंस्की ने आंख झपकी, लीज़ा की ओर देखा और देखता ही रहा।"

"प्रिय!" वह बोला, "इस घाव को न छेड़ो, तुम्हारे हाथ कोमल हैं, फिर भी यह दुख जायेगा।"

"मुझे मालूम है।" लीज़ा कहती रही, जैसे उसने लाव्रेंस्की की बात ही न सुनी हो "उसने आपके साथ कपट किया है। मैं उसका पक्ष नहीं ले रही, लेकिन भगवान ने जो सम्बन्ध बनाया है, उसे मनुष्य कैसे तोड़ सकता है?"

"इलिज़ावेटा मिखालोवना इस विषय पर हमारे विचारों में बड़ा अंतर है।" लाव्रेंस्की ने ज़रा तेज स्वर में कहा, "हम एक दूसरे को समझने में असमर्थ रहेंगे।"

लीज़ा का चेहरा ज़र्द पड़ गया और शरीर में हल्का-सा कम्पन हुआ लेकिन वह चुप नहीं रही।

"आप को क्षमा कर देना चाहिये।" उसने धीमे से कहा, "अगर आप क्षमा के क़ायल हैं।"

"क्षमा!" लाव्रेंस्की बोला "पहले तुम्हें उस व्यक्ति को जान लेना चाहिये जिसका आप पक्ष ले रही हैं। उस औरत को क्षमा कर दूँ। उस खाली, आत्मा-विहीन जीव को अपने घर में वापस ले आऊँ? आखिर क्यों। वह जिस अवस्था में भी है संतुष्ट है...ओह, इस विषय में बात करना ही व्यर्थ है। उसका नाम ही तुम्हारे होठों पर नहीं आना चाहिये। तुम इतनी निरीह और पवित्र हो कि तुम समझ ही नहीं सकती कि वह किस किस्म की औरत है।" क्यों उसे

कोसना आवश्यक है ?"

लीजा ने कोशिश करके कहा, उसके हाथ तनिक कांप रहे थे, "फ़्योदोर इवानिच आपने ख़ुद उसे छोड़ा है।"

"लेकिन मैं तुम्हें बता रहा हूँ।" लाव्रेस्की ने अधीरता से कहा, "तुम नहीं जानती कि वह कैसी औरत है ?"

"तब आपने उससे ब्याह क्यों किया ?" लीज़ा ने पलक नीची करते हुए कहा।

लाव्रेस्की जल्दी से अपने पांव पर उठ खड़ा हुआ।

"मैंने उससे ब्याह क्यों किया ? मैं अबोध और अनुभव हीन था। मुझे उसके बाहरी रूप-लावण्य ने लुभा लिया। मैं औरत के बारे में कुछ नहीं जानता था। मुझे समझ नहीं थी। भगवान करे तुम्हें अच्छा वर मिले। लेकिन यकीन मानो कुछ भरोसा नहीं।"

"शायद मैं भी आभागिनी निकलूं।" लीज़ा बोली। उसका स्वर अवरुद्ध था, "लेकिन हमें अपने भाग्य पर संतुष्ट रहना चाहिये। मैं अपनी बात ठीक ढंग से नहीं कह सकती; मगर जब तक हम भाग्य पर संतुष्ट नहीं....."

लाव्रेस्की ने मुट्ठियाँ भींच लीं और पांव जोर से धरती पर पटका।

"आप नाराज़ न हों मुझे क्षमा करें।" लीज़ा ने जल्दी जल्दी कहा।

इसी क्षण मेरिया दमितरीवना ने भीतर प्रवेश किया और लीज़ा कमरे से निकल जाने के लिये उठ खड़ी हुई।

"तनिक रुकिये।" लाव्रेस्की बोला "मुझे तुम्हारी माता और तुमसे एक वरदान मांगना है। आप लोग मेरे घर नहीं आ सकते— यही एक दो दिन के लिये ? मैंने नया पियानो खरीदा है। लेम इन दिनों मेरा अतिथि है। फूल खिले हुए हैं। देहात की हवा खाने को मिलेगी, सब बहुत अच्छा रहेगा, क्या आपको मंजूर है ?"

लीज़ा अपनी मां की ओर देखने लगी और मेरिया दमितरीवना कुछ परेशान दिखाई दी, लेकिन लाव्रेस्की ने उन्हें मुंह खोलने का अवसर नहीं दिया, झुक कर उन के दोनों हाथ चूम लिये। वह इस अप्रत्याशित नम्रता से गद्‌गद् हो उठी और तत्काल अनुमति दे दी। जब वह यह सोच रही थी कि कौन सा दिन नियत किया जाये; लाव्रेस्की लीज़ा के निकट गया और धीमे से बोला, "शुक्रिया, तुम बड़ी अच्छी लड़की हो।"

"मुझे खेद है....."उस का मन उल्लास से भर गया, आंखें चमक उठीं और होठों पर मुस्कराहट दौड़ गई। वह अपने मन में डर रही थी कि मैंने लाव्रेस्की को नाराज़ कर दिया।

"क्या व्लाडीमीर निकोलाईच भी हमारे साथ चल सकते हैं?" मेरिया दमितरीवना ने पूछा।

"बड़ी खुशी से।" लाव्रेस्की बोला "लेकिन क्या यह अच्छा रहेगा कि सिर्फ़ परिवार ही के लोग हों?"

"लेकिन मैं समझती हूँ....." वह कुछ कहते-कहते रुक गई और बोली, "अच्छा जैसी तुम्हारी मर्ज़ी।"

लेनोचका और शुरोचका को ले चलने का फ़ैसला हो गया। मार्फ़ा तिमोफ़ेवना ने जाने से इनकार कर दिया।

"मेरे प्यारे, मुझे अफ़सोस है।" वह बोली, "मेरा बूढ़ा शरीर यात्रा का कष्ट सहन नहीं कर सकता। फिर तुम्हारे घर में सोने का भी प्रबन्ध नहीं होगा, मुझे दूसरों के बिस्तर में सोने की आदत नहीं। बच्चे घूम फिर कर खुश होते हैं, उन्हें ले जाओ।"

लाव्रेस्की को फिर लीज़ा से बात करने का अवसर नहीं मिला, लेकिन उस की ओर ऐसी दृष्टि से देखा कि वह उल्लास से भर गई, तनिक लजा गई और लाव्रेस्की के प्रति उस के मन में समवेदना उत्पन्न हुई। जब वह अकेली रह गई तो जाने क्या सोचने लगी।

: २५ :

लाव्रेस्की घर लौटा तो ड्राईंग रूम की दहलीज़ पर उस की भेंट एक लम्बे क़द के व्यक्ति से हुई, जिसकी मुखमुद्रा सजीव थी, लेकिन चेहरे पर झुर्रियां थीं, दाढ़ी बिखरी हुई और सफेद थी, नाक लम्बी, आंखें छोटी और चमकदार थीं, और उस ने एक काला कोट पहन रखा था। वह उस का पुराना सहपाठी मिखालेविच था। लाव्रेस्की ने पहले उसे पहचाना नहीं, लेकिन नाम सुनते ही उसे बाहुपाश में बांध लिया और कस कर छाती से लगाया। मास्को के बाद वे एक दूसरे से नहीं मिले थे। प्रश्न और उत्तर का क्रम शुरू हो गया और बहुत सी पुरानी यादें फिर से उभर आईं। पाईप पर पाईप पीते हुए और बीच में चाय की घूंट भरते और अपने लम्बे हाथ हिलाते हुए मिखालेविच ने लाव्रेस्की को आप बीती कह सुनाई, लेकिन उस में कोई विशेष बात नहीं थी। जीवन की साधारण घटनाएं थी, उसने कोई वैसी सफलता प्राप्त नहीं की थी, जिस पर वह गर्व कर सकता। —लेकिन सुनाते समय वह बार बार हल्की-सी हंसी हंस पड़ता था। एक महीना हुआ, उसे एक धनी किसान के यहां मुन्शी का काम मिल गया था, जो ओ से थोड़ी दूर रहता था, और यह जान कर कि लाव्रेस्की परदेश से लौट आया है, वह अपने पुराने मित्र से मिलने आया था। मिखालेविच उसी जोश और सहृदयता से बातें कर रहा था, जिस तरह वह विश्व विद्यालय में विद्यार्थी होते हुए किया करता था। उस से सुन लेने के बाद लाव्रेस्की ने अपनी सुनानी शुरू की

लेकिन मिखालेविच ने बीच ही में टोक दिया—मैंने सुन लिया है, मेरे दोस्त, सब कुछ सुन लिया है—लेकिन किसे मालूम था कि यों होगा ?" फिर इधर-उधर की आम बातें होने लगीं।

"मित्र ! मैं कल अवश्यमेव चला जाऊंगा" उस ने कहा, "मगर तुम्हारी आज्ञा से आज हम देर तक जागेंगे। मुझे तुम से बहुत सी बातें करनी हैं। मैं जानना चाहता हूँ कि तुम में क्या परिवर्तन आया है, जीवन के अनुभवों ने तुम्हें क्या सिखा दिया है, क्या बना दिया है, अब तुम क्या हो, तुम्हारे विचार क्या हैं और भावनाएं क्या हैं ? (मिखालेविच अब भी उस समय की भाषा इस्तेमाल कर रहा था जब वह नवयुवक था) "जहां तक मेरी अपनी बात है, मैं काफ़ी बदल गया हूं। मेरे दोस्त, जीवन तरंगे मेरी छाती पर से गुज़री हैं—जाने यह किस का कथन है ? जो मुझ में कोई बुनयादी तब्दीली नहीं आई, सत्यं, शिवं, सुन्दरम, में अब भी मेरा विश्वास है, सिर्फ़ विश्वास ही नहीं—आस्था है, दृढ़ आस्था। तुम्हें मालूम है मुझे कविता करने का भी शौक़ है। मेरे पदों में काव्य-रस नहीं होता, लेकिन वह सत्य से आते-प्रोत होते हैं। मैं तुम्हें अपनी नई कविता सुनाता हूँ, उस में मैंने अपनी हृदयगत भावनाएं व्यक्त की हैं। सुनो ! मिखालेविच ने कविता सुनानी शुरू की, जो काफ़ी लम्बी थी और उस की अंतिम पंक्तियां यह थीं :—

मेरा हृदय नई भावनाओं को झट ग्रहण करता है।
मैं बड़ा हो गया हूँ, पर मेरा मन बालक की तरह निरीह है।
वो सब कुछ जिस की मैं अराधना करता था, मैंने जला दिया है।
और जो कुछ मैंने जला दिया है, उस की मैं अराधना करता हूँ।

अंतिम दो पंक्तियां कहते समय मिखालेविच का गला रुंध आया था और लगता था कि आंखों से आंसू बह निकलेंगे। वह भावुकता में डूबा हुआ जान पड़ता था और उस का निरीह चेहरा चमक उठा

था। लाव्रेस्की बैठा सुनता रहा,—और उस के भीतर प्रतिरोध की भावना जगी, मास्को के इस विद्यार्थी की आत्मा इस भावुकता और आवेग से कातर हो उठी। पन्द्रह मिनट भी बीतने नहीं पाये थे कि उन में गर्मा गर्म बहस छिड़ गई और वह युक्ति-बाण छोड़े जाने लगे जो रूसी प्रतिभा के विशेष गुण हैं। वे इतने साल अलग-अलग दुनिया में रह कर सहसा मिले थे, दूसरे लोगों का कहना ही क्या, वे खुद अपने विचारों को भी स्पष्ट रूप से नहीं समझते थे, लेकिन अब बहुत ही तीखे शब्दों में बाल की खाल उतारने लगे। वे अत्यंत सूक्ष्म विषयों पर बहस कर रहे थे और इतने जोर जोर से अपनी अपनी बात कह रहे थे, जैसे उन के लिये जिंदगी और मौत का प्रश्न प्रस्तुत हो। वे इतने ऊंचे स्वर में चिल्ला रहे थे और मेज़ पर हाथ पटक रहे थे कि घर का प्रत्येक प्राणी चौंक उठा, बेचारा लेम जो मिखालेविच के आगमन के बाद से अपने कमरे में बंद था, बहुत ही परेशान था और उसे भय लग रहा था।

"तब उस के बाद तुम क्या हो? हताश ?" मिखालेविच चिल्लाया, उन्हें बहस करते काफ़ी रात बीत चुकी थी।

"क्या मैं हताश व्यक्ति दिखाई देता हूँ ?" लाव्रेस्की ने उत्तर दिया, "वे हमेशा पीले और रोगी होते हैं—कहो मैं तुम्हें हाथ से ऊपर उठा दूँ ?"

"अच्छा, अगर हताश नहीं तो तुम एक सभ्रांत व्यक्ति हो और यह उससे भी बुरा है। सभ्रांत का मतलब समझते हो? तुम्हें प्रारब्ध ने धोका दिया है—मानते हो, इस में तुम्हारा कोई दोष नहीं, तुम्हारे में एक भावुक और स्नेहमयी आत्मा वास करती है, और तुम्हें ज़बर्दस्ती औरतों से अलग रखा गया है, स्वभावतः तुम्हें जो पहली औरत मिली, तुम उस के फंदे में फंस गये और उस ने तुम्हें बुद्धू बनाया।"

"उस ने तुम्हें भी बुद्धू बनाया।"

"निःसंदेह, मैं प्रारब्ध का साधन बना—प्रारब्ध कोई शेर नहीं, हम सिर्फ पुरानी आदत से कह रहे हैं। लेकिन इससे सिद्ध क्या होता है ?"

"इससे सिद्ध यह होता है कि मुझे बचपन में सदा रौंदा गया।"

"लेकिन अब उठो ! तुम पुरुष हो, क्या नहीं ? फिर तुम्हें पौरुष मांगते फिरने की ज़रूरत क्या है ? कारण चाहे कुछ भी हो तुम एक व्यक्तिगत उदाहरण को सिद्धान्त का रूप नहीं दे सकते।"

"सिद्धान्त का इस से क्या सम्बन्ध है ?" लाव्रेस्की ने ज़ोर से कहा, "मैं यह बात नहीं मानता....."

"नहीं यह तुम्हारा सिद्धान्त है, तुम्हारा सिद्धान्त. . . . .मिखालेविच ने भी उतने ही जोर से कहा।

"तुम एक अहंवादी हो, इस से अधिक कुछ नहीं !" एक घंटा और बीत गया—" तुम आत्मानन्द चाहते हो। तुम जीवन में आनन्द खोजते रहे। तुम सिर्फ़ अपने लिये जीना चाहते हो..."

"आत्मानंद से तुम्हारा मतलब क्या है।"

"और तुम्हें हर तरह पराजित होना पड़ा, तुम्हारे कुछ भी हाथ नहीं लगा।"

"मैं तुम से आत्मानंद का अर्थ पूछ रहा हूँ।"

"और ऐसा होना ही था। तुम ऐसी जगह पांव धरना चाहते थे जहां धरती नहीं थी, क्यों कि तुम ने ऐसी रेत पर घर बनाया था जिस की भीत नहीं थी. . . . . .

"स्पष्ट बात करो गोलमाल मत मचाओ, क्योंकि मैं तुम्हारी बात समझ नहीं पाता।"

"अच्छा ठीक है–हंसो अगर तुम्हें हंसना अच्छा लगता है...क्यों कि तुम्हारे भीतर आस्था नहीं, हृदय की गर्मी नहीं। तुम्हारे पास मस्तिष्क है, नन्हा-सा मस्तिष्क.....तुम पुराने वाल्तेयरवादी हो

वाल्तेयरवादी, और कुछ नहीं।"

"मैं.....मैं एक वाल्तेयरवादी ?"

"हां, अपने पिता के समान। और फिर तुम्हें इस बात का ज्ञान तक नहीं"।

"तब मैं कहूँगा कि तुम एक खब्ती हो।" लाव्रेस्की चिल्लाया।

"अफ़सोस !" मिखालेविच ने अशिष्ट स्वर में कहा, "दुर्भाग्यवश मैं अभी तक यह उच्च उपाधि प्राप्त नहीं कर सका। ..."

"मैं अब समझा, कि तुम क्या हो।" मिखालेविच ने सुबह दो बजे कहा, "तुम सभ्रांत अथवा हताश कुछ नहीं हो और वाल्तेयरवादी भी नहीं हो—तुम एक आलसी हो निरे आलसी, आलसी। वे विवेकहीन आलसी होते हैं, जो कुछ न करने के लिये एड़ियां रगड़ते रहते हैं, क्योंकि उनमें कुछ भी करने की योग्यता नहीं होती वह सोच भी नहीं सकते। लेकिन तुम विचारशील व्यक्ति हो, अपने पांव के नीचे घास को उगने देते हो, बेकार में एड़ियाँ नहीं रगड़ते। तुम चाहो तो कुछ कर भी कर सकते हो, मगर नहीं करते। तुम पेट फुलाये पड़े हो और इधर-उधर देख कर इतमीनान से कहते हो, ठीक है जैसी चल रही है। क्योंकि लोग जो कर रहे हैं, सब व्यर्थ है, उससे कुछ बनता बिगड़ता नहीं।"

"तुम यह कैसे कहते हो कि मैं आलसी बनकर लेटा हुआ हूँ।" लाव्रेस्की ने तिनक कर कहा, "और तुम्हारे पास इसका क्या प्रमाण है कि मेरे यह विचार हैं ?"

"इसके अलावा तुम्हारे क़बीले से सब लोग" मिखालेविच ने बात जारी रखी, वह घबराया नहीं, "पढ़े लिखे आलसी हैं। आप लोग जर्मनों की त्रुटियों से परिचित हैं, अंग्रेजों और फ्रांसीसियों के दोषों को समझते हैं—और आपका यह करुणापूर्ण ज्ञान, अपने निर्लज्जता पूर्ण आलस्य को उचित ठहराने के लिये प्रयोग होता है।

तुम में से कुछ इस बात में गर्व अनुभव करते हैं कि वे लेटे हुए हैं क्योंकि बुद्धि जीवियों का यही एक काम है, उन्हें कुछ करना नहीं होता, करते वे हैं जो मूर्ख हैं। जी हां! हममें कुछ ऐसे भी भद्र लोग हैं—मैं आप लोगों की बात नहीं कर रहा, समझे—जो अपना समस्त जीवन आलस्य और निद्रा में पड़े खो देते हैं, उसके आदि हो जाते हैं—और दल दल के कीड़ों की भांति उसमें धंस जाते हैं, मिखालेविच ने कहा और अपनी उपमा पर आप ही हंसने लगा। "खेद है कि यह घोर निद्रा हम रूसियों की मृत्यु का कारण बनेगी। घृणित आलसी बार बार सोचता है कि उठे और उठकर काम करे..."

"तुम हमें कोस क्यों रहे हो?"—इस बार लाव्रेस्की चिंघाड़ा। काम के बारे में यह सब बातें ठीक हैं.....काम होना चाहिये। लेकिन कोसने के बजाये तुम मुझे बताओ कि मैं क्या करूं।"

"बस यही चाहते हो? महाशय यही मैं तुम्हें नहीं बता सकता, हर एक आदमी को यह बात खुद समझनी चाहिये।" मिखालेविच ने कहा "तुम एक ज़मीदार हो और शायद एक भद्रपुरुष भी हो। तुम यह नहीं जानते कि तुम्हें क्या करना चाहिये। तुम्हारे मन में विश्वास नही है अथवा तुम यह नहीं जानते कि जहाँ विश्वास नहीं वहां बोध नहीं।"

"मुझे थोड़ा सा विश्राम का समय दीजिये।" इसे छोड़िये और मुझे इधर उधर देखने दीजिये।" लाव्रेस्की ने विनीत स्वर में कहा।

"नहीं एक मिनट, एक सैकेंड का भी विश्राम नहीं।" मिखालेविच ने स्टेजी अंदाज से हाथ हिलाते हुए पंचम स्वर में कहा, "एक सैकेंड नहीं। मृत्यु किसी मनुष्य का इंतजार नहीं करती, जिंदगी को भी नहीं करना चाहिये।"

"और क्या यह वह समय है, वह स्थान है कि लोग आलस्य को अपने दिमाग़ में भरे?" वह चार बजे सुबह चिल्ला रहा था और

अधिक चिल्लाने से उसकी आवाज भारी हो गई थी। अब इस समय रूस में! जब प्रत्येक व्यक्ति को अपने कर्त्तव्य का पालन करना है, उस पर गहरी ज़िम्मेदारी है जिसके लिये वह भगवान राष्ट्र और खुद अपने सामने जवाबदे हैं! हम सो रहे हैं और समय गुज़रता जा रहा है हम सो रहे हैं....."

"और मैं तुम्हें बताऊं।" लाव्रेस्की बोला, "हम सो नहीं रहे हैं, बल्कि हम दूसरों की नींद में भी ख़लल डाल रहे हैं। हम दो मुर्गों की भांति लड़ रहें हैं, चिल्ला रहे हैं। लो सुनो, वह एक तीसरा भी बांग दे रहा है।

मुर्गा वाकई आवाज़ दे रहा था। मिखालेविच सुन कर तनिक शर्माया और शांत हो गया। "यह तो सवेरा हो गया!" उसने मुस्कराते और पाईप अलग रखते हुए कहा।

"हां, सवेरा हो गया।" लाव्रेस्की ने कहा। दोनों मित्र इस के बाद लगभग एक घंटा बातें करते रहे, मगर अब उन की आवाज़ ऊंची नहीं थी। उन का स्वर धीमा था और उस में अवसाद का समावेश था।

लाव्रेस्की ने रोकने की बहुत कोशिश की, लेकिन मिखालेविच दूसरे दिन चला गया। वह उसे रोक नहीं सका, पर उन्हों ने जी भर कर बातें कीं, मालूम होता था कि मिखालेविच के पास पाई तक की गुंजाइश नहीं थी। लाव्रेस्की ने उसी दिन शाम को बड़े अफ़सोस के साथ अपने मित्र में चिरसंगिनी गरीबी के निशान और आदतें देखी थीं। उस के बूट एड़ियों पर फटे हुए थे, कोट का एक बटन टूट गया था, बाल सूखे और उलझे हुए थे, उस के पहुँचने पर उस ने नहाने की भी ज़रूरत महसूस नहीं की थी और वह खाने पर बेतहाशा टूट पड़ा था, बोटियों को हाथों से चीर रहा था और अपने काले मज़बूत दाँतों से हड्डियाँ तक चबा रहा था। यह भी ज़ाहिर था कि सिविल

सर्विस की नौकरी से उसे कुछ लाभ नहीं हुआ। अब सिर्फ़ नया मालिक ही उसका एक मात्र सहारा था, जिसने उसे "पढ़ा लिखा" व्यक्ति समझ कर अपने दफ्तर के लिये मुलाज़िम रखा था। लेकिन इन परिस्थितियों में भी मिखालेविच निराश नहीं था। वह एक मानवता प्रेमी और आदर्शप्रिय कवि का जीवन बिता रहा था। अपनी ग़रीबी को कम करता था, मनुष्य मात्र के भविष्य के बारे में अधिक सोचता था। वह विवाहित नहीं था, लेकिन कई बार मुख्तलिफ़ औरतों से मुहब्बत की थी और कविताओं में अपनी इस प्रेम-भावना को व्यक्त किया था। एक पौलिश रमणी पर लिखी हुई उस की कविता बड़ी ही सुन्दर थी। इस पौलिश रमणी के बारे में अफ़वाह यह थी कि वह एक आम यहूदी औरत है और बहुत से फ़ौजी अफ़सर उस के पास आते-जाते हैं.....लेकिन, इस से क्या, प्रेम, प्रेम ही रहता है।

लेम को मिखालेविच पसंद नहीं आया, उस की अनर्गल बातों से और तीखे व्यवहार से जर्मन चौंक उठा क्योंकि वह ऐसी बातों का आदि नहीं था.....एक भिखारी दूसरे को दूर ही से पहचान लेता है, लेकिन बुढ़ापे में वे शायद ही मित्र बनते हैं, इस में आश्चर्य की कोई बात नहीं है। उन में कुछ भी सांझा नहीं होता, यहां तक कि आकांक्षाओं का भी सांझा नहीं होता।

खाना होने से पहले मिखालेविच ने फिर लाव्रेंस्की से तावील गुफ्तगू की और भविष्यवाणी करते हुए कहा कि अगर तुमने अपने आप को न बदला तो सर्वनाश हो जायेगा। तुम्हें अपने किसानों की बेहतरी की ओर ध्यान देना चाहिये और अपने ही उदाहरण से बताया कि मुझे देखो मैंने अपनी समस्त तुच्छता को दुखों में गला दिया है और उसी सांस में बार बार जताया कि मैं एक प्रसन्न व्यक्ति हूँ, चिड़ियों की तरह चहचहाता हूँ और कोयल की तरह कूकता हूं.....

"कोयल तो काली होती है।" लाव्रेस्की बोला।

"प्यारे मित्र, इधर आओ, मूर्ख न बनो।" मिखालेविच ने सहज स्वभाव से कहा, "भगवान को धन्यवाद दो कि तुम्हारी धमनियों में सज्जन पुरुषों का रक्त है। मैं समझता हूँ कि तुम्हें ऐसे भले साथी की ज़रूरत है। जो तुम्हें इस आलस्य की दल दल से खेंच कर निकाले।"

"महाशय, आप का शुक्रिया" लाव्रेस्की ने व्यंग किया, "मैंने ऐसे भले साथी बहुत देखे हैं।"

"चुप रहो, सनाकी।" मिखालेविच चिल्लाया।

"सनाकी नहीं, सनकी।" लाव्रेस्की बोला।

"तुम सनकी हो।" मिखालेविच ने दोहराया।

वह गाड़ी में बैठ कर भी बोलता रहा। वह रूस के भविष्य पर अपने विचार प्रकट करता रहा, वह अपना बालों से भरा हाथ यों हिला रहा था जैसे भविष्य के बीज वातावरण में बिखेर रहा हो। आखिर छोड़ चले....."मेरे अंतिम तीन शब्द याद रखना," उस ने सिर गाड़ी से बाहर निकाल कर कहना जारी रखा, "धर्म, प्रगति और मानवता ...अच्छा नमस्ते!" उस का सिर—जिस पर आंखों तक टोपी पहनी हुई थी, गाड़ी के भीतर चला गया।

लाव्रेस्की सीढ़ियों पर अकेला खड़ा रह गया, गाड़ी की ओर उस समय तक देखता रहा, जब तक कि वह आंखों से ओझल नहीं हो गई। "मेरा खयाल है कि वह ठीक कहता है।" उस ने घर के अंदर जाते हुए सोचा, "मैं वाकई आलसी हूँ। यद्यपि उस ने प्रतिरोध किया था और मत भेद प्रकट किया था, फिर भी मिखालेविच ने कुछ कहा था उस का अधिकांश अनायास ही उस के मन में गड़ गया। यदि मनुष्य वाकई भला हो तो कोई उस का विरोध नहीं कर सकता।

: २६ :

दो दिन बाद मेरिया दमितरीवना अपने अपने वायदे के अनुसार बच्चों समेत वासिल्येवस्कोये आईं। छोटी लड़कियां दौड़ती हुई बाग़ में चली गईं जब कि दमितरीवना धीरे धीरे कमरों को देखती रही और उन की प्रशंसा करती रही। उस का आना लाव्रेस्की के लिये बड़े सौभाग्य और हर्ष की बात थी, वह लग भग उसकी दान शीलता के बराबर थी। जब एंटन और अप्रेक्सिया ने पुराने रिवाज़ के अनुसार उस के हाथों का चुम्बन किया तो वह मुस्कराई और मद्धिम सी आवाज़ में चाय मांगी। एंटन ने इसी समय के लिये सफेद दस्ताने पहने, मगर उसे बड़ा आघात पहुँचा, जब कि चाय पिलाने का काम किराये के एक नौकर ने किया, जो उस के खयाल के मुताबिक बिलकुल असभ्य था। लेकिन भोजन के समय एंटन अड़ गया। वह मेरिया दमितरीवना की कुर्सी के पीछे खड़ा हो गया और किसी दूसरे व्यक्ति को अपना स्थान नहीं लेने दिया। मेहमानों का गांव में आना असाधारण और विचित्र घटना थी, बूढ़ा नौकर यह देख कर बहुत ही प्रसन्न था कि उस के स्वामी के सम्बन्धियों और मिलने-जुलने वालों में ऐसे भद्रलोग भी है। सिर्फ़ एंटन ही खुश नहीं था, लेम भी प्रसन्न था। उस ने अपना छोटा धारीदार कोट पहन रखा था और अपना रूमाल कसकर गले में बांध लिया था। वह बार-बार खंगालता था और सानंद मुस्कान से महमानों का स्वागत कर रहा था। लाव्रेस्की यह देख कर पुलकित हो उठा कि उस में और लीज़ा में उस

दिन जिस आत्मीयता का प्रादुर्भाव हुआ था, वह और बढ़ गई थी। उस ने भीतर आते ही अपना हाथ मित्रता की भावना से लाव्रेस्की की तरफ़ बढ़ाया। भोजन के उपरान्त लेम ने अपने कोट की लम्बी जेब से, जिस में वह बराबर हाथ डाले हुए था, काग़ज़ पर लिखा हुआ एक गीत निकाला और पियानो पर रख दिया। यह सितारों के बारे में एक गीत था, जो उसने पुरानी जर्मन भाषा में इसी रात लिखा था। लीज़ा तत्क्षण पियानो पर जा बैठी और बजाना शुरू किया.....अफ़सोस गीत कठिन, अबोध और दुरूह था। संगीतकार ने एक गूढ़ भाव व्यक्त करने का प्रयत्न किया था, लेकिन वह असफल रहा था। यह सिर्फ़ प्रयत्न मात्र था। लाव्रेस्की और लीज़ा दोनों ने इस बात को महसूस किया और लेम भी समझ गया क्योंकि उस ने बिना एक शब्द कहे कागज़ उठा कर जेब में डाल लिया। लीज़ा ने जब दोबारा कोशिश करने के लिये गीत मांगा तो उस ने सिर हिला कर कहा—"बस, बस"। फिर वह झुरझुरी सी लेकर अपने आप में डूब गया और उठ कर चला गया।

शाम को सब लोग मछलियां पकड़ने निकले। बाग में एक तालाब था जो नाना प्रकार की मछलियों से भरा हुआ था। मेरिया दमितरीवना की आराम कुर्सी किनारे पर डाल दी गई, पांव के नीचे ग़लीचा बिछा दिया गया, उसे सब से अच्छी बंसी दी गई और पुराना अनुभवी एंटन उस की सहायता करने चला। उसने लासा लगाया और शरीर को विचित्र ढंग से मोड़ कर बंसी तालाब में डाली। बाद में उस दिन अपनी स्कूली फ्रांसिसी में बात करते हुए मेरिया दमितरीवना ने बूढ़े एंटन की बड़ी प्रशंसा की लेम दोनों छोटी लड़कियों के साथ बंद के पास चला गया और लाव्रेस्की ने लीज़ा के क़रीब रहना पंसद किया। जब बंसियाँ घूमती थीं तो सुनहली सफ़ेद मछलियाँ इधर-उधर दौड़ती थी और छोटी लड़कियाँ उन्हें देख प्रसन्नता से चीखती ही

थीं। दो बार दमितरीवना ने भी हल्की सी चीख़ निकाली। सबसे कम मछलियाँ लीज़ा और लाव्रेस्की ने पकड़ी, शायद इसका कारण यह था कि उन्होंने इस कार्य पर सब से कम ध्यान दिया, और उनके कांटे पानी की सतह पर ही तैरते रहे। सुर्ख सरकंडे उनके गिर्द हौले-होले हिल रहे थे। शांत जल हौले-हौले हिलकारे ले रहा था और वे दोनों हौले-हौले बातें कर रहे थे। लीज़ा एक छोटे से तख्ते पर खड़ी थी और लाव्रेस्की एक पेड़ के झुके हुए टहने पर बैठा था। लीज़ा सफ़ेद वस्त्र पहने हुए थी। उसके एक हाथ में हैट था और दूसरे में बंसी। लाव्रेस्की उसकी ग्रीवा, कानों के पीछे मुड़े हुए बालों और सुकोमल गालों को, जिन्हें एक बालक के गालों के सदृश सूर्य चूम रहा था, चुपचाप देखे जा रहा था और सोच रहा था:—"तुम जो मेरे तालाब के किनारे खड़ी हो कितनी मधुर हो!" लीज़ा का चेहरा दूसरी ओर था वह मुस्कराती हुई आंखों से पानी को निहार रही थी। खट्टे के एक वृक्ष की छाया दोनों पर पड़ रही थी।

"क्या तुम जानती हो, "लाव्रेस्की ने बात शुरू की "हम में जो अंतिम बात चीत हुई, उसके बारे में मैंने बहुत सोचा है और मैं इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि तुम बहुत अच्छी हो।"

"ओह, मैं तुम्हें अपनी राय बताना नहीं चाहती....." लीज़ा चौंकी, वह कुछ व्यथित जान पड़ती थी।

"तुम बहुत ही अच्छी हो" लाव्रेस्की ने दोहराया, "मैं एक गंवार आदमी हूँ; लेकिन इतना जानता हूं कि हरेक आदमी तुम्हें पसंद करता है। लेम ही की बात लो बेचारा तुम्हें बहुत चाहता है।"

लीज़ा ने भृकुटी चढ़ाई नहीं, तनिक जुम्बिश दी, जब कोई अप्रिय बात सुनती थी तो वह सदा ही ऐसा करती थी।

"मुझे आज उसके और उसके गीत पर बड़ी दया आई।" लाव्रेस्की ने बात जारी रखी, "जवानी में अयोग्यता क्षम्य होती है,

लेकिन बुढ़ापे से अयोग्यता का कोई मेल नहीं और इससे भी खेद जनक बात यह होती है कि मनुष्य को खुद भान न हो कि उसकी शक्तियों का ह्रास हो रहा है।.....देखिये, वह मछली ने लासा पकड़ा.....मैंने सुना है।" लावेस्की ने तनिक रूक कर कहा "कि व्लाडीमीर निकोलाईच ने बहुत ही सुन्दर गीत लिखा है।"

"हां" लीज़ा बोली, "मामूली है, बुरा नहीं।"

"तुम्हारी क्या राय है।" लावेस्की ने पूछा, "क्या वह अच्छा गायक है?"

"मेरा खयाल है कि उसमें एक अच्छे सगींतकार की प्रतिभा है, लेकिन उसने इस ओर भली प्रकार ध्यान नहीं दिया।"

"अच्छा, एक आदमी के नाते उसके बारे में तुम्हारी क्या राय है?"

लीज़ा हंसी और उसने एक उचटती सी निगाह लावेस्की पर डाली।

"यह एक अजीब सवाल है।" उसने तीखे स्वर में कहा और अपनी बंसी ऊपर खींचकर दोबारा पानी में डाली।

"अजीब क्यों है? मैं इसलिये तुम से पूछता हूँ कि मैं अभी इधर आया हूँ और तुम्हारा नाती हूँ।"

"नाती?"

"हाँ, मेरा खयाल है कि मैं तुम्हारा चचा लगता हूँ।"

"व्लाडीमीर निकोलाईच सहृदय व्यक्ति है" लीज़ा बोली, "वह चतुर है और मामा उसे पसंद करती हैं।"

"क्या तुम भी पसंद करती हो?"

"वह भला आदमी है मैं उसे पसंद क्यों न करूँगी?"

"एंह!" लावेस्की बड़बड़ाया और चुप होगया। उसके चेहरे पर घृणा और अवसाद की एक मिली जुली भावना व्यक्त थी। वह एक

टक लीज़ा की ओर देख रहा था जिससे वह परेशान थी; लेकिन मुस्करा रही थी "भगवान करे, वे सुखी रहें।" उसने धीमे स्वर में अपने आपसे कहा और दूर शून्य में झांकने लगा।

"फ़्योदोर इवानिच! आप भूल रहे हैं।" लीज़ा बोली "आपको यों नहीं सोचना चाहिये.....पर क्या आप व्लाडीमीर निकोलाईच को पसंद नहीं करते?" उसने हठात पूछा।

"नहीं मैं उसे पसंद नहीं करता।"

"क्यों?"

"मेरा ख़याल है कि इस का कारण यह है कि वह हृदयहीन है।"

लीज़ा की मुस्कराहट लुप्त हो गई।

"लोगों को कठोरता से परखना तुम्हारा स्वभाव है।" उसने काफ़ी देर के बाद कहा।

"मैं तुम से सहमत नहीं, मुझे क्या अधिकार है कि मैं लोगों को सख्ती से परखूं जब कि खुद मुझे उदारता दरकार है? क्या आप भूल गईं कि मैं उपहास्य जीव हूँ?.....हां।" वह बोला, "क्या तुमने अपना वायदा पूरा किया।

'कौनसा वायदा?

"क्या तुमने मेरे लिये प्रार्थना की?"

"हां, मैंने की और मैं तुम्हारे लिये हर रोज़ प्रार्थना करती हूँ। लेकिन इसे किंचित मत समझो।"

लावरेस्की ने लीज़ा को विश्वास दिलाया कि वह ऐसा कभी सोच भी नहीं सकता और वह दूसरों की मान्यताओं का बड़ा आदर करता है। फिर वह मज़हब के बारे में, मानव-इतिहास में उस की देन के बारे में, और ईसाईयत के महत्व के बारे में बात करने लगा....."

"मनुष्य को सच्चा इसाई बनने की आवश्यकता है।" लीज़ा ने तनिक कोशिश कर के कहा, "इसलिये नहीं कि भगवान के दर्शन हों

.....अथवा भौतिक सुख प्राप्त हो बल्कि इसलिये कि हर एक को मरना है।"

लाव्रेस्की ने चकित और स्तब्ध लीज़ा की ओर देखा और आंखों में आंखें डाल कर पूछा, "तुम ने यह क्या शब्द कहा?"

"यह शब्द मेरा नहीं।" लीज़ा ने उत्तर दिया।

"तुम्हारा न सही.....लेकिन तुमने मृत्यु की बात ही कैसे कही?"

"पता नहीं। मुझे इस का अक्सर ध्यान आता है।"

"अक्सर?"

"हां"

"लेकिन तुम्हें देख कर कोई इस बात पर विश्वास नहीं कर सकता। तुम सदा प्रसन्न रहती हो और मुस्करा रही हो....."

"हां, इस समय मैं बहुत प्रसन्न हूँ।" लीज़ा ने सहज स्वभाव से कहा।

लाव्रेस्की के मन में उत्कंठा उत्पन्न हुई कि वह लीज़ा के दोनों हाथ पकड़ ले और उन्हें ज़ोर से भींचें.....

"लीज़ा, लीज़ा," मेरिया दमित्रीवना ने पुकारा "यहां आओ, यह देखो मैंने कितनी बड़ी मछली पकड़ी है!"

"मामा, मैं आई।" लीज़ा ने उत्तर दिया, और वहां लाव्रेस्की को बैठे छोड़ कर मां के पास चली गई।

"मैं उस से यों बातें कर रहा हूँ "जैसे इस से पहले मैं जीवित ही नहीं था," उस ने सोचा। जाने से पहले लीज़ा अपना हैट वृक्ष की एक टहनी पर टांग गई थीं। लाव्रेस्की हैट की ओर देखने लगा। उस के लम्बे-लम्बे और तनिक मरोड़े हुए फीते उसे बहुत ही भले लग रहे थे और वह उन्हें अजीब स्नेह सिक्त भावना से देख रहा था। लीज़ा शीघ्र लौट आई और फिर

तख़्ते पर बैठ गई।

"व्लाडीमीर निकोलाईच को आप हृदयहीन किस लिये समझते हैं?" लीज़ा ने काफ़ी देर बाद पूछा।

"मैंने तुम्हें बता दिया, शायद मेरा यह खयाल गलत हो, समय सिद्ध करेगा।"

लीज़ा विचार विमग्न हो गई। लाव्रेस्की ने वासिल्योवस्कोये में अपने जीवन, मिखालेविच के बारे में बात करनी शुरू की। उस के मन में जो कुछ था, वह सब लीज़ा को बता देना चाहता था। वह ऐसी अच्छी थी, चुपचाप सुनती थी और वह जो कभी कभी टिप्पणी करती थी, वह बड़ी सरल और अनोखी होती थी। उस ने यह बात भी लीज़ा को बता दी।

लीज़ा स्तब्ध रह गई।

"सचमुच?" उस ने कहा, मेरा खयाल था कि अपनी नौकरानी नेस्त्या की भांति मेरे पास अपने कोई शब्द ही नहीं। एक बार उस ने अपने प्रेमी से कहा, "मेरे साथ तुम ऊब जाते होगे, क्योंकि तुम इतनी अच्छी बातें करते हो और मेरे पास अपने कोई शब्द ही नहीं।"

"और इस के लिये भगवान को धन्यवाद दो।" लाव्रेस्की ने सोचा।

: २७ :

इतने में शाम हो गई और मेरिया दमितरीवना ने कहा, "हमें अब घर चलना चहिये।" छोटी लड़कियों को तालाब से खींच कर ले जाना पड़ा और चलने के लिये तैयार किया गया। लाव्रेस्की बोला कि वह उन्हें आधे रास्ते तक छोड़ने साथ जायेगा और उसने अपना घोड़ा तैयार करवाया। जब मेरिया दमितरीवना गाड़ी में सवार हो रही थी तो लाव्रेस्की को लेम की याद आई। वह कहीं दिखाई नहीं दिया, तालाब से लौट कर वह जाने कहां गायब होगया था। लेकिन एंटन ने असाधारण शक्ति से दरवाजा बंद किया और कोचवान से कहा "चलो!" गाड़ी चल पड़ी। मेरिया दमितरीवना पीछे बैठी थी जबकि छोटी लड़कियाँ और नौकरानी आगे बैठी थीं। यह गर्म और खामोश शाम थी, दोनों ओर की खिड़कियां खुली थीं और लाव्रेस्की घोड़े पर सवार लीज़ा की ओर साथ साथ चल रहा था। उसने गाड़ी के दरवाज़े पर हाथ रख छोड़ा था, और रासें घोड़े के कंधे पर डालदी थीं जो बड़े आराम से चल रहा था। लाव्रेस्की बीच बीच में लीज़ा से बात भी कर लेता था। सूर्यास्त की अरुणा मद्धिम पड़ गई थी, अंधेरा होने लगा था; लेकिन हवा अभी गर्म थी। मेरिया दमितरीवना ऊंघने लगी, छोटी लड़कियां और उनकी नौकरानी भी सो गईं। गाड़ी एक ही तेज़ रफ्तार से चलती रही। लीज़ा आगे को झुकी थी; चांदनी सुन्दर चेहरे को आलोकित कर रही थी और

रात की हवा आँखों और गालों को छू रही थी। वह प्रसन्न थी। उसका हाथ लाव्रेस्की के हाथ के पास गाड़ी पर रखा हुआ था। वह भी प्रसन्न था, तेज़ चलते हुए रात की स्निग्ध निस्तब्धता भली लगती थी, उसकी आँखें बराबर लीज़ा के मधुर और युवा मुख पर गड़ी हुई थीं और वह उसकी निरीह और सादी बातें सुन रहा था। उसे पता भी नहीं चला कि आधा रास्ता कब कट गया। मेरिया दमितरीवना को जगाने का कष्ट न देकर उसने लीज़ा का हाथ धीरे से दबाते हुए कहा—"अब हम मित्र हैं, क्या हम नहीं ?" लीज़ा ने स्वकृति के रूप में सिर हिलाया। उसने अपना घोड़ा खड़ा कर लिया और गाड़ी को आँखों से ओझल होते हुए देखने लगा। फिर वह लौट पड़ा। गर्मी की रात की सुन्दरता उसकी आत्मा में प्रवेश कर रही थी, हरेक चीज़ परिचित जान पड़ती थी और फिर भी अजीब दिखाई देती थी। वह दूर तक देख रहा था; लेकिन चीज़ों को साफ़ साफ़ देखना कठिन था। शांति भी बंसत के यौवन से जीवित महसूस होती थी। लाव्रेस्की का घोड़ा इधर-उधर झूमता हुआ मज़े से चल रहा था, उसकी लम्बी परछाईं भी साथ-साथ चल रही थी। उसके सुरों की आवाज़ में एक विचित्र आकर्षण था जो ख़ामोशी में जादू-सा भर रहा था। सितारे टिमटिमा रहे थे, चाँद की किरणें आकाश पर नीली छाया फैला रही थीं और दौड़ते हुए बादलों के सफ़ेद टुकड़ों की झोलियां सोने से भर रहीं थी ! "रात का मधुर वायु अंगों में स्फूर्ति का संचार कर रहा था। लाव्रेस्की प्रसन्नता में खोया हुआ सा बड़बड़ा रहा था—तरकश में अभी तीर बाकी है। हम उन्हें मज़ा चखायेंगे !" मज़ा कैसे और किसे चखायेगा यह कुछ मालूम नहीं था.....फिर उसे लीज़ा का ध्यान आया और वह सोचने लगा कि वह पैंशिन से कभी मुहब्बत नहीं कर सकती; लेम की यह बात बिलकुल सच है मगर उसका यह कहना सच नहीं है

उसके पास अपने "शब्द नहीं"। निस्संदेह उसके पास अपने शब्द हैं..."इसे किंचित मत समझो" लाव्रेस्की को स्मरण हो आया। वह सिर झुकाये देर तक चुपचाप चलता रहा और फिर शरीर को ऊपर खींच कर गुनगुनाना शुरू किया:—

"और वे सब जिसकी मैं अराधना करता था मैंने जला दिया और जो कुछ जला दिया था उसकी मैं अब अराधना करता हूँ।" और घोड़े को एड़ लगाकर वह उसे दुलकी दौड़ता हुआ घर पहुँचा।

घोड़े से उतर कर उसने अंतिम दृष्टि इधर-उधर डाली और वह धीरे से मुस्कराया। रात—सहृदय और निस्तब्ध रात पहाड़ियों और वादियों में फैली हुई थी। उसकी गहरी और सुगन्धित गहराइयों से यह कहना कठिन था कि वह आकाश से आ रही है या धरती से—कोमल और मृदु, स्निग्धता आ रही थी। लाव्रेस्की ने लीज़ा को अंतिम मूक अभिवादन भेजा और ठप ठप सीढ़ियां चढ़ गया।

दूसरा दिन कठिन गुज़रा। सुबह ही से बूंदा बांदी हो रही थी। लेम स्काऊल पहने हुए था और उसने होंठ यों भींच रखे थे जैसे उन्हें कभी नहीं खोलेगा। लाव्रेस्की जब सोने जा रहा था तो कुछ फ्रांसिसी पत्रिकायें, जो हफ्तों से उसकी मेज़ पर बिना खुली पड़ी थीं साथ ले गया। उसने सावधानी से ऊपर का कागज़ उतारा और प्रत्येक पत्रिका की विषय सूची पढ़ने लगा, लेकिन उनमें कुछ भी नया नहीं था। वह उन्हें अलग रखने ही वाला था कि वह अकस्मात यों उछल कर बिस्तर से उठा जैसे उसे बिच्छू ने डंक मारा हो। एक अख़बार के सम्पादकीय में हमारे चिर परिचित श्री ज़ुलेज़ ने पाठकों को यह "शोक जनक समाचार" सुनाया था कि पेरिस के होटलों की शोभा और फैशन की रानी मादाम दी लाव्रेस्की अचानक चल बसी हैं और यह ख़बर—बड़े अफ़सोस की बात है अभी उसके कान

में पड़ी है। इसमें संदेह नहीं—उसने आगे लिखा था—मुझे भी स्वर्गीय रमणी का मित्र होने का सौभाग्य प्राप्त था.....।

लाव्रेंस्की ने कपड़े पहने और बाग़ में चला गया। एक ही पथ पर इधर से उधर घूमते २ सुबह हो गई।

: २८ :

दूसरी सुबह चाय के समय लेम ने लाव्रेस्की से कहा कि मुझे घर लौटने के लिये घोड़ा गाड़ी दे दीजिये। "इस समय तक मुझे पढ़ाने का काम शुरू कर देना चाहिये था" बूढ़े जर्मन ने कहा, "मैं यहाँ समय व्यर्थ खो रहा हूँ।" लाव्रेस्की ने एक दम कोई उत्तर नहीं दिया, वह क्षुब्ध और उदास दिखाई दे रहा था। "बहुत अच्छा" उसने अंत में कहा, "मैं भी तुम्हारे साथ चलूँगा।" नौकरों की सहायता के बिना लेम ने बड़बड़ाते हुए अपना सामान बांधा और अपने संगीत के कुछ कागज़ फाड़कर जला दिये। घोड़े और गाड़ी तैयार की गई। जब वह अपने कमरे से निकला तो लाव्रेस्की ने पहले दिन वाला अख़बार उसकी जेब में ठूस दिया। लाव्रेस्की और लेम ने रास्ते पर आपस में बहुत कम बात कीं क्योंकि वे दोनों अपने अपने विचारों में डूबे हुए थे और प्रसन्न थे। किसी ने इसमें बाधा नहीं दी। वे चुपचाप ही एक दूसरे से अलग हो गये। रूस में घनिष्ट मित्रों में यह आम रिवाज़ है। लाव्रेस्की, गाड़ी उसके छोटे से घर तक ले गया। उसने उतर कर अपना सूटकेस उठाया और बिना हाथ मिलाये ही (उसने दोनों हाथों में सामान थाम रखा था) और छाती से लगा रखा था रूसी में कहा—"नमस्ते!"

"नमस्ते!" लाव्रेस्की ने उत्तर दिया, और कोचवान से कहा कि वह गाड़ी उसके अपने मकान पर ले चले। उसने शहर में दो कमरे किराये पर ले रखे थे ताकि जरूरत के वक्त काम आ सके। कुछ

पत्र लिखकर और जल्दी में भोजन करके लाव्रेस्की कालिटीन परिवार की ओर चला। उसे घर पर सिर्फ़ पैंशिन मिला, जिसने बताया कि मेरिया दमित्रीवना अभी आ रही हैं और वह स्वयं लाव्रेस्की से ऐसे बातें करने लगा जैसे उनमें अत्यंत घनिष्ठता और आत्मीयता हो। इससे पहले लाव्रेस्की की अगर उसने उपेक्षा नहीं की तो उसकी ओर कोई विशेष ध्यान भी नहीं दिया था। लीज़ा ने जब लौटकर अपनी यात्रा की बात सुनाई तो उसमें लाव्रेस्की का ख़ास जिक्र किया और कहा कि वह बहुत ही शानदार और समझदार आदमी है। पैंशिन इस "शानदार" आदमी को अपना प्रशंसक बनाना चाहता था। उसने लाव्रेस्की को खुश करने की नीयत से कहना शुरू किया कि मेरिया दमित्रीवना और सारा परिवार वासिल्येवस्कोये से बड़े प्रसन्न लौटे हैं। उन्हें यह यात्रा बहुत ही पसंद आई। फिर जैसा कि उसकी आदत थी उसने अपनी शेखी बघारनी शुरू की; वह क्या करता रहता है और क्या करना चाहता है, उसका जीवन दृष्टिकोण क्या है, वह संसार और सरकार के बारे में क्या समझता है और यह भी बताया कि भविष्य में रूस का क्या बनेगा; उसने बताया कि प्रान्तीय सरकार अपने हाथ में होनी चाहिये और निजी अनुभव और घटनाओं के आधार पर सरकारी कामों की खिल्ली उड़ाता रहा। वह बहुत देर तक बातें करता रहा और हंसते-हंसते मज़ाक ही मजाक में लगभग सभी समस्याओं का हल भी पेश कर दिया जैसे राज प्रबंध और राजनीतिक समस्याएं बहुत सी गेंदे हों जिन्हें वह बारी बारी उछाल रहा हो।

इस प्रकार के वाक्य—"मैं यह करूं अगर मेरे हाथ में सरकार की बाग डोर हो", "आप चूंकि बुद्धिमान व्यक्ति हैं, इस लिए अवश्य मुझ से सहमत होंगे।" बार-बार उस के मुंह से निकलते थे। लाव्रेस्की उस की शेखी को उदासीन भाव से सुन रहा था। वह इस सुन्दर, चतुर और तेज़ तेज़ आंखों से अपनी ओर देखने वाले

नौजवान को बिलकुल पसंद नहीं करता था। पैंशिन तेज़ बुद्धि का व्यक्ति था, उस ने शीघ्र ही समझ लिया कि लाव्रेत्स्की उस की बातों में रुचि नहीं ले रहा, इस लिये वह कोई साधारण सा बहाना करके बाहर चला गया और अपने मन में सोचा कि लाव्रेत्स्की भले ही शानदार आदमी हो लेकिन वह अशिष्ट और असभ्य है। गेदोनोवस्की के साथ मेरिया दमितरीवना ने कमरे में प्रवेश किया, फिर मार्फा तिमोफेवना और लीज़ा भीतर आईं। उन के पीछे परिवार के दूसरे व्यक्ति और थोड़ी सी देर के बाद संगीत की शौकीन बेलेनत्सियाना आई। वह पतली दुबली छोटे कद की औरत थी। उस ने काला गाऊन और सोने के भारी कड़े पहन रखे थे और उस के हाथ में एक बड़ा पंखा था। उस के साथ उस का पति भी आया था जो स्थूल और भारी था, उस के हाथ और पांव बड़े-बड़े थे और उस के मोटे होठों पर मुस्कराहट थी। उस की पत्नी दूसरों की उपस्थिति में उस से कभी बात नहीं करती थी, लेकिन घर में और कोमल क्षणों में मेरा नन्हा पिल्ला कहा करती थी। पैंशिन भी लौट आया। कमरे लोगों से और कलख से भरे हुए थे। लाव्रेत्स्की यह भीड़ पसंद नहीं करता था, वह बेलेनत्सियाना से ख़ास तौर पर चिढ़ गया था क्यों कि वह लगातार उसी की ओर देख रही थी। अगर लीज़ा वहां न होती तो वह फ़ौरन चला जाता। वह लीज़ा से कुछ बात करना चाहता, मगर बहुत देर तक उसे इस का अवसर नहीं मिला। वह उस की ओर देख-देख कर प्रसन्न हो रहा था और इसी में संतुष्ट था वह उसे आज जितनी मद और शानदार दिखाई दे रही थी, इतनी पहले कभी नहीं मृदु थी। वह बेलेनत्सियाना के पास ही बैठी थी और स्पष्ट दिखाई दे रही थी, जब कि बेलेनित्सयाना कुर्सी में झूल रही थी, बार बार अपने कंधे हिलाती थी, कभी आंखें आधी मूंद लेती थी और कभी तरेर लेती थी, लीज़ा चुपचाप बैठी थी वह सीधी लोगों के चेहरों पर देख रही

थी और हंसती नहीं थी। मेरिया दमित्रीवना, मार्फ़ा, बेलेनित्सियाना और गेदोनोवस्की के साथ ताश खेलने लगी। गेदोनोवस्की बार बार गलतियाँ कर रहा था और बार बार आंखें झपकता था और रूमाल से मुंह पोंछता था। पैशिन उदास दिखाई देता था, शुष्क भाव से बातें कर रहा था और उस के स्वर में भी अर्थ पूर्ण अवसाद था। मादाम बेलेनित्सयाना के हज़ार खुशामद करने पर भी उस ने गीत सुनाने से इनकार कर दिया। वह लाव्रेस्की की उपस्थिति से खिन्न था। लाव्रेस्की भी कुछ नहीं बोला, लीज़ा ने देखते ही उस की विचित्र मुख-मुद्रा को पहचान लिया और समझ लिया था कि वह उस से कोई बात कहना चाहता है, लेकिन जाने क्यों वह पूछते हुए डरती थी। आख़िर जब वह दूसरे कमरे में चाय बनाने जा रही थी, उस ने सहसा लाव्रेस्की की ओर घूम कर देखा। वह तत्क्षण उठ कर उस के पीछे चला गया।

"तुम्हें क्या हुआ है ?" लीज़ा ने चाय का बर्तन चूल्हे पर रखते हुए पूछा।

"क्यों, तुम्हें कैसे मालूम हुआ ?" वह बोला।

"तुम आज रोज़ से कुछ बदले हुए हो।"

लाव्रेस्की मेज़ पर झुक गया।

"मैं तुम्हें एक ख़बर सुनाना चाहता था" वह बोला, "लेकिन अब यह सम्भव नहीं।" तनिक रुक कर वह फिर बोला, "अच्छा इस सम्पादकीय में जिस पैरे पर मैंने निशान लगा दिया है, उसे तुम ख़ुद पढ़ लेना, कृपया इस बात को गुप्त रखना। मैं कल सुबह आऊंगा"

लीज़ा स्तब्ध रह गई.....पैशिन ने दरवाज़े में प्रवेश किया। उस ने अख़बार अपनी जेब में ठूंस लिया।

"इलिज़ावेटा मिखोलेवना, क्या तुम ने ओबरमान पढ़ा है ?" पैशिन ने पूछा।

लीज़ा गुन गुनाई और ऊपर चली गई। लाव्रेस्की कमरे में लौट आया और ताश खेलने की मेज़ पर चला गया। मार्फ़ा तिमोफ़ेवना क्षुब्ध और अशक्त थी, उस की टोपी के फ़ीते खुले हुए थे और हिल रहे थे। उस ने लाव्रेस्की से शिकायत की कि उस के सहयोगी गेदोनोवस्की को कुछ नहीं आता "ताश खेलना इतना सहज नहीं है, जितना कि एक फुंदना लटकाये घूमना" वह बोली।

उस का सहयोगी अब भी आंखें झपका कर रहा था और मुंह पोंछ रहा था। लीज़ा भीतर आई और एक कोने में बैठ गई। लाव्रेस्की ने उसे और उस ने लाव्रेस्की को देखा—और दोनों स्तम्भित रह गये। लीज़ा के चेहरे से खेद और निंदा का भाव व्यक्त हो रहा था। वह उस से बोलना चाहता था, लेकिन बोल नहीं सका और दूसरे मेहमानों के साथ उस कमरे में महज़ मेहमान के तौर पर उस के पास रहना उसे अच्छा नहीं लगता था, चुनाचे उस ने जाने का निश्चय किया। जब वह उस से विदा हो रहा था तो उस ने किसी तरह यह बात दोहरा दी कि वह कल आयेगा और वह उसकी मित्रता में विश्वास कर सकता है।

"आना।" लीज़ा ने उसी परेशान मुख मुद्रा से कहा।

लाव्रेस्की के जाते ही पैंशिन चहक उठा। वह गेदोनोवस्की को मशविरा देने लगा, बेलेनित्सयाना को व्यंग पूर्ण भाव से देखने लगा और अंत में उस ने गीत सुनाया। लेकिन लीज़ा के साथ वह अब भी पूर्ववत बोल रहा था, और पूर्ववत देख रहा था—तनिक अर्थ पूर्ण और उदास भाव से।

लाव्रेस्की को इस रात भी नींद नहीं आई। वह उदास या क्षुब्ध नहीं था। बिलकुल शांत था, फिर भी उसे नींद नहीं आ रही थी। उसे अतीत की स्मृतियां भी याद नहीं आ रही थीं, वह सिर्फ अपने जीवन के बारे में सोच रहा था, उस का दिल ज़ोर ज़ोर से और बाकायदगी

से धड़क रहा था, समय गुज़र रहा था, लेकिन उसे सोने का ख़्याल तक नहीं आता था। कई बार उस के मन में विचार आया था—"यह सच नहीं है, यह सब बकवास है।"—तब वह रुक जाता, सिर झुका लेता और अपने जीवन में झांकने लगता।

: २६ :

जब लाव्रेंस्की सुबह गया तो मेरिया दमित्रीवना को उसका आना अच्छा नहीं लगा, "बहुत खूब, इसे तो आने की आदत ही पड़ गई।" उस ने सोचा। वह उस के आने की बहुत परवा भी न करती लेकिन पैंशिन का उस पर बड़ा प्रभाव था, जिस ने कल रात लाव्रेंस्की के बारे में बात करके उसे संदिग्ध कर दिया था। चूंकि वह उसे मेहमान नहीं समझती थी और एक सम्बन्धी जो लगभग परिवार का ही एक व्यक्ति हो, समझती थी, इस लिये आव भगत की जरूरत नहीं थी। आध घंटे में वह लीज़ा के साथ बाग में घूम रहा था। उन से थोड़े ही फासले पर लेनोचका और शुरोचका फूलों की क्यारी में दौड़ रही थीं।

लीज़ा नित्य की भांति शांत थी, लेकिन पहले से अधिक पीली थी। उस ने अख़बार का वह पृष्ट तह किया हुआ जेब से निकाला और उसे लाव्रेंस्की को थमा दिया।

"खबर बहुत ही खतरनाक है!" वह बोली।

लाव्रेंस्की ने कुछ उत्तर नहीं दिया।

"लेकिन शायद यह सच नहीं है।" लीज़ा ने फिर कहा।

"इसी लिये मैंने तुम्हें किसी से ज़िक्र न करने को कहा था।"

लीज़ा थोड़ी दूर आगे चली।

"मुझे बताइये" वह बोली, "क्या तुम्हें इस से दुख नहीं हुआ?"

"बिलकुल नहीं ?"

"मैं क्या महसूस करता हूँ यह मुझे खुद मालूम नहीं है।" वह बोला।"

"लेकिन पहले तुम उस से प्रेम करते थे, क्या तुम नहीं करते थे ?"

"हां।"

"बहुत अधिक ?"

"हां।"

"और क्या तुम्हें उस की मौत का दुख नहीं है ?"

"वह मेरे लिये पहले ही मर चुकी थी।"

"ऐसा कहने से पाप लगता है.....मुझ से नाराज़ न हो। तुमने मुझे मित्र कहा है और मित्र जो चाहे कह सकता है। मुझे वास्तव में यह सब कुछ बहुत ही विचित्र लगता है.....कल तुम्हारी जो मुख मुद्रा थी, मैं उसे पसंद नहीं करती।.....क्या तुम्हें याद है कि उस दिन तुम ने उस की शिकायत भी की थी, शायद वह उस समय मर चुकी थी। यह बहुत ही ख़तरनाक है। ऐसा लगता है जैसे तुम्हें दंड मिला हो।"

लाव्रेंस्की कटु भाव से मुस्कराया।

"क्या तुम ऐसा समझती हो ? ख़ैर अब मैं आज़ाद हूँ।"

लीज़ा कांप उठी।

"कृपया ऐसी बातें न करो। तुम्हारी यह आज़ादी किस काम की ? अब तुम्हें आज़ादी की नहीं, क्षमा की बात सोचनी चाहिये....."

"मैंने उसे बहुत पहले क्षमा कर दिया" लाव्रेंस्की ते निंदा भाव से हाथ हिलाते हुए कहा।

"नहीं, यह बात नहीं।" लीज़ा ने कुछ लज्जित होते हुए कहा, "तुम ने मुझे ग़लत समझा है। मेरा मतलब था कि तुम्हें खुद क्षमा

मांगनी....."

"किस से ?"

"परमात्मा से। अगर परमात्मा नहीं तो और कौन हमें क्षमा करेगा।"

लाव्रेस्की ने लीज़ा का हाथ पकड़ लिया।

"इलिज़ावेटा मिखालोवना, मेरा विश्वास करो।" उस ने तीखे स्वर में कहा, "मुझे इस का काफ़ी दंड मिल चुका है। मैं हरेक बात का प्रायश्चित कर चुका हूँ। मेरा विश्वास करो।"

"तुम्हें इस बात का यकीन नहीं हो सकता" लीज़ा ने धीमे स्वर में कहा, "तुम भूल गये, थोड़े दिन पहले जब तुम मुझ से बात कर रहे थे, तुम उसे क्षमा करने को तैयार नहीं थे....."

वे दोनों चुपचाप चल रहे थे।

"तुम्हारी बच्ची का क्या बना ?" लीज़ा ने एक जगह ठहर कर कहा।

लाव्रेस्की चौंका।

"चिंता न करो। मैंने सब तरफ ख़त लिखे हैं। मेरी लड़की का भविष्य जैसे कि तुम्हारा खयाल है, जैसा कि तुम सोचती हो...सुरक्षित होगा। चिंता न करो।"

लीज़ा विषाद पूर्ण ढंग से मुस्कराई।

"लेकिन तुम कहती हो," लाव्रेस्की ने बात जारी रखी, "मेरी आज़ादी किस काम की है ? मुझे इस का क्या लाभ है ?"

"यह अख़बार तुम्हें कब मिला ?" लीज़ा ने उस के प्रश्न का उत्तर दिये बिना ही पूछा।

"तुम्हारे आने के एक दिन बाद।"

"इस का मतलब है.....इस का मतलब है कि तुम ने एक आंसू तक नहीं बहाया ?"

"नहीं, मैं तो किंकर्तव्य विमूढ़ रह गया, और फिर आंसू आते कहां से ? उस अतीत के बारे में रोऊं, जिसे मैंने अपने जीवन से निकाल कर जला दिया है ? उसकी चरित्रहीनता ने मेरी प्रसन्नता को नष्ट नहीं किया, इस से यही सिद्ध हुआ कि इस का कभी अस्तित्व ही नहीं था, मैं किस बात पर रोता ? हां, यह किसे मालूम है कि अगर यह खबर दो सप्ताह पहले आती तो शायद मुझे अधिक रंज होता।"

"दो सप्ताह ?" लीज़ा ने पूछा, "दो सप्ताह में ऐसी क्या बात हो गई ?"

लाव्रेस्की ने कोई उत्तर नहीं दिया और लीज़ा के चेहरे का रंग अकस्मात लाल हो गया।

"हां, हां, तुम समझ गई हो।" लाव्रेस्की ने हठात कहा, "दो सप्ताह में एक औरत के पवित्र हृदय का मूल्य समझ गया हूँ और मेरा अतीत मुझ से बहुत दूर चला गया....."

लीज़ा सटपटाई और धीरे धीरे फूलों की उस क्यारी की ओर चली, जिस में लेनोचका और शुरोचका खेल रही थीं।

"मैं खुश हूँ कि मैंने तुम्हें वह अखबार दिखाया।" लाव्रेस्की ने उस के पीछे-पीछे चलते हुए कहा, "मेरा यह स्वभाव बन गया है कि मैं तुम से कुछ भी न छिपाऊं और मुझे आशा है कि तुम भी मुझे ऐसा ही विश्वस्त समझोगी।"

"क्या तुम ऐसा समझते हो ?" लीज़ा ने ठहर कर कहा, "अगर यह बात है तो मुझे भी चाहिये.....लेकिन नहीं। यह असम्भव है।"

"क्यों, क्यों, असम्भव क्यों है ? मुझे बताओ, मुझे बताओ।"

"दरअसल, मैं यह महसूस नहीं करती। मुझे ऐसा करना चाहिये .....खैर।" लीज़ा बोली और फिर मुस्कराते हुए लाव्रेस्की की ओर

देख कर कहा, "अर्ध-विश्वास से क्या लाभ ? तुम्हें मालूम है कि मुझे आज एक पत्र मिला है ?"

"पैशिन की ओर से ?"

"हाँ, तुम्हें कैसे मालूम हुआ ?"

"उसने ब्याह का प्रस्ताव रखा होगा ?"

"हां," लीज़ा ने कहा और गम्भीरता से सीधे लाव्रेस्की की ओर देखती रह गई।

और लाव्रेस्की भी गम्भीर भाव से लीज़ा को देखने लगा।

"अच्छा, तुमने उसे क्या उत्तर दिया ?" उसने थोड़ी देर बाद पूछा।

"समझ में नहीं आता कि मैं क्या उत्तर दूँ।" लीज़ा ने उत्तर दिया और उसके छाती पर बंधे हुए हाथ नीचे लटक गये।

"क्यों ? तुम उसे मुहब्बत करती हो, या नहीं करती ?"

"हां, मुझे वह पसंद हैं, अच्छा आदमी मालूम होता है।"

"तुमने यही बात, इन्हीं शब्दों में तीन दिन पहले कही थी। मैं यह जानना चाहता हूँ कि क्या तुम उसे उसी शिद्दत से चाहती हो, जिसे हम मुहब्बत कह सकते हैं ?"

"जैसे कि तुम जानते हो—नहीं।"

"तुम उसे प्रेम नहीं करतीं ?"

"नहीं, लेकिन क्या यह ज़रूरी है ?"

"क्या ?"

"मामा उसे पसंद करती हैं।" लीज़ा ने कहा, "वह भला आदमी है और उसमें कोई दोष दिखाई नहीं देता।"

"और फिर भी तुम झिझक रही हो ?"

"हां, लेकिन शायद तुम्हारे कारण.....जो कुछ तुमने कहा, उसके कारण। तुम्हें याद है कि तुमने परसों क्या कहा था ? लेकिन

यह कमजोरी है....."

"ओ नन्हीं गुड़िया", लाव्रेंस्की ने तीखे स्वर में कहा, "शब्दों से मत खेलो। हृदय की पुकार को कमजोरी मत कहो, तुम्हारा हृदय प्रेम के बिना दूसरे का बनना नहीं चाहता। तुम एक ऐसे मनुष्य की पत्नी बनना चाहती हो जिसे तुम प्यार नहीं करतीं, भूल कर भी अपने ऊपर यह जिम्मेदारी न लेना....."

"मुझे जैसा कहा जा रहा है, मैं कर रही हूँ। मैं अपने ऊपर कोई ज़िम्मेदारी नहीं ले रही।" लीज़ा ने कहना शुरू किया ....

"जो तुम्हारा दिल कहता है, सिर्फ़ वह करो, सिर्फ वही सत्य का निर्णय करेगा।"

"अनुभव, मुक्ति—सब कुछ नहीं है, बेकार की बातें हैं। संसार में यही एक मात्र प्रसन्नता है, अपने आपको इससे वंचित न करो।"

"और तुम यह बात कहते हो, फ़्योदोर इवानिच ? तुमने भी तो प्रेम विवाह किया था, क्या तुम प्रसन्न हो ?"

लाव्रेंस्की ने दोनों हाथ फैला दिये।

"एह, मेरी बात मत करो ! तुम यह समझ ही नहीं सकतीं कि एक सरल, अबोध और निष्कपट नौजवान जिसका लालन पालन क्रूरता में हुआ हो, किस चीज़ को प्रेम समझ लेता है.....इसके अलावा मैं अपने साथ अन्याय क्यों करूँ ? मैंने तुम्हें अभी बताया कि मैं नहीं जानता था कि प्रसन्नता क्या है...लेकिन यह सच नहीं है। मैं ब्याह के बाद प्रसन्न था !"

"मैं समझती हूँ, फ़्योदोर इवानिच," लीज़ा ने मंद स्वर में कहा (जब वह किसी से असहमत होती थी तो उसकी आवाज़ स्वभावतः धीमी पड़ जाती थी और अब तो वह बहुत ही घबराई हुई थी।) "इस दुनिया में प्रसन्नता हम पर निर्भर नहीं है....."

"लेकिन वह है, जरूर है, मेरी बात का विश्वास करो।" (उसने

उसके दोनों हाथ अपने हाथों में थाम लिये। लीज़ा पीली पड़ गई और उसे यों देखने लगी जैसे बहुत डर गई हो, लेकिन तटस्थ रही)--"जब तक हम खुद ही अपने जीवन को नष्ट न कर दें। कुछ लोगों के लिये प्रेम-सम्बंध दुर्भाग्य का कारण हो सकता है, लेकिन तुम्हारे लिये नहीं, तुम एक चरित्रवान लड़की हो, और तुम्हारा हृदय पवित्र है। मैं तुम से प्रार्थना करता हूँ कि प्रेम के बिना--सिर्फ़ कर्त्तव्य पालन के लिये, त्याग की भावना से अथवा किसी और ऐसे ही विचार से--विवाह न करना . ...मैं इसे विश्वास का अभाव समझता हूँ, यह तो सुविधा के लिये विवाह करने से भी बुरा है। मेरी बात का विश्वास करो। मुझे यह कहने का अधिकार है, और मैंने इस अधिकार का मूल्य चुकाया है। और अगर तुम्हारा भगवान..... . "

यहां लाव्रेंस्की को हठात यह महसूस हुआ कि लेनोचका और शुरोचका, लीज़ा के समीप ही खड़ी हैं और उसकी ओर आवाक् देख रही हैं। उसने यह कहते हुए लीज़ा के हाथ छोड़ दिये--"मैं तुमसे क्षमा चाहता हूँ।" और वह घर की ओर चला। "मैं तुमसे एक ही बात की भीख मांगता हूँ।" उसने लौटकर कहा, "जल्दी में कोई फैसला न करना, इन्तज़ार करो और मैंने जो कुछ कहा है उस पर विचार करो। अगर तुम्हें मेरा विश्वास नहीं, अगर तुम्हें सुविधा ही से विवाह करना हो.....तो भी तुम पैशिन से ब्याह न करना..... वह तुम्हारा पति बनने के योग्य नहीं है।.....तुम वादा करती हो कि जल्दी नहीं करोगी, ठीक है ना?"

लीज़ा लाव्रेंस्की की बात का उत्तर देना चाहती थी, मगर उसके मुंह से एक शब्द भी नहीं निकला इसलिये नहीं कि वह "जल्दी करने का" निश्चय कर चुकी थी बल्कि इस लिये कि उसका दिल जल्दी जल्दी धड़क रहा था और एक भय की सी भावना से उसका सांस तेज़ तेज़ चल रहा था।

: ३० :

लाव्रेस्की जब कालिटीन के मकान से चला तो उसे पैंशिन मिल गया। दोनों ने एक दूसरे को रसमी तौर पर सिर झुकाया।

लाव्रेस्की सीधा अपने मकान पर आया और कमरा बंद कर लिया। वह भावनाओं से आकुल था, ऐसा तीव्र अनुभव उसे पहले कभी नहीं हुआ था। क्या उसकी पहले ही यह दशा थी, सिर्फ़ विह्वलता पर शांति का आवरण चढ़ा हुआ था? क्या हृदय पर चोट लगने से वह सहसा उबल पड़ी? ऐसा कौन सा परिवर्तन हुआ? वह एक दम कैसे सतह पर आ गई? एक बहुत साधारण, अनिवार्य और अप्रत्याशित घटना—मौत? हां, लेकिन वह अपनी पत्नी की मृत्यु और अपनी आज़ादी के बारे में सोच रहा था। उसने महसूस किया कि पिछले तीन दिन में उसका लीज़ा को देखने का ढंग बदल गया है। उसे याद था कि घर लौटते समय रात की निस्तब्धता में वह उसके बारे में सोच रहा था; तब उसने अपने आपसे कहा था—"अगर वह!......" यह "अगर वह" अतीत के बारे में था और अब उसकी इच्छा पूरी हुई थी यद्यपि ठीक ऐसे नहीं जैसे वह चाहता था—सिर्फ़ उसकी आज़ादी ही तो काफ़ी नहीं। "वह अपनी मां का आदेश मानेगी" उसने सोचा, "और पैंशिन से विवाह से इनकार भी करदे, तो इससे मुझे क्या लाभ होगा? आइने के पास से गुज़रते हुए उसने अपना चेहरा देखा और कंधे हिलाये।

योंही सोचते दिन बीत गया और शाम हो गई। लाव्रेस्की कालि-

टीन परिवार की ओर चला। उसके क़दम तेज़ तेज़ उठ रहे थे, लेकिन घर के निकट पहुँचकर मद्धिम पड़ गये। उसने पैंशिन का घोड़ा खूंटे से बंधा हुआ देखा। "आओ" लाव्रेंस्की ने सोचा, "मुझे इतना अहंवादी नहीं होना चाहिये।" और वह घर के भीतर चला गया। उसने दरवाज़ा खोला। मेरिया दमितरीवना पैंशिन के साथ ताश खेल रही थी। पैंशिन ने उसे खामोशी से सलाम किया। "ओह, तुम तो अचानक आ गये।" मेरिया दमीतरीवना ने किंचित त्योरी चढ़ाकर कहा। लाव्रेंस्की उसके निकट बैठ गया और उसके पत्तों को देखने लगा।

"तुम भी यह खेल जानते हो?" उसने किसी क़दर व्यथित स्वर में पूछा और तत्क्षण कहा कि मुझ से गलत पत्ता चला गया है।

पैंशिन ने नब्बे गिने और फिर अत्यंत गम्भीर मुख मुद्रा से शांत और संयत स्वर में चाल चलने लगा। कूटनीतिज्ञ शायद इसी तरह खेलते हैं, वह सेंट पीटर्सबर्ग में उच्च पदाधिकारियों के साथ शायद इसी तरह खेला करता था क्योंकि उसे उन पर अपने प्रौढ़ और ठोस व्यक्तित्व का प्रभाव डालना होता था। "एक सौ एक, एक सौ दो, पान; एक सौ तीन" और उसकी आवाज़ धीमे स्वर में डूब गई।

"क्या मैं मार्फ़ा तिमोफ़ेवना से मिल सकता हूँ?" लाव्रेंस्की ने पूछा। वह देख रहा था कि पैंशिन पहले से भी शानदार मुद्रा में पत्ते दोबारा बांटने लगा है। उसमें कलाकार का तनिक भी चिन्ह नहीं था।

"मिल सकते हो। वह ऊपर अपने कमरे में है।" मेरिया दमितरीवना ने उत्तर दिया, "जाकर पूछ लो।"

लाव्रेंस्की ऊपर चला गया। मार्फ़ा भी बूढ़ी नौकरानी कार्पोवना के साथ ताश खेल रही थी। रोस्का ने भौंक कर उस का स्वागत किया, लेकिन दोनों स्त्रियां उसे देख कर प्रसन्न हुईं, मार्फ़ा विशेष रूप से खिल उठी।

"आओ फ़ेदिया आओ!" वह बोली, "बैठो, प्यारे बैठो। मैं हाथ

के पत्ते खत्म करलूं। तुम जैम खाना पसंद करोगे ? शुरोचका इन्हें जार में से जैम लाकर दो। क्या तुम नहीं खाओगे ? अच्छा रहने दो, यहां बैठो। मगर सिगार मत पीना, मैं धुआँ बरदाश्त नहीं कर सकती, तम्बाकू की बू से मेट्रोस भी छींकने लगती है।"

लाव्रेंस्की ने उसे तत्काल यकीन दिलाया कि उसे सिगार पीने की तनिक भी इच्छा नहीं।

"क्या तुम नीचे ही आये हो ?" मार्फ़ा कहती रही, "वहां कौन है। पैंशिन अब भी चिपका हुआ होगा ? लीज़ा से भेंट हुई ? नहीं, वह यहाँ आना चाहती थी.....लो याद करने की देर थी कि वह आ गई।"

लीज़ा ने कमरे में प्रवेश किया लेकिन लाव्रेंस्की को देख कर उस का रंग सुर्ख पड़ गया।

"मैं एक क्षण के लिये आई हूँ, मार्फ़ा तिमोफ़ेवना।" वह बोली .....''क्यों, क्षण के लिये क्यों ? तुम नवयुवतियां सब की सब इतनी जल्दीबाज क्यों हो ? तुम देख रही हो, मेरे पास मेहमान आया है, बैठो उस से गप शप करो, मन बहलाओ।"

लीज़ा एक कुर्सी की नुक्कड पर बैठ गई—वह महसूस कर रही थी कि पैंशिन के साथ अपनी बात चीत का परिणाम उसे बताये। लेकिन बताने की ज़रूरत क्या है ? वह व्यथित और लज्जित महसूस कर रही थी। उस से कुछ परिचय भी नहीं, यह आदमी कभी गिरजे नहीं जाता और उसे अपनी पत्नी की मृत्यु पर तनिक भी अफ़सोस नहीं हुआ—और वह उस का विश्वास करने जा रही है, गूढ़तम रहस्य उसे बताना चाहती है। यह सच है कि वह उस में दिलचस्पी लेता है, वह भी उस का विश्वास करती है और उस की ओर आकर्षित है, फिर भी उसे शर्म महसूस होती है, जैसे उस रमणी के पवित्र कुंज में कोई अजनबी घुस आया हो। मार्फ़ा तिमोफ़ेवना ने यह

असमंजस दूर किया।

"अगर तुम ही उस से बात नहीं करोगी तो और कौन करेगा?" वह बोली, "मैं तो बहुत बूढ़ी हो गई हूँ—वह मुझ से और कार्पोविना से बहुत चतुर है—वह सिर्फ रमणियों से ही संतुष्ट हो सकता है।"

"फ़्योदोर इवानिच के लिये मैं क्या कर सकती हूँ?" लीज़ा बोली, अगर उसे पसंद हो तो पियानो पर गीत सुना सकती हूँ।"

"बहुत खूब, तुम बड़ी चतुर लड़की हो।" मार्फ़ा बोली, "प्यारे नीचे जाओ, जब गीत सुन चुको तो ऊपर चले आना। बूढ़ी नौकरानी से मुझे हरा दिया है। यह बड़ी शर्म की बात है। मैं उस से बदला चुकाना चाहती हूँ।"

लीज़ा उठ खड़ी हुई। लाव्रेस्की उस के पीछे चला। सीढ़ियां उतर कर वह ठहर गई।

"किसी ने ठीक ही कहा है।" वह बोली, "कि मानव हृदय प्रतिवादों से भरा हुआ है। तुम्हारा उदाहरण मुझे निरुत्साहित करता है। मुझे प्रेम-विवाह में अविश्वास होता है, लेकिन मैंने....."

"तुम ने उसे इनकार कर दिया है।" लाव्रेस्की ने टोका।

"नहीं, लेकिन मैंने स्वीकृति भी नहीं दी। मैंने उसे अपने मन की बात खोल कर कह दी और कहा कि अभी इन्तज़ार करो। क्या तुम संतुष्ट हो?" लीज़ा ने कहा और मुस्कराकर नीचे दौड़ गई।

"तुम कौन सा गीत सुनना पसंद करोगे?" उस ने पियानो का ढक्कन उतारते हुए पूछा।

"जो तुम्हें पसंद हो।" लाव्रेस्की बोला, और बैठ गया ताकि वह उसे देख सके।

लीज़ा गाने लगी और बहुत देर तक उस की आंखें उस की अपनी अंगुलियों पर गड़ी रहीं। आखिर वह गाना बंद करके लाव्रेस्की की ओर देखने लगी—उस का चेहरा बहुत ही विचित्र और

आकर्षक दीख पड़ता था।

"तुम क्या सोच रहे हो ?" लीज़ा ने पूछा।

"कुछ नहीं" लाव्रेस्की ने उत्तर दिया, "मैं प्रसन्न हूँ। मैं तुम्हारे लिये प्रसन्न हूँ, तुम्हें देख कर प्रसन्न हूँ—चलो गाओ।"

"मेरा खयाल है।" लीज़ा ने तनिक रुक कर कहा, "अगर उसे वास्तव में मुझ से प्रेम होता वह मुझे यह पत्र लिखता, वह समझ सकता था कि मैं उसे उत्तर नहीं दे सकती।"

"यह महत्व की बात नहीं।" लाव्रेस्की बोला "महत्व की बात यह है कि तुम उसे प्रेम नहीं करती।"

"नहीं करती। हम यह कैसे कह सकते हैं! मैं तुम्हारी मृत पत्नि की बात सोचती हूँ और तुम मुझे भय से भर देते हो।"

"व्लाडीमीर, देख रहे हो कि मेरी लिज़ेटा कितना अच्छा गाती है ?" मेरिया दमितरीवना पैंशिन से कह रही थी।

"हां," पैंशिन बोला, "निस्संदेह बहुत ही अच्छा !"

मेरिया दमितरीवना ने मृदु दृष्टि से पैंशिन की ओर देखा लेकिन उस ने पहले से भी अधिक गम्भीर हो कर कहा—"चौदह बादशाह।"

: ३१ :

लाव्रेस्की अबोध नहीं था। लीज़ा के बारे में उस की क्या भावनाएँ हैं इस बात से वह ज्यादा देर अनभिज्ञ नहीं रह सकता था। उस दिन उसने स्पष्ट रूप से अनुभव किया कि वह लीज़ा से प्रेम करता है। इस विचार पर वह इतराया नहीं। "क्या मैं इस पैंतीस वर्ष की अवस्था में" वह अपने आप सोचने लगा, "अपनी आत्मा एक बार फिर एक औरत के सुपुर्द करने से बेहतर बात नहीं सोच सकता। लेकिन लीज़ा वैसी औरत नहीं, वह मुझ से किसी पतनोन्मुख त्याग की मांग नहीं करेगी, वह मुझे अध्ययन से विमुख नहीं करेगी, बल्कि वह मुझे ठोस और दिल से मेहनत करने की प्रेरणा देगी और हम दोनों साथ साथ अभीष्ट उद्देश्य की ओर बढ़ेंगे।" उस ने यहीं सोचना बंद कर दिया, "बस यह ठीक है, लेकिन मुश्किल तो यह है कि उस के मन में मेरे साथ चलने की तनिक भी इच्छा नहीं है। क्या वह नहीं कहती थी कि मुझे तुम से डर लगता है? मगर यह पैंशिन से भी प्रेम नहीं करती.....दिल की तसल्ली के लिए इनकार ही काफ़ी है।"

लाव्रेस्की गांव लौट आया, लेकिन वह चार दिन से अधिक वहां ठहर नहीं सका। उस के मन में उथल पुथल मची हुई थी। वह कुछ तय नहीं कर पाया था। जुलेज़ ने उस की पत्नी की मृत्यु का जो समाचार दिया था, उस का समर्थन नहीं हो सका था और उसे कोई पत्र नहीं मिला था। वह शहर लौट आया और शाम कालिटीन परिवार

में बिताई। उस के लिये यह देखना कठिन नहीं था कि मेरिया दमित्री क्यों उस से अप्रसन्न है, लेकिन ताश के खेल में पंद्रह रूबल हार कर लाव्रेस्की ने उसे किसी हद तक संतुष्ट कर दिया—और लगभग आध घंटा लीज़ा के साथ बिताया। हालांकि उस शाम मां ने मना किया था कि वह ऐसे बदनाम और अभद्र पुरुष के साथ अधिक परिचय न बढ़ाऐ। उस ने लीज़ा में एक तब्दीली देखी—वह अधिक विचार शील दीख पड़ती थी, उस ने इतने दिन न आने का उलाहना दिया और पूछा कि क्या तुम कल गिरजे जाओगे। (अगले दिन इतवार था)

"ज़रूर चलो," उस के उत्तर देने से पहले वह आप ही बोली, "हम दोनों एक साथ उस की आत्मा की शांति के लिये प्रार्थना करेंगे" तनिक रुक कर उस ने यह भी कहा "कुछ समझ में नहीं आता—क्या फैसले के लिये पैशिन को इंतजार में रखना उचित होगा।"

"क्यों ?" लाव्रेस्की ने पूछा।

"क्योंकि," वह बोली, "मुझे अभी से मालूम है कि वह फैसला क्या होगा ?"

उस ने सिर दर्द की शिकायत की और अनिश्चित भाव से उंगुलियों की पूरें लाव्रेस्की से मिला कर ऊपर अपने कमरे में चली गई।

दूसरे दिन लाव्रेस्की गिरजे गया।

लीज़ा उस के पहुँचने से पहले ही वहां उपस्थित थी। उस ने सिर नहीं घुमाया, लेकिन लाव्रेस्की को देख लिया। उस ने पूरे मनोयोग से प्रार्थना की, उसकी आंखें कोमल भावों से चमक रही थीं और वह अपना सिर आहिस्ता आहिस्ता हिला रही थी! उस ने सोचा कि लीज़ा मेरे लिये भी प्रार्थना कर रही है, और उस की आत्मा अपार कोमलता से खिल उठी। वह प्रायश्चित्त पूर्ण प्रसन्नता अनुभव कर रहा था। लोग गम्भीर मुद्रा में खड़े थे, जिनमें कुछ चेहरे परिचित भी थे। भजन गाये जा रहे थे। धूप जल रही थी। तिरछी किरणें खिड़कियों में

से भीतर आ रही थीं और दीवारों और छत के अन्धकार को भेद रही थीं—इन सब बातों का प्रभाव उस के मन पर पड़ रहा था। बहुत दिन बीते वह गिरजे में आया था, बहुत दिन बीते उस ने भगवान से प्रार्थना की थी, अब भी उस के मुख से प्रार्थना का शब्द तक नहीं निकला—लेकिन, एक क्षण मात्र के लिये, अपनी समस्त आत्मा से, शरीर से नहीं, उस ने धरती पर विनम्रता से माथा टेक दिया। उसे याद आया कि बचपन में वह गिरजे में आकर बहुत देर तक प्रार्थना किया करता था और उसे यों महसूस होने लगता था जैसा देवता स्वयं उस के पास आया हो, और आशीर्वाद देते हुए कोमल हाथ उस के मस्तिष्क पर रख दिया हो। उस ने लीज़ा की ओर देखा....."तुम मुझे यहां लाई हो," वह सोचने लगा, "मुझे छूओ, मेरी आत्मा को छूओ।" वह अब भी धीरे-धीरे प्रार्थना कर रही थी, उस का मुख प्रसन्नता से खिला हुआ दीख पड़ता था। उस का मन एक बार फिर कोमलता से भर गया और उस ने एक दूसरी आत्मा के लिए शांति की और अपने लिये क्षमा की प्रार्थना की।... ...

वे बाहर दरवाज़े पर मिले। लीज़ा ने स्निग्ध और कोमल दृष्टि से उस का अभिवादन किया। सूर्य्य का शुभ्र प्रकाश गिरजे की नर्म हरी कोमल घास पर और महिलाओं की चमकली पोशाकों और रुमालों पर पड़ रहा था। दूसरे गिरजा घरों के घंटे लीज़ा को मुखरित कर रहे थे, झाड़ियों में चिड़ियां चहचहा रही थीं, लाज़ेस्की नंगे सिर खड़ा था, हवा उस के बालों और लीज़ा के हैट के फ़ीते से खेल रही थी। उस ने लीज़ा और लेनोचका को, जो उस के साथ आई थीं, गाड़ी में सवार किया। और उसकी जेब में जितने पैसे थे, सब भिखारियों में बाँट कर वह घर की ओर चल दिया।

: ३२ :

लाव्रेस्की के लिये यह कड़ा वक्त था। उसे हर वक्त ज्वर-सा चढ़ा रहता था। हर सुबह वह डाकखाने जाता, बड़ी अधीरता से लिफाफे और पत्रों के रेपिंग फाड़ कर देखता, लेकिन भयानक अफवाह के समर्थन या खंडन में उसे कोई भी प्रमाण न मिलता। कई बार वह अपने आप से निराश और क्षुब्ध हो उठता था "एक मैं हूँ।" वह सोचने लगता, "जो एक गिद्ध की भांति रक्त का, अपनी पत्नी को मृत्यु सम्बन्धी समाचार का इंतज़ार कर रहा हूं।" वह हर रोज़ कालिटीन परिवार में जाता, वहां भी उसे शांति न मिलती, मालकिन उसे देख कर नाक सिकोड़ती, उपेक्षा से उस का अभिवादन करती, पैंशिन अतिशय शिष्टता का व्यवहार करता, लेम शुष्क मैत्री भाव से सिर हिला देता—और तो और लीज़ा भी खिंची हुई दिखाई देती। वह जब कभी एकांत में भी मिलती, तो घबराई हुई होती, समझ न सकती कि उस से क्या बात करे। लाव्रेस्की खुद भी व्याकुल और व्यथित महसूस करता, लीज़ा इन चन्द दिनों में पहले से बहुत बदल गई थी। अब उस की गति में और हंसी तक में एक सिहरन और कम्पन थी, जो पहले बिलकुल नहीं होती थी। मेरिया दमित्रीवना अपने आप में लिपटी हुई थी, उसे किसी बात की आशंका नहीं थी, लेकिन मार्फा अपने सम्बन्धी पर गहरी दृष्टि रखने लगी थी। लाव्रेस्की को बार बार यह खेद होता था कि उस ने वह अख़बार लीज़ा को क्यों पढ़ाया, उसे जाने क्यों यह खयाल आता था कि उस की प्रकृति में ही

कोई ऐसी हीन वस्तु है, जिस से प्रत्येक व्यक्ति को घृणा होती है। उसे यह भी विश्वास था कि लीज़ा में यह परिवर्तन उस के अंतर्द्वन्द्व के कारण है, वह यह तय नहीं कर पा रही कि पैंशिन को क्या उत्तर दे। एक बार वह उस के पास एक पुस्तक लेकर आई। यह वाल्टर स्काट का एक उपन्यास था जो लीज़ा ने उस से पढ़ने के लिये मांग कर लिया था।

"क्या तुम ने यह पढ़ लिया है?" लाव्रेस्की ने पूछा।

"नहीं, आज कल मेरा पढ़ने में मन नहीं लगता।" लीज़ा ने लौट कर जाने के लिये घूम कर कहा।

"एक मिनट रुको। इतने अरसे से मैं तुम्हें एकांत में नहीं मिला। इस का तो कोई यह मतलब ले सकता है कि तुम मुझ से डरती हो।"

"और यह सही है।"

"हे भगवान, आखिर क्यों?"

"मैं नहीं जानती।"

लाव्रेस्की चुप रहा।

"यह बताओ" वह फिर बोला, "क्या तुमने निश्चय कर लिया है?"

"क्या मतलब?" लीज़ा ने पूछा और आँखें झुका लीं।

"मतलब तुम समझती हो....."

लीज़ा एक दम शर्मा गई।

"ओह, मुझसे कुछ न पूछो।" वह लीखे स्वर में बोली, "मैं कुछ नहीं जानती। मैं अपने बारे में कुछ नहीं जानती....."

और वह चली गई।

दूसरे दिन लाव्रेस्की दोपहर के खाने के बाद आया और उसने देखा की पर्व की तैयारियाँ हो रही हैं। भोजनालय के एक कोने में एक चौरस मेज़पर एक साफ़ कपड़े में लिपटी हुई पवित्र मूर्ति दीवार के सहारे खड़ी है, जिसका फ्रेम सुनहला था और चौखट में मोती भी

जड़े हुए थे। बूढ़ा पादरी सफ़ेद लम्बा कोट और जूते पहने धीरे-धीरे कमरे में इधर से उधर घूम फिर रहा था। उसने शमादानों में मोम की दो बत्तियाँ जलाईं, अपनी छाती पर क्रास का निशान बनाया और मूर्ति की ओर सिर झुकाकर चुपचाप कमरे से बाहर निकल गया। लाव्रेस्की ने कमरे में इधर-उधर घूम कर पूछा कि क्या आज किसी संत का दिन है। उसे कानाफूसी में बताया गया कि यह पर्व इलिज़ावेटा मिखोलोवना और मार्फ़ा तिमोफ़ेवना की इच्छा से किया गया है और इसका उद्देश्य एक चमत्कार दिखाने वाली मूर्ति को वापस लाना है, जो तीस मील एक बीमार के पास गई हुई है। जल्दी पादरी अपने चेलों के साथ आ पहुँचा। वह अधेड़ उम्र का व्यक्ति था, जिसका सिर गंजा था और जिसने कमरे में प्रवेश करते ही खांसना शुरू किया। दूसरे कमरे से औरतें बारी बारी आईं और उसका आशीर्वाद लेकर लौट गईं। लाव्रेस्की ने उन्हें चुपचाप सिर झुकाया और उन्होंने चुपचाप लाव्रेस्की का सिर झुका दिया। पादरी एक मिनट रुका, दोबारा खांसा और अत्यंत पवित्र ध्वनि में पूछा—"क्या अब हम शुरू करें?"

"कृपया शुरू कीजिये पिता!" मेरिया दमितरीवना बोली।

पादरी ने पोशाक पहनना शुरू किया। एक चेले ने धीमे स्वर में गर्म चिनगारी मांगी, धूप की सुगन्ध उठी। हाल से नौकर और नौकरानियाँ आकर दरवाज़े में भर गये। रोस्का, जो पहले कभी नीचे नहीं उतरा था, सहसा दौड़कर भोजनालय में आये, उन्होंने "सी, सी" करके उसे बाहर जाने को कहा, लेकिन वह डर गया, घबरा कर इधर-उधर देखने लगा और झट वहीं बैठ गया, एक नौकर उसे उठाकर बाहर ले गया। प्रार्थना आरम्भ हुई। लाव्रेस्की एक कोने में घुस गया, उसके भीतर अजीब विचित्र भावनाऐं उठ रही थी, जो लगभग विषादयुक्त थीं, लेकिन यह स्पष्ट नहीं था कि वह क्या अनुभव कर रहा है।

मेरिया दमितरीवना सबसे अगली पंक्ति में कुर्सियों के आगे खड़ी थी, उसने स्त्री सुलभ-स्वभाव से छाती पर क्रास का निशान बनाया। वह बार बार इधर-उधर देखकर छत की ओर झांकने लगी थी और अकुला गई थी। मार्फ़ा तिमोफ़ेवना चिंतित दिखाई दे रही थीं। नतस्या कार्पोवना ने धरती पर माथा टेका और कपड़े फड़फड़ाती हुई उठ खड़ी हुई। लीज़ा ऐसे अचल खड़ी थी, जैसे उस जगह गाड़ दी गई हो, सिर्फ़ उस दीन मुख मुद्रा से यह आभास होता था कि वह सततः प्रार्थना कर रही है। प्रार्थना के अंत में जब उसने क्रास का चुम्बन किया तो उसी प्रकार पादरी के लम्बे हाथ का भी चुम्बन किया। मेरिया दमितरीवना ने पादरी को चाय का निमंत्रण दिया तो उसने उदासीनता का भाव धारण कर लिया और धीरे धीरे स्त्रियों के साथ मुलाक़ाती कमरे में चला गया। धीरे धीरे वार्तालाप हो रहा था। पादरी ने चाय के चार प्याले पिये। वह अपने गंजे सिर को बार बार रूमाल से पोंछ रहा था और उसने यों ही बातों में बताया कि आवो-शिंकोव सौदागर ने गिरजे के कलस को सोने से मढ़वाने के लिये सात सौ रूबल दान दिये हैं।

लाव्रेस्की लीज़ा के पहलू में बैठने में सफल हुआ था; लेकिन लीज़ा ने उसकी ओर आंख उठाकर भी नहीं देखा। वह खिंची हुई और अचल बैठी रही। लगता था कि वह जान बूझ कर उसकी उपस्थिति से अनभिज्ञ रहना चाहती है, वह एक सर्द और पवित्र भावना में डूबी हुई जान पड़ती थी। लाव्रेस्की बहुत चाहता था कि वह मुस्कराये और कोई मनोरंजक बात कहे, लेकिन उसका मन स्थिर नहीं था और वह स्तब्ध सा चला गया.....वह महसूस कर रहा था कि लीज़ा में कोई ऐसी बात है जिसे वह समझ नहीं सकता।

: ३३ :

एक दिन लाव्रेस्की जैसा कि उसका नियम बन चुका था कालिटीन परिवार में आया हुआ था। दिन भर की गर्मी के बाद शाम इतनी सुन्दर हो गई थी कि मेरिया दमितरीयना ने, जो आंधियां पसंद नहीं करती थी, तमाम खिड़कियां और बाग़ की ओर के दरवाज़े खोलने का हुकम दे दिया था और ताश न खेलने का ऐलान करते हुए कहा कि ऐसे सुहावने मौसम में जब हम प्राकृतिक सौंदर्य का आनन्द ले सकते हैं ताश खेलना अत्यंत लज्जा की बात है। पैशिन ही एक मेहमान था। वह शाम की सुन्दरता से उत्तेजित था और उस के भीतर का संगीतकार जग उठा था। लेकिन वह लाव्रेस्की की उपस्थिति में गाना नहीं चाहता था, इस लिये उस ने कविता पढ़ने की सोची और लेर्मोंटोव की पुस्तक से (पुश्किन अभी फिर से प्रिय नहीं हुआ था) कुछ कविताऐं पढ़ कर सुनाईं। पढ़ने का ढंग अच्छा था, लेकिन कहीं कहीं वह विषय वस्तु को समझ नहीं पाता था, इसलिये अर्थ का अनर्थ कर जाता था, अपनी इस भूल से वह आप ही लज्जित हुआ और उस ने कविता पढ़ना छोड़कर नई पीढ़ी को कोसना शुरू किया। हरेक चीज को बदल डालो। "रूस" वह कह रहा था, "योरूप के मुकाबले में पिछड़ गया है, हमें उस के साथ मिलना चाहिये। कहा जाता है कि हम अभी नौजवान हैं, यह सब बकवास है। दरअसल हम में आविष्कार-शक्ति का अभाव है। के. बी. स्वंय स्वीकार करता है कि हम ने चूहे पकड़ने का पिंजरा तक ईजाद नहीं किया। जिस का मतलब है कि हमें यह चीजें दूसरों से सीखना चाहियें। लेर्मोंटोव

कहता है कि हम बीमार हैं, मैं उस से सहमत हूँ, लेकिन इस बीमारी का कारण यह है कि हम सिर्फ आधे योरूपियन बन पाये हैं। हमारा एक मात्र इलाज कुत्ते का बाल है। (बहुत खूब! लाव्रेस्की ने सोचा) हमारे श्रेष्ठतम बुद्धिजीवी भी दूसरों की जूठन है" वह कहता रहा, "मुझे इस बात का पक्का विश्वास हो चुका है। असल में सब राष्ट्र बराबर हैं, सिर्फ अच्छी संस्थाएं स्थापित कर दो, सब ठीक हो जायेगा। मैं दावे से कहता हूँ कि सब हमारी राष्ट्रीय परम्परा के अनुसार होगा। यह हमारा काम है, यह सरकार का काम है (दरअसल वह कहना चाहता था कि यह हम राजनीतिज्ञों का काम है)—पब्लिक अफसरों का काम है, लेकिन अगर ज़रूरत पड़ी, आप को इस की कुछ चिंता नहीं करनी चाहिये—संस्थायें स्वयं नई राष्ट्रीय परम्परा बनायेंगी।" मेरिया दमितरीवना उस की हर बात पर अनुमोदन के ढंग से सिर हिला रही थी। "कितना चतुर व्यक्ति" उस ने सोचा, "मेरे मुलाकाती कमरे में बैठा है।" लीज़ा खामोश थी और खिड़की पर झुकी हुई थी। लाव्रेस्की भी खामोश था। मार्फा तिमोफ़ेवना एक कोने में बैठी अपने साथी के साथ ताश खेल रही थी, वह अपने आप कुछ बड़बड़ाई। पैंशिन कमरे में इधर से उधर घूम रहा था, और प्रवाह में लेकिन कुछ थके हुए स्वर में बोल रहा था, वह समस्त पीढ़ी को नहीं, बल्कि अपनी जान पहचान के कुछ लोगों को कोस रहा मालूम होता था। एक बुलबुल ने बाग की बड़ी झाड़ी में अपना घोंसला बना लिया था, उस का मधुर स्वर पैंशिन के भाषण के बीच बीच में मुखरित हो उठता था और लेमू के पेड़ों की खामोश चोटियों पर नीले आकाश में तारे टिमटिमाने लगे थे। लाव्रेस्की उठा और पैंशिन से तर्क करने लगा। बहस ने उग्र रूप धारण कर लिया। लाव्रेस्की नौजवानों और रूस की आज़ादी के पक्ष में बोल रहा था। वह अपने आप को और अपनी पीढ़ी को दोषी ठहराने को तैयार था। लेकिन वह नये

मानव और उस के विचारों की हिमायत कर रहा था। पैंशिन चिढ़ गया था। तीखे स्वर में कह रहा था कि बुद्धिजीवियों को हरेक चीज़ बदल देनी चाहिये और उस ने अपने भद्र वर्ग और उच्च पद की शिष्टता को भुलाकर लाव्रेंस्की को पुराने ज़माने का रूढ़िवादी जीव कह दिया और घुमा फिराकर यह भी कहा कि भद्र समाज में उसका स्थान संदिग्ध है। लाव्रेंस्की चिढ़ा नहीं। वह शांत और संयत रहा। (उसे स्मरण हो आया कि मिखालेविच ने भी उसे पुराने ज़माने का जीव—अर्थात वाल्टेरीयन वादी कहा था) उसने शांत स्वभाव से पैंशिन को सब बातों में हरा दिया उसने सिद्ध किया कि एक दम परिवर्तन का विचार नितांत अव्यवहारिक है, और यह परिवर्तन जो ऊपर के नौकरशाही वर्ग के दिमाग में पैदा हुए हैं, इनमें देश की वस्तु स्थिति का लेशमात्र भी ज्ञान शमिल नहीं है, फिर इनके पीछे कोई आदर्श—निकारात्मक आदर्श भी नहीं है, उसने अपनी ही शिक्षा का उदाहरण दिया और कहा कि पहले हमें जन-साधारण की सहज बुद्धि को जैसी कि वह है, स्वीकार करना पड़ेगा, समझना पड़ेगा, इसके बिना हम गलती का भी निर्णय नहीं कर सकते। अंत में उसने दोष भी माने और कहा कि हम समय और शक्ति को व्यर्थ खो रहे हैं।

"बहुत अच्छा," पैंशिन बोला, वह अब अत्यंत क्षुब्ध हो, उठा था, "अब आप रूस में लौट आये हैं—बताइये आप क्या करना चाहते हैं?"

"खेती बाड़ी," लाव्रेंस्की ने उत्तर दिया," और मैं इस इतने अच्छे ढंग से करना चाहता हूँ जितना सम्भव हो सके।"

"अच्छी बात है, बहुत ही अच्छी।" पैंशिन बोला, "मैंने सुना है कि आपको इसमें सफलता भी प्राप्त हुई है, लेकिन आप यह तो मानेंगे कि हरेक आदमी तो यह काम नहीं कर सकता....."

"ठीक है, हरेक आदमी तो यह काम नहीं कर सकता," मेरिया दमितरीवना ने समर्थन किया, "व्लाडीमीर निकोलाईच यह काम सिर्फ़ तुम्हें शोभा देता है....."

यह बात पैंशिन को भी गवारा नहीं थी। उसने अप्रतिभ सा हो कर विषय बदल दिया। वह तारों भरी रात की ओर शुबर्ट के संगीत की बातें करना चाहता था; लेकिन वार्तालाप आगे नहीं बढ़ सका। अंत में उसने मेरिया दमितरवना के सम्मुख ताश की एक बाज़ी खेलने का प्रस्ताव रखा। "इतनी रात गये ?" उसने चकित हो कर कहा, लेकिन फिर भी नौकर को हुक्म दिया कि ताश लाओ।

पैंशिन ने एक ज़ोरदार झटके के साथ ताश का एक नया पैकेट खोला जब कि लाव्रेस्की और लीज़ा एक साथ, जैसे उन्होंने आपस में सलाह की हो, उठ खड़े हुए और मार्फ़ा तिमोफ़ेवना के समीप जा बैठे। वह दोनों अकस्मात इतने प्रसन्न थे कि एकांत में इकट्ठे होने से किसी कदर डर रहे थे। वे यह भी जानते थे कि पिछले चंद दिनों से वे जो व्यथा और आकुलता अनुभव कर रहे थे, वह सदा के लिये लुप्त हो चुकी है। बुढ़िया ने आहिस्ता से लाव्रेस्की की गाल थपथपाई, कुटिलता से आँख झपकाई, कई बार सिर हिलाया और मंद स्वर में कहा—

"तुमने उस मूर्ख की अच्छी खबर ली, धन्यवाद।" कमरे में पूर्ण निस्तब्धता छाई थी, मोमबत्तियों के पिघलने की एक मात्र मंद ध्वनि थी और कभी मेज़ पर हाथ पटकने या पत्ते तराशने की आवाज़ भी सुनाई देती थी। या फिर बुलबुल का संगीत सुनाई दे रहा था, जो अब मधुर और ऊँचे स्वर में गा रही थी। खुली खिड़कियों और दरवाज़ों में से रात की शबनमी ठंडक भीतर आ रही थी।

: ३४ :

जब लाव्रेस्की और पैंशिन में बहस हो रही थी तो लीज़ा ने एक शब्द भी नहीं कहा लेकिन वह चुपचाप सब कुछ सुनती रही थी और वह लाव्रेस्की के पक्ष में थी। उसे राजनीति में कोई दिलचस्पी नहीं थी, लेकिन इस सांसारिक अफ़सर (वह इतने असंयम से पहले कभी नहीं बोला था) की बकवाद ने उसे चिढ़ा दिया, रूस के प्रति उसकी अवज्ञा से लीज़ा को दुख पहुँचा। वह अपने आप को देश भक्त नहीं समझती थी, लेकिन रूसी जनता, रूसी स्वभाव और आदतों को पंसद करती थी। जब उसकी माँ की जायदाद पर काम करने वाला देहाती इंजीनीयर शहर में आता था तो वह घंटों बैठी उसके साथ बातें किया करती थी, और ये बातें वह अपने बड़प्पन का एहसास किये बिना बराबर के दर्जे से करती थी। लाव्रेस्की ने भी उसका यह भाव महसूस कर लिया। बहस के उद्देश्य ही से लीजा को प्रसन्न करना था, वरना वह पैंशिन की बेकार बातों का उत्तर देने की कोई जरूरत नहीं समझता था। उनकी आपस में कोई बात नहीं हुई, आंख तक नहीं मिलीं; लेकिन दोनों समझते थे कि आज शाम वे एक दूसरे के निकट आगये हैं, उन दोनों की पसंद नापसंद एक है। सिर्फ़ एक ही बात पर उनका मतभेद था, लेकिन लीज़ा को आशा थी कि वह एक न एक दिन ईश्वर को अवश्य मानने लगेगा। वे दोनों मार्फ़ा तिमोफेवना के निकट बैठे थे; और खेल देख रहे थे—खेल वे वाकई देख रहे थे; लेकिन इसी बीच में उनके दिल जोर जोर से धड़क रहे थे और हरेक

चीज़ उन्हें प्रभावित कर रही थी, बुलबुल उनके लिये गा रही थीं, तारे उनके लिये चमक रहे थे और पेड़ उनके लिये सरगोशियां कर रहे थे, जैसे गर्मी की निस्तब्धता और उष्णता उन्हें थपथपा रही हो लाव्रेस्की उन भावनाओं में डूब गया था, जो उसकी आत्मा को झकझोर रही थीं—और वह आनन्द विभोर था, लेकिन रमणी के पवित्र हृदय पर क्या गुजर रही थी, कोई भी शब्द उसे व्यक्त करने में असमर्थ था, वह खुद अपने लिये रहस्य बनी हुई थी, बेहतर है कि वह सभी के लिये रहस्य बनी रहे। कोई नहीं जानता, किसी ने आज तक नहीं देखा और न देखेगा कि एक बीज, जो बढ़ता और फलता फूलता है, धरती की कोख में कैसे परवरिश पाता है।

दस बज गये। मार्फ़ा तिमोफ़ेवना, नत्सया कार्पोवना के साथ ऊपर चली गई। लीज़ा और लाव्रेस्की कमरा पार करके आये और उस दरवाज़े पर खड़े हो गये, जो बाग में खुलता था। उन्होंने अंधेरे में झांक कर देखा, फिर एक दूसरे की ओर मुस्कराये। वे चाहते थे कि एक दूसरे के हाथ में हाथ दे दें, बातें करें और बातें करते रहें...वे फिर वहां चले गये जहां मेरिया दमितरीवना और पैंशिन अभी ताश खेल रहे थे। उन्होंने भी बाज़ी खत्म की, मेरिया दमितरीवना ने गद्दे पर लगी हुई आराम कुर्सी से उठते हुए आह भरी, पैंशिन ने हैट उठाया और मेरिया दमितरीवना के हाथ को चूमते हुए कहा, "कुछ ऐसे भी खुश किस्मत हैं, जो आराम से पड़े सो रहे हैं, और एक मैं हूँ, जिसे सुबह तक बेकार काग़ज़ देखने पड़ेंगे", उसने उदासीन भाव से लीज़ा को भी प्रणाम किया (उसे यह आशा नहीं थी कि उसके विवाह के प्रस्ताव पर इन्तज़ार करने को कहेगी—इसलिये वह उससे नाराज़ था) और चला गया। उसके पीछे पीछे लाव्रेस्की भी चला। दरवाज़े पर वे दोनों एक दूसरे से अलग हो गये। पैंशिन ने अपने कोचवान को उसकी गर्दन में छड़ी की नोक गुबाकर जगाया और गाड़ी में सवार

होकर चल पड़ा। लाव्रेस्की की घर जाने की इच्छा नहीं हुई, वह शहर से निकल कर खेतों और मैदानों में घूमने लगा। चाँद नहीं था, लेकिन रात साफ़ और ख़मोश थी। लाव्रेस्की बहुत देर तक शबनमी घास पर घूमता रहा। अचानक उसे एक पगडंडी मिल गई और वह उस पर चलने लगा। चलते चलते वह एक लम्बी सफ़ील और उसके दरवाज़े पर पहुँचा। उसने अनमना सा दरवाज़े को धक्का दिया जो झट खुल गया, जैसे पहले ही से उसके छूने की प्रतीक्षा कर रहा हो। लाव्रेस्की अब एक बाग में था, वह खट्टों के झुरमुट में चंद कदम चलकर स्तब्ध-खड़ा हो गया, यह कालिटीन परिवार का बाग था।

जल्दी जल्दी वह अंधेरे साये में चला गया और काफ़ी देर तक अचल सतम्भित और कन्धे हिलाता हुआ खड़ा रहा।

"यह कोई अकस्मात घटना नहीं है।" उसने सोचा।

वातावरण निस्तब्ध था, घर से एक आवाज़ तक नहीं आ रही थी। वह दबे पांव चलने लगा, वह एक मोड़ पर पहुँचा जहां से सारा मकान दिखाई दे रहा था, घर में अंधेरा था, सिर्फ ऊपर के दो कमरों में रोशनी थी, जो दो खिड़कियों में से छन छन कर आ रही थी। लीज़ा के कमरे में एक सफ़ेद पर्दे के पीछे एक मोमबत्ती जल रही थी और मार्फ़ा के सोने के कमरे में मूर्ति के आगे एक छोटा सा दीपक जल रहा था, नीचे बाल्कोनी को जाने वाला दरवाज़ा खुला पड़ा था। लाव्रेस्की बाग में एक बेंच पर बैठ गया, मुंह दोनों हाथों में थाम लिया और वह दरवाज़े और लीज़ा के कमरे की ओर एक टक देखने लगा। कोतवाली के घंटे ने बारह बजाये, और मकान के भीतर छोटे घन्टे ने भी टन-टन बारह बजाये, चौकीदार अपने तख्ते पर तनिक ऊंघ गया। लाव्रेस्की कुछ सोच नहीं रहा था, किसी चीज़ की आशा नहीं कर रहा था, वह इसी बात में खुश था, कि वह लीज़ा के निकट है, उस के बाग में है और उस बेंच पर बैठा है जिस पर वह कई बार बैठ चुकी

है.....लीज़ा के कमरे की रोशनी बुझ गई। "ऐ प्यारी लड़की, नमस्ते।" लाव्रेस्की गुनगुनाया, लेकिन वह अपनी जगह अचल बैठा रहा, उस की नजरें अंधेरी खिड़की पर गड़ी हुई थीं।

सहसा निचले कमरे की एक खिड़की में रोशनी हुई, वह एक से दूसरी और फिर तीसरी में चली गई.....कोई मोमबत्ती हाथ में लिये कमरे में घूम रहा था। "क्या वह लीज़ा हो सकती है, असम्भव" लाव्रेस्की ने सोचा और वह अपनी जगह से उठ खड़ा हुआ। एक परिचित चेहरा दिखाई दिया - लीज़ा मुलाकाती कमरे में प्रवेश कर रही थी। उस ने सफ़ेद गाऊन पहन रखी थी जिस की लड़ियां कंधों पर से लटक रही थीं। वह मेज़ के करीब गई, मोमबत्ती उस पर रख दी और कुछ ढूंढने लगी। फिर वह बाग की ओर घूम कर खुले दरवाज़े के पास आई और दहलीज़ में खड़ी हो गई—श्वेत परिधान में लम्बी और पतली आकृति, लाव्रेस्की सिर से पांव तक कांप गया।

"लीज़ा!" बहुत ही मद्धिम-न सुनाई देने वाली ध्वनि उस के मुख से निकली। उस ने चौंक कर अंधेरे में झांका।

"लीज़ा" लाव्रेस्की ने अधिक ऊंचे स्वर में कहा और अंधेरे से बाहर आया।

लीज़ा ने घबरा कर गर्दन बाहर निकाली और वह पीछे हट गई। उस ने लाव्रेस्की को पहचान लिया था। उस ने तीसरी बार लीजा को पुकारा और अपनी बाहें उस की ओर फैला दीं। वह दरवाजे से निकल कर बाग़ में आई।

"तुम?" वह बड़बड़ाई, "तुम यहां?"

"मैं.....मैं.....बात सुनो" लाव्रेस्की ने धीरे से कहा और वह उस का हाथ पकड़ कर बेंच पर ले गया।

वह मंत्र मुग्ध सी उसके साथ चल पड़ी, उसका पीला चेहरा, फैली हुई आंखें और उस की प्रत्येक गति अत्यंत आश्चर्य की सूचक थी।

"मेरा यहां आने का क़तई इरादा नहीं था," उस ने कहा, "जाने कौन शक्ति खींच लाई है।.....मैं.....मैं..... तुम से प्रेम करता हूँ।" उस ने लड़खड़ाती हुई आवाज़ में कहा।

लीज़ा ने आहिस्ता से उसे देखा। लगता था कि वस्तु स्थिति से परिचित हो गई और समझ रही है कि वह वहां है और कहां है। वह उठ कर खड़ा होना चाहती थी, लेकिन उठ नहीं सकी। उस ने अपना मुंह दोनों हाथों में छिपा लिया।

"लीज़ा," लाव्रेंस्की बोला, "लीज़ा," उस ने दोहराया और वह घुटनों के बल उस के पांव पर झुक गया.....

उसके कंधे धीरे से हिले और अंगुलियां मुंह पर और भी छा गईं।

"क्या बात है ?" लाव्रेंस्की गुनगुनाया और उस ने एक हल्की सी चीख सुनी। उस का दिल जोर जोर धड़कने लगा.....वह उन आंसुओं का मतलब समझता था। "क्या इस का मतलब है कि तुम भी मुझे प्रेम करती हो ?" उस ने धीरे से कहा और लीज़ा के घुटने छुए।

"उठो," उस ने लीज़ा को कहते सुना, फ़्योदोर इवानिच उठो, हम यह क्या कर रहे हैं ?"

वह उठा और उस के पहलू में बैठ गया। लीज़ा अब रो नहीं रही थी, अपनी भीगी पलकों से उसे एकटक देख रही थी।

"मैं डर गई हूँ। हम क्या कर रहे हैं" उस ने उखड़े स्वर में कहा।

"मैं तुम से प्रेम करता हूँ।" उस ने एक बार फिर कहा, "मैं अपना समस्त जीवन तुम्हें अर्पित करने को तैयार हूँ।"

वह फिर कांप उठी जैसे बिच्छू ने डंक मारा हो और आंखें ऊपर उठाकर आकाश की ओर देखने लगी।

"यह सब भगवान की इच्छा के आधीन है।" वह बोली।

"लेकिन तुम मुझ से प्रेम करती हो, लीज़ा ? "क्या हम प्रसन्न होंगे ?"

उस ने आंखें झुका लीं। लाव्रेस्की ने उस से धीरे से अपनी ओर खींच लिया और लीज़ा का सिर उस के कंधे पर झुक गया।..... लाव्रेस्की ने भी सिर झुकाया और अपने होंठ उस के पीले होठों पर रख दिये।

आध घंटे बाद लाव्रेस्की बाग़ के दरवाजे पर खड़ा था, वह बंद था और ताला लगा हुआ था, इस लिये उसे फ़सील फांदनी पड़ी। वह शहर में आया और सोई हुई गलियों में से चलने लगा। उस की आत्मा एक असीम अप्रत्याशित आनन्द से आते-प्रोत थी, उस के सब संशय मिट चुके थे। "अतीत के अद्धिम साये चले गये।" उस ने सोचा, "वह मुझ से प्रेम करती है और वह मेरी है।" सहसा उस के ऊपर की फिज़ाँ जयनाद की मृदु ध्वनि से मुखरित हो उठी, वह ठहर गया, ध्वनि ऊंची और ऊंची होती चली गई और मधुर संगीत के रूप में फैलती चली गई—और लगता था कि उस के उल्लास की समस्त विस्मृति बोलते, गाते और थिरकते हुए संगीत में परिवर्तित हो गई हो। उस ने इधर उधर देखा, संगीत-ध्वनि एक छोटे-से मकान के ऊपर की दो खिड़कियों से बह कर आ रही थी।

"लेम !" लाव्रेस्की चिल्लाया और उस घर की ओर दौड़ा।

"लेम ! लेम ?" वह ऊंचे स्वर में चिल्लाने लगा।

संगीत बंद हो गया। बूढ़ा जर्मन जिस की छाती नंगी थी और बाल बिखरे हुए थे, सोने की पोशाक में खिड़की पर आया।

"हां !" उस ने शान से कहा, "आप हैं ?"

"क्रिस्टोफ़र फ्योदोरिच, तुम कितना अच्छा गा रहे हो। खुदा के लिये मुझे अंदर आने दो।"

बूढ़ा बोला नहीं, उस ने गली के दरवाज़े की चाबी शान के साथ

खिड़की से नीचे फेंक दी। लाव्रेंस्की दौड़ी कर सीढ़ियां चढ़ गया, दड़ कर लेम के पास गया, लेकिन बूढ़े ने कुर्सी की ओर संकेत करते हुए रूसी भाषा में रुखाई से कहा, "बैठ जाओ और सुनो।" वह खुद भी बैठ गया, गर्व से इधर-उधर देखा और प्यानो बजाने लगा। लाव्रेंस्की ने चिरकाल से ऐसा संगीत नहीं सुना था। पहला ही स्वर उस की आत्मा में उतर गया, उस में कुछ निराली आग थी, उल्लास और सुन्दरता थी, वह ऊँचा उठ रहा था और हवा में पिघलता जा रहा था, उस में संसार में जो कुछ अशब्द और अमूल्य है, वह इस संगीत में था, उस में अमर अवसाद था और वह क्षण क्षण मंद होता हुआ ऊपर आकाश की ओर जा रहा था। लाव्रेंस्की उठा, वह प्रसन्नता से पीला और ठिठरा हुआ था। लगता था कि संगीत ने उस की हृदय-तन्त्रियों को, जो नव-लुब्ध-प्रेम से कम्पित थीं, भकांरित कर दिया है, जैसे वह प्रेम ही से धड़क रहा हो। "एक बार फिर," वह बोला जब कि अंतिम स्वर खत्म हुआ। बूढ़े ने उकाबी निगाह से उस की ओर देखा और अपने हाथ से अपनी छाती ठोक कर अपनी मातृ भाषा में कहा, "मैं एक महान संगीतकार हूँ" और उस ने अपना अद्भुद् संगीत एक बार फिर सुनाया। कमरे में मोमबत्तियों का प्रकाश नहीं था, सिर्फ चढ़ते हुए चांद की किरणें खिड़कियों द्वारा भीतर आ रही थीं, हवा संगीत से मुखरित थी, छोटा संक्षिप्त कमरा एक पवित्र स्थान बना हुआ था और बूढ़े जर्मन का सफ़ेद सिर मस्ती से इधर उधर घूम रहा था। लाव्रेंस्की ने उठ कर उसे चूम लिया। पहले तो लेम ने इस चुम्बन का कोई ऊत्तर नहीं दिया, बल्कि उसे कुहनी से परे ठेल दिया। वह काफ़ी देर तक शांत, अचल और निश्चेष्ट बैठा रहा और सिर्फ़ दो बार "अहा!" कहा। आखिर उस की उद्दात और प्रशांत मुख मुद्रा टूटी और लाव्रेंस्की के हार्दिक अभिवादन के उत्तर में वह मुस्कराया, फिर फूट-फूट कर रोने लगा। वह एक दुर्बल बालक

के सदृश सुबकियां भर रहा था।

"वला खूब," वह बोला, "तुम ठीक इसी समय पर आये। लेकिन मैं जानता हूँ, मुझे सब मालूम है।"

"तुम्हें सब मालूम है ?" लाव्रेस्की ने चौंक कर पूछा।

"मैंने कहा और तुम ने सुन लिया।" लेम ने उत्तर दिया, "क्या तुम महसूस नहीं करते कि मुझे सब मालूम है ?"

लाव्रेस्की पौ फटे तक सो नहीं सका। वह सारी रात अपने बिस्तर में बैठा रहा। लीज़ा भी सो नहीं सकी, वह प्रार्थना करती रही।

: ३५ :

पाठक लाव्रेस्की के बचपन और लालन-पालन से परिचित हैं। अब हम लीज़ा की शिक्षा के बारे में चंद शब्द कहेंगे। जब उसके पिता का देहान्त हुआ, वह दस वर्ष की थी, लेकिन वह उसकी ओर अधिक ध्यान दे सका था। उसे व्यापार के झंझटों से ही फ़ुरसत नहीं मिलती थी, उसे सदा धन बढ़ाने की चिंता लगी रहती थी। वह बच्चों के अध्यापकों, धायाओं और कपड़ों के लिये पैसा दे सकता था, और देता था लेकिन वह उन्हें खिलाना और प्यार करना पसंद नहीं करता था। खिलाने और प्यार करने के लिये उसके पास समय था ही कहां—वह काम करता था, व्यापार का ध्यान रखता था, थोड़ा सोता था, भोजन के उपरांत मामूली ताश खेलता था, फिर काम पर चला जाता था। वह अपने आपको ऐसे घोड़े से उपमा देता था जिसे कूटने की मशीन से जोत रखा हो। अपने होठों पर एक कटु मुस्कराहट लाकर उसने मृत्यु शैया पर कहा था—"हां मेरी जीवन धारा बहुत जल्द खत्म हो गई।" मेरिया दमित्रीवना भी लीज़ा की ओर पति से अधिक ध्यान नहीं दे सकी, यद्यपि उसने लाव्रेस्की के सम्मुख शेखी बघारी थी कि उसने अपने बच्चों को खुद पाला है। वह उसे गुड़िया की भांति कपड़े पहना देती थी आने वालों के सामने उसका सिर थपथपाते हुए उसे बड़ी चतुर और प्यारी लड़की कह देती थी, बस इससे अधिक और कुछ नहीं, वह खुद इतनी आलसी थी कि बच्ची पर अधिक ध्यान दे ही नहीं सकती थी। जब उसका बाप

जीवित था लीज़ा अपनी पेरिस से आई हुई धाया मादाम मेरिया की देख रेख में थी और जब बाप मर गया तो उसे मार्फ़ा तिमोफ़ेवना के सुपुर्द कर दिया गया। मार्फ़ा से पाठक भली प्रकार परिचित हैं। मादाम मेरिया पहली दुबली औरत थी, जिसकी आँखें पक्षी की तरह छोटी छोटी थीं और दिमाग भी पक्षी का सा था। उसने जवानी बड़े मजे से बिताई थी लेकिन बुढ़ापे में सिर्फ दो ही शौक रह गये थे—एक मिठाई और दूसरे ताश। जब उसका पेट भली प्रकार भर हुआ होता पर ताश न खेल रही या बातें न कर रही होती तो उसकी मुद्रा मृतक के समान होती थी। यह बैठी है, देख रही है, सांस ले रही है; मगर लगता यह था कि उसका मस्तिष्क विचारों से रिक्त है। आप यह भी नहीं कह सकते थे कि वह सहृदय थी क्योंकि सहृदय पक्षी नाम कोई वस्तु होती ही नहीं। चाहे इसका कारण यह रहा हो कि उसने जवानी बेपरवाही में और व्यर्थ बिताई थी; या फिर पेरिस की हवा का प्रभाव हो जिसमें वह बचपन ही से सांस लेती रही थी क्योंकि वह बहुत ही संदिग्ध स्वभाव की स्त्री थी और कौवे के सदृश हर वक्त चौकन्नी रहती थी वह पेरिस की भाषा बहुत ही शुद्ध बोलती थी, गप्प नहीं हांकती थी और उसे किसी प्रकार का लालच नहीं था, धाया से इससे अधिक और किस बात की आशा की जा सकती थी? उसका लीज़ा पर बहुत ही कम प्रभाव था; हां उसकी धाया अगफ्या ब्लास्येवना का उस पर सबसे अधिक प्रभाव पड़ा।

इस औरत की कहानी बहुत ही दिलचस्पी थी। वह किसान के घर उत्पन्न हुई थी। जब उसकी उम्र सोलह वर्ष थी उसका विवाह एक किसान से होगया, लेकिन वह अपनी किसान बहनों से सर्वथा भिन्न थी। उसका पिता जागीर पर बीस वर्ष तक बेलिफ रहा था, उसने खूब धन कमाया था और बेटी को खिला पिलाकर कुप्पा बना

दिया था। वह बहुत सुन्दर, चतुर और साहसी थी और ज़बान भी खूब चलाती थी, वह उस जागीर की रानी जान पड़ती थी। दमित्तरीये-स्तोव, मेरिया दमित्तरव्ना के पिता ने एक बार उसे कुटाई के समय देखा, बात की, और उसके प्रेम में आसक्त हो गया। शीघ्र ही वह विधवा हो गई। पेस्तोव यद्यपि विवाहित पुरुष था परन्तु उसे अपने घर में ले आया, और उसे अपनी पत्नी के सदृश सुंदर कपड़े पहनाये। अगफ्या ने शीघ्र ही अपने आपको नये वातावरण के अनुसार ढाल लिया जैसे वह सदा से यों ही रहती आई हो। उसका रूप और भी निखर आया। मखमल की आस्तीनों में उसकी बाहें ऐसी सफेद थीं जैसे किसी सौदागर की पत्नी की। इस्तरी हमेशा मेज़ पर तैयार रहती थी, वह सिल्क और मखमल के अतिरिक्त कुछ पहनना पसंद नहीं करती थी और पंखों की कोमल सेज पर सोती थी। पांच वर्ष तक जीवन इसी प्रकार व्यतीत हुआ। तब पेस्तोव मर गया। उसकी विधवा ने जो सहृदय स्त्री थी और जो पति की पुण्य स्मृति के आदर में उससे कठोरता का व्यवहार करना नहीं चाहती थी, इसके अलावा अगफ्या ने उसके अधिकार में कभी दखल नहीं दिया था, उसने उसे एक चरवाहे से ब्याह कर नज़रों से ओझल कर दिया। तीन साल बीत गये। गर्मी की एक शाम को मालकिन अपने पशुओं का बाड़ा देखने गई। अगफ्या ने उसे इतनी शीतल और स्वादिष्ट क्रीम खिलाई कि मालकिन ने उसे क्षमा कर दिया और घर में वापस ले लिया। छः महीने में वह मालकिन के इतनी निकट आगई कि उसने उसे घर की मैनेजर बना दिया और घर का समस्त प्रबंध उसे सौंप दिया। अगफ्या एक बार फिर स्वस्थ और सुन्दर बन गई। उसे मालकिन का पूर्ण विश्वास प्राप्त था। इस प्रकार पांच साल और गुजर गये। और तब एक बार फिर अगफ्या को भारी आघात पहुँचा। उसका पति, जिसे दरबान बना दिया गया था शराब पीने लगा, वह प्रायः घर से बाहर रहता

और यहां तक कि एक दिन उसने मालकिन के चांदी के पांच चमचे चुरा लिये और उस वक्त के लिये उन्हें अपनी पत्नी के सन्दूक में छिपा दिया। चोरी का पता चल गया। उसे फिर चरवाहा बना दिया गया और अगफ्या से उसका उच्च पद भी छिन गया। उसे घर से निकाला नहीं गया, मामूली नौकरानी बना दिया गया और उसे अब फीतेदार टोपी के बजाये सिर पर रूमाल बांधना होता था।

हरेक आदमी यह देखकर स्तब्ध और चकित रह गया कि अगफ्या ने तूफ़ान के आगे सिर झुका दिया है। उस समय उसकी अवस्था तीस से ऊपर थी, उसके तमाम बच्चे मर चुके थे और पति भी अधिक दिनों जीवित नहीं रहा। इसी समय उसे होश आया और होश आ जाना चाहिये था। वह खामोश रहने लगी और बहुत ही धार्मिक बन गई। कोई इतवार ऐसा न होता था जब वह गिरजे न जाती हो, और प्रार्थना में भाग न लेती हो। और उसने अपने तमाम बढ़िया कपड़े खैरात कर दिये। इस मूक शांत और दीन अवस्था में उसने पंद्रह साल बिता दिये। वह किसी से लड़ती झगड़ती नहीं थी और सब कुछ चुपचाप सह लेती थी। यदि कोई अपमान कर देता तो नम्रता से सिर झुकाकर उसे धन्यवाद देती। मालकिन ने उसे शीघ्र ही क्षमा कर दिया और उसे उसके पुराने पद पर आरूढ़ कर दिया, इसके अतिरिक्त प्रसन्न हो कर अगफ्या को खुद अपनी टोपी दी, लेकिन वह रूमाल ही इस्तेमाल करती रही और सदा काले वस्त्र पहनती रही। जब मालकिन मर गई तो वह और भी दीन और नम्र बन गई। एक रूसी का स्वभाव है कि वह शीघ्र ही प्यार करने लगता है, लेकिन उससे सम्मान प्राप्त करना सहज नहीं। यह न शीघ्र दिया जाता है और न कुपात्र को। घर का प्रत्येक व्यक्ति अगफ्या का सम्मान करता था, यहां तक कि पिछली भूलों को ज़बान पर भी नहीं लाता था, जैसे अतीत पुराने मालिक के साथ दफ़ना दिया गया हो।

जब कलिटीन ने मेरिया दमित्रोव्ना से विवाह किया, तो वह अगफ्या को घर की मैनेजर बना देना चाहता था। लेकिन लुभाये जाने के भय से उसने यह पद ग्रहण करने से इनकार कर दिया, जब हव उस पर बिगड़ा तो अगफ्या सिर झुकाकर कमरे से बाहर चली गई। कालिटीन ने उसे निगाह में रखा। जब वह गांव से शहर में आकर रहने लगा तो उसने अपने आप अगफ्या को लीज़ा की धाया बना दिया। उस समय लीज़ा की उम्र पांच वर्ष थी।

नई धाया की कठोर और गम्भीर मुख मुद्रा से पहले तो लीज़ा डर गई लेकिन वह शीघ्र ही उससे हिल मिल गई और अत्यंत प्यार करने लगी। वह स्वयं भी गम्भीर बालिका थी, उसके अंग अपने पिता के सदृश सुदृढ़ और सुडौल थे, सिर्फ़ आँखें उससे भिन्न थीं, जिनमें कुछ ऐसी मृदु दृष्टि और संवेदना थी जो प्राय: बालकों में कम पाई जाती है। वह गुड़ियों की परवा नहीं करती थी, वह ऊँचा और अधिक नहीं हँसती थी, उसके स्वभाव में एक प्रकार का विचित्र संतुलन था। वह स्वभाव से विचारशील नहीं थी, लेकिन विचारती रहती थी। थोड़ा मौन रहने के बाद वह किसी बड़े व्यक्ति से प्रश्न पूछती, जिससे पता चलता कि उसका मस्तिष्क किसी नये विषय से प्रभावित है। उसने तुतलाना शीघ्र छोड़ दिया, तीन वर्ष की अवस्था में वह स्पष्ट बोल सकती थी। अपने पिता से डरती थी, और माता पिता के प्रति उसका भाव निश्चित नहीं था, वह उससे न तो डरती थी और न कोई प्यार की भावना व्यक्त करती थी, ऐसी कोई भावना वह अगफ्या के प्रति भी व्यक्त नहीं, हालांकि सिर्फ़ वही एक ऐसा प्राणी था जिसे वह प्रेम करती थी। अगफ्या का उससे अलग होना सम्भव नहीं था। वे दोनों एक साथ विचित्र दिखाई देती थीं। अगफ्या काले वस्त्र पहनती और सिर पर काला रूमाल बांधे रहती, उसका दुबला चेहरा मोम के सदृश पिघला जा रहा था; परन्तु सुन्दर था, वह सीधी बैठी

जुराब आदि बुना करती, जब कि लीज़ा उसके क़दमों के पास छोटी कुर्सी में बैठी होती, वह भी अपने किसी छोटे धन्धे में व्यस्त होती अथवा अपनी स्वच्छ आँखें ऊपर उठाये हुए उसकी बात ध्यान से सुना करती। अगफ्या उसे परियों की कहानी नहीं सुनाती थी, बल्कि वह सम और धीमे स्वर में पवित्र क्वारी मेरी की जीवन-कथा सुनाती अथवा साधु, संतों और शहीदों के जीवन चरित्र बयान करती और बताती कि संत कैसे जंगलों से रहते थे, मुक्ति की खोज करते थे, भूख और प्यास सहन करते थे, सम्राटों का उन्हें तनिक भी भय नहीं था, अपने आपको ईसाई कहते थे, पक्षी उन्हें भोजन और मांस लाकर देते थे, जंगली पशु उनका हुक्म मानते थे, और जहां उनका रक्त गिरता था, वहां फूल उगते थे। "बड़े बड़े फूल ?" लीज़ा ने एक बार पूछा—फूल उसे बहुत पसंद थे...अगफ्या नम्रता और गम्भीरता से बोलती जैसे वह समझती हो कि पवित्र और पुनीत शब्द मुंह से निकालना उसे शोभा न देता हो। लीज़ा एकटक उसके होठों की ओर देखती रहती—और एक सर्वव्यापी और सर्वशक्तिमान भगवान की मूर्ति उसकी आत्मा में अंकित हो जाती जो उसे सानंदशक्ति से और धार्मिक भावनाओं से ओत-प्रोत कर देती। ईसू मसीह उसे बहुत ही समीप और सदा का सखी जान पड़ने लगा। अगफ्या ने उसे प्रार्थना करना भी सिखाया। कई बार वह लीज़ा को सुबह सवेरे जगा देती, जल्दी जल्दी कपड़े पहनाती और उसे प्रातः काल की प्रार्थना में ले जाती। लीज़ा पौ-फटे की सर्दी और अंधेरे में दम साधे पंजों के बल उसके साथ जाती। गिरजा घर का सूना और सर्द वातावरण इस अनुपस्थिति का गुप्त रूप और चोरी चोरी आकर बिस्तर में दुबकना यह सब बातें पवित्र होते हुए भी अद्भुत और विचित्र थीं और बालिका की आत्मा को झकझोर देती थीं। अगफ्या किसी को चिढ़ाती नहीं थी और किसी भी बात पर लीज़ा को डांटती नहीं थी। किसी

बात से अप्रसन्न होने पर वह चुप रहती। लीज़ा जानती थी कि इस खामोशी का क्या मतलब है, बाल-सुलभ बुद्धि से उसने शीघ्र ही यह भी समझ लिया कि वह दूसरे लोगों—मेरिया दमितरीवना और खुद कालिटीन से किस समय नाराज़ होती है। वह तीन वर्ष तक लीज़ा की देख-रेख करती रही, जब कि इसके बाद फ्रांसिसी आया मेरिया ने यह काम संभाला। वह अपने शिष्ट व्यवहार और चतुरता के बावजूद भी अगफ्या का स्थान न ले सकी। बालिका के मन में स्मृति उसकी और प्रेम सदा बना रहा, बीज ने जड़ें पकड़ ली थीं, जिन्हें उखाड़ना सम्भव नहीं था। इसके अतिरिक्त यद्यपि अगफ्या लीज़ा की देख-रेख नहीं करती थी, उसकी आत्मा इस घर में जीवित थी और वह इस कर्त्तव्य का पालन करती थी।

मगर जब मार्फ़ा इस घर में आकर रहने लगी तो अगफ्या उससे बना नहीं सकी। भावुक और स्वेच्छाचारी बुढ़िया को इस भूतपूर्व किसान स्त्री की गम्भीरता और शिष्टता बहुत अखरती थी। वह तीर्थ-यात्रा को चली गई और लौट कर नहीं आई। उसके सम्बन्ध में कई प्रकार की अफवाहें उड़ीं, कहा जाता था कि वह सन्यास धारण करके रास्कोनिक के संतों के आश्रम में रहने लगी है। कुछ भी हो वह लीज़ा के मन पर अमिट प्रभाव छोड़ गई। वह प्रत्येक रविवार को गिरजे जाती, उसे यह एक छुट्टी सी जान पड़ती, बड़ी तन्मयता से प्रार्थना करती और बार बार माथा टेकती। मेरिया दमितरीवना को इस पर आश्चर्य होता, आश्चर्य मार्फ़ा तिमोफ़ेवना को भी होता, यद्यपि वह उसकी स्वछंदता पर किसी प्रकार का प्रतिबन्ध नहीं लगाती—मगर घुमा-फिराकर उसे सुझाने का प्रयत्न किया कि अधिक माथा टेकना अच्छा नहीं है। उसका खयाल था कि एक उच्च परिवार की लड़की को यह बात शोभा नहीं देती। लीज़ा मन लगा कर पढ़ती, उस की बुद्धि अधिक तेज़ नहीं थी, लेकिन वह कड़े परिश्रम से सब कुछ सीख लेती। वह प्यानो अच्छा बजाती थी,

लेकिन यह बात सिर्फ लेम जानता था कि इसे सीखने के लिये उसे कितनी मेहनत करनी पड़ी थी। वह अधिक नहीं पढ़ती थी, उसके पास "अपने शब्द नहीं थे," लेकिन उसके अपने विचार थे और वह अपने ढंग से रहतीं थी। वह अपने पिता की पुत्री थी, उस ने किसी से कभी नहीं पूछा था कि उसे क्या काम करना चाहिये। इस प्रकार वह बड़ी हुई, सयंत और चुपचाप, यहां तक कि वह उन्नीस वर्ष की हो गई। उस की गति-विधि में अस्थिरता—एक प्रकार का अल्हड़ पन था, उस की ध्वनि में अस्पर्श यौवन की झंकार थी, किंचित सानन्द सनसनी से उस के होंठों पर मुस्कराहट खेलने लगती थी और आँखें मृदु आलोक से चमक उठती थीं। वह कर्त्तव्य के प्रति सदा सचेत रहती, किसी का दिल दुखाने से डरती थी उस का हृदय कोमल और करुण था, किसी से विशेष नहीं, सब से प्रेम करती थी, एक भगवान को ही वह अपनी समस्त शक्ति, धार्मिकता और कोमलता से प्रेम करती थी। उस के जीवन के इस सन्तुलन को अस्त-व्यस्त करने वाला लाव्रेस्की पहला व्यक्ति था।

यह थी लीज़ा।

: ३६ :

दूसरे दिन, ग्यारह बजे बाद लाव्रेंस्की कालिटीन परिवार के मकान पर आया। रास्ते में उसे पैंशिन मिला, जो घोड़ा दौड़ाये जा रहा था और हैट आँखों तक झुका रखा था। उनसे परिचय के उपरांत कालिटीन परिवार में पहली बार उस का स्वागत नहीं हुआ। मेरिया दमितरीवना 'आराम' कर रही थी। दरबान ने बताया कि मालकिन के सिर में दर्द है। मार्फ़ा और लीज़ा घर पर नहीं थी। लीज़ा से मिलने की अस्पष्ट आशा में लाव्रेंस्की बाग़ में घूमने लगा, लेकिन उसे कोई नहीं मिला। वह दो घंटे बाद फिर लौटा और दरबान ने उसे आँख के कोनों से देखते हुए वही बात फिर दोहराई। लाव्रेंस्की ने एक ही दिन में तीसरी बार पूछने जाना बेकार समझा और वासिल्येवस्कोये जहां उसे बहुत सा काम करना था, जाने का फैसला किया। उस ने मार्ग में बहुत सी योजनाऐं बनायीं जो एक से एक महत्त्वपूर्ण थीं, लेकिन गांव में पहुँचते ही वह निरुत्साहित हो गया और एंटोन से बातें करने लगा। संयोगवश उस के पास दोहराने के लिये बहुत सी निराशा पूर्ण स्मृतियां थीं। उस ने लाव्रेंस्की को बताया कि ग्लाफ़ीरा पेत्रोवना ने कैसे मरने से पहले अपना हाथ आप काट खाया—और तिनक कर कहा—"मेरे प्यारे आक़ा हरेक आदमी अपने आप को खा रहा है।" वह रात गये शहर में लौटा। कल वाले संगीत की मृदुता उस की आत्मा में ओत प्रोत थी, लीज़ा की शुद्ध स्पष्ट मूर्ति उसकी कल्पना पट पर अंकित थी, वह इस विचार से आनन्द विभोर था कि वह उसे प्रेम करती है और

वह शांत चित्त और उल्लास में भरा हुआ घोड़े पर सवार, शहर अपने मकान की ओर जा रहा था।

घर पहुँचते ही उसे हाल कमरे से कोयला जलने की दुर्गंध आई, जो वह पसंद नहीं करता था, और यात्रा में इस्तेमाल होने वाले दो बड़े बड़े ट्रंक और सूटकेस रखे हुए दिखे। अपने नौकर का चेहरा जो दौड़ कर उस का स्वागत करने आया उसे विचित्र दिखाई दिया। इन सब बातों पर विचार के लिये रुके बिना ही मुलाक़ाती कमरे की दहलीज़ पर जा खड़ा हुआ.....उसे मिलने के लिये सोफ़े से एक स्त्री खड़ी हुई, जिस ने सिल्क के काले वस्त्र पहन रखे थे, एक रूमाल अपने ज़र्द चेहरे की ओर उठाये हुए चंद कदम आगे बढ़ी, उस ने अपने सुनहले और सुगन्धित बालों वाला सिर झुकाया—और लाव्रेंस्की के पैरों पर गिर पड़ी।

उस ने सांस रोक ली.....उस ने अपना सिर दीवार से टेक दिया।

"थयोडोर; मुझे यहां से भगाना नहीं।" उस ने फ्रांसिसी भाषा में कहा और उस की आवाज़ तेज़ चाकू के सदृश लाव्रेंस्की के हृदय में उतर गई।

"थयोडोर !" वह फिर बोली। वह अपनी पलकें अब और तब ऊपर उठा रही थी और रंगे हुए नाखूनों वाले सुन्दर हाथों को सावधानी से मल रही थी। "थयोडोर, मैंने तुम्हारे साथ छल किया है, अधिक छल किया है, मैं कुटनी हूँ, लेकिन मेरी बात सुनो, मैं ग्लानी से जल रही हूँ, मैं अपने लिये बोझ मात्र बनी हुई हूँ। मैंने कई बार तुम से क्षमा याचना करने की सोची, लेकिन मैं तुम्हारे क्रोध से डरती थी। मैंने अतीत से सम्बन्ध विच्छेद करने का निश्चय कर लिया..... मैंने कई बार आत्महत्या करने की सोची.....इस जीवन से इतना ऊब गई हूँ।" उस ने अपने माथे और गालों पर हाथ फेरते हुए कहा,

"अतीत से मुक्त होने के लिये मैंने अपनी मृत्यु की अफ़वाहों से लाभ उठाया और मैं एक क्षण खोये बिना दौड़ कर यहां आई। तुम मेरे न्यायधीश हो, निर्णायक हो, मेरा फ़ैसला तुम्हारे हाथ है, तुम्हारे सम्मुख आने का साहस नहीं होता था, बहुत झिझकते हुए आई हूं। सिर्फ़ इस लिये आस की, कि तुम बड़े सहृदय और संवेदनाशील हो, मैं ने तुम्हारा पता मास्को में खोजा। मेरी बात का विश्वास करो।" वह धीरे धीरे धरती से उठी और एक आराम कुर्सी की नुक्कड पर बैठ गई, "मृत्यु का विचार प्रतिक्षण मेरे मस्तिष्क में था, मैं यह भयानक क़दम उठाने से कदाचित संकोच न करती, आह! जीवन मेरे लिये कितना असह्य हो गया है, लेकिन मेरी नन्हीं बच्ची, मेरी आदा के विचार ने—मुझे ऐसा करने से रोके रखा। वह यहां मेरे साथ है, दूसरे कमरे में सोई पड़ी है। बेचारी बच्ची, बहुत थक गई है—तुम उसे देखोगे, कम से कम वह तो तुम्हारी नज़रों में भी निरपराध है। आह! मैं कितनी अभागिनी हूँ," मादाम लाव्रेस्की चिल्लाई और फूट-फूट कर रोने लगी।

आखिर लाव्रेस्की होश में आया। वह दीवार से हटा और दरवाजे की ओर चला।

"तुम कहां जा रहे हो?" उस की पत्नी ने हताश हो कर कहा, "ओ कितने निर्दय! एक शब्द तक नहीं कहा.....गाली तक नहीं दी.....यह अवज्ञा असह्य है, भयानक है!"

"तुम मुझ से क्या कहलाना चाहती हो?" उसने भाव रिक्त स्वर में कहा।

"कुछ नहीं, कुछ नहीं," वह बोल उठी, "मैं जानती हूँ कि मुझे किसी बात का अधिकार नहीं रह गया, मुझे इतनी समझ अब भी है, मैं तुम्हें विश्वास दिलाती हूँ कि मुझे कोई आशा नहीं। मैं तुम से क्षमा पा जाने की आशा का साहस नहीं करती, मैं तुम से सिर्फ़ इतना

पूछने आई हूँ कि मैं क्या करूं, कहां रहूँ । मैं तुम्हारा आदेश एक दासी की तरह मानूंगी, जो कहोगे, करूंगी ।"

"मुझे तुम्हें कोई आदेश नहीं देना है," लाव्रेंस्की ने उसी निर्जीव स्वर में कहा, "तुम जानती हो कि हमारा कोई सम्बन्धी नहीं रहा। तुम जहां चाहो रह सकती हो, और अगर समझती हो कि तुम्हारा भत्ता कम है....."

"आह, ऐसे भयानक शब्द मुंह से न निकालो," वारावारा पावलोवना ने टोका, "मुझ पर इतनी दया तो करो—मेरे लिये नहीं इस बच्ची के लिये ही सही....." यह कह कर वह दौड़ी हुई दूसरे कमरे में गई और बहुत ही सुन्दर और शानदार पोशाक में एक नन्ही लड़की को अपनी बाहों में उठाये हुए आई। लम्बी लम्बी, सुन्दर लटें उस के सुन्दर सुर्ख चेहरे पर पड़ रही थीं, उस की बड़ी काली आंखों में निद्रा भरी हुई थी, वह प्रकाश में आँखें झपका रही थी और मुस्करा रही थी, और उस ने अपना एक नन्हा हाथ माँ के गले में डाला हुआ था।

"आदा, हमारी प्यारी बच्ची।" वारावारा पावलोवना ने उस के माथे से बाल हटाते और उसे चूमते हुए कहा, "अपने पापा को नमस्कार करो।

"नमस्ते, पापा" बच्ची बोली।

"जाओ २ पापा की गोद में जाओ।"

लाव्रेंस्की के लिये यह सब कुछ असह्य था

"किस नाटक में यह दृश्य ठीक इसी तरह आता हो।" वह बड़बड़ाया और बाहर चला गया।

वारावारा पावलोवना एक क्षण के लिये चित्र-लिखित सी खड़ी रही, फिर उस ने आहिस्ता से कंधे हिलाये, बच्ची को दूसरे कमरे में ले गई, कपड़े उतारे, और उसे बिस्तर में लिटा दिया। उस ने एक

पुस्तक उठाई, लैम्प के पास जा बैठी, घंटा भर प्रतीक्षा करती रही और फिर वह खुद भी बिस्तर में लेट गई।

"क्या हुआ, मादाम ?" जब वह कपड़े उतार रही थी, उस की नौकरानी जस्टाईन ने पूछा, जिसे वह पेरिस से साथ लाई थी।

"कुछ नहीं, जस्टाईन ?" उस ने उत्तर दिया, "वह अब पहले से बहुत बड़े हो गये हैं, लेकिन मुझे विश्वास है कि वह उतना ही सहृदय है, जितना पहले था। मुझे रात के लिये दस्ताने दो, ऊंचे कालरों वाला खाकी गाऊन कल के लिये रख छोड़ो और आदा के लिये मटन चाप मत भूलना.....मैं जानती हूँ कि यहाँ उन का मिलना कठिन होगा लेकिन हमें कोशिश करनी चाहिये।"

"बहुत अच्छा, मैं कोशिश करूंगी।" जस्टाईन ने कहा और बत्ती बुझा दी।

: ३७ :

लाव्रेंस्की दो घंटे से अधिक समय तक गलियों में घूमता रहा। उसे वह रात स्मरण हो आई जो उस ने पेरिस की बाहरी बस्तियों में बिताई थी। उस का हृदय पीड़ा से फटा जा रहा था, उस का सिर सुन्न और अचेत और वैसे ही स्याह, व्यर्थ और व्यग्र विचारों से घूम रहा था, "वह जीवित है, वह लौट आई!" वह घबराहट में बार बार बड़बड़ा रहा था। उसे लगता था कि मैंने लीज़ा को खो दिया है। वह आक्रोश से भर उठा। यह आघात ऐसा था जैसे आकाश से सहसा बिजली गिर पड़ी हो। उस ने उस चौथड़े अखबार के उस लेख पर विश्वास क्यों किया, क्यों किया उस ने यह विश्वास? अच्छा समझिये कि मैंने उसका विश्वास नहीं किया," उस ने सोचा, "इस से क्या फ़र्क़ पड़ता है। मुझे यह मालूम न होता कि लीज़ा मुझे प्रेम करती है और उसे भी यह मालूम न होता।" वह अपनी पत्नी की आँखों, आवाज़ और मूर्ति को भुला न पाता था...वह अपने आप को कोसता था, सारे संसार को कोसता था।

व्यथा और थकन से मूर्छित-सा वह पौ फटे लेम के पास पहुँचा। काफ़ी देर तक उस की दस्तक का कोई उत्तर नहीं दिया, अंत में खिड़की से बूढ़े जर्मन का सिर दिखाई दिया। उस ने रात की टोपी पहन रखी थी और वह बहुत ही क्षीण और प्रतिभाहीन दिख रहा था, वह उस संगीतकार लेम से सर्वथा विभिन्न था, जिसे लाव्रेंस्की ने चौबीस घंटे पहले देखा था।

"क्या बात है ?" लेम ने पूछा, "मैं हर रात तुम्हें संगीत नहीं सुना सकता। मैंने दवा पी रखी है।" लाव्रेंस्की का चेहरा अवश्य अद्भुत दिखाई दे रहा होगा, क्योंकि बूढ़े जर्मन ने आँखों पर हाथ की ओट कर के उसे ध्यान से देखा और फिर दरवाज़ा खोल दिया।

लाव्रेंस्की कमरे में आया और एक कुर्सी में धंस गया। लेम उसके सामने खड़ा हो गया और अपनी ढीली ढाली पोशाक को अपने शरीर के गिर्द लपेटने लगा। वह कांप रहा था और अपने होंठ चबा रहा था।

"मेरी पत्नी आ गई है।" लाव्रेंस्की ने कहा, अपना सिर ऊपर उठाया और हठात ठहाका मार कर हंसने लगा।

लेम उसे हतबुद्धि सा देखने लगा, लेकिन वह मुस्कराया तक नहीं, बल्कि अपनी पोशाक को शरीर पर और भी समेट लिया।

"हां, तुम नहीं जानते" लाव्रेंस्की बोला, "मैंने सोचा था—अख़बार में पढ़ा था कि वह मर गई है।"

"ओ—ओह, तुम ने वह बहुत पहले नहीं पढ़ा ?" लेम ने पूछा।

"बहुत पहले नहीं।"

"ओ—ओह।" बूढ़े जर्मन ने पलकें ऊपर उठाते हुए कहा, "और अब वह यहां है ?"

"हाँ, वह मेरे घर पर है, मैं.....मैं बदकिस्मत इंसान हूँ।"

वह कटु भाव से मुस्कराया।

"तुम वाकई बदकिस्मत हो।" बूढ़े जर्मन ने धीरे से कहा।

"क्रिस्टोफ़र फ्योदोरिच," लाव्रेंस्की ने कहा, "क्या तुम मेरी एक चिट दे सकोगे ?"

"हूँम, क्या मैं पूछ सकता हूँ, किसे ?"

"लीज़ा को।"

"हाँ, हाँ, मैं समझता हूँ, ठीक है। और यह कब देनी होगी ?"

"कल, जितना शीघ्र सम्भव हो सके।"

"हूँ, मैं अपने नौकर केथराईन को भेज सकता हूँ। नहीं मैं इसे खुद ले जाऊंगा।"

"और तुम मुझे इस का उत्तर भी ला दोगे?"

"हां, ला दूँगा।"

लेम ने गहरी सांस छोड़ी।

"हां, मेरे प्यारे नौजवान मित्र, तुम वाकई बदकिस्मत इन्सान हो।"

लाव्रेस्की ने लीज़ा को संक्षेप में लिखा कि "मेरी पत्नी आ गई है, और तुम मुझे भेंट का समय दो।" "तब वह एक सोफे पर गिर पड़ा और अपना मुँह दीवार की ओर घुमा लिया। बूढ़ा ज़र्मन अपने बिस्तर में लेट कर इधर-उधर करवटें लेने और खांसने लगा, और गटागट दवा पीता रहा।

सुबह हुई और वे दोनों उठे। उन्होंने अचरज भरी दृष्टि से एक दूसरे को देखा। कैथेराईन रसोईया उनके लिये काफ़ी लाया। घंटे ने आठ बजाये। लेम ने हैट पहना और वह बोला कि मैं कालिटीन परिवार में संगीत का पाठ देने दस बजे जाता हूँ, लेकिन इस समय जाने का कोई बहाना बनाऊँगा, और वह चल पड़ा। लाव्रेस्की फिर उस छोटे सोफे पर लेट गया और एक उदास प्रसन्नता उसकी आत्मा की गहराईयों में हलचल मचाने लगी। वह सोचने लगा कि कैसे उसकी पत्नी ने उसे घर से निकाल दिया है, वह लीज़ा की स्थिति की कल्पना करने लगा। सोचते-सोचते उसने आंखें बंद करलीं और सिर के पीछे हाथों की कंघी बना ली। थोड़ी देर में लेम लौट आया और उसे कागज़ का एक पुर्ज़ा दिया जिसमें लिखा था—"हम आज नहीं मिल सकते, शायद कल शाम। नमस्ते।" लाव्रेस्की ने शुष्क और अनमने भाव से लेम को धन्यवाद दिया और घर को चला।

उसकी पत्नी नाश्ता कर रही थी, आदा के सिर पर घुंघराले बाल बने हुए थे और नीले फ़ीतों वाला सफ़ेद फ्राक पहने मटन चाप खा रही थी। वारावारा लाव्रेस्की को देखते ही उठ खड़ी हुई और बड़ी दीनता से स्वागत को आगे बढ़ी। लाव्रेस्की ने उसे अपने पीछे, पढ़ने के कमरे में आने को कहा। उसने भीतर से ताला लगाकर कमरे में इधर से उधर घूमना शुरू किया। वह हाथ पर हाथ धरे बैठी थी और अपनी आंखों से, जो अब भी सुन्दर थीं, उसकी गति-विधि को देख रही थी।

लाव्रेस्की कुछ देर बोल नहीं सका, उसे लगता था जैसे उसे अपने आप पर काबू नहीं। वह स्पष्ट देख रहा था कि वारावारा पावलोवना उससे भयभीत नहीं है, वह केवल बन रही है और ऐसी दिखाई दे रही है कि किसी भी समय मूर्छित हो जायेगी!

"मादाम, मेरी ओर देखो।" ज़ोर ज़ोर से सांस लेते और दांत कचकचाते हुए आखिर वह बोला, "हमें एक दूसरे को धोखा देने की ज़रूरत नहीं है। मुझे तुम्हारे प्रायश्चित पर विश्वास नहीं, यदि तुम्हारे पश्चाताप को ठीक भी मान लिये जाये तो भी मेरे लिये तुम्हें ग्रहण करना और तुम्हारे साथ रहना असम्भव है।"

वारावारा पावलोवना होंठ भींचे और आँखें मीचे बैठी रही।

"यह घृणा है।" वह सोच रही थी, "कोई आशा नहीं, मैं इसकी आँखों में औरत तक नहीं रह गई।"

"असम्भव" लाव्रेस्की ने कोट के बटन बंद करते हुए दुहराया, "समझ में नहीं आता कि तुम्हारे यहां आने का कारण क्या है? शायद तुम्हारे पास रुपया नहीं रहा।"

"एह! आप मेरा अपमान करते हैं।" वारावारा ने धीरे से कहा।

"खैर, दुर्भाग्यवश तुम अब भी मेरी पत्नी हो और मैं तुम्हें यहां से भगा नहीं सकता.....मैं अब तुम्हारे सामने यह प्रस्ताव रखता हूँ।

तुम अगर चाहो आज ही जाग्रोको जा सकती हो, वहां रहो, तुम्हें मालूम है कि वहां बहुत अच्छा मकान है और अज्ञाकेश के अतिरिक्त तुम जो चाहोगी, मिल जाया करेगा।...क्या तुम्हें मंजूर है ?"

वारावारा ने काढ़े हुए रुमाल से मुँह पोछा।

"मैंने आपसे पहले ही कह दिया है।" उसने होठों को मोड़ कर दीन भाव से कहा, "आप जैसा कहेंगे, मुझे मंजूर है—क्या आपकी इस उदारता के लिये मैं आपका धन्यवाद कर सकती हूँ।"

"धन्यवाद की ज़रूरत नहीं।" लाव्रेस्की उठा और दरवाज़े की ओर जाते हुए बोला, "बस इतना ही मैं तुम पर भरोसा........."

"मैं कल चली जाऊँगी।" वह सादर अपने स्थान से उठते हुए बोली "लेकिन फ़्योदोर इवानिच......(वह उसे अब थियोडोर नहीं कहती थी।")

"तुम क्या चाहती हो ?"

"मैं जानती हूँ कि आप ने मुझे क्षमा नहीं किया, लेकिन क्या मैं यह आशा कर सकती हूँ कि कुछ समय......"

"एह, वारावारा पावलोवना।" लाव्रेस्की ने बात काटी,"तुम एक चतुर नारी हो, लेकिन मैं भी मूर्ख नहीं, समझता हूँ कि तुम्हें इस की किंचित चिंता नहीं है। मैंने तुम्हें बहुत पहले क्षमा कर दिया, लेकिन तुम्हारे और मेरे बीच एक गहरी खाई है।"

"मैं आप की आज्ञा का पालन करूँगी।" वारावारा पावलोवना ने सिर झुका कर कहा, "मैं अपना पाप भूली नहीं, इस लिये मुझे इस बात से भी कोई आश्चर्य नहीं कि आप को मेरी मृत्यु का समाचार सुन कर प्रसन्नता हुई।" उस ने अखबार की ओर संकेत किया, जो लाव्रेस्की मेज़ पर छोड़ गया था।

वह चौंका, खबर पर पेंसिल का निशान था। वारावारा ने पहले से अधिक दीनभाव से उस की ओर देखा। वह इस समय अत्यंत

सुन्दर दिखाई दे रही थी। उस ने पेरिस की सिली गाऊन पहन रखी थी, उस की सुराहीदार गर्दन पर सफ़ेद कालर बहुत ही भला मालूम हो रहा था, उसकी छातियों का धीमा धीमा उत्थान-पतन, हाथों में कड़े और कानों में बालियाँ, वह सिर से पांव तक सुन्दरता की मूर्ति दीख पड़ती थी.....

लाव्रेस्की ने घृणा से उस की ओर देखा, लगभग चिल्ला कर कहा "खूब !" मुक्का उस की कनपटी के निकट लाया और भाग कर बाहर निकल गया। एक घंटे पश्चात वह वासिल्येवस्कोये की ओर जा रहा था, और दो घंटे बाद बारबारा पावलोवना ने शहर की सब से अच्छी गाड़ी किराये पर ली, उसने आदा को जस्टाईन के हवाले किया और कालिटीन परिवार की ओर चल पड़ी। उसे नौकरों से पूछने पर मालूम हुआ था कि उस का पति हर रोज़ उन के घर मिलने जाता है।

: १८ :

जिस रोज़ लाव्रेस्की की पत्नी वहां आई, उसके लिये वह निरानन्द दिन था और लीज़ा के लिये भी वह उदास दिन था। वह अपनी माता को नमस्कार करने सीढ़ियों से नीचे उतरी ही थी कि उसने घोड़े के सुमों की चाप सुनी और खेद से देखा कि पैंशिन लहन में प्रवेश कर रहा था। "वह उत्तर लेने इतनी जल्दी आ गया है।" उसने सोचा और उसका अनुमान ठीक ही था। कुछ देर मुलाकाती कमरे में इधर-उधर टहलने के बाद, उसने बाग़ में जाने का प्रस्ताव किया, ताकि अंतिम निर्णय सुन सके। लीज़ा ने साहसपूर्वक कहा कि वह उसकी पत्नी नहीं बन सकती। पैंशिन उसके पहलू में खड़ा था, हैट उसके माथे पर था उसने लीज़ा का उत्तर सुना तो उसने विनम्र लेकिन बदले हुए स्वर में पूछा, "क्या यह तुम्हारा अंतिम फैसला है? और क्या मैं किसी तरह तुम्हारा इरादा बदलने का कारण बना हूँ?" फिर उसने हाथ अपनी आंखों पर दबाया, हल्की सी आह भरी और हाथ हटा लिया।

"मैं पिटे हुए रास्ते पर चलना नहीं चाहता था।" उसने खोखली आवाज़ में कहा, "मैं अपने मन का साथी बनना चाहता था; लेकिन यह सम्भव नहीं हो सका। मधुर सपनों अलविदा!" उसने धीरे से लीज़ा को सिर झुकाया और घर की ओर लौट गया।

लीज़ा को उम्मीद थी कि वह उसी समय यहां से चला गया; होगा, लेकिन वह एक घंटे तक ठहरा और मेरिया दमित्रीवना से बातें

करता रहा। जाते समय उसने लीज़ा से कहा "ज़िंदगी में ऐसा ही होना था।" और वह घोड़े पर सवार होकर चला गया। लीज़ा ने देखा कि उसकी माँ रो रही है। पैंशिन ने उसे वह फैसला बता दिया था।

"तुमने मेरे साथ क्या किया, क्या किया तुमने मेरे साथ?" विधवा माँ ने आहें भरते हुए शिकायत की, "तुम और किसे चाहती हो? क्या वह तुम्हारे योग्य नहीं है? उसे किस बात की कमी है? उसे धनी से धनी परिवार की लड़की मिल सकती है। सेंट पीटर्ज़बर्ग में वह किसी भी लड़की से ब्याह कर सकता है। मुझे इस बात की कदाचित आशा नहीं थी। क्या तुमने बहुत पहले यह निश्चय कर लिया था? यह बात आकाश से तो नहीं उतरी। ज़रूर किसी दूसरे की करामात है। मुझे ताज्जुब है कि कहीं यह उस अहमक चचेरे की तो करतूत नहीं? तुमने अच्छा जोड़ चुना है। और वह बेचारा कितना भला मानस और शालीन है।" मेरिया दमितरीवना कहती रही, "इस दुर्भाग्य के बाद भी उसने मुझे न छोड़ने का वादा किया है! ओह, मेरे लिये यह असह्य है। मेरे सिर में कितना सख्त दर्द है। पालाशा को मेरे पास भेज दो। अगर इस बात पर दोबारा विचार न किया तो तुम मेरी मृत्यु का कारण बनोगी—तुम सुन रही हो? अभागी और नालायक लड़की," कह कर मेरिया दमितरीवना ने उसे बहुत कोसा और अपने सामने से हट जाने को कहा।

लीज़ा अपने कमरे में चली गई। वह पैंशिन के साथ अपनी मुलाकात से सम्भल नहीं पाई थी कि मां की फटकार सुननी पड़ी और उसे इस फटकार की बिलकुल आशा नहीं थी। इसी मय मार्फ़ा तिमोफ़ेवना ने कमरे में प्रवेश किया और दरवाज़ा बंदकर दिया। उसके चेहरे का रंग पीला पड़ गया था, टोपी तिरछी थी, आँखें लाल थीं और हाथ पैर कांप रहे थे। लीज़ा स्तब्ध रह गई उसने अपनी शांत और

गम्भीर फूफी को कभी इस दशा में नहीं देखा था।

"अजीब बात है, मादाम।" मार्फ़ा ने कांपते हुए स्वर में कहा, "बड़ी अजीब बात है। तुमने यह कहां से सीखा है, मेरी प्यारी !... मुझे थोड़ा सा पानी दो। मेरे लिये बोलना कठिन है।"

"फूफी अपने आप को शांत करो, क्या बात है।" लीज़ा ने उसे पानी का गिलास देते हुए पूछा, "मैं समझती हूं कि तुम खुद भी पैशिन को पसंद नहीं करती थी।"

मार्फ़ा ने गिलास रख दिया।

"मैं नहीं पी सकती—मैं अपना अंतिम दांत भी निकाल फेकूँगी। इसमें पैशिन का क्या दखल है ? पैशिन से तुम्हारा क्या मतलब ? मुझे तुम यह बताओ कि तुमने रात को मुलाकात करना कहां से सीखा है ? इस बात का उत्तर दो।"

लीज़ा पीली पड़ गई।

"इनकार करने की कोशिश मत करो," मार्फ़ा बोली, "शुरोचका ने सब कुछ अपनी आँखों देखा है और मुझे बताया है। मैंने उसे आगे कहने से मना कर दिया है। वह झूठ नहीं बोलती।"

"मैं किसी बात से इनकार नहीं करूँगी फूफी।" लीज़ा बोली।

"अच्छा तो यह बात है। तुमने उस बूढ़े पापी को भेंट का समय दिया ?"

"नहीं।"

"तो फिर ?"

"मैं मुलाकाती कमरे में एक किताब लेने गई थी। वह बाग में था। उसने मुझे पुकारा।"

"और तुम चली गई ? बहुत खूब। तुम उससे प्रेम करती हो या कुछ और ?"

"मैं उससे प्रेम करती हूँ।" लीज़ा बोली।

"क्या खूब यह उसे प्रेम करती है।" मार्फ़ा ने सिर से टोपी उतार ली। "एक विवाहित व्यक्ति से प्रेम करती है! क्या तुम सुन रही हो? एह, यह उसे प्यार करती है!"

"उसने मुझे बताया....." लीज़ा ने कहना शुरू किया।

"मेरी प्यारी गुड़िया, उसने तुम्हें क्या बताया?"

"उसने मुझे बताया कि उसकी पत्नी मर गई है।"

मार्फ़ा तिमोफ़ेवना ने अपनी छाती पर क्रास का निशान बनाते हुए कहा, "भगवान उसे शांति प्रदान करे। वह छिछली स्त्री थी। भगवान उसे क्षमा करो। यह बात है। वह रंडवा है। मतलब है, वह बहुत ही चालाक है। एक पत्नी की हत्या किये देर नहीं हुई कि दूसरी के पीछे दौड़ रहा है। विषैले कीड़े! मेरी एक बात सुनो, जवानी में लड़कियां शीघ्र ही इस प्रकार के खेल में फंस जाती हैं। मुझ पर नाराज़ न होना, सिर्फ़ मूर्ख ही सत्य पर नाराज़ होते हैं। मैंने हुक्म दे दिया है कि आज से उसे घर में न घुसने दिया जाये। मैं उसे प्यार करती हूँ, लेकिन इस बात के लिये उसे क्षमा नहीं कर सकती। एक रंडवा, एह! मुझे थोड़ा सा पानी दो..... पैंशिन को टका-सा जवाब दे दिया यह तुमने बहुत अच्छा किया। लेकिन उस बकरी के बच्चे के साथ बातों को बंद करो। इस बुढ़ापे में मेरा दिल मत तोड़ो। तुम देखती हो कि मैं न बहुत प्यार करती हूँ, ...एक रंडवा।"

मार्फ़ा चली गई। लीज़ा एक कोने में बैठ गई और फूट-फूट कर रोने लगी। उस का हृदय क्षोभ से फटा जा रहा था, उसे इस अपमान की आशा नहीं थी। प्रेम उसके लिए प्रसन्नता नहीं लाया, वह कल रात से दूसरी बार रो रही थी। उसने इस अद्भुत और नई हृदयगत भावना का अनुभव ही किया था कि उसके लिये इतना भारी मूल्य चुकाना पड़ रहा था और उस का गुप्त रहस्य पराये हाथों के अप्रिय

स्पर्श की ज़द में आ गया था! वह बहुत लज्जित, कटु और आहत अनुभव कर रही थी, लेकिन उस के मन में भय और अशंका का लेश-मात्र भी नहीं था—लाव्रेस्की उसे पहले से कहीं अधिक प्यारा लग रहा था। वह उसी समय तक असमंजस में पड़ी हुई थी, जब तक अपने मन को आप नहीं समझा था। लेकिन उस भेंट, उस चुम्बन के उपरांत कोई असमंजस नहीं रह गया था, वह जानती थी कि मैं प्रेम करती हूँ—और मैं पूरी इमानदारी और समस्त आत्म-बल से प्रेम करती हूँ और यह प्रेम बन्धन इतना सबल और सुदृढ़ है कि संसार की कोई शक्ति उसे तोड़ नहीं सकती।

: ३६ :

वारावारा पवलोवना के आने की सूचना सुनकर मेरिया दमितरीवना बहुत परेशान हुई, वह यह समझने से असमर्थ थी कि उसे बुलाये या न बुलाये, उसे लाव्रेस्की के नाराज़ हो जाने का भय था। अंत में उत्सुकता से भर कर उस ने सोचा, "अच्छा वह भी एक सम्बंधी है," और अपनी आराम कुर्सी में लेटते हुए उस ने दरबान से कहा, "उसे भीतर बुलाओ।" कई क्षण बीत गये, दरवाज़ा खुला, वारावारा पावलोवना ने भीतर प्रवेश किया और मेरिया दमितरीवना को उठने का अवसर दिये बिना ही वह उस के पास चली गई और बड़ी नम्रता से उस के सामने अपने घुटनों पर झुक गई।

"बहुत, बहुत धन्यवाद, प्यारी चाची," उस ने धीमे स्वर में बोलते हुए रूसी में कहा, "बहुत धन्यवाद, मुझे तुम से इतनी क्षमता की आशा नहीं थी, तुम एक देवात्मा सी अच्छी हो।"

यह कह कर वारावारा पावलोवना ने भावुकता में भर कर मेरिया दमितरीवना का हाथ पकड़ लिया और उसे धीरे से अपने दस्तानों में दबाया और फिर सुर्ख होठों से चूम लिया। मेरिया दमितरीवना इस सुन्दर रमणी को जो बढ़िया कपड़े पहने हुए थी, जो उस के चरणों में लगभग साष्टाँग लेटी हुई थी, देख कर इतनी स्तब्ध रह गई कि उस के मुंह से एक शब्द भी नहीं निकल सका। वह चाहती थी कि उस से अपना हाथ छुड़ा ले और उसे बैठने के लिये कुर्सी पेश करे, और कोई नम्र शब्द कहे, वह अपनी जगह से उठी और वारावारा के सुगन्धित

माथे को चूमा। वारावारा बहुत प्रसन्न हुई।

"तुम्हारा क्या हाल है?" मेरिया दमितरीवना बोली, "मुझे आशा नहीं थी कि तुम आओगी। लेकिन तुम्हें देख कर बड़ी खुशी हुई। तुम समझ सकती हो कि मैं पति और पत्नी के आपस के झगड़े में किसी को दोष....."

"मेरा पति सर्वथा निरपराध है।" वारावारा ने उस की बात काटते हुए कहा, "सारा दोष मेरा है।"

"यह बहुत ही अच्छी भावना है।" मेरिया बोली, "बड़ी अच्छी। तुम कब आई हो? क्या उन से भेंट हुई? लेकिन, कृपया बैठ जाइये।"

"मैं कल आई हूँ।" वारावारा ने बैठते हुए उत्तर दिया, "प्रयोदोर इवानिच से भेंट हो चुकी है और बात भी हुई है?"

"तो, वे क्या कहते हैं?"

"मैं डरती थी कि मुझे एक दम आई देख कर बड़े नाराज होंगे, लेकिन उन्होंने मुझे दुतकारा नहीं।"

"इस का मतलब है कि उन्होंने.....हां, हां, मैं समझती हूँ।" मेरिया बोली, "वे ऊपर कुछ रूखे दीख पड़ते हैं, लेकिन भीतर से बहुत ही सहृदय हैं।"

"प्रयोदोर इवानिच ने मुझे क्षमा नहीं किया, मेरी बात तक नहीं सुनी.....लेकिन इतनी कृपा की कि मुझे रहने के लिये लात्रीकी दे दी।"

"ओह! वह बहुत ही सुन्दर जागीर है!"

"मैं उन के आदेश के अनुसार कल वहां जा रही हूँ। लेकिन पहले आप से मिल लेना उचित समझा।"

"इस के लिये धन्यवाद, बहुत बहुत धन्यवाद। आदमी को सम्बन्धियों को कभी नहीं भूलना चाहिये। तुम तो रूसी भी बहुत

अच्छी बोलती हो।"

वारावारा पावलोवना ने एक आह भरी !

"मेरिया दमीतरीवना मुझे यह मालूम है कि मैं बहुत दिनों परदेश में रही हूँ, लेकिन मेरा हृदय सदा रूसी रहा है और अपनी जन्म भूमि को मैंने कभी नहीं भुलाया।"

"खूब, खूब, यह बहुत अच्छी बात है। फ्योदोर इवानिच को तुम्हारे लौटने की आशा नहीं थी.....हां, मैं यह ठीक कह रही हूँ। तुम पेरिस में थीं। तुम्हारी यह शाल बहुत ही सुन्दर है।"

"तुम्हें यह पसंद है ?" वारावारा ने झट उसे अपने कन्धों से उतारा, "यह बहुत ही सादी है, मादाम बोदरान ने मुझे दी थी।"

"मादाम बोदरान ने ! कितनी सुन्दर और चिकनी है ! मेरा खयाल है कि तुम वहां से बहुत सी चीजें लाई होंगी, काश मैं उन्हें एक नज़र देख सकती !"

"प्यारी चाची, मेरी तमाम चीजें आप ही की तो हैं। अगर आप चाहें तो आप की नौकरानी के हाथ मैं कुछ चीज़ें भेज सकती हूँ। मैं भी अपने साथ पेरिस से एक नौकरानी लाई हूँ, वह पोशाक बनाने में बड़ी चतुर है।"

"यह तुम्हारी बड़ी कृपा है लेकिन मैं तुम्हें कष्ट देना नहीं चाहती।"

"अगर आप मुझे प्रसन्न करना चाहती हैं, तो खुद मुझे अपनी सम्पत्ति समझें।" वारावारा ने कहा—

मेरिया दमितरीवना द्रवित हो उठी। "तुम कितनी अच्छी हो।" वह बोली, "लेकिन तुम यह अपना हैट और दस्ताने क्यों नहीं पहनतीं ?"

"ओह, क्या वाकई ?" वारावारा पावलोवना ने उस के हाथों को दीन भाव से पकड़ते हुए पूछा।

"क्यों नहीं, अवश्य। आज तुम हमारे साथ भोजन करोगी।

मैं.....मैं तुम्हें अपनी लड़की से मिलाऊंगी।" मेरिया दमितरीवना ने कुछ अधीरता से देखा। "ओह मैंने यह क्या कह दिया....." उस ने सोचा और फिर बोली, "वह इस समय कुछ बीमार है।"

"आप कितनी अच्छी हैं।" वारावारा पावलोवना बोली और अपना रूमाल आंखों से छुआया।

एक नौकर लड़के ने गेदोनोवस्की के आने की सूचना दी। पुराने वाचाल ने प्रणाम करते और मुस्कराते हुए कमरे में प्रवेश किया। मेरिया दमितरीवना ने अपनी मेहमान से उस का परिचय कराया। पहले तो वह बनने और लगी लिपटी बातें करने लगा, लेकिन वारा वारा पावलोवना इतनी शालीन और शिष्ट थी, कि उस के कान शीघ्र एक अनुपम रस का स्वाद ग्रहण करने लगे, वह चहकने और गप्पें हांकने लगा, चापलूसी का मधुर अमृत उस की जबान से बहने लगा। वारावार पावलोवना एक सधी हुई मुस्कराहट के साथ सुनती रही और फिर खुद भी वार्तालाप में भाग लेने लगी। उसने धीमे स्वर में पेरिस की, अपनी यात्रा की और वादेन की बातें सुनाईं, जिन पर मेरिया दमितरीवना दोबार ठहाका मारकर हंसी और दोनों बार उस ने आह भरी जैसे हंसी उस की व्यथित हृदय को असह्य हो, उस ने दूसरे दिन आदा को साथ लाने की आज्ञा प्राप्त की, अपने दस्ताने उतार कर सुन्दर नाखून दिखाये, सुगंधियों की बातें छिड़ीं, विक्टोरिया सुगंधि, एक नई ब्रिटिश सुगंधि की एक बोतल लाने का वादा किया और वह एक बच्चे के सदृश खिल उठी जब मेरिया दमितरोवना ने उसे उपहार रूप में गहण करना स्वीकार किया। उस की आंखों में सचमुच आवेग से आंसू उमड़ आये, जब उस ने पहली बार रूस के गिरजा घरों के घन्टों की आवाज़ सुनी, "यह ध्वनि मेरे हृदय में उतरती जा रही है।" वह बड़बड़ाई।

उसी समय लीज़ा ने कमरे में प्रवेश किया।

सुबह ही से, जबसे उसे लाव्रेंस्की की चिट मिली थी, वह भय से भरी हुई अपने आपको उसकी पत्नी के सम्मुख आने के लिये तैयार कर रही थी, उसे आशा थी कि भेंट जरूर होगी। उसने निश्चय किया था कि मैं उसके सम्मुख आने से झिझकूँगी नहीं, इसे वह अपनी पापिष्ट आशाओं का प्रायश्चित समझती थी। प्रारब्ध के इस हठात संकट ने उसके अस्तित्व के प्रत्येक अणु को झंझोड़ दिया था, उसका मुंह लटक गया था, लेकिन उसने एक भी आंसू नहीं बहाया था। "यही ठीक साधना है।" उसने एक द्वेष भावना को, जो उसकी आत्मा को कोंच रही थी, बलात दबाते हुए अपने आपसे कहा।

"हां, मुझे ज़रूर जाना चाहिये।" उसने मैडम लाव्रेंस्की के आने की सूचना सुनते ही सोचा और वह नीचे उतर आई.....लेकिन इससे पहले कि वह दरवाज़ा खोलने का साहस कर सके, वह काफ़ी देर मुलाकाती कमरे के बाहर खड़ी रही। "मैं उस की अपराधी हूँ।" यह भाव मन में लिये उसने भीतर प्रवेश किया। उसने हिम्मत करके उस पर एक दृष्टि डाली और वह हिम्मत करके मुस्कराई।

वारावारा पावलोवना उसे देखते ही मिलने के लिये आगे बढ़ी और सिर झुकाकर उसका अभिवादन करते हुए बोली, "मुझे अपना परिचय देने की आज्ञा दीजिये, तुम्हारी माता ने बड़ी उदारता दिखाई है और मैं तुम से भी इसी उदार व्यवहार की आशा रखती हूँ।" वारावारा पावलोवना ने जब अंतिम शब्द कहे तो उसकी मुख मुद्रा, उसकी कपट मुस्कान उसकी सर्द फिर भी नर्म निगाह, उसके हाथों और कंधों की गति, वह गाऊन जो उसने पहन रखी थी सारांश यह कि उसका समस्त अस्तित्व लीज़ा को घृणा और उपेक्षा से भर रहा था। उसने बिना एक शब्द कहे अपना हाथ फैला दिया।

"लड़की मुझ से कहां पार पायेगी।" वारावारा ने लीज़ा के सर्द हाथ को दबाते हुए सोचा और मेरिया को सम्बोधित करते हुए कहा

"बड़ी चतुर लड़की है।" लीज़ा आरक्त हो गई। उसे यह शब्द व्यंग और उपहास से भरे दिखाई दिये लेकिन अपनी भावनाओं पर भरोसा न करते हुए वह खिड़की के निकट बैठ गई। लेकिन वाराबारा पावलोवना ने वहाँ भी उसे शांति बैठने नहीं दिया, वह उठकर उसके पास चली गई और उसकी सुरुचि और चतुरता के लिये उसे बधाई देने लगी। लीज़ा का हृदय तीव्र वेग और व्यथा से धड़कने लगा। उसने अपनी ठोड़ी ऊंची रखने का भरसक प्रयास किया। उसे लगता था कि वाराबारा पावलोवना को सब मालूम है और अपनी दुष्ट मृदुता से वह उसे कोंच रही है। सौभाग्यवश गेदोनोवस्की वाराबारा से बातें करने लगा और उसका ध्यान दूसरी ओर आकर्षित हुआ।

लीज़ा ने गर्दन घुमाई और वाराबारा को ध्यान से देखा।

"यह औरत है।" उसने सोचा, "जिसे वह कभी प्रेम करता था।" लेकिन उसने लाव्रेत्स्की के विचार को तत्क्षण अपने मस्तिष्क से झटक दिया, क्योंकि उसे अपने अधीर हो उठने का भय था। उसने हल्का हल्का सिर दर्द महसूस किया। मेरिया दमितरीवना संगीत की बातें करने लगी।

"मैंने सुना है" उसने वाराबारा को सम्बोधित करते हुए कहा, कि तुम संगीत में कुशल हो।"

"लेकिन एक अरसे से नहीं बजाया" वाराबारा ने झट पियानो पर बैठते और उस पर अपनी अंगुलिया चलाते हुए कहा।

"क्या मैं बजाऊं!"

"ज़रूर!"

वाराबारा पावलोवना ने हर्ज के एक कठिन संगीत को बहुत ही कुशलता और सफलता से सुनाया। उसमें बला की स्फूर्ति और शक्ति थी।

"बहुत ख़ूब" गेदोनोवस्की चिल्लाया।

"अति सुन्दर!" मेरिया दमितरीवना बोली और पहली बार उसका नाम लेते हुए कहा, "वारावारा पावलोवना तुम ने सचमुच मुझे चकित कर दिया है। हमारे यहां एक जर्मन संगीतकार है, जो बुढ़ापे के कारण सठिया गया है; लेकिन उसे संगीत का अच्छा ज्ञान है। लीज़ा को संगीत वही सिखाता है। तुम्हारा संगीत सुनकर वह मुग्ध हो जायेगा।"

"क्या इलिज़ावेटा मिखोलोवना भी संगीत जानती हैं?" वारावारा पावलोवना ने अपना सिर तनिक उस की ओर घुमाते हुए पूछा।

"हां, कुछ बुरा नहीं बजाती। पर तुम्हारे साथ उस की कोई तुलना नहीं। लेकिन यहाँ एक और नौजवान है, उससे तुम्हें ज़रूर मिलना चाहिये। वह सचमुच कलाकार है और खुद संगीत बनाता है। सिर्फ़ वही तुम्हारे संगीत की सच्ची प्रशंसा कर सकता है।"

"एक नौजवान?" वारावारा पावलोवना ने पूछा, "वह कौन है? कोई ग़रीब आदमी?"

"नहीं प्रिय, वह सिर्फ़ यहां नहीं सेंट पीटर्ज़बर्ग में भी बहुत ही सम्मानित व्यक्ति है। ऊंचे से ऊंचे समाज में उस का आदर होता है। शायद तुम ने उस का नाम सुना हो, पैंशिन, व्लाडीमीर निकोलाईच वह सरकारी काम से यहां है.....मैं समझती हूँ कि वह एक भावी मंत्री है।"

"और एक कलाकार?"

"एक सच्चा कलाकार और अत्यंत नम्र," तुम उस से ज़रूर मिलना। वह अक्सर यहाँ आता है। मैंने आज शाम को भी उसे बुलाया है। मुझे आशा है कि वह अवश्य आयेगा।" मेरिया दमितरीवना ने तनिक आह भर कर और उदास मुस्कराहट से कहा।

लीज़ा इस मुस्कराहट का मतलब समझती थी, लेकिन इस समय वह ऐसी स्थिति में थी कि इस की कुछ परवाह न करे।

"और नौजवान ?" पावलोवना ने फिर पूछा।

"अठाईस वर्ष का, और बहुत ही सुन्दर।"

"एक आदर्श नौज़वान, मेरा खयाल है।" गेदोनोवस्की ने कहा।

पावलोवना ने ज़ोर से पियानो बजाया। उस का स्वर इतना तेज़ था कि गेदोनोवस्की लड़खड़ा गया। मधुर संगीत के आरम्भ में उस ने अकस्मात "लूशिया" से एक विषाद पूर्ण संगीत शुरू किया। शायद उसे यह ध्यान था कि मधुर संगीत उस की स्थिति के अनुरूप नहीं है। एक स्थान पर संगीत इतना भावपूर्ण हो गया कि उस ने मेरिया दमितरीवना को हिला दिया।

"क्या भावनाएँ हैं।" उसने गेदोनोवस्की से धीरे से कहा।

"अति सुन्दर।" गेदोनोवस्की ने आंख की पुतलियों को घुमाते हुए उत्तर दिया।

भोजन का समय हो गया। मार्फ़ा तिमोफ़ेवना उस समय नीचे आई जब शोरबा प्यालों में डाला जा चुका था। उसने बारबार पावलोवना को उदासीनता से प्रणाम किया, हूँ, हाँ में उस की बातों का उत्तर दिया और उस की ओर आंख उठाकर भी नहीं देखा। बारबारा शीघ्र ही समझ गई कि इस बुढ़िया से कुछ नहीं मिलेगा, इस लिये उस ने, उस से बात करना छोड़ दिया। अपने मेहमान पर मेरिया दमितरीवना सब से अधिक मेहरबान थी, उसे मार्फ़ा का रूखापन अच्छा नहीं लगा। मार्फ़ा ने केवल बारबारा पावलोवना ही की उपेक्षा नहीं की, उस ने लीज़ा की ओर भी नहीं देखा, वैसे उस की आंखें खूब चमक रही थीं। वह पत्थर की मूर्ति सी बनी बैठी रही, होंठ भिंचे हुए थे और रंग पीला था, और वह कुछ खा नहीं रही थी। लीज़ा शांत दिखाई देती थी। उस के भीतर का तूफ़ान सचमुच थम गया था, वह विचित्र ढंग से सर्द पड़ गई थी, जैसे एक अपराधी। खाने पर बारबारा पावलोवना भी अधिक नहीं बोल रही थी, वह कुछ सुकड़ सी गई थी और उदास

दिखाई देती थी। सिर्फ़ गेद्रोनोव्स्की लगातार बोल रहा था और अपनी कहानियाँ सुनाए जा रहा था, वह बार बार मार्फ़ा की ओर देख कर गला साफ़ करता था—क्योंकि उस की उपस्थिति में वह जब भी झूठ बोलता था तो उस के गले में बात जैसे अटक जाती थी—लेकिन मार्फ़ा ने उसे न कहीं टोका और न रोका। भोजन के उपरान्त मालूम हुआ कि वारावारा को रमी[1] का बड़ा शौक है। मेरिया दमित्रोवना इस औरत की बुद्धि से इतनी प्रभावित हुई कि वह सोचने लगी—"फ़्योदोर इवानिच कितना मूर्ख है। अजीब बात है कि वह इस औरत को पसंद नहीं करता।"

वह वारावारा पावलोवना और गेद्रोनोव्स्की के साथ ताश खेलने लगी और मार्फ़ा तिमोफ़ेवना, लीज़ा को यह कहती हुई कि वह सुस्त है, ऊपर ले गई। सचमुच उसे सिर दर्द था।

"हां, उसे सख़्त सिर दर्द रहती है।" मेरिया दमित्रोवना आंखें घुमाती हुई वारावारा को सम्बोधित करके बोली, ख़ुद मुझे भी कभी कभी सिर दर्द हो जाता है....."

"वाक़ई!" वारावारा ने कहा।

लीज़ा अपनी बुआ के कमरे में पहुँची और एक कुर्सी में धम से गिर पड़ी। मार्फ़ा तिमोफ़ेवना देर तक उसे चुप चाप देखती रही, तब धीरे से उस के सामने बैठ गई और उस के हाथ चूमने लगी। लीज़ा आगे को झुक गई। सहसा उस का चेहरा तमतमा उठा—और वह रोने लगी। लेकिन उसने मार्फ़ा को उठने के लिये नहीं कहा, अपने हाथ भी नहीं खींचे। उसे लगा कि मुझे हाथ खींचने का, बूढ़ी मार्फ़ा को पश्चाताप और सम्वेदना व्यक्त करने से रोकने का, और कल जो कुछ हुआ है उस के लिये क्षमा मांगने से हटाने का कोई अधिकार नहीं है। मार्फ़ा उन पीले, अशक्त और बेचारे हाथों को अधिक नहीं चूम सकी

[1] ताश का एक खेल

क्योंकि उसकी आंखों से आंसू बह रहे थे, लीज़ा की आंखों से भी आँसू बह रहे थे, मेत्रोस बिल्ली आराम कुर्सी में फुरफुर कर रही थी, और मूर्ति के सामने नन्हे दिये, दीपक की शिखा कांप रहीं थी, जब कि दूसरे कमरे में दरवाज़े के पीछे खड़ी नस्तसया कार्पोवना अपने रूमाल की गेंद बनाये बड़ी जल्दी जल्दी आँखें पोंछ रही थी।

: ४० :

मुलाक़ाती कमरे में ताश खिल रही थी। मेरिया दमितरीवना जीत रही थी, इस लिये प्रसन्न थी। एक नौकर अन्दर आया और पैशिन के आने की सूचना दी।

मेरिया दमितरीवना ने पत्ते फेंक दिये और कुर्सी में इधर उधर डोलने लगी। वारावारा पावलोवना ने एक विचित्र मुस्कराहट के साथ उस की ओर देखा और फिर दरवाज़े की ओर निगाह उठाई। पैशिन ने कमरे में प्रवेश किया। उसने लम्बा स्याह कोट पहन रखा, जिस की अंग्रेजी तरज की ऊंची ऊंची कालर थी और उस ने बटन गले तक बंद कर रखे थे। शेव भी ताज़ा की हुई थी, आते ही कहा—"आप का हुक्म मानना सहज नहीं था, लेकिन फिर भी मैं आगया हूँ।"

"निस्संदेह, व्लाडीमीर।" मेरिया ने तेज़ स्वर में कहा, "तुम बिना पूछे भीतर आ जाया करते थे।"

पैशिन ने सिर्फ़ आँखों से उत्तर दिया, झुक कर प्रणाम किया, लेकिन उस का हाथ नहीं चूमा। मेरिया ने वारावारा पावलोवना से उस का परिचय कराया। वह एक कदम पीछे हट गया। अत्यंत नम्रता से झुक कर प्रणाम किया, लेकिन उस में आत्माभिमान और गौरव का भाव था और वह ताश खेलने की मेज़ पर जा बैठा। खेल जल्द ख़त्म हो गया। पैशिन ने इलीज़ावेटा मिखालोवना के बारे में पूछा तो उसे मालूम हुआ कि वह बीमार है। इस पर उस ने खेद प्रकट किया। फिर वह वारावारा पावलोवना से बातें करने लगा। वह एक

कूटनीतिज्ञ की भांति एक एक शब्द तोल कर कह रहा था और उस का उत्तर शिष्टता से सुनता था। लेकिन उस के इस कूटनीतिज्ञ स्वर और शिष्टता का वारावारा पावलोवना पर तनिक भी असर नहीं हुआ, और उस के उत्तर में कोई फ़र्क नहीं पड़ा। इस के विपरीत उसे कौतूहल हो रहा था और वह ध्यानपूर्वक पैंशिन का अध्ययन कर रही थी। बात करते समय उस के नथने ऐसे फड़फड़ा रहे थे जैसे वह अपने भीतर की विनोद भावना को बरबस दबा रही हो। मेरिया दमित्रीवना ने उसके गुणों को खूब बढ़ा-चढ़ाकर बयान किया। पैंशिन शिष्टता से सुनता रहा और कालरों के कारण जितना भी सम्भव हो सकता था उसने यह जताने के लिये अपना सिर आगे को झुकाया कि मुझे इस बात का पूर्ण विश्वास है।

वारावारा ने अपनी गिलाफ़ी आंखों को तनिक मूँदते हुए कहा, "मैं तो कुछ भी नहीं, आप बहुत बड़े कलाकार हैं और सुनती हूँ कि आप पियानो बजाने में अद्वितीय हैं।" उसने "अद्वितीय" का शब्द कुछ इस ढंग से उच्चारण किया था कि उसमें जादू का असर था और पैंशिन सुनकर झूम उठा। गम्भीरता का आवरण उतर गया चेहरे से मुस्कराहटें फूट निकलीं और मुख मंडल चमक उठा। उसने कोट के बटन खोल दिये और बोला, "मैं कोई अच्छा कलाकार नहीं, लेकिन तुम्हारी बाबत ज़रूर सुनता हूँ कि तुम वाकई एक कलाकार हो।" वह उठा और वारावारा के पीछे पीछे पियानो की ओर चला।

"इन से तैरते चांद का गीत सुनो।" मेरिया दमित्रीवना बोली।

"क्या आप गा लेते हैं?" वारावारा पावलोवना ने उस पर एक जगमगाती मुस्कराहट फेंक कर पूछा और बोली, "अच्छा बैठिये।"

पैंशिन ने बहाने बनाने शुरू किये।

"बैठिये।" उसने कुर्सी की पुश्त पर अंगुलियों से ताल देते हुए अपनी बात दोहराई।

वह बैठ गया, कालर ठीक किया और फिर तैरते चांद का गीत सुनाया।

"बहुत खूब!" वारावारा ने कहा, आप तो ख़ूब गाते हैं। बहुत ही ख़ूब। यही गीत एक बार फिर गाईये।"

वह पियानो के गिर्द घूम गईं और बिलकुल पैंशिन के सामने आ खड़ी हुई। उसने अपने स्वर में मधुर कम्पन भरकर गीत फिर सुनाया। वारावारा पावलोवना एकटक उसकी ओर देख रही थी। उसने कुहनियां पियानो पर टेक दी थीं और सफ़ेद हाथ उसके होंठों को छू रहे थे। पैंशिन ने गीत समाप्त किया।

"ख़ूब, ख़ूब, बहुत ख़ूब!" वारावारा ने गम्भीरता से दाद दी और बोली, "मुझे बताईये, आपने कोई औरतों के गाने योग्य भी गीत लिखा है?"

"मैं कहां गीत बनाता हूँ।" पैंशिन ने नमतापूर्वक कहा, "मैं तो सिर्फ़ दिल बहलाने के लिये तुकबंदी करता हूँ और वह आप देख चुकी हैं।.....लेकिन क्या आप भी गा लेती हैं।"

"हां।"

"ओह, हमें भी कुछ सुनाइये।" मेरिया दमितरीवना बोली।

"हम दोनों के स्वर मिल सकते हैं।" वारावारा पैंशिन से बोली "आओ हम कोई गीत एक साथ गायें। क्या आपको सोन जेलोसो, या लासीडरेम अथवा मीराला बयेंका लूना आता है?"

"एक बार मैंने मीराला बयेंका लूना गाया था" पैंशिन ने उत्तर दिया, "लेकिन यह बहुत पुरानी बात है, अब भूल गया हूं।"

"कुछ परवाह नहीं। पहले हम धीमे स्वर में रिहर्सल करते है। लीजिये मैं शुरू करती हूँ।"

वारावारा पावलोवाना पियानो पर बैठ गयी और पैंशिन उसके पहलू में खड़ा हो गया। उन दोनों ने धीमे स्वर में मीराला बयेंका का

गीत गाया। वारावारा पावलोवना ने तीन चार जगह पैशिन की भूल सुधारी। फिर दोनों ऊंचे स्वर में गाने लगे और उन्होंने वह गीत दो बार गाया। वारावारा पावलोवना के स्वर में ताज़गी नहीं थी, लेकिन उसने शीघ्र ही कमी की पूर्ति कर ली। शुरू में पैशिन कुछ झिझक रहा था और उसका स्वर तनिक उखड़ा हुआ था। लेकिन थोड़ी ही देर में झिझक दूर हो गई। उसका गाना निर्दोष नहीं था। लेकिन उसने कन्धे हिला-हिलाकर और एक सच्चे संगीतकार की भांति बारबार हाथ ऊपर उठाकर इस अभाव को पूरा किया। वारावारा ने एक थाल वर्ग के तीन गीत सुनाये और टेढ़ी चितवनों से एक फ्राँसिसी गीत सुनाया। मेरिया दमितरीवना को प्रसन्नता प्रकट करने के लिये शब्द नहीं मिलते थे। उसके मन में कई बार लीज़ा को बुलाने की बात आई। गेदोनोवस्की भी अपनी प्रसन्नता को व्यक्त करने में असमर्थ था। वह सिर हिला रहा था। एक बार उसने सहसा अंगड़ाई ली और उसने अपनी उत्कट भावना को छिपाने का प्रयत्न नहीं किया।

वारावारा पावलोवना ने यह अंगड़ाई देखी और सहसा पियानो बंद कर दिया। "संगीत ख़त्म हुआ। अब हम बातें करें।" उसने छातियों पर बाज़ुओं को मेहराब बनाते हुए कहा। पैशिन और वह फ्रांसिसी में हल्की फुल्की दिलचस्पी बातें करने लगे। "ऐसी बातें पेरिस के सैलूनों में होती हैं।" इनकी सानन्द विविध बातें सुनकर मेरिया दमितरीवना ने सोचा। पैशिन बहुत प्रसन्न था। उसकी आँखें चमक उठी और चेहरे से मुस्कराहटें फूट निकलीं। पहले मेरिया दमितरीवना से आँखें मिल जाने पर उसने मुंह पर हाथ फेरा और हल्की सी आह भरी लेकिन बाद में वह उसकी उपस्थिति से सर्वथा अनभिज्ञ हो गया और समस्त रूप से इस अर्ध सांसारिक, अर्ध-कलाकार, वारावारा पाव-लोवना में खो गया जो एक फ़िलासफ़र जान पड़ती थी। उसके पास हर बात का धड़धड़ाता उत्तर तैयार था। उसकी बातों में सन्देह और

असमंजस का लेशमात्र भी नहीं था। एक बात स्पष्ट थी कि उसे हर प्रकार के चतुर बुद्धिजीवी लोगों से मिलने और बातें करने का चिर-अभ्यास प्राप्त है। उसके समस्त विचार और भावनाएं पेरिस के गिर्द घूमती थीं। पैंशिन ने साहित्य की बात छेड़ी तो मालूम हुआ कि वह भी उसकी तरह सिर्फ़ फ्रांसिसी पुस्तकें पढ़ना पसंद करती है। जार्ज सैंड उसे बहुत प्रिय है, बाल्ज़ाक का वह आदर करती है यद्यपि वह दुरूह है।

उसके खयाल में सो और स्करार्इन को मानव स्वभाव का पूर्ण ज्ञान प्राप्त है और डयूमाज़ और फ़ेवल की वह अराधना करती है, मगर अपने मन में वह पालडी-काक को इन सब पर तरजीह देती है। लेकिन लेनो का उसने नाम तक भी नहीं लिया। वास्तव में उसे साहित्य से कोई ख़ास दिलचस्पी नहीं थी। वारावारा पावलोवना बड़ी चतुरता से उन विषयों के बारे में भी जिन के बारे में वह बहुत कम जानती थी स्पष्ट और सहज बातचीत करती थी। उसने प्रेम के विषय को जान बूझ कर नहीं छुआ क्योंकि वह बातचीत को कुत्सित भावनाओं से मुक्त और पवित्र रखना चाहती थी और यही बात आकर्षक बना रही थी। पैंशिन मंत्र मुग्ध-सा उसकी बातें सुन रहा था जब होंठ बन्द होते थे तो आंखें बोलती थीं। इन सुन्दर आंखों की मूक भाषा को ठीक ठीक समझना कठिन था, लेकिन उनका सारांश अबोध, मधुर और प्रभाव युक्त था। पैंशिन ने उनके गूढ़ अर्थ को समझने की कोशिश कि उसने यह भी कोशिश की कि वह आंखों से बात करे; लेकिन उसका प्रयास असफल रहा। उसने महसूस किया कि वारावारा पावलोवना विदेश आई से हुई सिंहनी है और वह उसमें बहुत ऊँचे स्तर पर खड़ी है और अन्त में वह सर्वथा विह्वल हो उठा। वारावारा की यह आदत थी कि जिस किसी से वह बातें करती थी आहिस्ता से बार बार उसकी आस्तीन को छुआ करती थी। इस मधुर स्पर्श ने व्लाडीमीर निकोलाईच को बेचैन कर दिया। वारावारा में लोगों से जल्द हिल-मिल

जाने का गुण था, दो घंटे में ही पैंशिन को ऐसा लगा जैसा वह उसे बरसों से जानता हो, जब कि लीज़ा जिस लड़की को वह वास्तव में प्यार करता था, जिसके सम्मुख कल शाम विवाह का प्रस्ताव रखा था, समय की धुंद में खो सी गई। चाय आई। बात चीत और भी रोचक हो गई। मेरिया दमितरीवना ने घंटी बजाकर नौकर को बुलाकर ऊपर भेजा ताकि वह लीज़ा से कहे कि अगर उसके सिर का दर्द अच्छा हो गया हो तो नीचे आजाये। लीज़ा का नाम सुनते ही पैंशिन अपने त्याग की बात करने लगा और यह बात बहस का विषय बन गई कि त्याग पुरुष अधिक करता है अथवा नारी। इस पर मेरिया दमितरीवना भड़क उठी और तुनक कर बोली कि पुरुष की अपेक्षा स्त्री हमेशा अधिक त्याग करती है और वह इस बात को अभी सिद्ध कर सकती है। यह कह कर उसने अपने शरीर का तिकोना बनाया और कोई अजीब सा उदाहरण देने लगी। वारावारा पावलोवना ने संगीत की एक पुस्तक उठाई, चेहरा उससे छिपा कर और केक का एक नन्हा टुकड़ा मुंह में डालते हुए पैंशिन की ओर झुकी और विद्रूप भाव से मुस्कराते हुए बोली—"ज़रा इस पालतू बिल्ली की ओर देखिये।" पैंशिन यह सुनकर चकित रह गया। वारावारा की आंखों में घृणा अंकित थी। पैंशिन, मेरिया दमितरीवना के सारे सम्मान और आदर को भूल गया, वह यह भी भूल गया कि वह उसे दावतें खिलाती रही है और उसने उसे रुपये कर्ज़ दे रखा है; वह (धूर्त आदमी) भी उसी मुस्कराहट और उसी ढंग से बोला "हां बिल्ली है।" और घृणा से कहा "खुजली पड़ी बिल्ली!"

वारावारा ने एक स्निग्ध दृष्टि उस पर डाली और उठ खड़ी हुई। लीज़ा ने भीतर प्रवेश किया। मार्फ़ा तिमोफेवना उसे आने को मना करती रही मगर वह नहीं मानी। वह कष्ट झेलने का निश्चय कर चुकी थी। वारावारा पावलोवना पैंशिन के साथ ही उसका स्वागत करने आगे

बढ़ी।

"तुम्हारा अब क्या हाल है !" पैशिन ने पूछा।

"धन्यवाद, मैं अब अच्छी हूँ।" लीज़ा ने उत्तर दिया।

"अभी हम गा रहे थे। वाराबारा पावलोवना बहुत अच्छा गाती हैं। बड़ा अफ़सोस है कि तुमने उन्हें नहीं सुना।"

"श्रीमती फ़्योदोर, आप यहां आइये।" मेरिया दमितरिवना ने कहा।

वाराबारा ने बच्चे की भांति आज्ञा का पालन किया और वह उसके पांवों के निकट एक छोटे स्टूल पर बैठ गई। मेरिया दमितरीवना के उसे बुलाने का अभिप्राय यह था कि उसकी बेटी कम से कम थोड़ी देर ही पैशिन के साथ अकेली रही, उसे यह आशा थी कि लड़की को अब भी समझ आयेगी। इसके अतिरिक्त उस के मन में एक विचार उठा था जिसे वह जल्दी सुना देना चाहती।

"मुझे अभी अभी यह बात सूझी है।" वह वाराबारा से बोली, "मैं तुम्हारे पति से तुम्हारा समझौता कराना चाहती हूँ। ज़रूरी नहीं मुझे सफ़लता प्राप्त हो। लेकिन, उस पर मेरा बड़ा असर है।"

वाराबारा ने धीरे से आखें ऊपर उठाकर मेरिया दमिरीवना की ओर देखा और हाथों की सुन्दर महराब बनाई।

"मैं आपका उपकार कभी न भूलूंगी।" उसने अपने स्वर में करुणा भर कर कहा, "आपका धन्यवाद करने के लिये मेरे पास शब्द नहीं हैं। लेकिन मैंने फ़्योदोर इवानिच से इतना बुरा व्यवहार किया है कि वह मुझे कभी क्षमा नहीं करेंगे।"

"क्या तुमने वाक़ई...बुरा व्यवहार किया है।" मेरिया दमितरी-वना ने जैसे थाह लेने के लिये कहा।

"मुझ से मत पूछिये।" वाराबारा ने आंखे झुका कर कहा "मैं जवान और अबोध थी...लेकिन इस से मेरा दोष कम नहीं होता।"

"कुछ भी हो, हम कोशिश करेंगे। निराश होने की ज़रूरत नहीं है!" मेरिया बोली और वह उसके गालों को प्यार से थपथपाना चाहती थी मगर उसके मुँह की ओर देखकर रुक गई, "वह काफ़ी दुखी है।" उसने सोचा, लेकिन फिर भी है शेरनी।

"क्या तुम बीमार हो?" उधर पैंशिन लीज़ा से पूछ रहा था।

"हां, मेरी तबीयत ठीक नहीं।"

"मैं तुम्हें समझता हूँ" काफ़ी देर चुप रहने के बाद वह गुन-गुनाया, "हां, मैं तुम्हें समझता हूँ।"

"क्या मतलब?"

"मैं तुम्हें समझता हूँ।" वह फिर बोला। उसके पास कहने के लिये सिर्फ़ यही एक बात रह गई थी।

लीज़ा को बुरा लगा और उसने सोचा—"अच्छा, यों ही सही!" पैंशिन एक रहस्यपूर्ण मुद्रा धारण करके खामोश हो रहा और कठोर भाव से एक ओर को देखने लगा।

"मेरा ख़याल है कि ग्यारह बज गये।" मेरिया दमितरीवना बोली।

अतिथि उसका मतलब समझ गये और चलने के लिये उठ खड़े हुए। बारावारा पावलोवना से यह वादा लिया गया कि वह कल दोपहर के भोजन पर आयगी और आदा को अपने साथ लायेगी। गेदोनोवस्की ने, जो एक कोने में बैठा ऊँघ रहा था, उसे घर छोड़ आने का प्रस्ताव किया। पैंशिन ने झुककर सब को विनीत भाव से प्रणाम किया और जब बारावारा अपनी गाड़ी में सवार हो रही थी तो उसको सहारा देते हुए उसका हाथ दबाया और कहा—"नमस्कार!" गेदोनोवस्की उसके साथ ही बैठ गया। तमाम रास्ता; गोया इत्तफाक ही से, उसके कोमल पांव का पंजा गेदोनोवस्की के पंजे पर टिका रहा। वह अपने भीतर एक गुदगुदी सी महसूस करता रहा और उसकी ओर बड़े ध्यान से

देखता रहा। वह उससे बातें कर रही थी और जब कभी गली के लैम्प का प्रकाश गाड़ी पर पड़ता था तो विचित्र ढंग से आंखें मटकाती थी। उसने जो संगीत सुनाया था वह उसके कानों में गूँज रहा था। उसे नाच घरों की और संगीत के साथ नाचने वालों की याद आ रही थी, वह याद उसके खून को गर्मा रही थी, उसकी आंखों में उन्माद भरा था और होठों पर मधुर मुस्कान थी। जब गाड़ी घर पर रुकी तो वह धीरे से नीचे उतर गई, सिर्फ़ एक सिंहनी ही ऐसा कर सकती थी।—उसने गेदोनोवस्की की ओर देखा और फिर एकदम खिल खिलाकर हंस पड़ी।

"बड़ी मज़ेदार औरत है!" गेदोनोवस्की घर जाते समय सोच रहा था जहां एक नौकर वोडका का गिलास हाथ में लिये उसका इन्तजार कर रहा था।

"अच्छा माना कि मैं एक सम्मानित व्यक्ति हूँ।...लेकिन उसके कहकहा मारकर हंसने का क्या मतलब था?"

मार्फ़ा तिमोफ़ेवना तमाम रात लीज़ा के सिरहाने बैठी रही।

: ४१ :

लाव्रेत्स्की ने डेढ़ दिन वासिल्येवस्कोये में बिताया और सारा वक्त पड़ोस में घूमते हुए काटा। वह देर तक एक जगह पर नहीं बैठ सकता था। उसका हृदय दुख से दो टूक हुआ जा रहा था। वह अपनी सतत, तीव्र और असमर्थ भावनाओं के संताप से जलभुन रहा था। वह जब पहले दिन गांव में आया था—उसे वह सब याद आ रही थी और वे योजनाएँ याद आ रही थीं जो उसने उस दिन बनाई थी, और उसे अपने आप पर क्रोध आ रहा था। वह जिसे अपना कर्त्तव्य—अपने भविष्य का एक मात्र कार्य समझता था, उसे क्यों नहीं कर सका? प्रसन्नता की प्यास—एक बार फिर प्रसन्नता की प्यास! "शायद मिखालोविच ठीक कहता था" उसने सोचा, "तुम जीवन की प्रसन्नताओं का एक बार फिर भोग करना चाहते हो। तुम यह भूल गये कि यह ऐश्वर्य स्वप्न मात्र है। जब यह मनुष्य के जीवन में आता भी है, एक अनाधिकृत वरदान होता है। तुम कहते हो कि यह सम्पूर्ण नहीं था, ऊपरी और अधूरा था? मान लिया; तब पूर्ण उल्लास पर अपना अधिकार सिद्ध करो! इर्द गिर्द निगाह डालो, यहां किसे उल्लास प्राप्त है, कौन प्रसन्न है? उस किसान को लीजिये जो दरांती उठाये चरागाह की ओर जा रहा है—शायद वह अपने प्रारब्ध से संतुष्ट हो? . ..."

"क्या तुम उससे अपना जीवन बदल लेना पसंद करोगे? अपनी माँ की बात सोचो, उसने जीवन से कितना थोड़ा चाहा—और उसे क्या मिला? अब यह बात स्पष्ट है कि जब तुम पैंशिन से कह रहे थे

कि मैं रूस में खेती करने आया हूँ तो तुम शेखी बघार रहे थे; वास्तव में तुम इस वृद्धावस्था में लड़कियों के पीछे दौड़ने आये हो? योंही तुम्हें पता चला कि तुम अब संसार में स्वतंत्र हो, सब कुछ छोड़-छाड़ कर अपने कर्त्तव्य को भूलकर तुम एक स्कूल के लड़के की भांति एक रंगीन तितली के पीछे फिरने लगे.....इन भावनाओं के मध्य लीज़ा का चित्र कई बार उसके मस्तिष्क में उभरा, उसने बरबस उसे परे धकेल दिया जैसे वह दूसरे मनोहर घृणित और विविध चित्रों को स्मृति-पट से दूर रखने का प्रयत्न कर रहा था। बूढ़े एंटोन ने देखा कि उसका स्वामी आज खिन्न है, उसने दो तीन बार किवाड़ के पीछे आह भर कर और एक दो बार दरवाज़े में आह भर कर उसके पास जाने और यह मश्विरा देने का साहस किया कि वह कोई गर्म चीज़ पिये। लाव्रेस्की बूढ़े पर चिल्लाया, और उसे कमरे से निकल जाने को कहा और फिर इस कठोर व्यवहार के लिये क्षमा मांगी; लेकिन इसका असर यह हुआ कि एंटोन पहले से भी अधिक उदास हो गया। लाव्रेस्की मुलाकाती कमरे में अधिक देर नहीं ठहर सका। ऐसा लगता था कि उसका दादा तस्वीर में से अपने कुल के इस दुर्बल व्यक्ति को व्यंग भाव से देख रहा हो। "वाह, यह बेचारे!" वह अपने पोपले मुंह से कहता हुआ जान पड़ता था। "नहीं" उसने सोचा, "मैं अपने आप को यों नष्ट नहीं होने दूंगा। यह मामूली ज़ख्म (युद्ध में बुरी तरह आहत होने वाले लोग अपने ज़ख्मों को हमेशा मामूली कहते हैं। आदमी अगर अपने आपको धोखा न दे तो धरती पर जीवित रहने का कोई सहारा नहीं रह जाता) जान लेवा नहीं हो सकता। मैं काफ़ी सशक्त हूँ। यह दुख भी सह सकता हूँ। प्रसन्नता निकट थी। मुझे उसका एक और अवसर मिला.....लेकिन वह हठात लुप्त हो गया, जैसे एक भिखारी को लाटरी का बहुत सा धन पा जाने की आशा बंधी हो। अगर इसे नहीं होना तो नहीं होगा, बस यही तो है। मैं जी कड़ा करके अपने

काम में जुट जाऊंगा और इसे भूलने का यत्न करूँगा। यह कोई नई बात नहीं। मैंने पहले भी तो दुख सहा है। तूफान आया है तो आने दो। मैं एक सबल व्यक्ति के सदृश उसका सामना करूंगा। शुतर मुर्ग़ की तरह रेत में सिर छिपा कर बैठ जाने से क्या लाभ ? मैं साहस का परिचय दूँगा। यह सब बेकार है। एंटोन !" वह चिल्लाया, गाड़ी अभी बाहर निकलवाओ।" "हां ?" वह फिर सोचने लगा, "मुझे अपने आपको वश में रखना चाहिये। मुझे संयम से काम लेना है....."

इस प्रकार के तर्क-वितर्क से लाव्रेस्की ने अपने आपको सांत्वना देने का प्रयत्न किया। लेकिन दुख बहुत गहरा था। यहां तक के उसकी घोड़ी भी जो भले ही भावनाओं से रिक्त थी, मन रखती थी। जब वह शहर जाने के लिये गाड़ी में बैठा, वह सिर झुकाए उसके पीछे चली। उसकी आंखों में विषाद भरा था। घोड़े दुल्की चल रहे थे। वह निश्चल बैठा अपने आगे फैली हुई सड़क को देख रहा था।

: ४२ :

लीज़ा ने कल लाव्रेस्की को लिखा था कि शाम को वह उसे मिले। लेकिन लाव्रेस्की पहले अपने घर गया। घर पर न पत्नी थी, न लड़की। नौकरों से पूछने पर मालूम हुआ कि वह बच्चे को साथ ले कर कालिटीन परिवार से मिलने गई है। यह सुनकर वह स्तब्ध रह गया और उसे क्रोध भी आया—"इस का मतलब है कि वारावारा पावलोवना ने मुझे नष्ट करने का निश्चय कर लिया है।" उसने सोचा, उस का हृदय घृणा से जल रहा था, खिलौने, कपड़े और किताबें जो चीज़ रास्ते में पड़ी थी उसे ठुकरा रहा था। आखिर उस ने नौकरानी को बुला कर हुक्म दिया कि यह तमाम "कूड़ा करकट" उठाकर बाहर फेंक दो।

"बहुत अच्छा।" कह कर जस्टाइन ने चीजें समेटना शुरू किया। उस के होंठ भिंचे हुए थे और उस की गति विधि से मालूम हो रहा था कि वह लाव्रेस्की को एक बिफरे हुए रीछ से अधिक नहीं समझती वह नौकरानी की ओर देखता रहा मन ही मन में उस की धृष्टता और शठता पर जलता रहा। अंत में उसे बाहर जाने का हुक्म दिया और इन्तज़ार करने के बावजूद जब पावलोवना नहीं लौटी तो उसने खुद कालीटिन परिवार में जाने का निश्चय किया और यह भी तय किया कि वह मेरिया दमितरीवना से (वह मुलाकाती कमरे से नहीं जायेगा जहां उसकी पत्नी उपस्थित होगी) मिलने के बजाय मार्फ़ा से मिलेगा। और उसे याद था कि जीना नौकरों के कमरे से सीधा ऊपर जाता है।

यह सोच कर वह चल पड़ा और संयोग से शुरोचका उसे आंगन ही में मिल गई जो उसे मार्फ़ा तिमोफ़ेवना के कमरे में ले गई। उस ने मार्फ़ा को अपने स्वभाव के प्रतिकूल अकेला पाया। वह एक कोने में सुकड़ी बैठी थी, टोपी सिर पर नहीं थी और उस के हाथ छाती पर थे। वह लाव्रेस्की को देखते ही घबरा कर उठी और तेज़ तेज़ कदमों से कमरे में इधर उधर घूमने लगी जैसे अपनी टोपी खोज रही हो। "अच्छा तुम हो, तुम।" उस ने लाव्रेस्की की ओर बिना देखे और कमरे में बराबर घूमते हुए कहा।

"बहुत खूब, नमस्ते! अच्छा आ कि तुम हुआ गये। कल कहाँ थे? तो वह आ गई है। वाकई। अब चारा ही क्या है।"

लाव्रेस्की एक कुर्सी में धंस गया।

"बैठो, बैठो।" मार्फ़ा कहती रही, "तुम सीधे ऊपर आये हो? क्यों, विश्वास करने। ठीक ही तो है गोया तुम मुझे मिलने आये हो? धन्यवाद।"

वह तनिक रुकी। लाव्रेस्की नहीं जानता था कि उस से क्या कहे। लेकिन वह उसे खूब समझती थी। "लीज़ा..... लीज़ा अभी यहाँ थी।" उसने अपने गले के डोरे खोलते और बांधते हुए कहा, "वह स्वस्थ नहीं है। शुरोचका, तुम कहां हो? ज़रा इधर आओ। क्या तुम निचली नहीं बैठ सकती? मेरे भी सिर में दर्द है। शायद उस गाने बजाने के कारण हुआ है।"

"हुआ, गाना कैसा?"

"सारा दिन तो ऊधम मचा रहा। चा चा, ची ची, बिल्कुल घुड़सलों की भांति। ऐसे ऐसे सुर निकाले कि सिर तो क्या तुम्हारे दांत तक दुखने लगें। वह पैंशिन और तुम्हारी श्रीमती मिल कर गारहे थे। वे कितनी जल्दी एक दूसरे से हिल मिल गये जैसे घनिष्ठ सम्बन्धी और चिर परिचित हों। यह भी खूब रही। एक आवारा कुत्ता भी घर

ढूंढता है। मगर जब तक उसे पुचकारने वाले लोग मौजूद हैं, तुम उसका कुछ बिगाड़ भी नहीं सकते।"

"तो भी, मुझे इस बात का विश्वास नहीं होता।" लाव्रेंस्की बोला, "यह तो बड़े साहस की बात है।"

"साहस नहीं, मेरे प्यारे, यह सिर्फ़ अभ्यास है। भगवान मुझे क्षमा करें। सुना है कि तुम उसे लाव्रीकी भेज रहे हो!"

"हां, वह जागीर में उसे सौंप रहा हूँ।"

"क्या उसने रुपया भी मांगा है?"

"अभी नहीं।"

"ठहरो, वह भी मांगेगी। लेकिन मैंने तो तुम्हें अभी ध्यान से देखा है। क्या तुम बीमार हो?"

"नहीं।"

"शुरोचक।" मार्फ़ा ने आवाज दी, "जाओ और इलिज़ावेटा मिखोलोवना से कहो कि वह, नहीं यों कहो...क्या वह नीचे है!"

"हां।"

"उससे पूछो कि उसने मेरी पुस्तक का क्या किया। वह समझ जायगी।"

"बहुत अच्छा।"

बूढ़ी मार्फ़ा फिर इधर उधर घूमने लगी। वह कमरे में अलमारियों के दरवाज़े कभी खोलती और कभी बंद करती थी। लाव्रेंस्की अचल बैठा था। सहसा सीढ़ियों पर पांवों की हल्की हल्की थाप सुनाई दी और लीज़ा भीतर आई।

लाव्रेंस्की ने उठकर प्रणाम किया। लीज़ा दरवाज़े ही पर रुक गई।

"लीजा, प्यारी लीज़ा" मार्फ़ा तिमोफ़ेवना ने जल्दी जल्दी कहा, "मेरी पुस्तक कहां है? तुमने वह कहां रख दी है?"

"कौन सी पुस्तक ?"

"ओह पुस्तक। हाँ, मैंने तुम्हें बुलवाया है। बैठ जाओ। नीचे क्या हो रहा है। देखो, फ़्योदोर इवानिच आया है। तुम्हारे सिर दर्द का क्या हाल है ?"

"आराम है।"

"तुम यही कहती हो आराम है। नीचे क्या हो रहा है, कहीं गाना बजाना ?"

"नहीं. वे ताश खेल रहे हैं।"

"सचमुच ! इसका मतलब है कि सब गुणों में पूरी है। शुरोचका मेरा ख्याल है कि तुम बाग में जाकर खेलना चाहती हो, जाओ भागो।"

"नहीं तो....."

"नहीं क्यों। जाओ भागो। नस्तस्या कार्पोवना पहले ही बाग में है। जाओ उसके साथ खेलो। हां, बड़ी अच्छी लड़की है" शुरोचका चली गई। "मेरी टोपी कहां चली गई ? आखिर मैं उसे कहां ढूंढू।"

"ढूंढकर लाऊँ।" लीज़ा बोली।

"नहीं तुम बैठी रहो। मेरी भी टांगे हैं और मैं अभी चल फिर सकती हूँ। मेरा खयाल है कि वह सोने के कमरे में रह गई।"

लाव्रेस्की पर एक तिरछी निगाह डालकर वह चली गई और जाते हुए दरवाज़ा खुला छोड़ दिया, लेकिन दूसरे ही क्षण लौटकर उसे बन्द कर दिया।

लीज़ा कुर्सी की पुश्त का सहारा लेकर पीछे को झुक गई और मुंह हाथों में छिपा लिया। लाव्रेस्की उसी तरह बैठा रहा।

"सो हमें दोबारा यों मिलना था।" उसने निस्तब्धता भंग की।

लीज़ा ने चेहरे पर से हाथ उठाये।

"हां," उसने धीरे से कहा "हमें बहुत शीघ्र दंड मिल गया।"

"दंड !" लाव्रेंस्की गुनगुनाया "आखिर हमारा अपराध क्या था जिसका हमें दंड मिलता।"

लीज़ा की आंखे उसकी ओर उठ गईं। उन में न कष्ट था, न लोभ। वे फीकी और अंदर को धंसी हुई मालूम होती थीं। उसका मुख पीला था और होंठ खुले हुए थे।

लाव्रेंस्की का हृदय सम्वेदना और प्रेम से तड़प उठा।

"तुमने मुझे बुलवाया था मगर पहले ही अंत हो गया," वह बोला, "हां, यह कहानी शुरू होने से पहले ही समाप्त हो गई।"

"अब हमें इसे भूल जाना चाहिये।" लीज़ा बोली, "अच्छा हुआ तुम आ गये। मैं तुम्हें लिखना चाहती थी, मिलना और भी अच्छा हुआ। इस अवसर पर हम अपने दिलों की सफ़ाई करलें। मैं समझती हूँ कि तुम्हें अपनी पत्नी से समझौता कर लेना चाहिये।"

"लीज़ा !"

"मैं तुम से ऐसा करने की प्रार्थना करती हूँ। अब तक हम ने जो कुछ किया है, उस का यही एक प्रायश्चित है। सोचा—तुम मेरी इस प्रार्थना को अस्वीकार नहीं करोगे।"

"लीज़ा, भगवान के लिये—तुम जो चाहती हो वह असम्भव है। तुम जो भी कहो मैं करने को तैयार हूँ, लेकिन उस के साथ समझौता .....मैं और कुछ भी कर सकता हूँ। मैंने सब कुछ भुला दिया है और उसे क्षमा भी कर दिया, इस से अधिक मेरे बस में नहीं। मैं अपने हृदय को विवश नहीं कर सकता.....यह बहुत ज्यादा है।"

"मैं वह नहीं कह रही.....जो तुम समझ रहे हो, तुम उसके साथ नहीं रह सकते, न रहो। मगर उसे ठुकराओ मत।" लीज़ा ने

फिर मुंह हाथों से ढांप लिया, "अपनी नन्ही बच्ची का ही ख्याल करो, और मेरी यह बात मान लो।"

"बहुत अच्छा," लाव्रेंस्की ने होंठ कचकचाते हुए कहा, "मेरा ख्याल है कि मैं यह कर सकूंगा। इस प्रकार मैं अपने कर्त्तव्य का पालन करूंगा। लेकिन तुम क्या करोगी, तुम्हारा कर्त्तव्य क्या है?"

"मैं जानती हूँ मुझे क्या करना है।"

लाव्रेंस्की चौंका और उससे पूछा "तुम उस पैंशिन से ब्याह की बात तो नहीं सोच रहीं, क्या तुम?"

लीज़ा के होठों पर एक फीकी मुस्कराहट दौड़ गई।

"नहीं, नहीं।" वह बोली।

"ओह, लीज़ा, लीज़ा।" लाव्रेंस्की चिल्लाया, "हमारा जीवन कितना प्रसन्न होता।"

लीज़ा ने दोबारा उस की ओर देखा। "अब तुम देख रहे हो, फ़्योदोर इवानिच, प्रसन्नता हमारे नहीं, भगवान के आधीन है।"

"हाँ, क्यों कि तुम....."

दरवाज़ा खुला और मार्फ़ा तिमोफ़ेवना ने टोपी हाथ में लिये भीतर प्रवेश किया।

"आखिर मिल गई।" वह लाव्रेंस्की और लीज़ा के बीच में खड़ी कह रही थी, "शायद मैं खुद ही रख कर भूल गई। बुढ़ापा आदमी की यह हालत कर देता है, आह! ज़रा सोचो, जवानी में भी क्या नहीं होता। क्या तुम भी पत्नी के साथ लावीका जा रहे हो?" वह फ़्योदोर से पूछ रही थी।

"उस के साथ लावीका? और मैं? मुझे कुछ मालूम नहीं।" उस ने तनिक रुक कर कहा।

"क्या तुम नीचे जाओगे?"

"आज नहीं।"

"जैसी तुम्हारी इच्छा, लेकिन लीज़ा तुम्हें जाना चाहिये। ओह, मैंने अभी कुत्ते को भोजन नहीं दिया। ज़रा ठहरो, मैं अभी....."

और मार्फ़ा तिमोफ़ेवना बिना टोपी ही बाहर चली गई।

लाव्रेस्की उठकर लीज़ा के पास आया। "लीज़ा!" वह बोला, "हम सदा के लिये अलग हो रहे हैं। मेरा दिल टुकड़े टुकड़े हुआ जा रहा है—इस विदाई के समय तुम मुझे अपना हाथ दो।"

लीज़ा ने सिर ऊपर उठाकर अपनी भीगी हुई आंखों से देखा।

"नहीं।" वह बड़बड़ाई, और अपने हाथ को जो पहले ही फैल गया था, पीछे खींच लिया। नहीं, लाव्रेस्की (उस ने पहली बार यह नाम लिया) मैं तुम्हें अपना हाथ नहीं दूंगी। इससे क्या तुम्हें मालूम है कि मैं तुम्हें प्रेम करती हूँ।.....हाँ, मैं तुम्हें प्रेम करती हूँ।" उस ने भरसक प्रयत्न से कहा, "लेकिन नहीं.....नहीं।" उस ने रूमाल होंठों पर दबाया।

"कम से कम यह रूमाल ही मुझे दे दो।"

दरवाजा खुलने की आवाज़ आई.....रूमाल लीज़ा की गोद की ओर खिसका, लेकिन लाव्रेस्की ने उसे गिरने से पहले ही पकड़ा और जल्दी से जेब में ठूँस लिया। जब वह लौट रहा था, मार्फ़ा तिमोफ़ेवना की निगाह उस पर पड़ी।

"लीज़ा प्यारी, मेरा खयाल है कि तुम्हारी माता तुम्हें बुला रही हैं।" बुढ़िया ने कहा।

लीज़ा तत्काल उठी और बाहर चली गई। मार्फ़ा अपनी जगह कोने में जा बैठी। लाव्रेस्की भी जाने को तैयार हुआ।

"फ़ेदिया" वह बोली।

"हाँ, बुआ?"

"क्या तुम सम्मानित व्यक्ति हो?"

"क्या मतलब?"

"मैं तुम से पूछ रही हूँ—क्या तुम सम्मानित व्यक्ति हो ?"

"मेरा खयाल है कि मैं हूँ।"

"हूँ। मुझ से वादा करो कि तुम एक सम्मानित व्यक्ति हो।"

"हाँ, मैं वादा करता हूँ। लेकिन इससे तुम्हारा मतलब क्या है ?"

"मतलब मैं भी समझती हूँ और तुम भी समझते हो। अगर तुम इस मामले पर ज़रा सोचो, तो तुम झट समझ जाओगे कि मैं तुम से यह वचन क्यों मांग रही हूँ। अच्छा अब, मेरे प्यारे, अलविदा। मुझे मिलने आने के लिये धन्यवाद और याद रखना कि तुम ने मुझे अपने सम्मान के नाम पर वचन दिया है, फ़ेदिया, आओ, मुझे चूमो ? ऐह मेरे प्यारे लड़के, तुम्हारे लिये यह बहुत कठिन है, मैं जानती हूँ, लेकिन यह सहज किसी के लिये भी नहीं है। मैं पहले मक्खियों से ईर्ष्या करती थी—देखो, मेरा खयाल था कि उनकी जिंदगी मज़े में बीत रही है—आखिर एक रात मैंने एक मक्खी को मकड़ी के चंगुल में भिन भिनाते देखा, तब मैं समझी कि उन्हें अपना कष्ट है। हम सब विवश हैं, फ़ेदिया। अच्छा तुम अपना वादा मत भूलना, अब जाओ, अलविदा।"

लाव्रेस्की पिछवाड़े की सीढ़ियों से नीचे आया और वह दरवाज़े तक पहुँच गया था कि पीछे से एक नौकर ने उसे जा लिया।

"मेरिया दमतरीवना आपसे मिलना चाहती हैं।" उसने लाव्रेस्की से कहा।

"उनसे कहो कि मैं इस समय नहीं....."

"मालकिन कहती है कि मिलना बहुत जरूरी है।" नौकर ने फिर कहा, "उन्होंने मुझ से यह भी कहा था कि मैं आप को बताऊं कि वे अकेली ही हैं।"

"क्या मेहमान सब चले गये ?" लाव्रेस्की ने पूछा।

"जी हां।" नौकर ने उत्तर दिया।

लाव्रेस्की ने कंधे हिलाये और उस के पीछे पीछे चल दिया।

: ४३ :

मेरिया दमितरीवना कमरे में अकेली थी। वह वाल्टीरयन आराम कुर्सी में बैठी थी। उस के निकट जो मेज़ थी, उस पर शीशे के गिलास में रंगदार पानी भर कर गुलाब के फूलों का गुलदस्ता रखा हुआ था। वह व्यग्र थी और कुछ चिंतित दिखाई देती थी।

लाव्रेस्की ने भीतर प्रवेश किया।

"आप ने मुझे बुलाया है।" उस ने ऊपरी मन से अभिवादन करते हुए पूछा।

"हाँ।" मेरिया दमीतरीवना ने पानी का एक घूँट भर कर कहा, "मैंने सुना था कि तुम धीरे धीरे चाची के पास ऊपर चले गये हो, मैंने हुक्म दिया कि तुम्हें मेरे पास भेज दिया जाये। मैं तुम से कुछ बात करना चाहती हूं। कृपया बैठ जाओ।" मेरिया ने लम्बी सांस खींची और कहना जारी रखा, "तुम्हें मालूम है कि तुम्हारी पत्नी आ गई?"

"मुझे मालूम है।" लाव्रेस्की ने उत्तर दिया।

"बस ठीक है। मैं तुम से यह कहना चाहती थी कि वह मुझ से मिलने आई, मैंने स्वभावत उसका आदर सत्कार किया। इसी सम्बंध में मैं तुम से मिलना चाहती थी। भगवान की कृपा से सभी मेरा सम्मान करते हैं और संसार की कोई शक्ति मुझ से ऐसा व्यवहार नहीं करवा सकती जो निंदनीय और अनुचित हो। मैं समझती थी कि तुम्हें यह बात बुरी लगेगी। लेकिन मैं उसे इनकार न कर सकी।

तुम्हीं कहो मैं इनकार कैसे कर सकती थी, तुम्हारे ही नाते वह भी सम्बन्धी है, तुम अपने आप को मेरे स्थान पर रख कर सोचो, मैं अपना दरवाज़ा कैसे बन्द कर सकती थी—मिलना तो पड़ता ही ?"

"आप को इस विषय में तनिक भी चिंता नहीं करनी चाहिये, मेरिया दमितरीवना !" उस ने उत्तर दिया, "आप का व्यवहर बिलकुल उचित था। मैं बिलकुल नाराज़ नहीं हूँ और न कभी मेरा यह इरादा था कि मैं बारावारा पावलोवना को उसके परिचित व्यक्तियों के साथ मिलने जुलने से मना करूं। मैं आप के पास आज इस लिये नहीं आया कि मैं खुद उस से मिलना नहीं चाहता था—इस से अधिक और कुछ नहीं।"

"फ़्योदोर इवानिच, तुम्हारे यह शब्द सुन कर मुझे कितनी प्रसन्नता हुई है !" मेरिया दमितरीवना चिल्लाई, "तुम्हारी उदार प्रकृति से मुझे पहले ही इस बात की आशा थी। जहाँ तक मेरी चिंता की बात है, इस में आश्चर्य की गुंजाईश नहीं—मैं भी एक स्त्री हूँ और माता भी। और तुम्हारी पत्नी, तुम भी जानते हो.....मेरा खयाल है, (इस का यह मतलब नहीं कि मैं तुम्हारे व्यवहार की आलोचना कर रही हूँ, बल्कि उस के बारे में अपने विचार प्रकट कर कर रही हूँ, जो मैंने उसे भी बताया), वह बहुत अच्छे स्वभाव की सुशीला और गुणवती स्त्री है। मैं नहीं समझती कि कोई उस से कैसे नाराज़ हो सकता है।"

लाव्रेस्की विद्रूप भाव से मुस्कराया और अपने हैट से खेलने लगा।

"और इसके अतिरिक्त फ़्योदोर इवानिच मैं तुम से यह कहना चाहती थी।" उसके समीप सरकते हुए मेरिया ने कहना जारी रखा, "काश, तुम्हें यह मालूम होता है कि वह कितनी शालीन और कितनी शिष्ट है ! उसका यह एक विशेष गुण है। और तुम्हें यह भी मालूम नहीं

हुए उसके पीछे पीछे यों चल रही थी जैसे उसे अपने जीवित होने का बोध तक नहीं, जैसे उसके मन में अपना कोई विचार न हो और अपने आपको सर्वथा मेरिया दमितरीवना के हाथों में सौंप दिया हो।

लाव्रेस्की पीछे हट गया।

"तुम इस बीच में यहीं पर थीं" वह बोला।

"इसका कोई दोष नहीं।" मेरिया ने उत्तर दिया, "वह कदाचित न ठहरती, मैंने उसे ठहरने का हुक्म दिया। मैंने ही उसे पर्दे के पीछे छिपाया। उसने मुझे बहुत कहा कि इससे तुम उलटा और नाराज़ हो जाओगे, लेकिन मैंने उसकी एक नहीं सुनी। मैं तुम्हें उससे बेहतर समझती हूँ। आओ मेरे हाथ से अपनी पत्नी को ग्रहण करो, हां, हां आगे आओ। मेरिया, डरो नहीं, घुटनों के बल बैठ जाओ" उसने कन्धा दबाया, "और मेरा आशीर्वाद....."

"एक मिनट ठहरिये मेरिया दमितरीवना।" लाव्रेस्की ने धीमे, लेकिन अत्यंत भयानक स्वर में कहा, "मैं कह सकता हूँ कि आपको नाटक रचना बहुत प्रिय है (लाव्रेस्की ने कुछ झूठ नहीं कहा था, मेरिया दमितरीवना को अभी तक स्कूल की लड़कियों की भांति नाटक रचने का शौक था) आप उससे प्रसन्न हो सकती हैं, लेकिन दूसरे लोगों को उसी से दुख पहुँच सकता है। कुछ भी हो, मैं आपसे बात नहीं करूँगा क्योंकि इस नाटक में आप मुख्य पात्री नहीं हैं। मादाम, तुम मुझ से क्या चाहती हो?" उसने अपनी पत्नी से पूछा "मैंने अपनी शक्ति भर तुम्हारे लिये क्या नहीं किया? मुझे यह बताने की ज़रूरत नहीं कि यह षड्यंत्र तुमने नहीं रचा। मुझे तनिक विश्वास न होगा और तुम जानती हो कि मैं तुम्हारी किसी भी बात का विश्वास नहीं करता। बताओ तुम क्या चाहती हो? तुम बड़ी चालाक औरत हो। कोई भी बात बिना मतलब नहीं करतीं। तुम्हें यह तो समझ ही लेना चाहिये कि जिस प्रकार हम पहले रहते थे उसी प्रकार तुम्हारे साथ

रहने का सवाल ही पैदा नहीं होता। कारण यह नहीं कि मैं तुम से नाराज़ हूँ, बल्कि पहला सा मैं नहीं हूँ। जब तुम आईं, यह बात मैंने तुमसे पहले ही दिन कह दी थी और मैं समझता हूँ कि अपने मन में तुम मुझसे सहमत हो। लेकिन तुम अपने आपको संसार की दृष्टि में फिर से सम्मानित बनाना चाहती हो, वह महज़ मेरे घर में रह कर नहीं हो सकता, बल्कि मेरे साथ एक ही घर में रह कर हो सकता है—यही बात है ना ?"

"मैं चाहती हूँ कि आप मुझे क्षमा कर दें।" वारावारा ने बिना आँखें ऊपर उठाये ही कहा।

"वह तुमसे क्षमा की भीख मांगती है।" मेरिया दमितरीवना ने दोहराया।

"और मैं अपने लिये नहीं, आदा के लिये।" वारावार बुदबदाई।

"वह अपने लिये नहीं, आदा के लिये चाहती है।" मेरिया दमितरीवना ने प्रतिवाचन किया।

"बहुत बेहतर। बस तुम यही चाहती हो।" लाव्रेस्की ने तनिक ज़ोर से कहा, "बहुत अच्छा मुझे मंजूर है।"

वारावारा पावलोवना ने उस पर एक गहरी दृष्टि डाली और मेरिया दमितरीवना उल्लास में भरकर चिल्लाई "भगवान का धन्यवाद।" और एक बार फिर वारावारा को उसका बाजू पकड़ कर खींचा "अच्छा अब मेरे हाथ से ग्रहण....."

"एक मिनट ठहरिये, मुझे कुछ और भी कहना है।" लाव्रेस्की ने उसे टोका, "मुझे तुम्हारे साथ रहना मंजूर है, वारावारा पावलोवना जिसका मतलब है कि मैं तुम्हारे साथ लाव्रीकी जाऊंगा, और जितने अरसे बन सकेगा तुम्हारे साथ रहूँगा। फिर मैं चला आऊँगा और गाहे गाहे आता जाता रहूँगा। यह बात अभी से समझ लो। मैं तुम्हें किसी प्रकार के धोके में नहीं रखना चाहता। अगर मैं मेरिया दमितरीवना

की बात को ही सही मान लूँ और तुम्हें छाती से लगा कर कहूँ—जो हुआ सो हुआ उखड़ा हुआ वृक्ष, फिर पल्लवित हो जायेगा—ऐसी बात पर तुम्हें खुद हंसी आयेगी। मगर जो होनी है, उसे मानना पड़ता है। शायद तुम नहीं समझ सकोगी कि मैं यह शब्द क्यों कह रहा हूँ.....ख़ैर जाने दो। मैं अपनी बात फिर दोहराता हूं, मैं तुम्हारे साथ रहूँगा—नहीं, मैं यह वादा नहीं करता.....मैं तुम्हारे साथ बनाये रखने का प्रयत्न करूँगा, मैं फिर तुम्हें अपनी पत्नी समझूँगा..."

"कम से कम तुम उसे अपना हाथ तो दो।" मेरिया बोली, जिसके आँसू बहुत पहले खुश्क हो चुके थे।

"मैंने वारावारा पावलोवना से आज तक कोई झूठा वादा नहीं किया।" लाव्रेस्की ने उत्तर दिया, "मैंने जो कह दिया, वह काफ़ी है। मैं उसे अपने साथ लावीकी ले जाऊंगा। और एक बात याद रखना वारावारा पावलोवना जिस दिन भी तुमने लावीकी से बाहर कदम रखा, अपना यह समझौता टूट जायेगा। और अब तुम्हारी आज्ञा से मैं जाना चाहता हूँ।"

उसने दोनों औरतों को झुक कर प्रणाम किया और चला गया।

"क्या इन्हें साथ नहीं ले जाओगे?" मेरिया दमितरीवना ने पुकारा।

"उन्हें जाने दीजिये।" वारावारा ने धीरे से कहा। उस के हाथ चूम कर और उसे अपनी कल्याण कारिणी कह कर उस का शतशत कोटि धन्यवाद करने लगी।

मेरिया दमितरीवना चुपचाप सुनती रही। वैसे अपने हृदय में वह लाव्रेस्की से वारावारा पावलोवना से और उस ने जो यह नाटक रचा था इस से असंतुष्ट और अप्रसन्न थी। जैसे वह चाहती थी यह उतना सुन्दर नहीं खेला जा सका। उस की इच्छा थी कि वारावारा पावलोवना पति के पांव पर गिर पड़ती।

"यह कैसे हुआ कि तुम ने मेरी बात नहीं समझी ?" उस ने पूछा, "मैं तुम्हें बार बार कह रही थी कि झुक कर उस के पांव पकड़ लो।"

"यही ठीक है, प्रिय चाची आप चिंता न कीजिये—सब काम ठीक हो गया" वारावारा ने उसे यकीन दिलाया।

"सचमुच, वह बर्फ के सदृश ठंडा है।" मेरिया बोली, "यह ठीक है कि तुम नहीं रोईं, लेकिन मैंने तो रो रो कर आंखें खराब कर लीं लेकिन उस पर ज़रा असर नहीं हुआ। तो वह तुम्हें लाव्रीकी में कैद करना चाहता है। इसका मतलब है कि तुम मुझे मिलने नहीं आ सकोगी। सब मर्द ऐसे ही निष्ठुर होते हैं।" उस ने सर्वज्ञता के भाव से सिर हिला कर अपनी बात खत्म की।

"लेकिन औरतों को उन की नेकी और उदारता की प्रशंसा करनी चाहिये।" मेरिया के सामने घुटनों के बल वह बैठ गई। "उसने अपनी बाहें उस की कमर में डाल दीं और अपने बाल उस के गालों से रगड़ने लगी। उस के होठों पर एक क्षीण मुस्कराहट थी। मेरिया दमित्रीवना की आंखों से एक बार फिर आंसू बह निकले।

लाव्रेंस्की घर लौटा। वह अपना कमरा बंद करके सोफ़े पर गिर पड़ा और तमाम रात यों ही पड़ा रहा।

: ४४ :

दूसरे दिन इतवार था। प्रातःकाल प्रार्थना के घंटे बजे तो उन्होंने लाव्रेंस्की को नहीं जगाया, क्योंकि वह पहले ही जग रहा था। उस ने रात भर आंख नहीं झपकी थी। घंटों की आवाज़ सुन कर उसे उस इतवार की याद आ गई, जब वह लीज़ा की प्रार्थना पर गिरजे गया था। वह जल्दी से उठा, उस के अंतःकरण ने उसे बताया कि वह आज भी उसे गिरजे में मिलेगी। वह उठा और चुपके से बाहर निकल गया। जाते हुए वारावारा के लिये, जो अभी तक सो रही थी, यह संदेश छोड़ गया कि मैं दोपहर के भोजन के समय लौटूंगा। वह उस ओर खिंचा हुआ चल पड़ा, जिस ओर गिरजे के घंटों की आवाज़ उसे बुला रही थी। वह इतनी जल्दी पहुँचा कि उस वक्त तक गिरजा में एक व्यक्ति भी नहीं पहुँचा था, केवल एक पादरी पवित्र पुस्तक पढ़ रहा था और उस की लम्बा गहरा स्वर बराबर सुनाई दे रहा था, जो कभी कभी खांसने से टूट जाता था। लाव्रेंस्की दरवाज़े के समीप बैठ गया। पुजारी एक एक कर के आ रहे थे, वे दरवाज़े पर ठहर कर छाती पर क्रास का निशान बनाते थे और फिर इधर और उधर माथा टेक कर आगे बढ़ते थे, उन की पग ध्वनि गिरजे के शांत वातावरण और उस की गुंबदनुमा छत के नीचे गूंज उठती थी। एक ठिंगने कद की बुढ़िया एक फटा हुआ चोगा पहने लाव्रेंस्की के निकट ही घुटनों पर बैठी प्रार्थना कर रही थी। उसके मुंह में दांत नहीं थे, उसके पीले और सुकड़े हुए चेहरे पर पवित्र भावना अंकित थी, और

उसकी सूखी आंखे ईसूमसीह की मूर्ति पर गड़ी हुई थी; उसका झुरियों से भरा हुआ हाथ गाहे गाहे चोगे के नीचे से निकलता था और वह अपनी छाती पर धीरे धीरे क्रास का निशान बनाती थी। एक किसान भीतर आया, जिसका चेहरा फीका और दाढ़ी किसी झाड़ी के सदृश घनी थी। वह आते ही घुटनों के बल प्रायः गिर पड़ा। उसने जल्दी जल्दी क्रास का निशान बनाया। मूर्ति को प्रणाम करते समय उसका सिर पैंडुलम की भांति आगे पीछे को हिल रहा था उसका चेहरा और उसका प्रत्येक संकेत उसके भीतर की घोर पीड़ा को व्यक्त कर रहा था; लाव्रेस्की उससे यह पूछे बिना न रह सका कि वह कौन सा दुख है, जो उसकी आत्मा को इस प्रकार कोंच रहा है। किसान चौंक पड़ा और भयभीत नेत्रों से उसकी ओर देखते हुए बोला—"मेरा बेटा मर गया" और फिर प्रार्थना करने लगा। ... .."क्या गिरजा इन लोगों को वाकई शांति प्रदान करता है?" लाव्रेस्की ने सोचा और उसने खुद प्रार्थना करने की कोशिश की; लेकिन उसका अपना मन दुखी था और कटुता से भरा हुआ था और मस्तिष्क बहुत सी दूसरी बातें सोच रहा था। वह लीज़ा की बाट जोह रहा था; लेकिन लीज़ा नहीं आई। गिरजा लोगों से ठसाठस भर गया लेकिन वह अब भी नहीं आई। प्रार्थना शुरू हुई, पादरी ने बाईबिल का पाठ किया और अंतिम प्रार्थना की घंटी बजी, लाव्रेस्की ने अपनी पोज़ीशन बदली और हठात उसकी दृष्टि लीज़ा पर पड़ी। वह उससे पहले ही गिरजे में आगई थी। वह मेहराब की दीवार के साथ सुकड़ी बैठी थी। सारा समय वह न हिली डुली और न इधर-उधर देखा। प्रार्थना हो रही थी और लाव्रेस्की अपनी आंखें लीज़ा पर गड़ाये हुए था; वह उसे विदा कह रहा था। भीड़ घटने लगी; लेकिन लीज़ा अपनी जगह पर तटस्थ रही जैसे वह सोच रही हो कि लाव्रेस्की चला जाये तब उठे। आखिर उसने अंतिम बार क्रास का निशान बनाया और बिना मुड़कर देखे

गिरजे से बाहर चली गई। उसके साथ एक नौकरानी थी। लाव्रेंस्की उसके पीछे पीछे चला और गली में उसे पा लिया। वह सिर झुकाये तेज़ तेज़ चल रही थी और चेहरा बुर्के से ढाँप रखा था।

"इलिज़ावेटा मिखोलोवना, नमस्कार।" उसने ऊंचे स्वर में कहा, "क्या मैं आपको छोड़ आऊँ?"

वह बोली नहीं। लाव्रेंस्की उसके साथ साथ चलने लगा।

"क्या आप मुझसे सन्तुष्ट है?" उसने इस बार धीमी आवाज़ में पूछा, "कल जो हुआ, वह तुमने सुन लिया होगा?"

"हाँ, हाँ।" उसने बहुत ही आहिस्ता से कहा, "ठीक है।" और वह पहले से भी तेज़ चलने लगी।

"क्या आप सन्तुष्ट हैं?"

लीज़ा ने केवल सिर हिलाया।

"फ़्योदोर इवानिच" उसने दृढ़ लेकिन मद्धिम स्वर में कहा, "मैं तुमसे यह कहना चाहती हूँ—कृपया फिर कभी हमें मिलने न आना। जितनी जल्दी हो सके यहां से चले जाओ। हम एक दूसरे से फिर कभी किसी दूसरे समय—शायद एक साल बाद—मिल सकते हैं। लेकिन अब मेरी खातिर यहां से चले जाओ, ज़रूर चले जाओ। मेरी यह प्रार्थना मानो।"

"मैं तुम्हारी हर बात मानने को तैयार हूँ, इलिज़ावेटा मिखोलोवना—लेकिन क्या हमें इसी तरह अलग होना है? तुम मुझे एक भी शब्द नहीं कहोगी?"

"फ़्योदोर इवानिच, इस समय तुम मेरे साथ साथ चल रहे हो, लेकिन तुम पहले ही मुझसे दूर जा चुके हो,—दूर बहुत दूर! और सिर्फ़ तुम्हीं नहीं....."

"बोलो, बोलो। मैं प्रार्थना करता हूँ?" लाव्रेंस्की चिल्लाया, "तुम्हारा मतलब क्या है?"

"तुम्हें सब मालूम हो जायगा शायद...लेकिन जो भी हो, भूल जाओ...नहीं, मुझे मत भुलाना मुझे याद रखना।"

"क्या मैं तुम्हें भुला सकता हूँ?"

"अच्छा, अलविदा। मेरा पीछा मत करो।"

"लीज़ा।" लाव्रेस्की चिल्लाया।

"विदा, विदा" उसने दोहराया, अपना बुर्क़ा और भी नीचे खींच लिया और प्रायः दौड़ कर आगे बढ़ गई।

लाव्रेस्की उसे जाते हुए देखने लगा। फिर वह गली का मोड़ घूम गया। उसका सिर झुका हुआ था। वह लेम से जो सिर झुकाये और हैट नाक तक सरकाये चल रहा था, टकराते हुए बचा!

उन्होंने चुपचाप एक दूसरे की ओर देखा।

"तो आप क्या कहते हैं?" आख़िर लाव्रेस्की बोला।

"मैं क्या कह सकता हूँ।" लेम ने उदास भाव से उत्तर दिया। मुझे कुछ नहीं कहना। हर एक चीज़ मर चुकी है, हम भी मर चुके हैं। आपको दांई ओर जाना है?"

"हां"।

"और मैं बांई ओर जा रहा हूँ। नमस्ते।"

दूसरे दिन लाव्रेस्की ने अपनी पत्नी को साथ लेकर लाव्रेस्की को प्रस्थान किया। वह आदा और जस्टाईन के साथ एक गाड़ी में आगे आगे जा रही थी और वह बग्घी में पीछे आ रहा था। नन्हीं गुड़िया रास्ते भर गाड़ी की खिड़की पर झुकी बाहर का दृश्य देखती रही। किसान, उनकी झोपड़ियां, घोड़ों की गर्दनों पर रखे हुए जुए, टनटनाती हुई घंटियां और अनगिनत नदी नाले—तमाम चीज़ें उसे आश्चर्य से भर रहीं थीं। इस आश्चर्य में जस्टाईन भी उसका साथ दे रही थी और उनकी बातों पर प्रसन्न हो कर बारबारा पावलोवना खिलखिला कर हंस रही थी। वह प्रसन्न मुद्रा में थी, प्रस्थान से पहले

उसने पति से सारी बातें तय कर ली थी। "मैं आप की स्थिति को समझती हूँ।" उसने लाव्रेस्की से कहा था और उसकी चतुर आँखों के भाव से उसने जान लिया था कि वह वाकई उसकी स्थिति को समझती है। "लेकिन आप मुझे एक साधारण व्यक्ति के नाते अपने पास रहने की सुविधा तो अवश्य देंगे। "मैं अपने आपको आप पर लादूँगी नहीं और न आपके मार्ग में बाधा बनूंगी। मैं सिर्फ यह चाहती हूँ कि हमारी आदा का भविष्य सुरक्षित हो जाये।"

"अच्छा, जो तुम चाहती थीं, वह सब हो गया" लाव्रेस्की बोला।

"सिर्फ एक ही कामना है और उसके अब मैं स्वप्न देखती हूँ, कि अपने आपको सदा के लिये एकान्तवासिनी बना दूँ। मैं सदा आपकी कृतज्ञ रहूँगी।....."

"ओह! रहने दो....." उसने टोका।

"और मैं प्रयत्न करूँगी कि आपकी स्वतंत्रता और चित्त की शांति में तनिक भी बाधा न आने दूं।" जो वाकई अधूरा रह गया था उसे यों पूरा किया।

लाव्रेस्की ने उसे झुककर प्रणाम किया। वारावारा पावलोवना समझ गई कि उसका पति अपने मन में उसका कृतज्ञ हो रहा है।

दूसरे दिन शाम को वह लावीकी पहुँच गये। एक हफ्ता बाद लाव्रेस्की मास्को गया। जाते समय अपनी पत्नी के लिये पांच हज़ार नकद छोड़ गया—और उसके प्रस्थान के दूसरे ही दिन पैंशिन जिसे वारावारा पावलोवना ने कहा था कि कहीं मेरे एकांतवास में मुझे भुला न देना वहां आ पहुँचा। वारावारा ने हृदय से उसका स्वागत किया और रात गये तक मकान के विस्तृत कमरों व बाहर बाग में संगीत के स्वर, गीतों के बोल और फ्रांसिसी वार्तालाप के मधुर वाक्य गूंजते रहे। पैंशिन तीन दिन तक वारावारा के आतिथ्य का आनन्द लूटता रहा। जाते समय उसने उसके सुन्दर हाथों को अपने हाथों में लेकर दबाया और शीघ्र ही फिर आने का वादा किया। उसने वादा पूरा भी किया।

: ४५ :

घर की दूसरी मंजिल पर लीज़ा का अपना छोटा सा साफ़ सुथरा कमरा था, चारों कोनों में फूलों के गमले रखे रहते थे; खिड़की के पास लिखने की एक मेज़ पड़ी थी, एक कार्निस थी और पुस्तकों की एक अलमारी थी। यह कमरा जच्चाख़ाना कहलाता था, क्योंकि लीज़ा इसी में उत्पन्न हुई थी। जाब्रेस्को से भेंट के बाद गिरजे से लौटते ही उसने कमरे को खूब अच्छी तरह साफ़ किया—पहले से बहुत अच्छी तरह हर एक चीज़ को झाड़ा, अपनी कापियों और सखियों के पत्रों को उलट-पलट कर देखा और फिर सुर्ख़ फ़ीते में बांध दिया। तमाम दराज़ों को ताला लगाया, गमलों को पानी दिया और हर एक फूल को हाथ से छूकर देखा। यह सब काम उसने चुपचाप और शांत भाव से किया, जैसे उसे सुख और संतोष मिल रहा हो। तब वह कमरे के मध्य में निश्चल खड़ा हो गई, धीरे धीरे इधर उधर निगाह डाली। उस मेज़ के निकट गई जिस पर मूर्ति रखी थी, उसके सामने वह घुटनों पर झुक गई, सिर हाथों पर रख लिया और अचल बैठी रही।

मार्फ़ा तिमोफ़ेवना भीतर आई और उसने उसे इस अवस्था में पाया। लीज़ा ने उसे आते नहीं देखा। बुढ़िया पंजों के बल बाहर चली गई, कई बार ऊंचे-ऊंचे खांसा, लीज़ा जल्दी से उठी और अपनी उन आंखों को पूंछा जिन में बड़े बड़े चमकदार आंसू उमड़ आये थे।

"ऐह, मैं देख रही हूँ कि तुम ने अपना कमरा दोबारा साफ़ किया है," मार्फ़ा ने कहा और फिर गुलाब के एक खिले हुए बूटे पर झुक कर कहा—"इस की सुगंध कितनी अच्छी है।"

लीज़ा खड़ी बुआ को देख रही थी।

"यह आपने क्या शब्द कहा था।"

"कौन सा शब्द ?" बुढ़िया ने जल्दी कहा, "तुम्हारा मतलब क्या है ? यह असह्य है।" वह चिल्लाई, उसने अपनी टोपी परे फेंक दी और लीज़ा की नन्ही खाट पर बैठते हुए फिर कहा, "मुझ से यह नहीं सहा जाता, मैं कई दिन से यही कुछ देख रही हूँ, मुझ में अब यह सामर्थ्य भी नहीं रहा कि देखूं और न देखने का बहाना करूं। मैं तुम्हें तिल-तिल करके घुलते, रोते और कमज़ोर पड़ते नहीं देख सकती, नहीं नहीं मैं नहीं देख सकती।"

"क्यों बुआ आप को क्या हुआ है ?" लीज़ा बोली, "मैं तो बिल्कुल ठीक हूँ....."

"बिलकुल ठीक !" मार्फ़ा चिल्लाई, "तुम यह किसी और से कहना, मुझसे नहीं। बिल्कुल ठीक ! अभी तुम किस अवस्था में बैठी थी ? किस की पलकें अब तक भीगी हुई हैं ? बिल्कुल ठीक ! आईने में अपनी सूरत तो देखो जरा, तुमने अपनी यह हालत बनाली है ? जरा देखो तो सही...अपने चेहरे, अपनी आंखों पर एक नज़र डालो। बिल्कुल ठीक ! कुछ समझ में नहीं आता कि तुम्हारी यह हालत क्यों है ?"

"धीरे धीरे सब ठीक हो जायेगा बुआ।"

'ठीक हो जायेगा, लेकिन कब ? हे मेरे भगवान ! क्या तुम उसे इतना प्यार करती थी ? लेकिन लीज़ा प्यारी, वह एक बूढ़ा आदमी है। हां मैं यह मानती हूँ कि वह एक अच्छा आदमी है, उसने घृणा योग्य कुछ नहीं है, लेकिन इस से क्या ? हम सभी अच्छे लोग हैं, दुनियाँ बहुत बड़ी है, उस में ऐसे लोगों की कोई गिनती नहीं।"

"मैं आप से कहती हूँ कि धीरे धीरे सब ठीक हो जायेगा और बहुत कुछ ठीक हो भी चुका है।"

"लीज़ा प्यारी, मेरी बात सुनो।" मार्फ़ा तिमोफ़ेवना ने तत्क्षण कहा, उस ने लीज़ा को अपने पास बैठा लिया; कभी उस के बालों और कभी गालों को थपथपाने लगी, "घाव ताज़ा है, इस लिये तुम समझती हो कि तुम्हारा यह दुख असह्य है। सिर्फ़ मृत्यु ही का कोई इलाज नहीं। तुम तनिक साहस करके अपने आप से कहो, "मैं यह सब सह लूंगी, कोई ग़म नहीं। तुम्हें यह जान कर आश्चर्य होगा कि कहते ही छाती पर से पत्थर हट गया है। जरा दाँतों में जीभ लेकर इसे सहो।"

"बुआ," लीज़ा बोली, "पहले ही ठीक हो चुकी है, मैंने सब सह लिया है!"

"तनिक देखो, तुम्हारी नन्ही नाक कितनी सुर्ख पड़ गई है। और तुम कहती हो कि तुमने सब सह लिया! क्या इसी तरह सहा जाता है।"

"हां, बुआ, सब ठीक है, सिर्फ़ तुम मेरी सहायता का वादा करो।" लीज़ा ने अपनी बाहें मार्फ़ा के गले में डाल कर रूंधे हुए स्वर में कहा "प्यारी बुआ, मेरी मित्र बन जाओ, मेरी सहायता करो नाराज़ न हो, मुझे समझने की चेष्टा करो........"

"हाँ क्यों क्यों, मेरी प्यारी तुम क्या चाहती हो? मुझे इस प्रकार मत देखो, मैं चीखने लगूंगी, मुझे इस प्रकार मत देखो, मुझे जल्दी बताओ, तुम क्या चाहती हो?"

"मैं......मैं चाहती हूँ......" लीज़ा ने अपना मुंह मार्फ़ा की गोद में छिपा लिया, और धीरे से कहा, "मैं एक कॉनवेंट (देवगृह) में जाना चाहती हूँ।"

बुढ़िया प्रायः उछल कर खाट से अलग हो गई। "प्यारी लीज़ा, अपनी छाती पर क्रास का निशान बनाओ, तुम नहीं जानती कि तुम क्या कह रही हो! हे भगवान, कैसी बातें सोची जा रही हैं!" जब वह फिर बोली तो उस की जबान में भारीपन था, "प्रिय लेट जाओ

और थोड़ी देर सो लो, मेरी प्यारी रातों को न सोने के कारण ही तुम ऐसी बातें सोचने लगी हो।"

लीज़ा ने सिर ऊपर उठाया, उस के गाल तमतमा रहे थे। "नहीं बुआ," उसने कहा, "ऐसा मत कहिये, मैं निश्चय कर चुकी हूँ। मैंने गिरजा में प्रार्थना की, इस बारे में भगवान का मश्विरा लिया, सब तय हो गया, तुम्हारे साथ मेरे जीवन का अब अंत होता है। शिक्षा व्यर्थ नहीं गई। और अपने बारे में यह बात मैं पहली बार ही नहीं सोच रही हूँ। प्रसन्नता मेरे शरीर में नहीं थी, जब प्रसन्नता की आशा भी थी तब भी मेरे मन में शंकायें उठ रही थीं। मैं सब समझती हूँ, अपने और दूसरों के पापों को जानती हूँ। मुझे मालूम है कि पापा ने धन किस तरह जोड़ा था, मुझे सब मालूम है। ये पाप प्रार्थना, सिर्फ प्रार्थना से ही धुल सकते हैं। मुझे तुम्हें, माता जी और लोनोचका को छोड़ने का दुख है, लेकिन इसके बिना चारा नहीं। मैं महसूस करती हूँ कि यहां का जीवन मेरे लिये नहीं, मैं घर के प्रत्येक प्राणी और प्रत्येक वस्तु को अंतिम बार विदा कह चुकी हूँ। इसे यों समझो कि भगवान की इच्छा पूर्ण हो रही है, मेरा हृदय दुख से फटा जा रहा है, मैं अपने आप को सदा के लिये संसार से अलग कर लेना चाहती हूँ। मुझे मत रोकिये, मत समझाईये, वरना मैं अकेले ही चली जाऊंगी..."

मार्फ़ा भतीजी की बातें स्तब्ध-सी सुनती रही। "वह बीमार है, यह सन्निपात का दौरा है।" उसने सोचा, "हमें डाक्टर को बुलाना चाहिये, लेकिन कौन सा डाक्टर? गेदोनोवस्की कल एक डाक्टर की बहुत तारीफ कर रहा था, लेकिन वह झूठा है—शायद इस बार वह सच ही कह रहा हो।"

लेकिन लीज़ा ने उस के प्रत्येक प्रश्न और प्रत्येक बात का यह एक ही उत्तर दिया, जब उस ने जाना कि वह बीमार नहीं है, तो मार्फ़ा बहुत डर गई, उस का दुख अवर्णनीय था?"

"लेकिन मेरी प्यारी तुम नहीं समझती कि देवगृह का जीवन कितना कठिन है।" उसने लीज़ा को समझाना शुरू किया, "तुम्हें वहां बदबूदार तेल खाने को और मोटा झोटा पहनने को मिलेगा। वे तुम्हें ऐसी सर्दी में बाहर भेजेंगी जिसे तुम सहन नहीं कर सकोगी। यह सब अगफ्या का किया धरा है, उसी ने तुम्हें यह उलटी शिक्षा दी है। लेकिन वह खुद कॉनवेंट में जाने से पहले, जीवन के सब सुख भोग चुकी थी, और तुम ने तो अभी कुछ भी नहीं देखा। मुझे पहले आराम से मरने दो, फिर तुम्हारे जो जी में आवे करना। और बकरी की दाढ़ी के लिये—अर्थात एक मर्द के लिये, कौन कॉनवेंट में जाता है? हाँ यदि तुम्हें इस बात का इतना ही दुख है, तो तीर्थ यात्रा के लिये चली जाओ, किसी संत की अराधना करो, प्रार्थना कराओ, लेकिन मेरी प्यारी, मेरी बच्ची, अपने जीवन को इस प्रकार नष्ट न करो..."

और मार्फ़ा तिमोफ़ेवना फूट-फूट कर रोने लगी।

लीज़ा ने उसे चुप कराया, उस के आंसू पोंछे, वह खुद भी रोई, लेकिन वह अपने निश्चय पर अड़ी रही। मार्फ़ा तिमोफ़ेवना ने दुख से विह्वल हो कर उसे डराया धमकाया—यहां तक कहा कि मैं तुम्हारी माता को सब कुछ बता दूंगी, लेकिन सब व्यर्थ। आखिर लीज़ा ने बुढ़िया के बहुत आग्रह करने पर यह बात स्वीकार कर ली कि वह छः महीने तक अपना विचार स्थगित करती है, और इस के एवज़ उसने मार्फ़ा तिमोफ़ेवना से यह वादा लिया कि अगर बाद में भी लीज़ा का निश्चय इसी प्रकार दृढ़ रहे तो वह उस का पक्ष लेगी और मेरिया दमितरीवना से स्वीकृति प्राप्त करा देगी।

यद्यपि बाराबारा पावलोवना ने एकांतवास का वादा किया था, तो भी सर्दी शुरू होते ही वह सेंटपीटर्सबर्ग चली गई। उसने पैसे का प्रबन्ध कर लिया था, वहां एक छोटा, लेकिन सुन्दर फ्लैट किराये पर लेकर रहने लगी। पैशिन इस से पहले ही वहां उपस्थित था और वह

फ्लैट उसी ने तय किया था। वह ओ से अब आ चुका था, वहां अपने अंतिम दिनों में वह मेरिया दमितरोवना को नज़रों से सर्वथा गिर चुका था, सहसा उस ने उन के घर जाना ही छोड़ दिया और उस का समय लाव्रीकी में बीतने लगा। बारंबारा पावलोवना ने उसे अपना गुलाम बना लिया था—सिर्फ यही एक शब्द है जो उस के महान और शक्ति शाली प्रभाव को व्यक्त कर सकता है।

लाव्रेंस्की ने सर्दी मास्को में बिताई और बसंत शुरू होते ही उसे यह खबर मिली कि लीज़ा देव दासी बन कर रूस के दूरस्थ भाग में आबाद बी-कॉनवेंट (देवगृह) में चली गई है।

उपसंहार

आठ वर्ष बीत गये। फिर बरसात के दिन थे...लेकिन आइये, पहले हम मिखालेविच, पैंशिन और मादाम लाव्रेस्क्या के बारे में कुछ जानकारी प्राप्त कर लें और उनसे विदा लें। मिखालेविच को बहुत दिन इधर-उधर ठोकरें खाने के बाद मन पसंद काम मिल गया है और वह एक सरकारी स्कूल में मुख्य अध्यापक है। वह अपने इस काम से संतुष्ट है, लड़के यद्यपि उसके पीठ पीछे मुंह बनाते हैं, उसकी पूजा करते हैं। पैंशिन अपने सरकारी पद में ऊंचा उठ गया है और डाइरेक्टर बनने की आशा रखता है वह तनिक आगे को झुककर चलता है, इसका कारण भारी व्लाडीमीर क्रास है जो वह अपने गले में लटकाये रहता है। उसके भीतर का अफसर कलाकार पर छा गया है। उसका नौजवान चेहरा उम्र की अपेक्षा कहीं अधिक गम्भीर जान पड़ता है। उसके बाल काफ़ी उड़ गये हैं, वह अब न गाता है और न चित्र बनाता है, हाँ चुपके चुपके कुछ लिख ज़रूर लेता है। उसने कहावत की शैली में एक सुखांत नाटक लिखा है, और चूंकि आजकल के सभी लेखक किसी वस्तु अथवा किसी व्यक्ति की खिल्ली उड़ाते है उसने भी एक धनाढ्य की खिल्ली उड़ाई है और वह उसे अपनी जान पहचान की दो तीन औरतों को निजी तौर पर पढ़कर सुनाया करता है। मगर उसने विवाह नहीं किया, यद्यपि ऐसा करने के कई अच्छे अवसर भी मिले। इसकी जिम्मेदारी वारावारा पावलोवना पर है। जहां तक उसका अपना सम्बन्ध है, वह पहले की भांति स्थाई रूप

से पेरिस में रहती है। फ़्योदोर इवानिच ने उसे एक प्रामिसरी नोट दिया था, इस उपाय से उसने काफ़ी पैसा हथिया लिया है। वह कुछ बूढ़ी और मोटी हो गई है; लेकिन अब भी सुन्दर और शानदार दिखाई देती है। प्रत्येक व्यक्ति का कुछ न कुछ आदर्श होता है। ड्यूमाज़ के नाटक वाराबारा पावलोवना का आदर्श हैं। वह बराबर थियेटर जाती है, जहाँ मंच पर बीमार और दुर्बल स्त्रियों के चित्र बने हुए हैं। मादाम डोच बनना उसे प्रसन्नता की पराकाष्टा जान पड़ता है और उसने कई बार कहा है कि मैं अपनी बेटी के लिये इससे बेहतर और कुछ नहीं चाहती। आशा है कि प्रारब्ध आदा को इस प्रसन्नता से बचाये रखेगा क्योंकि कहां तो वह पहले सुन्दर, स्वस्थ और गुदगुदी बालिका थी और कहां अब पीली, रोगिणी व संक्षिप्त सी लड़की दिखाई देती है। वाराबारा पावलोवना के प्रेमियों की संख्या पहले से बहुत कम हो गई हैं, लेकिन अब भी काफ़ी है और खयाल है कि कुछेक को तो वह मरते दम तक अपना बनाये रखेगी। आजकल उसका सबसे बड़ा प्रेमी कोई जकूर डालो—सकु बिरलीकोव है, जिसकी मूछें बड़ी बड़ी उम्र अड़तीसेक साल और शरीर हृष्ट-पुष्ट है। वाराबारा पावलोवना उसे अपनी शाम की शानदार पार्टियों में कभी निमंत्रित नहीं करती; लेकिन निस्संदेह वह इन दिनों उसका कृपा पात्र बना हुआ है।

और इस प्रकार आठ वर्ष बीत गये। एक बार फिर आकाश बसंत की प्रसन्नताओं से मुग्ध है। एक बार फिर धरती और धरती के वासियों पर बसंत मुस्करा रहा है। एक बार फिर उस के मधुर स्पर्श से प्रकृति खिल उठी है, प्रेम और संगीत से भर रही है। ओ-नगर इन आठ वर्ष में तनिक बदल गया है, लेकिन ऐसा लगता है कि मेरिया दमितरीवना के घर पर जवानी आई है। दीवारें नये रंग रोगन से चमक रही हैं, खिड़कियों के साफ सुथरे शीशे डूबते हुए सूर्य की उन्नाबी किरणों को प्रतिबिम्बित कर रहे हैं और इन खुली हुई

खिड़कियों द्वारा घर के भीतर का प्रकाश, मधुर बातचीत और सतत हास्य गली में बिखर रहा है। सारा घर जीवन उल्लास और हास्य से ओत-प्रोत जान पड़ता है। घर की मालिकन बहुत दिन से पड़ी कब्र में सो रही है। लीज़ा के देवदासी बनने के बाद दूसरे साल ही मेरिया दमित्रीवना का देहान्त हो गया और उस के थोड़े ही दिनों बाद मार्फ़ा तिमोफ़ेवना भी चलती बनी। नगर के कब्रिस्तान में दोनों एक दूसरे के पहलू-ब-पहलू दफनाई गईं। नस्तस्या कार्पोव्ना भी अब इस संसार में नहीं, वह कई वर्ष तक अपने परम मित्र की कब्र पर प्रत्येक सप्ताह प्रार्थना करने जाती रही.....कि आखिर उस का अपना समय भी आ गया और उसकी हड्डियां भी गीली मिट्टी के सुपुर्द कर दी गईं। लेकिन मेरिया दमित्रीवना का घर पराओं के हाथ में नहीं पड़ा, परिवार के हाथ से निकला नहीं, नीड़ नष्ट नहीं हुआ। लेनोचका जवान हो कर सुन्दर रमणी बन गई है और उस का प्रेमी सुन्दर बालों वाला एक अफ़सर है। मेरिया दमित्रीवना के लड़के ने अभी सेंटपीटर्ज़वर्ग में शादी की है और वह अपनी जवान पत्नी और उस की छोटी बहन जो सोलह साल की गुलाबी गालों वाली स्कूल की लड़की है, बसंत बिताने आया है, शुरोचका भी काफ़ी बड़ी हो गई है और इन्हीं नौजवानों के कहकहों से कालिटीन मकान का वातावरण मुखरित है। घर की प्रत्येक वस्तु बदल गई। प्रत्येक वस्तु नये वसियों के अनुसार है। पहले के दुर्बल बूढ़े नौकरों की जगह साफ चेहरों वाले नौजवान नौकरों ने ले ली है। घुड़साल में अब नई गाड़ियां और नये घोड़े आ गये हैं, इन घोड़ों की अय्यालें बड़ी बड़ी हैं। वे तेज़रफ़्तार है और ख़ास तौर पर डोन से मंगवाये गये हैं। नाश्ता, लंच और शाम के भोजन का कोई समय निश्चित नहीं है, सब गड़मड़ चलता है और पड़ोसियों के कथनानुसार यहाँ अब सभी बातें "नबे गड़ मड़ ढंग" से होती हैं।

जिस शाम का यह वर्णन है, क्वालिटीन घर के वासी (जिन में लेनोव्का का प्रेमी सब से बड़ा था और उस की आयु २४ वर्ष थी) हंसते और कहकहे लगाते हुए सादा और दिलचस्प खेल खेल रहे थे, वे कमरों में भागते हुए दूसरे को पकड़ने की कोशिश कर रहे थे, कुत्ते भी उन के पीछे-पीछे भाग रहे थे और जोर जोर से भौंक रहे थे, और खिड़कियों के ऊपर जो पिंजरे लटक रहे थे उन में बंद पक्षी चहचहा कर इस कलरव को इतना तीव्र बना रहे थे कि कान पड़ी आवाज़ सुनाई नहीं देती थी। ठीक इसी समय कीचड़ में सना हुई एक गाड़ी दरवाज़े पर आकर रुकी और उस में से एक पैंतालीस वर्ष का मनुष्य सफर का चोगा पहने हुए उतरा और वह भूमि में गड़ा सा चकित और आवाक खड़ा रह गया। वह कुछ देर अचल खड़ा मकान को हसरत भरी निगाह से देखता रहा, फिर वह दरवाज़े के अन्दर गया और आंगन पार करके सीढ़ियां चढ़ने लगा। हाल में उसे कोई नहीं मिला। सहसा उस कमरे का दरवाजा खुला, जिस में कहकहे गूंज रहे थे और भागती और तमतमाती हुई शुरोचका बाहर निकली और उस के पीछे दूसरे प्राणी भी चीखते चिल्लाते बाहर आये। वे एक अजनबी को देख कर रुक गये और चिल्लाना और हंसना बंद कर दिया, लेकिन जो चमकदार आंखें देख रही थी, वे सहृदयता से भरी हुई थी और चेहरे मुस्करा रहे थे। मेरिया दमोतरीवना का लड़का आगे बढ़कर अजनबी के पास आया और मैत्री के स्वर में पूछा कि वह किसे मिलना चाहता है।

"मैं लाव्रेस्की हूँ।" आगंतुक बोला।

एक दम बहुत सी चीखों ने उस का उत्तर दिया—कारण यह नहीं कि वे एक दूर के और लग-भग भुला दिये गये सम्बन्धी को सहसा देख कर प्रसन्न हुए हों, बल्कि किसी किंचित बहाने उन्हें अपने भीतर का कलरव बाहर निकालना था। उन सब ने लाव्रेस्की को

घेर लिया, लेनोचका एक चिर परिचित के नाते सबसे पहले सामने आई और कहने लगी कि वह उसे शीघ्र ही पहचान लेती, फिर उस ने सब का, अपने मंगेतर का भी नाम लेकर लाव्रेंस्की से परिचय कराया। वे सब भोजनालय में से गुजर कर ड्राईंग रूम में पहुँचे। दोनों कमरों की दीवारों का कागज नया था, लेकिन सामान वही पुराना था। लाव्रेंस्की ने प्यानो पहचान लिया, खिड़कियों के पच्चीकारी किये हुए चौखटे भी वही थे और पूर्ववत लगे हुए थे और पच्चीकारी जैसे आठ साल पहले थी, उसी तरह अब भी अधूरी थी। उन्होंने उसे एक आराम कुर्सी पर बैठा दिया और वे सब दायरा बना कर उस के गिर्द बैठ गये। उस पर प्रश्नों की बौछाड़ होने लगी और वह शांत स्वर में उत्तर देता रहा।

"बहुत समय बीत गया, जब हम ने तुम्हें और वारावारा पावलोवना को देखा था।" लेनोचका ने सरस भाव से कहा।

"देखना सम्भव भी नहीं था।" उस का भाई बोला, "मैं तुम्हें सेंटपीटर्जबर्ग अपने साथ ले गया। और फ़्योदोर इवानिच देहात में रहते थे।"

"और फिर उसी बीच में माता जी का देहान्त हो गया।"

"और मार्फ़ा तिमोफ़ेवना का" शुरोचका बोली।

"और नस्तस्या कार्पोवना का" लेनोचका ने कहा।

"और मोसियो लेम....."

"क्या? लेम भी मर गया?" लाव्रेंस्की ने पूछा।

"हां", मेरिया के लड़के ने उत्तर दिया, "वो उडेसा चला गया था, कहते हैं कि कोई उसे बहका कर ले गया और वहीं उसका देहान्त हो गया।"

"मालूम हो क्या वह कुछ संगीत भी छोड़ गया है?"

"मुझे मालूम नहीं और मुझे इसकी आशा भी नहीं।"

सब चुप थे और निगाहों ही निगाहों में एक दूसरे से कुछ कहा, नौजवान के चेहरों पर हल्की सी उदासी छा गई।

"मेत्रोस जीवित है, शायद आप को मालूम न हो।" सहसा लेनोचका ने कहा।

"और गेदोनोवस्की भी।" उसका भाई बोला।

गेदोनोवस्की का नाम सुनते ही सबने कहकहा लगाया।

"हां, वह जीवित है, और पूर्ववत झूठ बोलता है।" मेरिया दमितरीवना के लड़के ने कहा, "और मज़े की बात सुनिये, कल इस पगली ने (उसने खाली की ओर संकेत किया) उसकी नसवार की डिबिया में मिरचें मिला दीं।"

"आपने उसे छींकते नहीं देखा!" लेनोचका ने कहा और उसकी आवाज़ एक बार फिर कहकहों में डूब गई।

"हमें हाल ही में लीज़ा की खबर आई है।" नौजवान कालिटीन ने कहा, और सब के सब फिर चुप हो गये, "वह ठीक है, और उसका स्वास्थ्य पहले से कुछ बेहतर है।"

"क्या वह अब भी उसी कॉनवेंट में है।" लाव्रेस्की ने अनिक प्रयत्न से पूछा।

"हां।"

"उसका पत्र आता है?"

"नहीं, कभी नहीं; लेकिन हमें दूसरे लोगों से उसका समाचार मिल जाता है।" सब मौन थे "एक मधुर देवता जा रहा है" सब सोच रहे थे।

"क्या आप बाग़ देखना पसंद करेंगे?" नौजवान कालिटीन ने पूछा, "वह अब पहले से बहुत सुन्दर है, यद्यपि हमने उसकी ओर ध्यान कम दिया है।"

लाव्रेस्की बाग़ में गया और उसकी नज़र सबसे पहले उस सीट

पर पड़ी जहाँ उसने लीज़ा के साथ बैठकर अविस्मरणीय उल्लास के कुछ क्षण बिताये थे, वह सीट अब मैली और काली पड़ गई थी, लेकिन लाव्रेत्स्की ने उसे पहचान लिया और उसके हृदय को एक अत्यंत मधुर और कटु भावना ने जकड़ लिया। यह एक गुज़र चुकी जवानी का दुःखमय विषाद था, उस हर्षमय उन्माद की याद थी जिसने उसे कभी आनंद विभोर किया था। वह नौजवान लड़के लड़कियों के साथ बाग में घूमता रहा, लेमू के पेड़ किंचित मात्र भी लम्बे अथवा पुराने दिखाई नहीं देते थे, अलबत्ता उनकी छाँव घनी हो गई थी; मगर तमाम झाड़ियाँ काफ़ी बढ़ गई थीं, रस भरी के पेड़ों के तने पहले से मज़बूत हो गये थे, पौदे भी अँगुल-अँगुल बढ़ गये थे, हर एक चीज़ पर तरो-ताज़गी थी घास और फूलों की सुगन्ध वातावरण में रची हुई थी।

"यह कुँज आराम करने के लिये है।" जब वे लेमू के पेड़ों के मध्य में घास और बेलों से घिरे हुए स्थान पर पहुँचे, तो लेनोचका ने सहसा कहा, "हम भी पांच जने हैं।"

"और फ़्योदोर इवानिच?" उसके भाई ने कहा, "या तुम अपने आपको नहीं गिनती?"

लेनोचका अप्रतिभ सी हो गई।

"लेकिन क्या फ़्योदोर इवानिच इस उम्र में....." वह बोली।

"हाँ, आप अपना खेल जारी रखिये" लाव्रेत्स्की ने बीच ही में टोक कर कहा, "मेरी चिंता न कीजिये। मैं इसी में प्रसन्न हूँ कि मेरे कारण तुम्हारे खेल में बाधा न पड़े। मेरे मन बहलाव की आवश्यकता नहीं, हम बूढ़ों के पास मन-मगन रहने की अपनी सामग्री होती है, जिसके बारे में आप लोग अभी कुछ नहीं जानते और कोई मन-बहलाव उसका स्थान ग्रहण नहीं कर सकता—और वह सामग्री है स्मृतियाँ।"

नौजवान लाव्रेत्स्की की बातें नम्रता और प्रसन्नता से सुनते रहे—जैसे एक अध्यापक उन्हें कोई पाठ पढ़ा रहा हो, फिर सहसा इधर उधर

दौड़ कर कुंज में चले गये, चार वृक्षों के नीचे जा डटे और एक मध्य में खड़ा हो गया और इस प्रकार खेल शुरू हुआ।

और लाव्रेंस्की घर की ओर मुड़ा, भोजनालय में गया, प्यानो के निकट पहुँचा, एक स्वर को स्पर्श किया, एक मद्धिम लेकिन स्पष्ट ध्वनि निकल कर हवा में बिखर गई, और उत्तर में उसके हृदय के भीतर भी वैसा ही स्वर बज उठा, यह उस संगीत का आरम्भिक स्वर जो लेम ने उस शानदार और सुखद रात को इतने दिनों पहले उसे सुनाया था। फिर वह ड्राईंग रूम में चला गया, बहुत देर तक वहाँ ठहरा रहा, इस कमरे में जहाँ उसने लीजा को अक्सर देखा था, उसकी स्पष्ट मूर्ति उसके कल्पना पट पर उभर आई, उसे लगता था जैसे वह उसके निकट बैठी है, लेकिन लीज़ा के लिये वह जो दुख अनुभव कर रहा था, वह सहन करना आसान नहीं था, मृत्यु से जो एक प्रकार का संतोष हो जाता है, वह उसे प्राप्त नहीं था। लीज़ा जीवित थी, कहीं दूर, बहुत दूर और उसकी पहुँच से बाहर; वह जीवित रूप में हो उसका चिन्तन करता, लेकिन जिस लड़की को उसने कभी इतना प्रेम किया था, उसके बारे में यह जानना कठिन था कि देवदासी के भेष में वह कैसी होगी और धूप जलाये क्यों कर इधर उधर घूमती होगी। मन की जिन आंखों से वह लीज़ा को देखता था, अगर अपने को भी उन्हीं से देखता तो लाव्रेंस्की खुद को भी न पहचान पाता। इन आठ साल में वह बहुत बदल गया था और जीवन के उस मोड़ पर घूम गया जिसकी बहुत से लोग उपेक्षा करते हैं और जिसके बिना वे सम्मानित व्यक्ति नहीं बन सकते, उसने सचमुच निजी स्वार्थ और व्यक्तिगत प्रसन्नता के बारे में सोचना छोड़ दिया था। उसका उत्साह जाता रहा था, सच बात यह है कि वह बूढ़ा हो गया था, शरीर ही से नहीं मन से भी बूढ़ा हो गया था, कुछ लोग बुढ़ापे में दिल जवान रखने की जो बात कहते हैं, वह बहुत मुश्किल है और प्रायः बेहूदा है, जो मनुष्य

सत्य और भलाई में आस्था बनाये रख सकें और कर्मठ बना रहे उसे संतुष्ट होना चाहिये। लाव्रेस्की को संतुष्ट होने का अधिकार था क्योंकि वह अब एक अच्छा कृषक था, हल चलाना जानता था और वह सिर्फ़ निजी लाभ के लिये ही काम नहीं करता था बल्कि अपने किसानों की दशा बेहतर बनाने के लिये प्रयत्नशील रहता था।

लाव्रेस्की बाग़ में आया और अपने चिर-परिचित स्थान पर बैठ गया। उसका मुँह घर की ओर था और वह उस मकान को देख रहा था, वह अकेला बैठा था और अतीत को स्मरण कर रहा था जबकि नई पौध के, जो उसका स्थान ग्रहण कर चुकी थी, सहर्ष चीत्कार और कहकहों से वातावरण मुखरित हो रहा था। उसका हृदय विषाद से भरा हुआ था, लेकिन उसमें कटुता अथवा निराशा का लेशमात्र भी नहीं था, उसके पास पछताने को बहुत कुछ था, लेकिन उसमें लज्जित होने की कोई बात नहीं थी। "ऐ नौजवानों बढ़ो, खेलो और खुशियां मनाओ।" वह सोचने लगा और उसके मन में ईर्ष्या अथवा खेद का नाम तक नहीं था, "तुम्हारा जीवन तुम्हारे सम्मुख है और तुम्हारा जीवन सहज और सुखी होगा क्योंकि हमारी तरह तुम्हें मार्ग नहीं खोजने पड़ेंगे, संघर्ष नहीं करना पड़ेगा, हमने जीने के लिये संघर्ष किया—और बहुत से संघर्ष ही में खो गये! लेकिन तुम पर भी उत्तर-दायित्व है, करने को काम है—और हम वृद्धों का आशीर्वाद तुम्हारे लिये कल्याणकारी हो। जहां तक मेरा सम्बन्ध है, इस दिन के बाद, मेरा काम तुमसे अंतिम विदा लेना रह गया है—और समीप तक आ रहे अंत और इन्तजार कर रहे भगवान को सम्मुख जान कर मैं दुख से लेकिन बिना ईर्ष्या और द्वेष के कहता हूँ, "स्वागत, निस्सहाय जीवन! जल जा ऐ व्यर्थ जीवन!"

लाव्रेस्की चुपचाप उठा और चुपचाप चल दिया। किसी ने उस की ओर ध्यान नहीं दिया; किसी ने उसे नहीं रोका, लेमू के लम्बे लम्बे

पेड़ों की दीवार के पीछे बाग में कहकहे पहले से भी बुलन्द हो गये थे और गूँज रहे थे। वह आकर अपनी गाड़ी में बैठ गया, कोचवान से कहा कि घर चले और घोड़ों को आहिस्ता आहिस्ता चलने दे !

'और अंत ?" शायद पाठक निराश होकर पूछे "इसके बाद लाव्रेन्स्की का क्या बना ? और लीज़ा का क्या बना ?" लेकिन जो लोग जीवित होते हुए भी संसार से और उसके संघर्ष से हट जाते हैं, उनके बारे में बताने को क्या रह जाता है ! फिर हम उनके सम्बन्ध में क्यों सोचें ?

कहते हैं कि लाव्रेन्स्की एक बार उस दूरस्थ प्रदेश में गया जहां लीज़ा कौनवेंट में रहती थी, उससे मिला वह देवालय से निकल कर धीरे धीरे उसके पास से गुज़री, वह एक देवदासी के सदृश घुटी घुटी और झुकी-झुकी चल रही थी, सिर्फ़ भवें तनिक कांप रही थीं, दुर्बल चेहरा और भी झुक गया था और भिंचे हुए हाथों की अंगुलियां और भिंच गई थीं। वे दोनों क्या सोच रहे थे ? क्या अनुभव कर रहे थे ? कौन जानता है ? कौन बता सकता है ? जीवन में ऐसे क्षण आते हैं, ऐसी भावनायें भी.....मनुष्य सिर्फ़ उनकी ओर संकेत करता है... और जाने देता है।